

Sambodh Saṅghita (Uttarachik)

1878

Sas.
Librarian

Uttarpara Joykrishna Public Library
Govt. of West Bengal

[ग]

मन्त्रमालीकम्

पृष्ठम्

२०—१३, १, २—१५, १, १३—१४—१, १०—
१०, २, ५—८—१२, २, ८)	...	३४५
अवाचिनी (२, १, १०, २ = उ, द्वापयस्य)	...	३१४
अयभराय (१, १, १०, १ = उ, द्वापयस्य)	...	१२२
अथापवस्यदेवयुर् (१, २, २१, १ = उ १, २, १६—१७—६, २, १५—१६—८, २)	...	१८८
अकवचपुत्रसः (२, २, १८, २ = उ ०, १, १—१२, २, २—१५, १, १)	...	३६९
अर्वासीमधुमन्मयी (३, २, ११, १ = उ ३, १, ५—६—७—८—८, २, २—
४—८, १, १३—१८, २, ३—२०, १, १८—२०, २, १)	...	३१४
अवधुतामः (१, १, १८, २ = उ, अभिप्रियाक्षिपयते)	...	१६७
अचोनचक्रदो (२, १, २, २ = उ ०)	...	२८८
असर्जिकसर्मा (३, १, १८, २ = उ ३, २, १७—७, २, ८—८, ३, ४—१५, २, ११)	...	५२१
असविनीमन्त्र (३, २, २१, १ = उ ३, १, १८—१२, २, १८—
२०, २, १८—२३, १, ४)	...	३८५
असाय्यशुर् (३, २, १६, १ = उ ३, १, १३—७, २, १८—१६, १, ४—
२०, २, २)	...	३४१
असिद्धिबोर (३, २, १४, १—१८, २, ४)	...	३३१
अस्यप्रलामतु (१, २, १८, १ = उ ८, १, ८—९, २—३, १०—११, २, ८—
१४, १, १८—२०—१४, २, १—२—३—४)	...	२४८
अस्तेदिन्नीमदेवा (१, २, १०, २ = उ, द्वापयस्य)	...	१२३
आधामन (१, २, १६, २ = उ १, २, ८)	...	१३०
आतिष्ठवचन (३, २, २१, २ = उ ३, १, १८—१२, २, १८—२१, १, ४)	...	३८३
आतूनद्वन्द्वमन्त्र (१, २, ८, १ = उ ३, १, ४)	...	२१९
आतेष्यदधीमहि (३, २, २१, १ = उ ३, १, १६—१७, १, ६)	...	३७६
आतेष्यदधीमहि (३, २, २१, २ = उ ३, १, १६—१७, १, ६)	...	३७७
आतेष्यदधीमहि (१, १, ८, १ = उ ०)	...	१८
आतेष्यदधीमहि (१, २, १०, १ = उ १, २, ८)	...	२२४

[घ]

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
आहवस्यधाम् (२, १, ७, १ = उ०)	३८५
आहीहसो (१, २, २१, २ = उ १, १, १४—११, १, १०) . १ ..	१८७
आहीनितस्य (१, १, २१, २ = उ १, २, १४—११, १, १०)	१८७
आहीमस्य (३, १, १४, २ = उ ३, १, १०—७, १, १८—१६, १, ४—१०, १, १)	६४१
आनदस्यो (२, २, २, १ = उ०)	३७८
आनसुमेसस्यो (२, ०, २, २ = उ०)	३७८
आनीमिचावस्य (१, १, ५, १ = उ०)	१६
आपप्राथ २, २, ११ २ = उ २२, १, १८)	४३२
आपयमानसुष्टुतिं (३, १, ५, २ = उ ५, १, १०—१८, २, १०) ...	४८६
आपयस्मस्यो (३, १, ३, ४ = उ०)	४८८
आपयस्सुसुवर्थम् (२, १, ४, २ = उ०)	३००
आयाचिसुसुमा (१, १, ६, १ = उ०)	१८
आयोनिमस्यो (३, १, १२, २ = उ १, १, १२—२३, १, ११—१२—१३)	५३३
आयंसते (१, २, १७, २ = उ २, १, ५)	४६७
आयस्यसुदच (३, २, १४, २ = उ ३, १, ११—५, १, १—८, १, १३— १४, १, १४—१८, १, १३)	६४६
आविवासन् (३, १, ४, ५ = उ०)	४८४
आय्यरर्ष (३, १, ४, १ = उ०)	४८१
आय्यतोषर्जुनो (१, २, १०, १ = उ, प्रसीमदेववीतयं) ...	१७५
इष्टमिदेवाः (१, २, ३, २ = उ १, १, १०)	१०३
इष्टमस्य (३, १, ८, २ = उ०)	५०८
इद्वसोस्तं (१, २, ८, १ = उ १, २, ६)	२१७
इद्वस्योजसा (१, २, ८, १ = उ १, १, ७)	२२१
इन्दुरिन्द्रायप्रवते (२, २, १५, २ = उ २, २, १—४—७, १, २०—८, १, ८— १५, २, १—२—१६, १, २—२०, १, १२—१३—२२, २, ११)	४५
इन्दुर्वाजीप्रवते (३, २, १०, १ = उ ३, १, १५—८, २, ५) ...	१०३
इन्द्रोयथातन (३, २, ५, १ = उ०)	६०

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
इन्दोयदद्रिभिः (३, २, ३, ४ = उ ०)	४८५
इन्द्ररक्ष्यैः (१, १, ८, २ = उ ०)	३०८
इन्द्रमो (१, १, १, १ = उ १, १, १८)	१८७
इन्द्रविश्वामघीष्टवन् (२, १, १८, १ = उ २, १, १२—७, १, ११,—११, १, २—२, ३)	३६८
इन्द्रजठरं (३, १, ०२, २ = उ ३, १, २)	५८३
इन्द्रजुषस (४, १, २१, १ = उ ३, १, २)	५८२
इन्द्रनाशुम् (३, १, १४, २ = उ २, १, १४—७, २, ७—१८, २, १२)	५४६
इन्द्रमग्निहविष्कदा (१, १, ७, २ = उ ०)	११
इन्द्रमच्छसुता (१, १, १७, १ = उ ७, १, ७—१०, १, १६—१३, १, १०—१, १, १०—६, १, १७,—६, २, ८—१, २०—१०, २, १—१२, २, १०—१४, १, १—१४, १, ११—१४, १, १७)	१२६
इन्द्रमिन्द्रायिनो (१, १, ८, १ = उ ०)	३०८
इन्द्रमिहरी (३, १, २३, २ = उ ३, १, १—१२, १, १८—२२, २, १८—२३, १, ४)	६८४
इन्द्रवाजेषु (२, १, ८, ३ = उ ०)	३०८
इन्द्रसुतेषु (१, २, १२, १ = उ १, २, १०—१८, १, २)	२३२
इन्द्रसुरापाणिनी (३, १, २०, ३ = उ ३, १, २)	५८३
इन्द्राग्नीष्वागतं (१, १, ७, १ = उ ०)	१८
इन्द्राग्नीजरितुः (१, १, ७, २ = उ ०)	२०
इन्द्राग्नीयुवां (३, २, १०, १ = उ ०)	६१२
इन्द्रायनूनं (१, १, २१, ३ = उ ३, १, १—२२, २, १७—२३, १, २)	५७८
इन्द्रायमद्वने (१, २, ४, १ = उ १, २, १)	२०४
इन्द्रायसाम (३, २, २२, १ = उ ३, १, ७)	६८०
इन्द्रेष्वाग्ना (२, १, ८, १ = उ ०)	३११
इन्द्रेयकंष्टि (२, २, ७, १ = उ ०)	३८२
इन्द्रोदधीषो (३, १, ८, १ = उ ०)	५०६

[च]

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
इन्द्रोदीर्घाय (१, १, ८, ४ = उ०)	३१०
इन्द्रोमहासपाष्टवे (१, २, १४, १ = उ १८, २, ४) ...	६३६
इन्द्रमिन्द्रसुतं (१, १, २१, १ = उ ३, १, १—२१, २, १०—१३, २, ३)	५०७
इन्द्राचवादिषिष्टय (१, २, १५, १ = उ २१, २, १—१३—१६ ..	२४५
इयंवागमस्य (३, १, ८, १ = उ०)	५११
इयन्नोकाय (३, २, ११, ३ = उ अर्वासीम)	६१६
इयंपर्वस्य (२, १, ४, १ = उ०)	३८३
इहलागोपरीणसं (१, २, ०, ३ = उ १, २, ५)	२१६
ईशानइमा (३, २, १, ३ = उ ८, २, ०—१३, १, १८) ...	५८८
उग्राविषमिना (२, २, ७, २ = उ०)	३८८
उक्तातेजातम् (१, १, ८, १ = उ १, १, १—१, १, १३—६, १, ८—१०— ०, १, १२—८, १, ११—१०. १. १०—११—११, १, १४— १२, १, १—२—१२, २, ०—१६, १, १०—१५, १, ३—४— ५—१६, १, १८—१८, १, ११, १०, १, ६—०—८— २०, २, १४—२२, १, ४)	२२
उत्तनोगोविद् (३, २, ५, २ = उ०)	६०२
उत्तिष्ठन्नोअसा (३, २, ८, १ = उ०)	६१०
उदुखियाःसृजते (१, २, १४, २ = उ २१, २, ८—१२—१५)	२११
उपवितस्य (३, २, १८, २ = उ प्राणाग्निशूद्र)	६५०
उपत्ताकर्मज्ञस्ये (१, १, १२, २ = उ १, १, १६—२१, १, १० ...	१८७
उपशिञ्चापतस्युषी (१, २, १८, १ = उ ६, १, ५—१८, २, १—२१, २, २—११)	२६२
उप्राक्षे (१, १, १, १—१, २, १८, ३ = उ २१, १, ११—६, १, ४— १८, २, ११—२१, १ २—११)	४१२६३
उषीषुजातम् (१, २, १८, २ = उ ६, १, ५—१८, २, ११—२१, १, २—११	२६७
उभयतःपवमानस्य (३, १, १, २ = उ ८, २, २)	४८०
उद्वंसा (१, १, ५, २ = उ०)	१६

मन्त्रप्रतीकम् .	धृष्टम्
ऊर्जोऽनपतंस (१, १, २०, २ = उ यज्ञायज्ञा)	१७६
ऋतस्यजिज्ञापयते (१, १, १८, १ = उ अभिप्रियाणिपयते) ..	१६६
ऋतेनमिवावरुणा (२, १, ६, २ = उ०)	१८०
ऋतेनयादतादृषा (१, १, ७, २ उ = ०)	२०६
ऋतेनयादतादृषा (१, १, ७, २ = उ०)	२०६
ऋषक्सीम (१, १, १, २ = उ ११, १, १९)	१८
ऋषिर्विप्रः (१, १, १०, २ = उ १, १, ४—१८, १, ७)	८०
एतेष्वसग्रम् (१, २, १, १ = उ०)	२७६
एनाविश्वान्यर्यथा (१, १, २, ३ = उ उवातेजा)	२३
एनावीश्वग्निं (१, २, १२, १ = उ ११, १, ८—२१, १, ११—२१, २, १४)	२२६
एवानःसोमपरि (२, २, १०, ३ = उ २, १, १७)	४२८
एवापवस्त्वमद्विगो (२, १, ११, ३ = उ २, १, २—७, १, ६)	३२७
एवारतिस (२, १, १८, २ = उ २, १, ११—२१, २, २)	३६४
एवाक्वसिपीरधुर् (२, १, १८, १ = उ १, १, ११—२१, २, २)	३६४
एषप्रत्नेनजन्मना (१, १, १७, १ = उ०)	१६०
एषप्रत्नेनजन्मना (१, २, १७, २ = उ०)	१६१
एष्टुष्टुनवाणि (१, १, २१, १ = उ १, १, १५—२३, १, १२)	१८३
ओमिसुयन्द्र (३, २, ११, ३ = उ २, २, २१, ३—३, १, १६—१७, १, ६)	६७८
कण्ठेभिर्धृष्यवा (१, २, १२, २ = उ २, १, १८—४, १, ८—८—१८, १, ७)	४३६
कथानञ्चिच (१, १, १२, १ = उ १, १, ५, —१०, १, ८)	८७
कवीनोमिवावरुणा (१, २, ६, २ = उ०)	३८१
कस्त्यासत्वी (१, १, १२, २ = उ १, १, ५—१०, १, ८)	८८
कृषवन्तवरिवो (२, २, १, २ = उ०)	३७७
केतुकृण्डियस् (१, २, २, १ = उ०)	५८२
क्रीडुर्मखो (३, २, ४, ७ = उ०)	६००

[ज]

मन्त्रप्रतीकम्

शृङ्खलम्

गुणानामसङ्ख्या (१, १, ५, ३ = उ०)	...	१७
गोविन्दपञ्च (१, २, १, १ = उ०, २, ७—२३, १, १८)	...	५८१
जघनवृद्धि (१, १, १५, २ = उ०)	..	३४४
जज्ञानोवाचं (३, १, २, ३ = उ०)	..	५८०
जनस्यगोपः (३, १, ६, १ = उ० १८, १, १५)	..	४८८
जनेर्द्वय (१, १, १३, १ = उ० १, १, ६—६, २, १४—१३, १, ५—
१३, १, ८—१४, १, १०—२१, १, ४—२१, १, ८—२१, १, १७—
२२, १, १४)	...	८१
तदद्याचित (२, १, १८, ३ = उ० २, १, ६—८, १, १३—१८, १, १८)	...	४७०
तन्मोमदं (२, २, १८, १ = उ० २, २, ६—८, १, १३—१८, १, १८)	...	५६८
तन्मोमवर्धय (१, १, ८, ३ = उ० १, १, ६)	...	२१८
तन्मोमवर्धय (२, १, १०, १ = उ० १, १, ६)	...	३१४
तन्मोमवर्धय (२, २, ३, १ = उ०)	...	३८०
तन्मोमवर्धय (१, १, ४, १ = उ०)	...	१५
तन्मोमवर्धय (१, १, १८, ३ = उ० १, १, ६)	...	२२२
तन्मोमवर्धय (२, २, १८, ३ = उ० २, २, १—१८, १, १८)	...	४६०
तन्मोमवर्धय (२, १, १८, ३ = उ० २, १, ७—१८, १, १८)	...	४७५
तन्मोमवर्धय (१, २, १८, ३ = उ० १, २, १—१८, १, १८)	...	२२४
तन्मोमवर्धय (१, २, १८, ३ = उ० २, १, १८)	...	४४०
तन्मोमवर्धय (२, २, ८, २ = उ० २, २, १८)	...	४०१
तन्मोमवर्धय (१, १, १८, ३ = उ० १, १, ७—१८, १, १८)	...	१०१
तन्मोमवर्धय (३, १, ७, १ = उ०)	...	६०५
तन्मोमवर्धय (३, १, ११, २ = उ० ३, १, ११)	...	५१७
तन्मोमवर्धय (३, १, ११, २ = उ० ३, १, ८—१०—११—८, १, १८—
८, १, १०— ८, १, १४—१३, २, १—२—१६, २, १५—
१६—१७—१८—१८, २, १—२०, १, १४—१५—१६)	...	५१७

मन्त्रप्रतीकम्			पृष्ठम्
नाथस्यनमसा (३, २, १५, ३ = उ १०, १, ४)	६३८
नाथस्यपृथ्वायुषः (३, २, १५, ९ = उ १०, १, ४)	६३८
नाभिरामंच्छन् (३, २, १०, ३ = ०)	६३९
नावांसम्यग् (३, २, ८, २ = उ ०)	६०८
नावांगैर्भिर (२, १, ८, ३ = उ ०)	६१२
नासूषाज्जाघृताद्युनी (३, १, ७, ३ = उ ०)	५०५
नाथिभ्यश्च (२, १, ८, २ = उ ०)	६३९
नाड्येययोर् (२, २, ८, १ = उ ०)	६८८
निखोर्हरयति (२, २, १०, १ = उ २, १, १०,)	४९०
निखोवाचउड् (२, २, १५, १ = उ २, १, २०—७, १, १६—८, १, ७—			...
१५, १, १८—२०, १, १०—११)	४८३
नुभ्येसाभुवना (२, १, १, ३ = उ. ०)	२८५
निकद्रुकेषुचेतनं (१, २, ४, ९, = उ १, २, १)	२०५
नीणिनितस्य (३, २, १८, ३ = उ प्राणाग्निशुद्)	६५०
नंराजोवसुत्रतो (३, २, ४, ५ = उ ०)	५८८
नंसमुद्रिया (२, १, १, १ = उ ०)	२८४
नंसोमनृमादनः (३, २, ३, ५ = उ ०)	५८५
नंसोमपरिचय (२, २, ६, ३ = उ ०)	६०४
नंष्ट्राङ्गदैव्य (३, १, १०, १ = उ २, २, १६—५, १, १६—११, २, १८—			...
१८, १, १२)	५५५
नन्द्याथ (३, २, १८, ३ = उ पवस्ववाजसातथे)	६५८
नन्द्यवाज्युम् (१, १, २, ९ = उ १, १, १८)	१००
नन्द्यचक्षा (२, २, १, २ = उ ८, २, ७—२९, १, १८)	५८७
नमिन्द्राभिभूर् (३, २, २२, २ = २, १, १०)	६८१
नारिचन्ति (३, २, १८, २ = उ पवस्ववाजसातथे)	६५८
नामग्ने (३, १, ६, २ = उ १८, १, १५)	५०१
नामिदाद्यो (२, १, १५, १ = २, १. ४—१८, २, ८)	६०४

[ज]

मन्त्रप्रतीकम्

५४८

तामिद्विषयमन्त्र (१, १, ११, १ = उ०)	...	११०
द्विषयतयावका (१, १, १, १ = उ११, १, ११)	...	०
दुष्टानुपधर् (१, १, ८, २ = पुनातःषोम)	...	४२
दुष्टानुप्रत्यमित् (१, १, १७, २ = उ०)	...	१६१
सुचं सुदातु (१, १, १३, १ = उ तवो०)	...	८२
षोभिर्नजन्ति (३, १, १८, २ = उ १, २, १७—७, १, ८—८, १, ४— १५, २, ११)	...	५६०
नकिष्ट द्रव्योत्तरी (३, १, २१, १ = उ ३, १, १—२१, १, १७—२३, १, ३)	...	५७७
नघमन्यद् (१, १, २, १ = उ १, १, २०)	...	२०२
नलावाचन्यो (१, १, ११, २ = उ ११, १, १८—२२, १, १—२२, १, १२)	...	८४
नदुष्ट मिद्रविषोदेष्टु (१, २, १३, २ = उ १, १, १८)	...	४४१
नघं दुष्ठा (१, १, १४, २ = उ १, १, ७—१०, १, १५)	...	१०१
नक्षिप्तपूर्तम् (१, १, २१, २ = उ १, १, १५—२२, १, १२)	...	१८४
नक्षिस्तामूर (१, १, ६, २ = उ १, १, ४)	...	२१३
नूलोरयिं (१, १, १३, २ = उ १, २, १२—१३, २, ११—१२—१२)	...	५३४
नृमिघातः (१, २, ८, २ = उ १, १, ६)	...	२१८
नभिर्येमायो (१, २, ८, १ = उ अभिसोमासषायवः)	...	४०२
नेमिज्जमन्ति (३, १, १४, २ = उ २, १, १२)	...	५४२
परिनिःशर्षथन्या (३, १, ३, ६ = उ०)	...	४८०
परिप्रियादिवः (३, १, १६, १ = उ १, २, १५—७, २, ८—१५, २, १०— १६, १, ११—१०, १, १७)	...	५५०
परिप्रिश्रानि (३, १, ४, ३ = उ०)	...	५८८
परिष्कृपवन् (३, १, ४, २ = उ०)	...	४८२
पवतेऽर्यतो (१, १, २१, १ = उ अथापवस्तदेवयू)	...	२८८
पवमानधिधा (३, १, १०, २ = उ १, २, ८—१५, २, ८—१६, १, १)	...	५१४
पवमानरसस्तन (३, १, २, २ = उ ३, १, १७)	...	४८४

मन्त्रप्रतीकम्

पृष्ठम्

पवसानववाचवा (३, १, ५, १ = उ ५, १, १०—१५, १, १०)	..	४८६
पवमानस्यतेववे (१, १, ३, १ = उ २१, १, १२)	१०
पवमानस्यतेरसो (३, १, २, १ = उ ९, १, १७)	४८४
पवमानस्यतेवयं (२, १, ५, १ = उ ०)	४०१
पवमानस्यविश्ववित् (३, १, २, १ = उ ०)	५८१
पवमानोषजीजनद् (१, १, २, १ = उ ३, १, १७)	...	४८६
पवस्वदक्षसाधनी (३, १, १०, १ = उ १, १, ८—१५, १, ८—१६, १, १)		५१३
पवस्वमधुमगम (१, १, १६, १ = उ १, १, ८—१९, १, ६—७, १, ८—		...
१०, १, ५—१७, १, ४—४ १, ८—८, २, ७—१०, १, ३—		...
१३, ९, १८)	११५
पवस्ववाचा (२, १, १, १ = उ ०)	२८३
पवस्ववाजमातये (३, २, १८, १ = उ ३, १, १३—१४, ८, १, १—२, ६—		...
१५ १, १८—१०—२१—१६, १, १०—२, ८—२०, २, १—		...
२१, ३, २—२२, १, १२)	६५८
पवस्वविश्वचर्षण (३, १, ३, ५ = उ ०)	४८०
पवस्वदक्षमम (३, २, ३, ६ = उ ०)	५८६
पवस्वेन्दो (२, १, ९, १ = उ ०)	२८५
पवितृक्कविततं (२, २, १६, १ = उ ७, २, १—१२, २, १—१५, १, १)		४५८
पातञ्जीमिषा (३, २, ८, ३ = ०)	६०८
पाप्ममावो (१, २, १, १ = उ १, १, १८)	१८५
पिषासोममिन्द्र (३, १, १३, १ = उ १९, ९, १—३)	५३७
पुनानःसोमधारया (१, १, ८, १ = उ १, १, २—३—९, २०—२, १, १—		...
४, १, ४—५—६—६, १, ११—१२—१३—१, २—८, १, १३—१४—		...
१५—८, २, १६—१२, १, १२—१०, १, १३—२०—११, १, १६—		...
१६, १, ७—१८—२, १५—१६—१५, २, ३—४—१६, १, १०—		...
१७, १, १—१६—१८, १, ७—२०—२१—२, ३—१८, १, २०—		..
२, १२—२०, २, ११—१५—१६—१७—२१, २, ८—२२, १, ५—		..
८—२२, २, ८)	४१

मन्त्रप्रतीकम्	४४म्
१८, १, ११-१२-१४-१८, १, १७-२२, १, ६)	२७४
प्रसोमासोऽध्वन्युः (१, १, १, १ = उ०)	५८२
प्रसोमासोऽध्वन्युः (१, १, ११, १ = उ१, १, १४-११, १, २०)	१८६
प्रसोमासोऽधिपक्षितः (१, १, १८, १ = उ१, १, ११-१२-६, १, १२-	...
११, १, ११-१४, १, १२-११-१४-१८, १, ११-१८, २, १५-१६)	...
प्राणाग्निश्च (१, १, १८, १ = उ२, १, ११-५, १, २-७, १, १०-	...
७, १, २१-८, १, १४-८, २, २-१२, १, ५-१५, २, ८-१८, १, ८)	६४८
प्राचीविपक्षितः (१, १, १८, १ = उ१, १, १८-८, २, १-२२, १, १०-	...
१६)	५६८
बीधामुमे (१, १, १२, १ = उ२२, १, १-१)	५२८
ब्रह्मादेवानां (१, १, १८, १ = उ१, १, १८-८, १, १-२२, १, १०-१६)	५६६
ब्रह्मायस्वायुष्मा (१, १, १, १ = उ०)	१८
मत्स्यासुप्रिन् (१, १, १४, १ = उ१, १, ४-१८, १, ८)	३४०
मनीषिभिः पवते (१, १, १०, २ = उ१, १, १०-८, १, ५-१६, १, १७)	३५८
मातामूरा (१, १, ७, १ = उ१, १, ५)	११५
मापापलाय (१, १, ८, १ = उ०)	५१२
मित्रं वयं वामदे (१, १, ७, १ = उ०)	३०५
मित्रं वयं (१, १, ६, १ = उ०)	३८८
मेधाकार (१, १, ७, १ = उ०)	६०७
मोषुब्रह्मव (१, १, १८, १ = उ१, १, ११-११, १, २)	३६६
यथोजिष्ठसमः (१, १, १८, १ = उ१ यम्युवारयिर्)	३४७
यज्ञस्य केतु (१, १, ६, १ = उ१८, १, १५)	५०१
यज्ञायज्ञावो (१, १, २०, १ = उ१, १, १४-१२, २, ५-११, १, ११-	...
२१, १, २०-२१-२२, १, ८)	१७५
यज्ञाव (१, १, ११, १ = उ१, १, १५-१२, १, १२)	१८४
यसोमध्व (१, २, ११, १ = उ१, १, ८)	६२८
यदङ्गिः परिषिञ्चते (१, १, ४, १ = उ०)	२८८

संस्कृतशब्दम्

पृष्ठम्

चक्रुदोरत (२, १, १४, २ = उ १८, १, ४)	६३४
चक्रुदोरत (२, १, ११, १ = उ ११, १, १८)	४९१
चक्रुदोरत (२, १, ५, १ = उ ०)	६०१
चक्रुदोरत (२, १, १८, २ = २, १, ७-१२, १, १४)	४७४
चक्रुदोरत (१, १, ८, २ = उ १, १, ७)	२१९
चक्रुदोरत (२, १, १२, १ = उ १२, १, १-२)	५२८
चक्रुदोरत (२, १, १५, १ = उ ०)	२४२
चक्रुदोरत (१, १, ५, २ = उ १, १, १-१, १, २)	२०८
चक्रुदोरत (१, १, ५, १ = उ ०)	३८६
चक्रुदोरत (१, २, ४, २ = उ १, १, १)	२०५
चक्रुदोरत (१, १, १६, २ = उ १, १, १-१, १, २)	११६
चक्रुदोरत (२, १, १, २ = उ ०)	२८२
चक्रुदोरत (१, १, २, २ = उ ०)	१८६
चक्रुदोरत (२, १, १०, २ = उ ०)	६१२
चक्रुदोरत (२, १, ६, १ = उ ०)	६०२
चक्रुदोरत (१, १, १२, २ = उ १, १, १०-१०, १, ८)	१८१
चक्रुदोरत (१, १, १५, १ = उ २१, २, १०-१२-१६)	२४२
चक्रुदोरत (२, १, १२, २ = उ २, १, ८)	६२०
चक्रुदोरत (२, १, ५, २ = उ ०)	३०१
चक्रुदोरत (२, १, १८, १ = उ २, १, ६-८, १, १२-१८, १, १८)	४६८
चक्रुदोरत (२, १, १०, २ = उ १, १, १६-५, २, १६-११ २, १८-१८, १, १८)	५५६
चक्रुदोरत (२, १, ५, २ = उ ०)	२८७
चक्रुदोरत (१, १, ११, १ = १, १, ८)	२१८
चक्रुदोरत (२, १, ५, २ = उ ०)	६२२

मन्त्रप्रतीकम् ..	प्रत्यङ्
बीधारया (१, १, १८, १ = उ पुरीजितो)	१११
बीरानाकर्षणो (१, १, १५, १ = उ १, १, १४—०, २, ०—१८, १, ११)	५४५
रचोद्या (१, १, १५, १ = उ स्नादिष्ठयामदिष्ठया)	१०६
रसायःप्रयसा (१, १, ११, १ = उ १, १, १—०, १, ६)	११६
राजानावनभिद्रुष्टा (१, १, ०, १ = उ ०)	५०५
राजामेषाभिर् (१, १, १, १ = उ ०)	१०६
रायःसमुद्रांस्तुरो (१, १, १४, १ = उ १, १, १०—०, १, १६—८, १, ०— १५, १, १८—१०, १, १०—११)	४४४
वयकुला (१, १, ११, १ = उ १, १, १८—४, १, ८—८—१८ १, ०)	४४४
वयमुत्तामपूर्य (१, १, ११, १ = उ १, १, १६—११, १, १०)	१८०
वयमुत्तामदिष्ट्या (१, १, १, १ = उ १, १, १०)	१०६
वरिवोधानभो (१, १, १५, १ = उ स्नादिष्ठयामदिष्ठया)	१०६
वरुणपाविता (१, १, ०, १ = उ ०)	१००
वाचमष्टापदी (१, १, ८, १ = उ ०)	६११
वातोपजून (१, १, ०, १ = उ ०)	६०६
वार्धत्वायथाभिर् (१, १, ११, १ = उ १, १, १०—१०, १, ८)	१८०
विघ्ननीदुरिता (१, १, १, १ = उ ०)	१००
विघ्नाहिला (१, १, ६, १ = उ १, १, ४)	१११
विभाजज्ञोतिषा (१, १, ११, १ = उ १, १, १०)	६८१
विघ्नसादसर्द्धि (१, १, १५, १ = उ ०)	१८१
विद्याःप्रतना (१, १, १४, १ = उ १, १, ११)	५४१
विद्याधामानि (१, १, १, १ = उ ८, १, १)	४८१
वीकुचिदावज्जम्भिर् (१, १, ०, १ = उ ०)	१८०
वृषापर्वण (१, १, १०, १ = उ १, १, १८—४, १, १—१—१—६, १, १— ०, १, १—१—११, १, १४—१५—१८, १, १८— १८—१०, १, १—१, ८—१०)	१११

[त]

मन्त्रमालिका

पृष्ठम्

हवापुमानः (२, १, १२, २ = उ १, १, ८)	६९८
हवासतीर्णा (२, १, १७, १ = उ २, १, १०-८, १, ५-१६, १, १०)	६५७
हवाशोको (२, १, ११, १ = उ २, १, २-७, १, ६)	६१५
हवासीम (१, १, ३, १ = उ ०)	६८७
हवास्मि (१, १, ४, १ = उ ०)	६८८
हवास्मि (१, १, ३, २ = उ ०)	६८८
शंखेदुक्थं (१, २, २, १ = उ १, १, १८)	६८८
शतनीकेष (२, १, १२, २ = उ २, १, २-७, १, ७-१२, १, ११-१५)	६३५
शायीगो (१, २, ५, २ = उ १, २, २-१, २, २)	६०८
शशिःपावक (२, २, ३, ० = उ ०)	५८६
शुद्धमन्त्रो (२, २, १६, २ = उ २, १, १०-७, १, १८-१६, १, ४-२०, २, २)	६४१
शुद्धमन्त्रो (२, १, ८, १ = उ ०)	५११
शुद्धमन्त्रो (२, १, ३, २ = उ ०)	४८८
शुद्धमन्त्रो (२, १, १८, १ = उ २, १, ०-१३, १, १४)	४७७
संस्तुतुष्य (२, १, ३, २ = उ ०)	६८१
संस्तुतुष्य (२, १, १८, २ = उ २, १, १२-७, १, ११-११, १, ३-२, २)	६६८
सधालोयोम (१, २, १०, २ = उ १, २, ८)	६२६
सल्लक्षित (२, १, १२, १ = उ ०)	६२१
समद्वन्द्व (१, १, ८, १ = उ उवातेजातमन्त्रो)	६२
समःपवक्ष (१, १, १, २ = उ २१, १, ११)	५
समःपुमान (२, १, ५, २ = उ ०)	६०२
समःपुषु (१, १, ४, २ = उ ०)	६५
सम्यैःशोभते (२, १, १०, २ = उ २, १, ८-१५, १, ८-१६, २, १)	५१३
सम्यये (१, १, १२, २ = उ १, २, १०-१८, १, २)	६९२
समीचीनाश्चर्यत (१, १, ३, ६ = उ ०)	४८४

मन्त्रप्रतीकम्	वृत्तम्
समुद्रियाचनूपत (१, १, १६, १ = उ ० अथम्युभारविर्भनः) ...	२४६
समुद्रिमासी (१, १, १४, १ = उ १, १, ११) ...	४४२
सन्धिस्त्रीचरणी (१, १, १४, १ = उ ०) ...	२४३
सधीजतेचरणा (१, १, ११, १ = उ ११, १, ८—११—१४) ...	२२०
सवक्रिरपु (१, १, ४, १ = उ ०) ...	६००
सख्युर्मातरा (१, १, १६, १ = उ १, १, १५—०, १, ८—१५, १, १०— १६, १, ११—१०, १, १०) ...	४४१
सख्युभारःपवते (१, १, १६, १ = उ १, १, १—४—०, १, १०—८, १, ८— १५, २, ३—२६, १, १—१०, १, ११—११—११, १, ११) ...	४५०
सखिस्त्रीचरिदभ्यः (१, १, ४, १ = उ ०) ...	४८८
सुतपति (१, १, ४, ४ = उ ०) ...	४८३
सुताइन्द्राय (१, १, १६, १ = उ प्रसीमासीविपक्षितौ) ...	२६८
सुतासोमसुमन्तमाः (१, १, १५, १ = उ १, १, १—४—०, १, १०— ८, १, ८—१५, १, १—१—१६, १, १—१०, १, १०—११— ११, १, ११) ...	४४८
सुवितस्य (१, १, १, १ = उ ०) ...	४८८
सोक्षर्षेन्द्राय (१, १, १, १ = उ ०) ...	६०४
सोमउज्वाणः (१, १, ११, १ = उ १, १, १—४—०, १, ११— १८, १, १—१०, १, १८—११, १, १५) ...	६१८
सोमःपवते (१, १, १६, १ = उ १, १, १८—८, १, १—११, १, १०—१६) ...	४४८
सोमःपुनामकांमन्ता (१, १, १८, १ = उ १, १, १०—०, १, ८— ८, १, ४—१५, १, ११) ...	४४०
सोमज्ञाय (१, १, १०, १ = उ १, १, १०) ...	४२८
स्वरन्तिला (१, १, ११, १ = उ १, १, १८—४, १, ८—८—१८, १, ०) ...	४३४
स्वादिठया (१, १, १५, १ = उ १, १, ८—८, १, १०—१०, १, १०— ११, १, १०—१, १, ४—१८, १, ८—११, १, ११— १८, १, १५—१६—१८, १, ८—२०, १, १०—११, १, ११) ...	१०५

[४]

संज्ञासंगीतम्	पृष्ठम्
आद्योक्तिः (१, १, १४, १ = उ १०, १, ४)	११६
आद्युक्तः पद्यते (१, १, १, १ = उ १, १, ४—१६, १, ०)	०६
आद्योक्त्याख्या (१, १, ८, १ = उ ०)	४००
आद्योक्तिसूत्रम् (१, १, ४, १ = उ ४, १, १—१६, १, १०)	४६५
आद्योक्तिसूत्रम् (१, १, १, १ = उ ११, १, १२)	०



॥ ॐ नमः सामवेदाय ॥

॥ सामवेदसंहिता ॥



तत्र

॥ उत्तरार्चिकः ॥

॥ अथ भाष्यावतरणिका ॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानां सुपक्रमे ।

यं नत्वा कृतकृत्याः, सुखां नमामि गजाननम् ॥ १ ॥

यस्य निश्चसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्—
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ २ ॥

तत्कटाक्षेण तद्रूपं दधद् बुद्धमहीपतिः ।

आदिशत् सायणाचार्यं वेदार्थस्य प्रकाशने ॥ ३ ॥

ये पूर्वोत्तरमोमांसे ते व्याख्यायतिसङ्ग्रहात् ।

कपालः सायणाचार्यो वेदार्थं वक्तुं मुद्यतः ॥ ४ ॥

व्याख्यातावृत्त्युर्वदौ सामवेदेऽपि संहिता ।

छन्दोभिधामूद् व्याख्याता व्याख्यास्यत्युत्तराभिधाम् ॥ ५ ॥

छन्दस्त्रैकैकशोऽधीता ऋचः सामोद्वाय हि ।

स्तोम-निष्पत्तये सूक्तान्युत्तराया मधीयन्ते ॥ ६ ॥

• इन्द्रसि पूर्वार्चिकपत्रे एकैकशः ऋचः अधीताः, सङ्गति ममपेक्षेति भावः ;
तत्र सामोद्भवमात्रं प्रयोजनम्, सामोद्भवान् एकस्या अक्षि मवितव्य एव ; यत् स्तोम-
निष्पत्तितु तथा न भवेत् अत एव उत्तरायां सूक्तानि द्व्युक्त-न्यूपपाक्षि अधीयन्ते ।

स्तोमशब्देनोत्पत्तिषु सोमयागेषु प्रयुज्यमानास्त्रिवृत्पञ्च-
 दशादयोऽभिधीयन्ते । अतएव तैत्तिरीयकाः प्रश्नोत्तराभ्या मिद-
 मामनन्ति । तदाहुः—“कतमा वाव तानि ज्योतींषि य एतस्य
 स्तोमा इति ? त्रिवृत्पञ्चदशः सप्तदश एकविंश एतानि वाव
 तानि ज्योतींषि य एतस्य स्तोमाः”—इति । छन्दोगाश्च त्रिवृ-
 द्दादि-स्तोमानां स्वरूपं ब्राह्मण-द्वितीय-तृतीययोरध्याययोः *
 बहुधा समामनन्ति । ते च बहुभिरवान्तररूपोपेताः समान्नाताः
 स्तोमा नवसङ्ख्याकास्तेषु पूर्वोक्तास्त्रिवृदादयश्चत्वारः त्रिणव-
 त्रयस्त्रिंशौ त्रिनवसङ्ख्योपेतः स्तोमस्त्रिणव इत्युच्यते । छन्दोमना-
 मका स्तोमास्त्रयस्तेषु चतुर्विंशाख्यस्तोमः प्रथमः । गायत्रीच्छन्द-
 सा चतुर्विंशत्यक्षरोपेतेन मीयते इति छन्दोमः । चतुस्त्रिंशश्चत्वा-
 रिंशाख्यो द्वितीयः । स च त्रिष्टुप्छन्दसा मीयते । अष्टाचत्वारिं-
 शाख्यस्त्रितीयः । सोऽपि जगतीच्छन्दसा मीयते ॥ नन्वथ ये
 द्वयान्नातलक्षणोपेतेभ्यस्त्रिवृदादिभ्योऽष्टादश-नवदशादि-नामका
 बहवः स्तोमा विद्यन्ते । तथाच तैत्तिरीयकाः केषुचिदिष्ट-
 कोपधान-मन्त्रेषु देवतावद्रूपेष्टकात्वं विवक्षया तान् स्तोमा-
 नामनन्ति—“आशास्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योम सप्तदशः । प्रतू-
 र्तिरष्टादशस्तपोनवदशोऽभिवर्त्तस्त्रविंशो धरुण एकविंशो वर्चो-
 हाविंशः सभरणस्त्रयोविंशो योनिश्चतुर्विंशो गर्भः पञ्चविंश
 ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकविंशो ब्रह्मस्य विष्टपश्चतुस्त्रिंशो नाकषष्ट-
 त्रिंशोऽभिवर्त्तोऽष्टचत्वारिंशः”—इति । एवन्तर्हि सन्नेव बहूनि

स्तोमान्तराणि तेषां लक्षणानि तु ब्राह्मणान्तरानुसारेण सूत्र-
कारैर्व्युत्पादितानि ॥ ते च स्तोमाः सर्वेऽप्याज्यपृष्ठादि-स्तोत्रे-
षूपयुक्ताः “पञ्चदशान्याज्यानि, सप्तदशानि पृष्ठानि”—इत्यादि-
श्रुतिभ्यः स्तोम-विषयाः स्तोत्रविषयास्तन्निष्पादक-साम-विषयाश्च ।
सर्वेऽपि विचारा अस्माभिश्छन्दोव्याख्यानावतारवेलाया मेव
जैमिनीयान्यधिकरणान्युदाहृत्य प्रदर्शिताः * ॥ किं बहुना “एकं
साम तृचे क्रियते स्तोत्रियम्”†—इत्यादि-वचनैः स्तोत्रनिष्पाद-
कस्य साम्नस्तृचप्रगाथादि-रूपाणि सूक्तान्याश्रयत्वेनोत्तराख्ये
संहिता-ग्रन्थे समान्नातानि । स च ग्रन्थ एकविंशति-सङ्ख्यातै-
रध्यायै रूपेतः ‡ ॥

* १ भा० १० पृ०—१८ पृ० द्रष्टव्यम् ।

† द्रष्टव्योऽस्यार्थः १ भा० १० पृष्ठे ।

‡ मूलपुस्तकस्य तु अध्यायसङ्ख्या नवैव दृश्यते, परं भक्तिं तत्र प्रत्यध्यायसङ्ख्या-
ध्यायः अध्यायद्वयेऽर्द्धाध्यायद्वयश्च, पदग्रन्थे च तथा, विवरणादावप्येव मेव । सायणसते
तु अर्द्धाध्यायानङ्गीकारस्तथैकविंशतिम् अनुमन्यते । अध्यायेति व्यवहारश्च साय-
णीय एव, वस्तुतः सामवेदे प्रपाठकव्यवहार एव सर्वमूलपुस्तक-पदपुस्तक-गानपुस्तकादौ
विवरणकारमते च प्रसिद्धः ।

तच्च, प्रथमाध्यायस्य प्रथमखण्डे, *

प्रथमसूक्ते तृचे, येयम्क् प्रथमा

सैव साम्नायते—

११ ३११ ३१ १
उपास्मैगायतानरःपवमानायेंदवे ।

३ २ ३ १ १२
अभिदेवाइयक्षते ॥ १ ॥ †

हे “नरः” नेतारः ! यज्ञस्य, “देवान्” इन्द्रादीन् “अभि
इयक्षते” अभिसुख्येन यष्टु मिच्छते “पवमानाय” क्षरते “अस्मै”
अभिषूयमाणाय “इन्दवे” सोमाय “उप गायत” उपगानं
कुरुत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ २ ३ १ १ १ १२
अभि नमधुनापयोथर्वाणोअग्निअयुः ।

१ २ ३ १ २ ३ १
देवन्देवायदेवयुः ॥ २ ॥

हे सोम ! “ते” तव “देवं” देवनशीलं “देवयुः” देव-कामं
रसं ‡ “देवाय” देवनशीलायेन्द्राय “मधुना” § “पयः” गव्येन

● अत्र ग्रन्थे खण्ड-व्यवहारोऽपि सायणेनाविष्कृतः ।

† इयमेव ऋक् अथैव प्रपाठके द्वितीयाहोऽपि दृश्यते (१८, ३) ।

‡ ‘देवयुः देवान् युगन्ति यः सोमेन स देवयुः’—इति वि० । ‘देवयवः’—इति
कालि द्रामसु अहमं नैवण्ड कम् (१, १८) ।

§ ‘मधुना स्वादुना’—इति वि० ।

पयसा * “अथर्वाणः” ऋचयः † “अभ्यशिश्रयुः” अभ्यशिश्रयन्
समकुर्वन्निव्यर्थः ‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
सनःपवस्वशङ्खवेशज्जनायशमर्वते ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
शराजन्नोषधीभ्यः ॥ ३ ॥ १ ण

हे “राजन्” दीप्यमान सोम ! “सः” प्रसिद्धस्त्व “नः”
अस्माकं § “गवे” ॥ “शं” सुखं “पवस्व” चर + “जनाय”

● ‘पयः प्रथमेकवचनमिदं तृतीयेकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । पयसा सोम-
मित्रणं कुर्वन्नि’—इति वि० ।

† ‘सोममित्रणं कुर्वन्नि के ? अथर्वाणः ऋचिजः । अथवा अथर्वा नाम ऋचिः
आकीर्यान् पुनर्प्रीमानुशास्ते—हे अथर्वाणः ।’—इति वि० ।

‡ ‘अभ्येत्य नृपसर्गः अभ्यश्रयुरित्याख्यातेन सह सम्बन्धयितव्यः । अभ्यश्रियुः
= आभिमुखेन ते तव अभ्यश्रयुः = मित्रणं हतवन्तः’—इति वि० ।

§ एतादृशकृचः—ऋग्वेदे ६, ७, २६, १-२ अपि दृश्यन्ते । आसा ऋचि-
सन्देशक—“असितः काश्रपो देवसो वा”—इति ऋचि नै० । दैवत-सन्देशोऽपि
यथा—“उत्तरासु रश्म्यासायाश्च देवताः । पूर्वोक्ता ऋचु ता रवीतरासूपाश्चै च
कृषाः । सौम्याः स सोमः पार्थिवः”—इति दैवत नै० ॥

§ ‘नः अस्माभ्यम्’—इति वि० ।

॥ ‘तृतीयेकवचनमिदं वज्रवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । गोभ्यो वज्रस्य’—इति वि० ।

+ ‘पवस्व शुभ्यस्व’—इति वि० ।

पुत्राय च * “शं” पवस्व “सर्वते” अश्वाय † च “शं” पवस्व
 “सोषधीभ्यः” च ‡ शम्पवस्व ॥ ३ ॥ १

४ ३ २ ४ २ ४ २
 ॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ उपाऽ५स्यै । गाश्यास्ताना

५ २ १ २ २ १ २ १ २ २
 राः । पाश्वामाङ्गना । यारङ्गना । ऊम्मायि । दाश्व

१ २ २ २ २ १ २ १ २
 यि । आभिदेवाऽइयारक्षताउ ॥ ते (१) ॥ आ । भिते

२ १ २ २ १ २ २ १ २
 मा । धूङ्गनापाश्याः । आथारवा । णोआरङ्गना । ऊ

२ २ १ २ २ २ १ २
 म्मायि । आश्यूः । दायिवन्देवायदारयिवयाउ ॥ यू(२) ॥

१ १ २ १ २ २ १ २
 साः । नःपवा । स्वाश्याङ्गाश्वायि । शञ्जारेना । य

२ १ २ २ १ २ २
 शारङ्गमा । ऊम्मायि । वारङ्गनायि । शारङ्गराजन्नोषधा

१ २ २
 रयिभ्यआउ ॥ (३) ॥ ११ ॥ १

* ‘शं जनाय सुखं मृत्विग्जनाय’—इति वि० ।

† ‘शं सर्वते यजमानजनाय’—इति वि० ।

‡ ‘सोषधीभ्यः त्रीणि यव-तिल-माषादिभ्यः’—इति वि० ।

॥ सामेदमूङ्गानस्यैकविंशप्रपाठक-प्रथमार्द्धं सौकादशम् ।

१ अ० १ ख० २ सू० १, २] उत्तरार्द्धिकः । १

अथ द्वितीयदृष्टे—प्रथमा

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
द्विविद्युतत्या रूचापरिष्टोभन्त्याकृपा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
सोमाः शुक्रागवाशिरः ॥ १ ॥

“द्विविद्युतत्या रूचा” अतिशयदीप्ता “परिष्टोभन्त्या” परितः
शब्दायमानया “कृपा” धारया च युक्ताः “सोमाः” “गवाशिरः”
गवाशिराः भवन्ति गव्येन पयसा मिश्रिता भवन्ति इत्यर्थः* ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
हिन्वानोचेतुभिर्हितआवाजंवाज्यक्रमीत् ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
सौदन्तोवनुषोयथा ॥ २ ॥

“वाजी” बलवान् सोमः “हेतुभिः” प्रेरकैः स्तोत्रभिः †
“हिन्वानः” स्तोत्रैः स्मर्यमाणः “हितः” अभीष्टकारी सन् “वाजं”
यागाख्यं युद्धम् “आ अक्रमीत्” आक्रामति । तत्र दृष्टान्तः—

* “द्विविद्युतत्या देदीप्यमानया रूचा । परिष्टोभन्त्या परितः समन्तात् स्तोभन्त्या
पुनः पुनः स्तोभः अभ्यासः अभ्यस्यमानया । कृपा कान्ध्या । सोमाः शुक्राः शुक्रवर्णाः ।
कथं शुक्रवर्णा भवन्ति ? गवाशिरः कारणे कार्यबहुपचारः गोचीराशिरः । आशिरं
मिश्रम् ॥”—इति वि० ।

† “प्रहेतारं शब्दं प्रेरकम्”—इति द० आ० १, १, ५, १ वा० द्रष्टव्यम्
(१ भा० ५८१ प०) ।

यथा “वनुषः” हन्तारो भट्टः * “सीदन्तः” युद्धं प्रविशन्तः
आक्रामन्ति तद्वदित्यर्थः ॥ ३ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
ऋधक् सोमस्वस्तये सञ्जग्मानो दिवा कवे ।

१ २ ३ १ २ ३ २
पवस्व सूर्योदग्ने ॥ ३ ॥ २ ‡

हे “सोम” ! “कवे” क्रान्तदर्शिन् ! “सूर्यः” सुवीर्यः ॥ त्वं
“ऋधक्” ऋध्रुवत् । तथाच यास्कः—“ऋधगिति पृथग्भाव-
स्यानुप्रवचनं भवत्यथाप्युद्धृत्यर्थे दृश्यते (निरु० नै० ४, २४)”-

* “वनुष्यति”—इति ऋध्रुवतिकर्मसु ऋध्रुव नैघण्टुकम् २. १२ । “वनुष्यति-
‘हन्तिकर्मानवगतसंस्कारो भवति’ ‘वनुष्यामवनुष्यत’ इत्यपि निगमो भवति”—इत्यादि
निरु० नै० ४, २ ।

† ‘हन्वानः नोषमानः पीयमानो वा । कैः हेतुभिः ? हरणस्य भावैर्हन्तिग्भि
आ वाजम् । आ शब्दः उपसर्गः । आक्रमीदित्याख्यातेन सम्बन्धितव्यः आसिमुष्येन
आक्रमीत् वाजं वाजी वाजमग्नं, पशुपुरोडाशादि-लक्षणायां स्वामी अथवा वाजं
द्रोणकलशम् आक्रमीत् सोमः । कथमाक्रमीत् ? सीदन्तो वनुषो यथा । सीदन्तः
उपविशन्तः वनुषः मनुष्यः एकवचनमिदं बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । वनुषाः
मनुष्याः उच्यन्ते । यथा उपविशन्तो मनुष्याः आसनं आक्रमन्ति तद्वत् द्रोणकलशं
सोमः—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, ४१, २-४५ । ऋ० “कश्यपो मारौषः” इति ऋषि-नै० ।
हव्यो देवते पूर्ववत् ।

॥ ‘सूर्यः दग्ने, सूर्यः (दव शब्दः माह्वयते । दग्ने दर्शनाय । यथा सूर्य उदेति
विश्वस्य जगतो दर्शनाय तद्वत् त्वमपि पवस्वत्यभिप्रायः’—इति वि० ।

इति । “सञ्जग्मानः” सङ्गच्छमानः “स्वस्तये” “दृशे” दर्शनाय
“दिवा” दिवः विभक्तिश्चल्यः* ॥ “पवस्व”-“क्षर”-“दिवा-
कवे”-“दिवाकविः”-इति पाठौ ॥ ३ ॥ २

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ दवाऽपुयिद्यु । ताशनीश्याहृचा ।

पाश्रायिष्टोऽभा । ताश्रिचा । ऊम्मायि । काश्रिषा ।

सोमाः शुक्रागवारशिराउ ॥ रा(१)हायि । न्वानोहोहृ

ऽभायिर्हाश्रियिताः । आवारजम् । वाजारश्या । ऊ

म्मायि । काश्रमीत् । सायिदन्तोवनुषोश्यथाउ ॥ था(२)

कृ । धक्सोमा । हृश्वास्ताश्यायि । सञ्जार्गमा ।

नोदारश्रियवा । ऊम्मायि । काश्रवायि । पावस्वहरियो

दृशाउ (३) ॥ १२ ॥ [१]२

* ‘दिवा कवे अहम्यहनि ह मेधाविन् !’—इति वि० ।

+ ऊ० मा० २१ प्र० १ अ० १२ सू० १ ।

तृतीय-लघु—प्रथमा ।

^{१ २} ^{३ २ १} ^{१ २}
पवमानस्यतेकवेवाजिन्सर्गा अष्टसुत ।

^{१ २ ३ १ १ २ १ २}
अर्वन्तो नश्रवस्यवः ॥ १ ॥

मार्जनप्रसङ्गादाह—हे “कवे” कान्तप्रज्ञ ! हे “वाजिन्” अन्नवन् सोम ! “पवमानस्य” दशापवित्त्वेण पूयमानस्य “ते” तव “सर्गाः” सृज्यन्ते इति सर्गा धाराः * । कीदृश्यः ? “श्रवस्यवः” [“कन्दसि परेच्छायां क्वच् (३, १, ८ वा०)] यष्टृणा मन्त्रं कामयमानास्त्वदीया धारा “अष्टसुत” विसृजन्ति निर्गच्छन्तीत्यर्थः । तच्च दृष्टान्तः—“अर्वन्तो न” यथा अश्वा मन्दुरातो निर्गच्छन्ति तद्वत् पवित्रान्निसरन्तीत्यर्थः† । प्रयोगापेक्षं चात्र धारा-बाहु त्वम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

^{१ ३} ^{१ २} ^{३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
अच्छाकोशमधुसुतमद्यं वारे अथ्यये ।

^{१ २} ^{३ १ २}
अवावशन्तधीतयः ॥ २ ॥

धारानिर्गमनप्रसङ्गादभिधीयते—“मधुसुत” मधुररसस्य आवायितारं चारयितारं “कोश” द्रोणकलशम् “अच्छ” अभि-

* ‘सर्गाः उदकस्य अन्योन्यकर्षण्यः सङ्गाताः’—इति वि० ।

† ‘अर्वन्तः यजमानाः’—इति वि० ।

लक्ष्य* “अव्यंये” अवि-स्वभूते “वारे” वाले दशापवित्रे “अस्यं” सोमाः ऋत्विग्निरुभिरव्यन्ते [सृजेः कर्मणि तिङ्गतिङो भवन्तीति ढेरमादेशः] । किञ्च । “धीतयः” [अङ्गुलि नामैतत् + धयन्ति पिबन्त्याभिरिति] अस्मदीया अङ्गुलयः “अवावशन्” तान् सोमान् न पुनः पुनर्मर्जनार्थं कामयन्तेः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३१७ १२ ३ १ ३२३१२
अच्छासमुद्रमिन्दवोस्तङ्गावोनधेनवः ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १
अगममृतस्ययोनिमा ॥ ३ ॥ ३ ॥

“इन्दवः” चरन्तः सोमाः “समुद्रं” सोमाना मेकत्रैव सङ्ग-
मनस्थानं द्रोणकलशम् “अच्छ” अभि गच्छन्ति । तत्र दृष्टान्तः
—“धेनवः” पयः-प्रदानेन जनानां प्रीणयिषो नवप्रसूतिका
गावः “अस्तं” गृहं यथा अभि गच्छन्तीति तद्वत् § । किञ्च ते

● ‘अच्छ आप्तम्’—इति वि० ।

+ “धीतयः”—इति अङ्गुलिनामसु सप्तमं नवष्टकम् २, ५ ।

‡ ‘धीतयः धीतिः बुद्धिः बुद्धिमत्तः सोमाः । अथवा अवावशन् कामयन्, के धीतयः ऋत्विजः, किं कामयन् ? सोमस्य पावनं द्रोणकलशमनघं’—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, २, ८, ५—८, १, २ । ऋ० “वेत्तानसा आत्तिरमः”—इति ऋषि मै० ।

§ ‘अथमाप्तम् ? अस्तं गावो न धेनवः । अस्तमनकास्ते गावो न शब्द उपरिष्टा

सीमाः^१ “ऋतस्य योनिं” सत्यभूतस्य यज्ञस्य* योनिं स्थानम् “आ”
अगमन्” आभिमुख्येन गच्छन्ति । [गमेर्लुङि सिचो लुक्,
उपधालोपः ॥ ३ ॥ ३

४ २ २ ४ २ ४ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवाऽपुमा । नाऽस्याऽन्तेकावायि ।
१ १ २ २ १ २ १ २ २
वाऽजायिन्त्वाऽर्गाः । आऽऽसा । ऊम्मायि । लाऽता ।
१ २ १ २ १ २ १ २
आर्वन्तो नश्रवाऽस्यवाउ ॥ वा(१)आ । छाकोशाम् ।
२ १ २ २ १ १ २ २ १
माऽधूश्चूऽताम् । असाऽर्ग्रम् । वारेऽऽआ । ऊम्मायि
२ १ १ २ ३ २ १ २
व्याऽयायि । आवावशन्तधाऽयितयाउ ॥ या(२)आ ।
१ १ २ २ १ १ २ २
च्छासम् । द्राऽमायिन्दाऽवाः । अस्ताऽऽङ्गा । वोनाऽ
२ १ २ २ १ ४ २
ऽधे । ऊम्मायि । नाऽवाः । आगमन्वृतस्ययोऽनिमाउ ।
१ १ १ १
वाऽऽपु ३ ॥ १३ ॥ [१]३

दुपमाधीय गावः इव धेनवः यथा अक्षमनकाले वत्पानतियन्ति स्तंहा-
दृढाः—इति वि० ।

* ‘ऋतस्य यज्ञस्य प्रजापते र्वा’—इति वि० ।

† ऊ० गा० २१ प्र० १ अ० १३. सा० ।

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराश्विनस्य प्रथमस्याध्यायस्य

प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

● 'ज्योतिष्टोमिकं बहिष्यवमानं समाप्तम्'—इति वि० । 'तदिदं मृत्तवय-
गानसाध्यं स्तोत्रं बहिष्यवमानमित्युच्यते । तदावस्थितानां मृचां पवमानार्थत्वाद्
वह्निःसम्बन्धाच्च'—इति सू० ८० जे० अ० १८ अ० ४ पा० ३ अ० ३० । न खल्विदं
स्तोत्रम् इतरस्तोत्रवत् । नदोनामकस्य मण्डपस्य मध्ये ज्योतिष्वर्थाः स्तम्भशाखायाः सन्निधौ
प्रयुज्यन्ते किन्तु, सदसो वह्निः प्रसर्पद्भिः प्रयुज्यते । 'बहिष्यवमानं' नाम वेदः, यत्र
स्थितं तद्बहिष्यवमाननामनवकं साध्यं विवृण्वामस्तोमपाठपर्वकं मार्जनं भवति ; 'सा तु
उदम्बशानामशालानामतः सदोमण्डपात्' पश्चिमस्याः प्राचीनवशानामशालानामतः
एकवेदेत्तरतरी विद्यते । अस्य च बहिष्यवमानस्य प्रकृतियोगः त्रिष्टोमादौ विवृण-
्वामकः स्तोमो भवति, एतद्विधायकं ब्राह्मणवाक्यं ताण्डादितृतीयप्रपाठकारश्चे एव
खण्डस्यात्मकं द्रष्टव्यम् । निष्टम्भो हिङ्करोतीत्यदि । अत्र च विष्टुतिवयमस्ति
उच्यते, परिवर्त्तिनी, कुलायिनीति, तास्य तत्रैव स्फुटाः । विष्टुतिवयमिति-
रावाद्भवत्तत्रैव एकविंशतिस्तोमा विहिताः । बहिष्यवमानं चात्र आष्टतगना-
भावात् विष्टुतृचष्ववस्थिताभिर्नवभिर्हविभिरकविंशस्तोमपूरणभावात् तत्पूरणाय
चत्वारस्तृचा आगमयितव्याः, त्रिणवस्तोमपूरणाय षट् तृचाः, त्रयस्त्रिंशत्स्तोमपूरणाय
चाष्टौ तृचाः । षट्चागमनं च मानम्—'वीणि इ वै यज्ञस्योदराणि गायत्री'-
इत्यादि ताण्डाप्रथम तृतीये द्रष्टव्यम् । आगन्तुनाञ्च तासां मन्त्रे निवेशः । द्वादशाङ्गे
तु मध्ये एव निवेशः । तद्विचारस्य भीमांसाधिकरणमालायाः पञ्चम-तृतीयस्य
चतुर्थे द्रष्टव्यः । प्राकृतानां बहिष्यवमानगतानां त्रयाणां तृचानां स्तोत्रियोगः पञ्चम-
पर्वामखेति यथा क्रमं वीणि नामानि । अत्र मानम् ताण्डैकादशषष्ठे 'स्तोत्रि-
यातुरूपौ तृचौ भवतः'—इत्यादि । गवामयनादिषु सत्रेषु पूर्वे चतुर्भिरामिन्नविकैः
चतुर्विंशत्यहानि भवन्ति तत एकेन पष्ठे षडहंन भामः पूर्यते, तत्र प्रथमाहः
त्रिंशत्स्तोमसाध्यः अतोऽयं स्तोमः पृष्ट इत्युच्यते । किञ्चैकैकषष्ठाधिकविंशत-
दिनसाध्येषु सत्रेषु—पञ्चविंशदिने, पञ्चपञ्चाशदिने, पञ्चाशोतिदिने, पञ्चदशधिक-
शततमे दिने, पञ्चचत्वारिंशदधिकशतदिने, जनमप्रत्यधिकशतदिने, नवत्यधिक-
शतदिने, एकादशधिकद्विशतदिने, एकचत्वारिंशदधिकद्विशतदिने, एकसप्तत्य-

द्वितीयखण्डे,

प्रथमलृचे—प्रथमा ।

१ ३ १ २ ३ १ ९ १ १ ९ १ २
अग्रआयाहिवीतयेगृणानोहव्यदातये ।

१ १ २ ३ १ २
निहोतासत्सिबर्हिषि ॥ १ * ॥

हे “अग्ने” अङ्गनादिगुणविशिष्टं ! त्वम् “आयाहि” अस्मद् यज्ञं प्रत्यागच्छ । किमर्थम् ? “वीतये” हविषां चरुपुरोडाशादीनां भक्षणाय । कीदृशः सन् ? “गृणानः” अस्माभिः स्तूयमानः [व्यत्ययेनः कर्मणि कर्तृ-प्रत्ययः] । पुनश्च किमर्थम् ? “हव्यदातये” देवेभ्यो हविःप्रदानाय । आगत्य च “होता” देवानां माह्वता सन् “बर्हिषि” आस्तीर्षे दर्भे “निषत्सि” निषोद [सदेः कान्दसः शपो लुक् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १ २ १ २ १ १ १
तन्वासमिङ्गिरङ्गिरोघृतेनवर्द्धयामसि ।

१ १ १
बृहच्छोषायविष्ठय ॥ २ * ॥

धिकद्विशतदिने, एकाधिकविंशततमे च दिने विनियुज्यते—इति दिक् विस्तरः, ताण्डे चतुर्थप्रपाठकादिके ।

* ङ० आ० १, १, १, १ (१ भा० ८४ पृ०) = ङ० वे० ४, ५, २९, ४ ।

† य० वे० ३, ९ = ङ० वे० ४, ५, २३, १ ।

हे “अङ्गिरः” अङ्गनादिगुणयुक्त ! अङ्गिरसः पुत्र वा
अग्ने ! “तं” पूर्वोक्तगुणं “त्वा” त्वां “समिद्धिः” समिन्धन-हेतुभिः
दारुभिः “वृतेन” आज्येन च “वर्द्धयामसि” वर्द्धयामः । अतो
हे “यविष्ठ” युवतमाग्ने ! * “बृहत्” महत् अत्यन्तं “शोच”
दोष्यस्व ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १ २ १ २

सनःपृथुश्रवाय्यमच्छादेवविवाससि ।

३ १ २ ३ १ २

बृद्धदग्मसुवीर्यम् ॥ ३ १ ॥ ४ ‡

हे “देव” द्योतमानाग्ने ! स पूर्वोक्तगुणस्त्वं “पृथु” विस्तीर्ण^१
“श्रवाय्य” श्रवणीयं प्रशस्यं “बृहत्” महत् “सुवीर्य” शोभन-
वीर्योपेतं धनं “नः” अस्मान् ॥ “अच्छ” § “विवाससि” अभि-
गमय + । अत्र वाजसनेयकम्—“अच्छादेवविवाससीति तन्नो
ग्निमयेत्येवैतदाहेति ॥ ३ ॥ ४

* ‘यविष्ठ’ अतिशयेन बलवान्—इति वि० ।

† ख० वे० ४, ५, २३, २ ।

‡ बृद्धमाश्रेयसाय्यम् ।

१ ‘नः’ अस्माभ्यम्—इति वि० ।

§ ‘अच्छ’ आप्तम्—इति वि० ।

+ ‘विवाससि’ . . . दीप्तिं करोषि—इति वि० ।

द्वितीयतंचे—प्रथमा ।

१ २ ३ १ २२
 आनोमित्रावरुणाघृतैर्गव्यूतिमुन्नतम् ।

२ ३ १ २
 मध्वारजांसिसुक्रतू ॥ १ * ॥

“सुक्रतू” शोभनकर्माणौ, हे “मित्रावरुणौ” ! “नः” अस्मा-
 कम् “गव्यूति” गवां मार्गं गोनिवासस्थानं “घृतैः” चरणसाधनैः
 पयोभिरुदकैः “आ उन्नतं” समन्तात् सिञ्चतम् । अस्मभ्यं दीग्धो-
 गाः प्रयच्छत मित्यर्थः । किञ्च “मध्वा” मधुरेण सुरसेन “रजां-
 सि” पारलौकिकानि अस्मदावामस्थानानि “सिञ्चतम्” ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ १ ३ १ २
 उरुशंसानमोवृधामङ्गादक्षराजयः ।

३ १
 द्राघिष्ठाभिःशुचित्रता ॥ २ † ॥

“शुचित्रता” परिशुद्धकर्माणौः हे मित्रावरुणौ ! “उरुशंसा”
 उरुभिः बहुभिः शंसनीयौ । यद्वात्र लृहच्छंसः शस्त्रं ययोस्तौ ।

* व० आ० ३, २, ३, ७ (१ भा० ४१९ पृ०) = ऋ० वे० ३, ४, ११, ४ ।

† ऋ० वे० ३, ४, ११, ६ ।

‡ ‘चे’ शुचित्रतौ शुचिर्गस्या मयं क्रियमाणं कर्म भवति तौ शुचित्रतौ सत्यतनौ
 —इति वि० ।

गु ‘उरु’ इति वज्रनामस्त्रायं नैघण्टुकम् ३, १ ।

“नमोवृधा” नमसा हविर्लक्षणेनाग्नेन स्तोत्रेण वा वर्धमानो* ।
 “द्राघिष्ठाभिः” अत्यन्तदीर्घस्तुतिलक्षणाभिर्युक्तो युवां “दक्षस्य”
 दक्षते समर्था भवत्यनेनेति दक्षं धनं बलं वा तस्य† “मङ्गा”
 महत्वेन “राजयः” ईशायै ‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ २ ३ १ ३ ३ १ २ ३ १ २
 गृणानाजमदग्निनायोनावृतस्यसौदतम् ।

३ १ २२
 पात॑सोमवृतावृधा ॥ ३ ग ॥ ५ §

हे मित्रावरुणो ! “जमदग्निना” एतन्नामकेन महर्षिणा-
 यदा जमदग्निना प्रज्वलिताग्निना विष्णुमित्रेण “गृणाना”
 स्तूयमानो युवां “ऋतस्य” यज्ञस्य “योनी” देवयजनाख्ये देशे
 “सौदतं” उपविशतं “ऋतावृधा” ऋतस्य कर्मफलस्य वर्द्धयि-
 तारौ युवां + “सोमं” “पातम्” अस्माभिरभिषुतम् सोमं
 पिबतम् ॥ ३ ॥ ५

* ‘नमस्तारेवृद्धौ’—इति वि० ।

† ‘दक्षस्य ऋषेः’ अथवा दक्षो यजमान उच्यते तस्य यजमानस्य बलेन दीप्यमानेन
 —इति वि० । दक्ष इति बलनामस्तु तयोदशं नैषष्टकम् २, ८ ।

‡ ‘राजयः दीप्ययः’—इति वि० ।

ग ॥ ऋ० वे ३, ४, ११, ७ ।

§ इदं मैत्रावरुण साध्यम् ।

+ ‘ऋतावृद्धौ यज्ञेन वर्द्धितौ’—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

ब्रह्माणस्त्वायुजावयत् सोमपामिन्द्रसोमिनः ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ * ॥ ई †

हे “इन्द्र” “ब्रह्माणः” ब्रह्मणा वयं त्वां “त्वायुजा” योग्येन स्तोत्रेण “हवामहे” आह्वयामहे । कथञ्भूतम् ? “सोमपां” सोमस्य पातारम् । ईदृशा वयं “सोमिनः” सोमयुक्ताः “सुतावन्तः” अभिषुतैः सोमैरुपेताः ॥ “ब्रह्माणस्त्वायुजावयत्”-“ब्रह्माणस्त्वावयं युजा”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ई

चतुर्थं त्वे—प्रथमा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इन्द्राग्नी आगतं सुतङ्गीर्भिर्नभो वरेण्यम् ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

अस्य पातन्धिये पिता ॥ १ ‡ ॥

इन्द्रश्चाग्निश्च “इन्द्राग्नी” † देवौ § “सुतम्” अभिषवा-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

† य० वे० ७, २१ = ऋ० व० ३, १, ११, १ । ऋ० “विश्वामित्रो गाथिनः”—इति ऋषि-नै० । दे० ‘इन्द्राग्नी इन्द्राग्रम्’—इति देव-नै० । इ० गाथयो । एव-मेवाग्निरत्र द्वयोः ।

‡ ऋ० षा० ३, २, ४, ८ = अथ तु १, १, ७, १ = १, १, ७, २ = २, २, ८ १ = २, २, ८, २ = २, १, ८, १ = ३, २, १०, १—इति सप्तसु ऋषि-युक्ते ‘इन्द्राग्नी’ ।

§ “अथास्य संक्षविका देवाः—अग्निः सोमो वरुणः पूषा बृहस्पतिर्ब्रह्मणस्पतिः पर्यतः कुत्सो विश्वं वायुः”—इति निर० दे० १, १० ।

दिभिः संस्कारैः संस्कृतम् अतएव “वरेण्य” वरण्येयं सन्धज-
नीय मिमं सोमं प्रति “गीर्भिः” अस्मदीयाभिर्वाग्भिराहुतौ सन्तौ
“नभः” नभसः स्वर्गाख्यात् स्थानात् “आगतम्” आगच्छतम् ।
आगत्य च “धिया” अस्माभिः क्रियमाणेन कर्मणा “इषिता”
इषितौ प्रेरितौ युवाम् “अस्य” इमं सोमं “पातं” पिबतं ।
यद्वा “धिया” अस्मदीयया बुद्ध्या इषितौ प्राप्तौ * अस्मद्वत्तया
प्रेरितौ युवा मिमं सोमं पिबतम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ २ ३ १ २ १ ३ १ २
इन्द्राग्नीजरितुःसचायज्ञोजिगातिचेतनः ।

३ १ २ ३ २ ३ २
अथापातमिमं सुतम् ॥ २ ॥

हे “इन्द्राग्नी” “जरितु” स्तोतुः‡ “सचा” स्वर्गादिलक्षण-
प्राप्तौ सहायभूतौ “यज्ञः” ज्योतिष्टोमादि-यज्ञ-साधनभूतचेतनः
इन्द्रियाणां चेतयिता आप्यायनकारी सन्नसौ सोमः “जिगाति”
युवा मभिगच्छति॥ “अथा” अस्मदीयया स्वतिलक्षणा अनया
वाचा आहुतौ सन्तौ युवां “सुतम्” अभिषवादि-संस्कारोपेतम्
“इमं” “पातं” पिबतम् ॥ २ ॥

* “इषता इषु इच्छायास् इच्छन्त्या”—इति वि० ।

† अ० वे० २, १, ११, २ ।

‡ ‘जरितुः स्तोतुः उद्गातुः’—इति वि० ।

॥ ‘जिगाति गायति चेतनः सुप्तोपमान मिदं चेतन इव’—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इन्द्रमग्निद्विविच्छदायज्ञस्य जूत्यावृणे ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

तासोमस्येष्टव्यताम् ॥ ३ * ॥ ई १

“यज्ञस्य” यज्ञसाधनभूतस्य सोमस्य “जूत्या” जूतिः प्रेरणं सोमस्तावद्यजमानं प्रेरयति । साधनमुपलभ्य तत् साध्ये क्रतौ यजमानः प्रवर्त्तत इति हि तस्य प्रेरकत्वम् । तथा प्रेरणरूपतया जूत्या ः प्रेरितोऽहं स्तोता “कविच्छदा” कवीनां स्तोतृणां सुचितफल-प्रदानेनोपच्छन्दको इन्द्रमग्निं च युवा “वृणे” सम्भजेत आगतौ च ताविन्द्राग्नी “इह” अस्मदीये अस्मिन् कर्मणि “सोमस्य” सोमेन सोमयागेन “व्यताम्” व्य्यताम् ॥ ३ ॥ ७

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य प्रथमस्याध्यायस्य

द्वितीयः खण्डः ॥ २ ॥

● अ० वे० ३, १, ११, ९ ।

† इदं मेन्द्राय माध्यम् । ‘प्रातः सवनं समाप्तम्’—इति वि० ।

‡ ‘जूत्या अभिष्टदा निमित्तभूतया’—इति वि० ।

॥ “तान्येतानि प्रातःसवने गायत्रिसामानि गोयमानानि चत्वार्यार्यस्तोत्राणीत्युच्यन्ते”—इति मी० द० जै० अ० ८ अध्या० ४ पा० ३ अधि० । ‘यदाजिमौयुक्तदायानां माध्यत्वम्’—इति चैतन्निर्वचनम् ता० ब्रा० ७, २ । एकाव्यस्तोत्रेषु पञ्चदशनामकः क्षोभो भवति ; तद्विधायकं ब्राह्मणं ताण्ड्यम्, ‘पञ्चभ्योद्विहरोति’—इत्यादि (१, ४-

तृतीयखण्डस्य,

प्रथमतचे—प्रथमा ।

३ १ २ ३ ११ २२ ३ ११ २२
उच्चातेजातमन्धसोदिविसङ्गम्याददे ।

३ १ २ ३ २ ३ १ २
उग्रशर्ममहिअवः ॥ १ * ॥

हे सोम ! “ते” तव सम्बन्धिनः “अन्धसः” रसस्य “उच्चा” उपरि “जातं” जन्म अपिच “दिवि” द्युलोके “सत्” तव सम्बन्धि “उग्रम्” उद्गूर्णं “शर्म” सुखं “महि” महत् । “अवः” अन्नं “भूमि” भूमिष्ठैः यजमानैः “आ ददे” आदीयते ॥ दिविसद्”-“दिविषद्”—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सनइन्द्राययज्यवेवरुणायमरुह्यः ।

५-६) तत्रैवेतद् विवृतित्रयं परिस्पृष्टम् । सोमोऽयं द्वितीयं पृष्ठं इत्यप्युच्यते किञ्च सत्रेषु षड्विंशतितमे दिने, षट्पञ्चाशत्तमे दिने, षडशीतिदिने, षोडशाधिकशतदिने, षट्त्वारिंशदधिकशतदिने, सप्तत्यधिकशतदिने, ऋगनवत्यधिकशतदिने, दशाधिकद्विशतदिने, चत्वारिंशदधिकशतदिने, सप्तत्यधिकद्विशतदिने, त्रिशततमे च दिने विनियुज्यते । विस्तरस्तु तावदा-चतुर्थप्रपाठकादिके ।

० ऋ० आ० ५, २, ४, १ (२ आ० २ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, १८, ५ ।
ऋ० ‘अमहीयुः आङ्गिरसः’—इति ऋषिर्ने० । दे० ‘पवमानः सोमः’—इति देव-ने० ।
० गायत्री । एवमेवाचोत्तरत्र द्वयोः ॥ इदानीं माध्वन्दिनः पवमानः । गायत्री वृद्धती त्रिष्टुति जन्दांसि । पुष्कलोऽग्निर्वामहीयवोऽग्निरुषन्द्नीषुषाजीवउग्रनाःकाथः इति आर्षाणि । सोमः सोमदेवता साम-देवता विस्तरमवाप्नोत्यर्कः—इति वि० ।

^{१ ११ १२}
वरिवोवित्परिस्त्रव ॥ २ * ॥

हे सोम “वरिवोवित्” धनस्य लभकः पवमानः † “नः”
अस्माकं ‡ “यज्यवे” यष्टव्याय ¶ “इन्द्राय” “वरुणाय” च
“मरुद्भ्यः” च “परि स्त्रव” धारया चर § ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

^{३१ ३२ ३२७ ३ १ ३१ २}
एनाविश्वान्यर्यआद्यु म्नानिमानुषाणाम् ।

^{१ २}
सिषासन्तोवनामहे ॥ ३ ** ॥ ८ ††

“मानुषाणां” मनुष्याणां लब्धव्यानि “एना” एनानि
“विश्वा” विश्वानि सर्वाणि “द्युम्नानि” यज्ञसाधनानि धनानि ‡
हे सोम ! त्वत्प्रसादात् “आ” आभिमुख्येन “अर्यः” ¶ आभि-

* ख० आ० आर० १, ७ (२ भा० २५४ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, २०, २ ।

† ‘वरिवः वरिष्ठः । वित् भक्षणीयः’—इति वि० ।

‡ ‘नः अस्माभ्यम्’—इति वि० ।

¶ ‘यज्यवे यजमानार्थे’—इति वि० ।

§ ‘परिस्त्रव परि समक्तात् दशाप्रवित्रात् स्त्रव’—इति वि० ।

** ख० आ० आर० १, ८ (२ भा० २५६ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, २०, १ ।

†† इदं साध्यन्दिनपवसान साद्यम् ।

‡ ‘द्युम्नानि अस्त्रानि’—इति वि० ।

¶ ‘अर्यः यजमानः’—इति वि० ।

गच्छन्तः वयं "सिषासन्तः" सम्भुक्त मिच्छन्तश्च * "वनामहे" त्वां
सम्भजामहे † ॥ ३ ॥ ८

॥ अमहौयवम् ॥ उच्चाताश्इजातमन्धसाः । दिवा
इसाऽ११३२ । मियार३ददाइ । उग्र११३२ । मद्धार३
इश्रवाउ । वा३ ॥ (१) सनआश्इन्द्राययज्यवाइ । वरुणा
११३२ । मरु३३३३३३ । वरिवोवाइत् । परार३३३
वाउ । वा३ ॥ (२) एनावाश्इश्वानिअर्यआ । द्युम्नानाऽ१३
मा३ । नुषार३णाम् । सिषासन्ताः । वना३३महाउ ।
वा३ । स्तौषे३३३३३३ ॥ १ ॥ [१]

॥ क्षुल्लकवैष्टभम् ॥ उच्चाऽ१३३ । जाइतमन्धसाः ।
दायिवीसद्भू । मियादा१दे३३ । होवा३हायि । उग्रा१

* 'सिषासन्तः साधयन्तः'—इति वि० ।

† 'वनामहे आक्यासः'—इति वि० ।

‡ क० गा० १ प्र० १ अ० १ सा० ।

^२ ^{१ २ २} ^१ ^३ ^{४ २}
 शा^१र्मा^२३ । होवा^३हायि । मद्दि । आ^१र^३वा^२३४^४औ
^{१ २} ^{४ ३} ^{४ २ ३ ५} ^{१ २ २}
 होवा[॥](१) सना^५३ । द्रा^३य^२य^३ज्य^४वायि । वारू^१णाय । म
^{१ २} ^{१ २ २} ^{१ २}
 रुद्भा^१थ्या^२३ । होवा^३हायि । वरायि^१वो^२वी^३३न् ।
^{१ २} ^१ ^{४ २ २} ^{४ २ ३}
 होवा^३हायि । परि । स्मार्^१वा^२३४^४औहोवा[॥](२) एना^५३
^४ ^{२ ३ ५} ^{१ २ २ २} ^{१ २}
 वि । श्वा^३नि^२अ^३र्य्य^४आ । द्यू^१म्नानिमा । नूषा^१णा^२३म् ।
^{१ २} ^{१ २} ^{१ २ २} ^{१ २}
 होवा^३हायि । सिषामा^१शंता^२३ । होवा^३हायि । वना ।
^३ ^{४ २ २} ^३ ^५
 मार^१हार^२३४^४औहोवा । दी^३र^४३४^५शाः^३ ॥ १३ * ॥ [२]
^१ ^२ ^१ ^२ ^१
 ॥ आजिगम् ॥ उच्चा^१तेजा । तमान्धा^२साः । दि
^{१ २} ^{१ २} ^२ ^१ ^२ ^१
 विमद्ग । माया^१शदा^२३दायि । उग्रा^३शर्मा । मद्दि^४आ
^२ ^१ ^२ ^१ ^२ ^{१ २ २}
 र^३वा^४३४^३ ॥(१) सना^५आयिन्द्रा । यथा^३ज्या^२वायि । वरूणा
^{१ ०} ^२ ^१ ^२ ^१ ^२
 य । मारू^१द्गा^२३याः । वरायि^१वो^२वीत् । परि^३स्मार्^४वा^५३४
^{१ २} ^२ ^१ ^२ ^{१ २ २ २} ^१
 ३ ॥(२) एना^५वायिश्वा । नि^३अ^४र्य्य^५आ । द्यू^१म्नानिमा । नू

२ १ २ १ २ १ २ १
 पार३णाम् । सिषासान्ताः । वनामार३हा३४३यि ।

१
 ओ३३४पु३ । डा (३) ॥ ८ * ॥ [३]

१ २ २ २ २ २ २ २
 ॥ आभीकम् ॥ ऊ३३४जातेजापु । तमौहोन्धा

१ २ १ २ २ २ २ २ २ २
 साः । दिविसङ्गमिया१दा३दे । उग्र३गार३४र्मा । मा

२ २ २ २ २ २ २ २
 हा३उवा३४३ । आ३४पुवो३हायि ॥ (१) सा३३४नइन्द्रा५ ।

२ ४ ५ १ २ २ २ २ २ २
 ययौहोज्यावायि । वरुणायमरु१ङ्गा३याः । वरिवो३४

५ १ २ २ २ २ २ २ २ २
 वीत् । पारा४उवा३४३ । सा३४पुवो३हायि ॥ (२) आ३३४

२ ४ ५ १ २ २ २ २ २ २
 विनाविश्वा५ । नियौहोर्था३आ । द्युम्नानिमानू१षा३णा

२ २ ५ १ २ २ २ २ २ २
 म् । सिषासार३४न्ताः । वाना३उवा३४२ । मा३४पुहो

५
 इहायि(३) ॥ १० * ॥ [४]

२ २ २ २ २ २ २ २
 ॥ गायत्रीवैरूपम् ॥ उजाते३३४जा । तमान्धा३साः ।

१ २ ५ १ २ २ २ २
 दिवारयिसा३३४ङ्ग । माया१दादा३यि । उग्रार३म् ।

२ ५८ ८ १ १ २ ३ १ १ १ १ २ १
 शर्मा^१३४^२औ^३हो^४वा । म^५हि^६अ^७वा^८३४^९पुः ॥ (१) स^{१०}ना^{११}पा^{१२}३४^{१३}यि
 ३ १ १ २ १ १ १ १ १ ७
 न्द्रा । य^१या^२ज्या^३वा^४३यि । व^५रु^६णा^७३४^८या । मा^९रु^{१०}द्भा
 १ १ २ ५ ८ ८ १ १ १ ३ १ १
 या^१३ः । व^२रा^३३यि । वो^४वा^५३४^६औ^७हो^८वा । प^९रि^{१०}स^{११}वा^{१२}३
 १ १ १ ८ १ ५ १ १ १ १ १ १
 ४५ ॥ (२) ए^१ना^२वा^३३४^४यि^५श्वा । नि^६पा^७र्या^८३चा^९३ । द्यु^{१०}म्ना^{११}३
 ३ ५ १ २ १ १ १ १ १ १
 ना^१३४^२यि^३मा । नू^४षा^५१णा^६२म् । सि^७षा^८३३ । स^९न्ना^{१०}३४
 ५ ८ १ १ १ २ ३ १ १ १ १
 औ^१हो^२वा । व^३ना^४म^५हो^६३४^७पु^८यि^९ (३) ॥ १२ * ॥ [५]

१ १ १ ८ १ १ १ १
 ॥ स^१न्ना^२सा^३ही^४यम् ॥ उ^५च्चा^६३४ । ते^७जा^८त^९म^{१०}न्ध^{११}सः ।
 ५ ५ १ १ १ १ १ १ १
 औ^१हो^२वा । दि^३वि^४स^५द्भ^६मि^७या^८दा^९३दा^{१०}यि । ऊ^{११}३याम् । शा
 २ १ ५ १ १ १ १ १ १ १
 र^१र्मा । म^२हो^३३हो । वा^४च्चा^५३४^६३यि । आ^७३४^८वो^९हो^{१०}हो
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
 यि ॥ (१) स^१ना^२३४ः । इ^३न्द्रा^४य^५य^६ज्य^७वे । औ^८हो^९वा । व^{१०}रु^{११}णाय
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
 म^१रु^२द्भा^३३याः । वा^४३रा^५यि । वो^६रु^७वो^८त् । प^९रौ^{१०}३हो ।
 ३ १ १ ५ ५ १ १ १ १ १
 वा^१च्चा^२३४^३३यि । स्ना^४३४^५वो^६हो^७होयि ॥ (२) ए^८ना^९३४ । वि^{१०}श्वान्य

र्यथा । ओ३वा । द्यु॒म्नानि॑मानुषा॒रणाम् । सा॒र॒यिषा ।

सा॒र॒ज्ञताः । वनो॑र॒हो । वाहा॑र॒धुयि । मा॒र॒र॒हो॑

हायि॑(३) ॥ १२ * ॥ [६]

॥ स्वार॑सौपर्णम् ॥ उ॒च्चा॑तेजा॒तम॑न्ध॒रसाः । दि॒वि
सद॑भूमि॒या । हु॒म् । दा॒र॒र॒हदा॑यि । ऊ॒ग्रा॒र॒उ॒वा । श॒र्म ।
म॒हो॒र॒र॒हवा । आ॒प॒वो॒ह॒हायि ॥ (१) स॒न॒इन्द्रा॑य॒यज्या॑र॒वा
यि । व॒रू॒णाय॑म॒रू । ऊ॒म् । द॒भा॒र॒र॒हयाः । वा॒रा॒र॒उ
वा । वो॒वित् । प॒रो॒र॒र॒हवा । स्ना॒प॒वो॒ह॒हायि ॥ (२) ए॒ना
वि॒श्वान्य॑र्या॒श्वा । द्यु॒म्नानि॑मा॒नू । ऊ॒म् । पा॒र॒र॒हणाम् ।
सा॒यिषा॑र॒उवा । स॒न्ताः । व॒नो॒र॒र॒हवा । मा॒प॒वो॒ह॒हा
यि॑(३) ॥ १० * ॥ [७]

॥ शा॒क्व॒र॒वर्णम् ॥ उ॒च्चा । तेजा॑तम॒न्धसाः । दि॒वि

^{२ १} अर्थ्य^{२ १} आ । ^२ द्युम्नाना^१ र^१ र^१ यिमा । ^१ नुषा^१ णाम् । ^२ सिषासा^२
^४ १न्तार^४ र^४ वा । ^४ ना । ^{४ २} महो^{४ २} र^{४ २} ४ पू^{४ २} र्द् । ^४ डा^४ (३) ॥ १४* ॥ [८]

^{१२ २} ॥ ऋषभः पावमानम् ॥ ^{२ २} द्वाहाउ^{२ २} च्चातेजा । ^२ द्वा^२ र^२ ।
^४ द्वा^४ र^४ यि । ^{१ १} तामा^{१ १} र^{१ १} न्वा^{१ १} र^{१ १} ३४ साः । ^{१ १} दिवि^{१ १} स^{१ १} द्भूमि^{१ १} या^{१ १} श^{१ १} दा^{१ १} र^{१ १}
^२ दे । ^२ उग्र^२ १^२ शार^२ र^२ ३४ र्म्मा । ^{१ १} ओमो^{१ १} र^{१ १} । ^{४ ४} महो^{४ ४} वा । ^४ आप^४
^५ वो^५ द्द्वा^५ यि ॥ (१) ^{२ २} द्वा^{२ २} द्वाउ^{२ २} सन^{२ २} इन्द्रा । ^२ द्वा^२ र^२ । ^१ द्वा^१ र^१ यि । ^१ या^१
^३ या^३ र^३ ज्या^३ र^३ ३४ वायि । ^{१ २} वरुणा^{१ २} यम^{१ २} हू^{१ २} श^{१ २} द्भा^{१ २} र^{१ २} याः । ^३ वरि^३ वो^३
^५ र^५ ३४ वीत् । ^{१ २} ओमो^{१ २} र^{१ २} । ^{४ ४} परो^{४ ४} वा । ^४ स्वा^४ पू^४ वो^४ द्द्वा^४ यि ॥ (२) ^{२ २} द्वा^{२ २}
^{२ २ २} द्वा^{२ २ २} वेना^{२ २ २} वि^{२ २ २} श्वा । ^२ द्वा^२ र^२ । ^१ द्वा^१ र^१ यि । ^{१ ३} ना^{१ ३} आ^{१ ३} र^{१ ३} र्थ्या^{१ ३} र^{१ ३} ३४ णा ।
^{१ २} द्युम्ना^{१ २} निमा^{१ २} नू^{१ २} षा^{१ २} णाम् । ^{१ २} सिषा^{१ २} सा^{१ २} र^{१ २} ३४ न्ताः । ^{१ २} ओमो^{१ २} र^{१ २} ।
^{४ ५} वनो^{४ ५} वा । ^४ मा^४ पू^४ द्दो^४ द्द्वा^४ यि (३) ॥ १० ॥ [१०]

॥ गौषूक्तम् ॥ उच्चातेजातमौ । हौहोवाहायि ।
 धसाः । दिविसदभूमियौ२ । ऊवायि । ऊवारयि ।
 दादा२यि । उग्र२शर्ममहौ२ । ऊवायि । ऊवा२
 यि । आवा२३ः । हो२वा२३४ औहोवा ॥ (१) सनइन्द्राय
 यौ । हौहोवाहायि । ज्यवायि । वरूणायमरौ२ ।
 ऊवायि । ऊवा२यि । द॒भाया२ः । वरिवोवित्प॒रौ२ ।
 ऊवाहि । ऊवा२यि । स्वावा२३ । हो२वा२३४ औहो
 वा ॥ (२) एनाविश्वानियौ । हौहोवाहा । र्य॒आ । द्यु॒म्ना
 निमानुषौ२ । ऊवायि । हुवा२यि । षाणा२म् ।
 सिषासन्तोवनौ२ । हुवायि । हुवा२यि । माहार३यि ।
 हो२वा२३४ औहोवा । अग्निराहुता२३४५ः (३) ॥ २* ॥ [११]
 ॥ स्वारसैन्धुक्षितम् ॥ उच्चातेजातमन्वासाः । दा

^२यिविसद्भू । ^१मियादादौ । ^{२२}होवा३हायि । ^१ऊग्रा२७
^१शाम्ना२३ । ^१महो२३४वा । ^५आधुवो६हायि ॥ (१) ^५सनइन्द्रा
^१ययज्यावायि । ^१वारुणाय । ^{२२}मरुद्भायौ । ^२होवा३हा
^१यि । ^१वारा२यिवोवी२३त् । ^{२१}परो२३४वा । ^५साधुवो६हा
^{२२}यि ॥ (२) ^२एनाविश्वानिअर्य्याआ । ^१द्यूम्नानिमा । ^१नूषाणौ ।
^२होवा३हायि । ^२सायिषा२सान्ता२३ः । ^१वनो२३४वा । ^५मा
^५पुहो६हायि(३) ॥ ७ * ॥ [१२]

^२२२२१२ ^१२३
 ॥ ऐडसौपर्णम् ॥ उच्चातेजोवा । तामन्ध्रा२३४
^५साः । ^{१२}दिवायिसद्भू । ^१मिया२दा२३४हायि । ^७ऊ२
^१ग्राम् । ^२शा२३र्मा । ^१माहि३वा । ^२औ३होवा ॥ (१) ^५सन
^१इन्द्रोवा । ^१यायज्या२३४वायि । ^५वारुणाया । ^{२१}मरुद्भा
^५२३४याः । ^१वा२रायि । ^२वो२३वीत् । ^१पारि३स्ववा । ^२औ

^{४ ५} ३होवा ॥ (२) ^{१ २} एनाविश्वोवा । ^{१ २ ३} नाचर्या २३४ आ । ^५ द्युम्ना

^{२ १} निमा । ^{१ ५} नूरषा २३४ णाम् । ^१ सारयिषा । ^२ सारज्ञताः ।

^{१ २ २} वानामहा । ^{२ ४ ५} औहोवा । ^४ होपुई । डा(३) ॥ १७* ॥ [१३]

॥ ^{२ २ १ २} सुरुपोत्तरम् ॥ ^१ उच्चातेजौहो २ । ^२ इया । तम

^१ न्वासा २ः । ^१ दिविसद्भौहो २ । ^{१ २ १} इया । ^{१ २ १} मियादांदा २

^१ यि । ^१ उग्रशम्रौहो २ । ^{२ १} इया । ^१ महिश्रा २३वा ३४३ः ॥ (१)

^{२ १} मनइन्द्रौहो २ । ^१ इया । ^{२ १} ययज्यावा २यि । ^{१ २} वरुणायौहो

^१ २ । ^{२ १} इया । ^{१ २} मरुद्भाया २ः । ^१ वरिवोवौहो २ । ^१ इया ।

^{१ १} परिस्त्रा २३वा ३४३ ॥ (२) ^{२ २ २ १} एनाविश्वौहो २ । ^१ इया । ^{२ १} निचर्या

^{२ १} आ २ । ^१ द्युम्नानिमौहो २ । ^{२ १} इया । ^१ नुषाणरुम् । सि

^{१ १} षामन्तौहो २ । ^१ इया । ^{२ १ २} वनामार ३४३४यि । ^१ ओ २३
४पुई । डा (३) ॥ ३ १ ॥ [१४]

* ऊ० गा० १३ प्र० १ ख० १७ मा० ।

। ऊ० गा० १४ प्र० १ ख० ३ सा० ।

२८ २८
 ॥ अदार॑द्यत् ॥ चा॒ज॒ज्ञा॒ते॒जा । त॒मा॒र॒न्धा॒सी॒र ।
 १ २ १ १ १ १
 दि॒वि॒स॒द्भू॒मि॒या॒र॒दा॒दा॒र॒यि । उ॒या॒र॒न्धा॒र्मा॒र । म॒हि॒ ।
 ३ ५८८ २८ १
 आ॒र॒वा॒र॒३४औ॒हो॒वा ॥ (१) चा॒उ॒सन॒इ॒न्द्रा । य॒या॒र॒ज्या॒वा ।
 १ २ १
 र॒यि । व॒रु॒णा॒य॒म॒रु॒र॒द्भा॒या॒रः । व॒रा॒र॒यि॒वो॒वी॒र॒त् ।
 १ ३ ५८८ २८ २८ २८
 प॒रि । स्वा॒र॒वा॒र॒३४औ॒हो॒वा ॥ (२) चा॒वे॒ना॒वि॒श्वा । नि॒आ
 १ १ २ १ १
 र॒र्या॒आ॒र । द्यु॒म्ना॒नि॒मा॒नू॒र॒षा॒णा॒र॒म् । सि॒षा॒र॒सा
 १ ३ ५८८ ११ २८
 न्ता॒रः । व॒ना । मा॒र॒हा॒र॒३४औ॒हो॒वा । अ॒स्म॒भ्य॒ङ्गा॒तु
 १२ ३ ११११
 वि॒त्त॒मा॒र॒३४५॒म् (३) ॥ ४ * ॥ [१५]

५८ २८ १ १
 ॥ इ॒डा॒ना॒सं॒क्षारः ॥ औ॒हो॒यि॒हु॒वा॒र॒हो॒यि । उ
 २ २ ४ २८ ५ २ ४ २ ३ ५
 ज्ञा॒ते॒जा॒इ॒ता॒म॒न्ध॒सः । दि॒वि॒म॒द्भू॒मी॒श्या॒द॒दा॒यि ।
 ३२ ३ ५ २ १ २ १ २
 उ॒या॒न्धा॒र॒३४र्मा॒ । म॒हि॒श्र॒वः । इ॒डा॒र॒३ ॥ (१) स॒न॒इ॒न्द्रा॒र
 ४ २ ३ ५ २ २ ४ २८ ५ ३२ ३
 या॒श्र॒ज्य॒वा॒यि । व॒रु॒णा॒या॒इ॒मा॒र॒द्भ॒यिः । व॒रा॒यि॒वो॒र॒३

४ ५ १ १ २ १ २ २ ४ ५ ४
४वीत् । परिस्त्रव । इडा२३ ॥ २ ॥ एनाविश्वा३नी३अर्थ्या ।

२ २ ४ २ ४ ५ २ २ १ ३ २ २
द्युम्नानिमा३नू३षाणाम् । औद्योयि३हुवा३होयि । सिषा ।

१ ५ २ १ २ २ २ १ ४ ५
सा२३४न्ताः । वनाम३चे । इडा२३भा३ । ए३दीडा ।

४
हो५ई । डा(३) ॥ ५ * ॥ [१६]

२ १ २ २ २ २
॥ आशुभार्गवम् ॥ उच्चाते । जातमन्वा३माः ।

१ २ १ ३ ५ १ २
दायिविसद३भू३ । माया३रदा२३४दायि । उग्रा३शा३

३ २ १ ५ ५ १ १ १ २ २
मार्३ । महा३यि । आ२३४वो३इहायि ॥ (१) सनइ । द्र३

२ १ २ १ ५ ५ ४
ययज्या३वायि । वारुणाया३ । मा३रु२३द३भा२३४याः ।

१ २ २ २ ५ ५ २ २
वरायिवो३वी३रत् । परा३यि । सा२३४वो३इहायि ॥ (२) ए

१ २ २ २ २ ५ ५ २ २
नाविश्वा३नि । अर्थ्या३इथा । द्यूम्नानो३ । मानू३रषा२३

५ १ २ २ २ ५ ५
४णाम् । सिषासा३न्ता३रः । वना३ । मा२३४हो३इहा

यि(३) ॥ ११ ॥ [१७]

॥ सौमित्रम् ॥ उच्चातेजातमन्धसा३ए । दिविस
 द्भूमि । आ२१२३ । ददा३४३यि । ऊ२३ग्राम् । श
 मरि२ओ२३ । महोवा । आप्रवो६हायि ॥ १ ॥ सनइन्द्राय
 यज्यवा३ए । वरुणायम । रु२१२३ । दभिया३४३ः ।
 वार३रायि । वोवा२ओ२३ । परोवा । स्वाप्रवो६हा
 यि ॥ (२) एनाविश्वान्यर्य्यआ३ए । द्युम्नानिमा । नू२१२३ ।
 प्राणा३४३म् । सार३यिषा । सन्ता२ओ२३ । वनो
 वा । माप्रवो६हायि(३) ॥ ६ * ॥ [१८]

॥ ऐटतम् ॥ उच्चा । एउच्चा । तेजातम् । आ
 ३ । जार२मार३४ओ३होवा । धार३४साः । दिवायिमा
 ३३४द्भू । मिया३ । मारयार३४ओ३होवा । दार३४दे ।
 उग्रांशार३४र्मा । मद्धारयि । मार३हार३४ओ३होवा ।

३ ५ १२ १ २ २
आ२३४वाः ॥ (१) सनः । एसानाः । इन्द्राय । या । ३ ।

१ ३ ५ २ ३ ५
या२व्या२३४औहोवा । ज्या२३४वे । वरुणा२३४या ।

३ २ १ ३ ५ २ ३ ५
मरु३ । मारु२३४औहोवा । दभी२३४याः । वरायिवो

५ ३ २ १ ३ ५ २ ३ ५
२३४वौत् । परा३यि । पार२२३४औहोवा । मार३४वा ॥ (२)

१ २ १ २ २ १ ३ ५ २
एना । एआयिना । विश्वानि । आ३ । नार२आ२३४औहो

३ ५ २ ३ ५ ३ २ १ ३
वा । र्या२३४आ । द्यून्ना२३४नी । मानू३ । मार२नूर३४

५ २ ३ ५ २ ३ ५ ३ २
औहोवा । षार३४णाम् । सिषासार३४न्ताः । वना३ ।

१ ३ ५ २ ३ ५
वारनार३४औहोवा । मार३४हे (३) ॥ ७ * ॥ [१८]

१ २ २ २ ५ १
॥ धुरासाकमश्वम् ॥ उच्चातेजा३ । द्यौ३हो३१ ।

२ ५ २ १ ५ २
तमन्धसा३ः । द्यौ३हो३१यि । दिविसद॒भू३ । द्यौ३हो

२ २ ५ २ २
३१यि । मियाददा३यि । द्यौ३हो३१यि । उग्र॒शर्मा

५ १ २ ५ २
३ । द्यौ३हो३१यि । मद्दिश्रवा३ः । द्यौ३हो३१२३४५ई ।

डा ॥ (१) म॒नइन्द्रा॑३ । हौ॑३हो॑३१ । ययज्यवा॑३यि । हौ॑
 ३हो॑३१यि । वरु॑णाया॑३ । हौ॑३हो॑३१यि । मरु॑द्भिया
 ३ः । हौ॑३हो॑३१यि । वरि॑वोवी॑३त् । हौ॑३हो॑३१यि । प
 रि॑स्रवा॑३ । हौ॑३हो॑३१२३४५ई । डा ॥ (२) ए॒नावि॑श्वा॑३ ।
 हौ॑३हो॑३१ । नि॒अर्य॑आ॑३ । हौ॑३हो॑३१यि । द्यु॒म्नानि॑
 मा॑३ । हौ॑३हो॑३१यि । नु॒पाणा॑३म । हौ॑३हो॑३१यि ।
 मि॒षाम॑न्ता॑३ः । हौ॑३हो॑३१यि । वना॑म॒क्षा॑३ । हौ॑३हो॑
 ३१२३४५ई । डा (३) ॥ ८ * ॥ [२०]

॥ वि॒न॒म्वसौ॑पर्ण॑म् ॥ उ॒च्चा॑तेजा॒तम॑न्व॒सः । ई॒य
 इ॒या॒द्या॑यि । दि॒वि॒स॒दभू॑मि॒या । हा॑३हा॑३यि । दा॑२३४
 टा॑यि । ऊ॒ग्रा॑उ॒वा॑३ । शा॒र॒म्मा॑२३४ औ॒हो॑वा । म॒हि
 अ॒वा॒२३४५ः ॥ (१) स॒नइन्द्रा॑ययज्यवे । ई॒यइ॒या॒द्या॑यि । व

४२५२ २ १ १ १ ४ १ १
रूणायमंरु । द्वा३हा३यि । दंभा२३४या । वारा३उ

१ १ ३ ५२२ २ १ १ १ १ २२२२
वा३ । वो२वा२३४औ३होवा । परि३वा२३४५ ॥ (२) एन ।

२२१ २२ १२१ १ ४ ३२ ४२ ५२ १
विश्वान्यर्थ्यभा । इयइयाद्वाहि । द्युम्नानिमानू । हा३

२ १ ४ १ २ २ १ ३
द्वा३यि । षा२३४णाम् । सायिषा३उवा३ । सार्न्ता

५२२ २२ १ १ १ १ १
२३४औ३होवा । वनामहार२३४पूयि(३) ॥ ८ * ॥ [२१]

१ २ १ २ १ ३
॥ मार्गीयवाद्यम् ॥ उच्चौ३होवा । तेजा२ । तर्मा

३ ४ १ २ २ १ २ १
न्वा२३४साः । दिविसद्भू । मियादा१दा२यि । उग्र

२ १ ३ ४ १ १ ३
म् । द्वा । औ३होयि । शा२३४र्मा । मारद्वा२३४

५२२ २ १ १ १ १ १ २ १ ५ १
औ३होवा । ए३ । अवा२३४५ः ॥ (१) रुनौ३होवा । आयि

३ ३ ३ ४ १ २२ १ २
न्द्रा२ । ययाज्या२३४वायि । वरूणाय । मरुद्भा१

१२ २ २ १ ५ १
या२ । वरा । द्वा । औ३होयि । वो२३४वीत् । पा

^{१ २} २रा२३४ औहोवा । ^{४ २ २} ए३ । ^{१ १ १ १ १} स्रवा२३४पु ॥ (२) एनौहोवा ।

^१ वायिश्वा२ । ^{३ २ ३ ४} निआर्य्या२३४आ । ^{१ २ २ २} द्युम्नानिमा । ^{१ २} नूषा१

^{१ २} णा२म् । ^{२ २} सिषा । ^{३ ४} हा । ^{३ ४} औ३होयि । ^{३ ४} सार३४न्ताः ।

^{१ ३} वार२ना२३४ औहोवा । ^{४ २ २} ए३ । ^{१ १ १ १ १} महा२३४पुयि(३) ॥ १४* ॥ [२२]

^{३ ४ २ २ १} ॥ ऐडकौत्सम् ॥ ^४ सनाहोन्द्रा२३ । ^४ ययज्यवर्हया ।

^{१ २ २} वारुणायमरुद्भियः । ^{१ २ २} वारुणाय । ^{१ २ २} मरुद्भा२३याः । ^१ वा

^{२ ३} रा३यिहायि । ^{१ २ २ ४} वोवी३ह्यायि । ^{१ २} परिस्वा२३वा३४३ । ^१ ओ
२३४पुडं । ^{४ ४} डा(२) ॥ ४ ॥ [२३]

^{२ २ २} ॥ सौमित्रम् ॥ ^{२ २} एनाविश्वा^१न्यर्य्या^{१ २ २}आ३ण । ^{१ २ २} द्युम्नानि

^{१ २} मा । ^{२ २} नू२१२३ । ^{१ २} षाणा३४३म् । ^{१ २} सार३यिषा । ^{१ २} सन्ता

^१ २औ२३ । ^{४ ४} वनोवा । ^{४ ४} मापुहोईहायि(३) ॥ १८* ॥ [२४] ८

* ऊ० गा० २० प्र० २ अ० १४ सा० ।

+ ऊ० गा० २२ प्र० १ अ० ४ सा० ।

‡ ऊ० गा० १६ प्र० १ अ० १४ सा० ।

द्वितीयस्या ऋचोऽगानमेतत् ।

तृतीयस्या ऋचोऽगानमेतत् ।

अथ द्वितीया ।

१ १२ १२ ३ १२ १२ ३ २ ३ २ ३ २
 दुहानजधर्दिव्यमधुप्रियमन्नसधस्थमासदत् ।

१ २ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
 आपृच्छयन्धरुणवाज्यर्षसिनृभिर्द्वौतोविचक्षणः ॥ २३ ॥ ८ ॥

“मधु” मदकरं ‡ “प्रियं” प्रीणनकारि ॥ “दिव्यं” दिवि-
 भवम् “जधः” सोमवल्ली-लक्षणं “दुहानः” पवमानः § सोमो-
 देवः “प्रन्न” पुरातनं “सधस्थ” सह तिष्ठत्यत्रेति सधस्थ
 स्थान मन्तरिचम् ॥ “आसदत्” आसीदति [सदेर्लुङि रूपं]
 तदनन्तरम् “आपृच्छ” कर्मणा प्रष्टव्यं “धरुण” कर्मणी
 धारयितारं यजमानं “वाजी” अन्नवान्** सन् हे सोम
 त्वम् “अर्षसि” तस्मै अन्नं दातु मतिगच्छसि । कीदृशः ?
 नृभिः कर्मनेहभिर्ऋत्विग्भिः “धोतः” अदाभ्यग्रहे परिशोधितः

‡ अ० वे० ७, ५, १२, ५ ।

† इदं सामान्दिकपवमानं द्वितीयम् ।

‡ ‘मधु खादु सोमाच्छम्’—इति वि० ।

॥ ‘प्रियं देवमनुष्याणाम्’—इति वि० ।

§ ‘दुहानः दुह्यमानः । जधः जधसः सकाशात् दशापवित्ररूपात् । अथवा
 जधउदकं यत्र क्षिपते सोमसस्य सकाशात् तद् दुह्यते’—इति वि० ।

॥ ‘सधस्थं स्थानं द्रोणकलशाच्छम्’—इति वि० ।

** अन्नवान्—सोमः, चरुः, पशु, धानाः, करवाः, पुरोडाशः, प्रतीनापः, पय-
 शेति ।

[“तैरेनः चतुराधूनीति पञ्च कृत्वः सम कृत्वो वा (१२, ५, १७)”—इत्यापस्तम्बेन सूत्रितम्] “विचक्षणः” सर्वस्य विद्वष्टा ॥

“नृभिर्होता”—“नृभिर्धूतः”—इति पाठो ॥ २ ॥ ८

१२ २ १ ५ १२
॥ रौरवम् ॥ पुनानः सोमाश्धारारश्चया । आपो

२ २ २ २ १२ १२
वसानो अर्षस्यारत्नधायो निमृतस्य सारश्चसाइ । ओहा

२ १२ २२ २ १२ २ १
श्चवा । उत्सो देवो हिरारश्चसाइ । ओहाश्चवा । एष्या ।

२ ५ ५ २२ २२ १ ५ १२ २
औश्चोवा ॥ (१) उत्सो देवो हिरारश्चसाइ २३४याः । उत्सो दे

२ २ २ २ १२ १२
वो हिरार्ययो दुहानजधर्दि वियम्नधूर्प्रियाम् । ओहाश्च

२ १ २ १२ २ १
वा । प्रत्नसधस्यमारश्चसाइ । ओहाश्चवा । सदात् ।

● तैः निपाभ्य-सञ्ज्ञकाङ्गिः, एनं सोममित्यर्थः; अदाभ्यपचे इति सञ्ज्ञाति-सञ्ज्ञः ।
अदाभ्यमिति प्रचविशेषस्य नाम, तथाहि—‘अदाभ्यं गृह्णात्यासिच निपाभ्याः
प्राये तस्मिन्नुष्णीं जौनं भून्वधायाम्नये वा गायत्र्यष्टयसमिति प्रतिमन्त्रं मुपयामः
सर्ववाविशेषात्’—इति का० औ० सू० १२, ५, १२—१५ । अस्यार्थः—तस्मिन्नुष्णरे
प्राये अंशुर्गृहीतः तस्मिन् होतृचमसस्या निपाभ्य-सञ्ज्ञा अप्यचानौष तस्मिन्निष्ठः
सोमकृताः प्रक्षिप्याग्नयेत्वेत्यादिभिर्मन्त्रैः क्रमेणादाभ्यं प्रचं गृह्णाति । मन्त्रैः सोम-
कृता प्रक्षेपो वेति केचित् । उपयामगृहीतोसीत्येतत् त्रिष्वपि मन्त्रेष्वदावदुपय-
नोयं सर्वशेषत्वादान्नामस्तेति ॥ किञ्च अभिषेकस्य सोमस्य सेवनीया आपो निपाभ्या
सञ्ज्ञाये ।

^{४ ५} श्रीरश्मिवा ॥ (२) ^१ प्रत्न^१ ए^१ स^५ ध^१ स्था^५ र^१ मा^५ सार^१ ३४ दात् । ^५ प्रा^१ त्न^५ ए^१ स^५
^१ ध^१ स्थ^१ मा^१ स^१ द^१ दा^१ पृ^१ च्छ^१ न्ध^१ रू^१ णं^१ वा^१ जि^१ या^१ र्ध^१ सा^१ इ । ^१ ओ^१ ह्वा^१ र^१ उ^१ वा ।
^१ नृ^१ भि^१ र्द्यौ^१ तो^१ वि^१ वा^१ र्ध^१ दा^१ इ । ^१ ओ^१ ह्वा^१ र^१ उ^१ वा । ^१ क्ष^१ णा । ^१ औ^१
^{४ ५} र्श्मि^४ वा । ^४ द्यौ^४ ऽपू^४ इ । ^४ डा^४ (३) ॥ २ # ॥ [१]

॥ यौधाजयम् ॥ ^{३ १} पु^३ ना^३ र्श^३ । ^{२ ४} ना^२ र्श^४ सो । ^{५ १} म । ^{५ १} धा^५
^{३ ५} रा^३ र्श^५ ४ या । ^{१ १} आ^१ पो^१ र्श^१ । ^{१ ५} व^१ सा^५ र । ^{३ १} न^३ आ^१ र्श^५ ४ ५ । ^{१ ५} पा^१ र्श^५ ४ सी ।
^{१ १ १ १} आ^१ रा^१ त्न^१ धा^१ : । ^{१ १} यो । ^{१ ५} नि^१ मृ^५ तार । ^{३ १} स्थ^३ सा^१ र्श^५ ४ ५ इ । ^३ दा^३ र्श^३
^{५ १} ४ सी । ^२ उ^२ त्सा^२ र । ^१ दा^१ इ^१ वो^१ र । ^{३ १} हि^३ रा^१ र्श^५ ४ ५ । ^३ ए^३ या^१ र्श^५ ४
^{१ ३ २} या^१ : ॥ (१) ^{३ २} उ^३ त्सा^२ र्श^५ ४ १ । ^{१ ४} दे^१ र्श^५ वो । ^{५ १ १ ५} हि । ^{५ १} र^५ ए^१ या^५ र्श^५ ४ या^५ : । ^{५ १} उ
^{१ १} त्सा^१ र । ^{१ ५} दा^१ इ^५ वो^५ र । ^{३ १} हि^३ रा^१ र्श^५ ४ ५ । ^{३ ५} ए^३ या^१ र्श^५ ४ या^५ : । ^{१ १ १} दु^१ ह्वा^१ न
^{१ १} ऊ । ^{१ १} धः । ^{१ ५} दि^१ वि^५ या^५ र्श^५ ४ ५ । ^{३ १} म^३ धू^१ र्श^५ ४ ५ । ^{५ १} प्री^५ र्श^५ ४ या^५ म् । ^१ प्र
^{१ ५} त्ना^१ र्श^५ म् । ^{१ ५} सा^१ धा^५ र । ^{३ १} स्थ^३ मा^१ र्श^५ ४ ५ । ^{५ १} सा^५ र्श^५ ४ दात् ॥ (२) प्र

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 त्ना३१म् । सा३ध । स्थम् । आसा३४दात् । प्रात्ना
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 ३म् । सधा३ । स्थमा३४पु । सा३४दात् । आपा
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 क्रियाम् । ध । रुणवा३ । जिया३४पु । घा३४सी ।
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 नृभा३४ः । धौतो३ । विचा ३४पु । क्षा २ ३ ४ णा (३)
 ॥ ३ * ॥ [२]

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 ॥ ऐडमायास्थम् ॥ आयिपुना । नाःसो । मधार
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 या । आपोवसा३१ । नोअर्षसी । आरत्नधा३१ः ।
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 योनिमृता । स्थसीदसी । जत्तोदेवा३१ः । हिरण्या३
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 ३या३४३ः ॥ (१) आउत्साः । दायिवो । हिरण्ययाः । ज
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 त्तोदेवा३१ः । हिरण्ययाः । दूहानज३१ । धर्दिवियाम् ।
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 मधुप्रियाम् । प्रात्नसधा३१ । स्थमासा३४दा३४त् ॥ (२)
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 आयिप्रत्नाम् । साधा । स्थमासदात् । प्रात्नसधा
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
 ३१ । स्थमासदात् । आपृच्छिया३१म् । धरुणवा । जि

यर्वसायि । नृभिर्द्यौता३१ः । विचक्षा२३णा३४३ः । औ
२३४५ई । डा (३) ॥ २० * ॥ [३]

॥ त्रिणिधनमायास्यम् ॥ पुनानः सोमधाद्वाउद्दोवा ।
राया३आ२३४पो । वसा२ । नचा३४५ । षार३४सी ।
आरा३४ । औद्दोवा । त्रधायोनिमृता२ । स्यसा३४५
ग्नि । दार३४सी । उत्सा३४ । औद्दोवा । दायिवो२
हिरा३४५ । एया२३४याः ॥ (१) उत्सोदेवो हिराद्वाउद्दोवा ।
एयाया३जर३३त्साः । दायिवो२ । हिरा३४५ । एया२३४
याः । दुहा३४ । औद्दोवा । नऊधर्दिविथारम् । मधू
३४५ । प्री२३४याम् । प्रत्ना३४ । औद्दोवा । साधा
२ । स्थमा३४५ । सा२३४दान् ॥ (२) प्रत्नसधस्थमाद्वाउ
द्दोवा । सा२दान्प्रा२३४त्नाम् । सधार । स्थमा३४५ ।

सा२३४दात् । आपा३४ । औहोवा । अन्धरुणंवा२ ।

जिया३४५ । पा२३४सौ । नृभा३४ । औहोवा । धौ ।

तौ३ । विचा३४५ । ज्ञा२३४णाः(३) ॥ १ * ॥ [४]

॥ कण्वरयन्तरम् ॥ पूनानःसोमधारया । अपोवमा ।

नो३आर्षा३सी । आरन्धायोनिमृतस्यसीदसा२३४ऐही ।

उत्सोदा२३४यिवाः । हिरा३१उवा२३ । ए३ । एयम्

आ ॥ (१) उत्सोदेवोहिरस्ययाः । उत्सोदेवो । हा३यिरा

ण्या३याः । दुहानऊधर्दिवियन्मधुप्रियार३४मैही । प्रन्

सा२३४धा । स्थमा३१उवा२३ । ए३ । सददा ॥ (२) प्रात्न

सधस्थमासदात् । प्रन्सधा । स्था३मासा३दात् । आ

पृच्छन्धरुणंवाजियर्षसा२३४ऐही । नृभिर्ज्ञौ२३४ताः । वि

चा३१उवा२३ । ए३ । ज्ञाणा (३) ॥ ४ * ॥ [५]

॥ दिनिधनमायास्यम्* ॥ पुनानःसोमधारया । ए३ ।

औ३हो५वाऽऽ । आपो३ । वसा३ । नचा३४५ । पा

३सी२३४५ । आरत्नधाः । योनिमृता । स्यासा३भा ।

औ३हो३ । दार३४सी । उत्साऔ३हो । दायिवो३ ।

हिरा३४५ । ण्या३या२३४५ ॥ (१) उत्सोदेवोहिरण्ययः ।

ए३ । औ३हो५वाऽऽ । जत्सो३ । दायिवो३ । हिरा

३४५ । ण्या३या२३४५ । दूचानज । धार्दिवियाम् ।

माधू३भा । औ३हो३ । प्री३४याम् । प्रत्नाऔ३हो ।

साधार । स्थमा३४५ । सा३दा२३४५त् ॥ (२) प्रत्नसधस्य

मासदत् । ए३ । औ३हो५वाऽऽ । प्रात्ना३म् । सधार ।

स्थमा३४५ । सा३दा२३४५त् । आपृच्छियाम् । धारु

१ १ २ १ ४ ४ ५ १ १ १
 णंवा । जायाश्चा । औश्हो । षाश्शसी । नृभाऔ
 २ १ ३ २ २ १ १ १ १ १
 श्चो । धौतोश्च । विचाश्च ४ ५ । आश्णाश्च ४ ५ : (३)
 ॥ ६ * ॥ [७]

४ २ ३ ४ २ ३ ४ ५ २ २
 ॥ उत्सेधम् ॥ पुनानः सोमधारया । पः । वसाश्च
 ३ २ ४ २ ५ २ २ २ ५
 औश्होवा । नोऽर्षसाश्चयि । हाश्शुवारश्च । ऊश्चपा ।
 ३ २ २ ४ ५ ४ ५ १ २ १ २ २ १
 आराश्चनधा । औश्होवाश्चयि । योनिमृता । स्थसीदा
 २ २ ५ ३ २ ४ २ ४ २
 सि । हाश्शुवारश्च । ऊश्चपा । उत्सोश्चदेवः । औ
 ४ ५ ३ २ ४ २ ४ २ ५ २ ४ २ ४ २ ४
 होवाश्चयि । हिराश्चण्यापुयाश्चपुद्ः ॥ (१) उत्सोश्चदेवोश्चिर
 ५ ३ २ २ ४ २ ४ २ ५ २ १
 ण्ययः । उत्सः । देवाश्चऔश्होवा । चिरण्ययाश्चः ।
 ३ ५ ३ २ ४ ५ ४ ५ ५
 हाश्शुवारश्च । ऊश्चपा । दुहाश्चनज । औश्होवाश्चयि ।
 १ २ १ २ १ १ २ ५
 धार्दिवियाम् । मधुप्रायम् । हाश्शुवारश्च । ऊश्चपा ।
 ३ २ ४ ५ ४ ५ ५ ५ ५ ५
 प्रत्नाश्चसध । औश्होवाश्चयि । स्थमाश्चसापुदाश्चपुत् ॥ (२)

४ ३ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४

३ २ ३ २ ४ २ ४ २

प्रत्नसधस्यमासदत् । प्रत्नम् । सधा३४औहोवा । स्थ

४ २

१ ४ ४

४ २ २ ४

मासदाऽरत् । हा३१उवा२३ । ऊ३४पा । आपा३र्चि

४ २ ४ ४

१ १ १

१ १ २

याम् । औहोवाहायि । धारुणंवा । जियर्षासि । हा

१ ४ ४

३ २ ४ २

४ २ ४ ४

३१उवा२३ । ऊ३४पा । नृभा३यिर्होतः । औहोवाहा

३ २ ४

३ १ १ १ १

यि । विचा३क्षापुणाईपु६ः । ऊ२३४५॥३॥ [८]

४ ३

४ २ ४ २ ४

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पुनाऽधनः । सो३मा३धाराया ।

१ २

१ १ २ २

१ २ १ २ २

आपोवसा । नो३आर्षा३सी । आरा३त्नधायोनिम् ।

२

१

१

२

१ २ २ २

तस्या२३सा । ऊ३मायि । दा३सायि । ऊ३तोदेवोहिरा

४ २ २

१ २

१

१

१ २ २

रण्ययाउ ॥ (१) ऊ३साः । दायिवो । हा३यिराण्या३याः ।

१

१ २

२

१

२ २

दुहा३नऊधर्हि३वि । य३मा२३धू । ऊ३मायि । प्रा३याम् ।

१

३ २

१ २

१

२

प्रा३त्नसधस्यमा३सदाउ ॥ (२) प्रा३त्नाम् । सा३धा । स्था३

१ २ २

१ १ १

२

२

मासा३दात् । आपा३र्च्य३न्धरुणम् । वाजा३३या ।

१ २ १ १ २ २ १ २ ३ ४
ऊभायि । पासायि । नृभिर्ज्ञातोविद्याश्चणाड । वा

२ १ २

३४५ (४) ॥ १२* ॥ [८]

॥ निषेधम् ॥ पुनानः^{१२}सोमा^२श्धारया^{१२} । अपोवसा^{११} ।

नोऽर्घसायि । इद्वा३ । आरात्नाधाः । हादो२३

४हा । ^{१ १ १}योनिमृता । ^{२ २ १ २}स्यमीदार३सायि । ^{१ १}इष्टा३ । ^१ज

१ ४ ५ १ ३ ५ ३ १ ४
 त्तोऽदायिवाः । चाहो२३४हा । द्विरा३ण्यापूया६५६ः ॥ (१)

उत्सोदेवो^{२ ४ २ २}हा^२श्रियि^{१ २ २ १}रण्यया^{१ १} । उत्सोदेवो । हिरण्यया^२ २ ।

इष्टार । दूष्टारनाज । द्वाष्टार३४हा । धार्ष्टिवियाम् ।

२ १ २ १ २ १ २ ४ ५ २ ३
मधुप्रारक्ष्याम् । इच्छाह । प्रातनाहसाधा । हाहो२३

५ ३ २ ४ १ १२

४६। स्थमाशसापुदाईपुदत् ॥(२) प्रत्नसधस्थाशमासदा

त। प्र१ना१स१धा। स्थ१मा१स१दा१श्त्। इ१हा१३। आ१

पाश्चात्त्याम् । हाहो२३४हा । धारुणंवा । जियर्षा

२३सायि । इहा३ । नृमा३यिर्ज्ञैताः । हो३हो२३४हा ।

विचा३क्षा५णा६पु६ः । हो२३४५ (३) ॥ १३ * ॥ [१०]

॥ समन्तम् ॥ पुनानः सोमधारया । अपोवसानोऽ

र्षसायि । आरत्नार३धाः । योनिमृत । स्यसायिदामा ।

हो३हो३४वाहायि । उत । सोदा२३यिवा३ः । होवा३

हायि । हिरण्या२३या३४३ः ॥ १) उत्सोदेवो हिरण्ययाः ।

उत्सोदेवोऽहिरण्ययाः । दुहाना२३ज । धार्दिवियम् ।

मधूप्रायाम् । हो३हो३४वाहायि । प्र । त्ना३सा२३धा

३ । होवा३हा । स्थमासा२३दा२४३त् ॥ (२) प्रत्न३सधस्थ

मासदात् । प्रत्न३सधास्थमासदात् । आपृच्छा२३याम् ।

धारुणं वाजियार्षासा । हो३हो३४वाहायि । नृ । भायि

द्वौ२३ता३ः । होवा३द्यायि । विच३क्षार३णा३४३ः । ओ
२३४५ई । डा (३) ॥ २ * ॥ [११]

॥ अभीवर्त्तम् ॥ पुना३ना३ः सोमधारयोवा । आपोव
सा । नोआर्षा१सा२यि । आरत्नधा३१२३४ः । योनि
मृत । स्थसायिदा१सा२यि । उत्सोदा१यिवा२ः । हिरा
३ण्यार३४५ । यार३४५ः ॥ (१) उत्सोदे३वोऽहिरण्ययोवा ।
३ उत्सोदेवः । हिराण्या१या२ः । दूक्षानज३१२३४ । ध
र्दिवियम् । मधुप्रा१या२म् । प्रतना३सा१धार । स्थ
मा३ । सार३४५ । दार३४५त् ॥ (२) प्रतना३सा१धस्थमा
सदोवा । प्रात्न३सध । स्थमासा१दात् । आपृच्छिया
३१२३४म् । धरुण३वा । जियार्षा१सा२यि । नृभायि
द्वौ१ता२ः । विचार३ । क्षार३४५ । णार३४५ः (३) ॥ १३† ॥ [१२]

॥ अभीवर्तम् ॥ ^{५ ४ २ ४ ५} उत्सोऽदेवोऽदिरण्ययोवा । ^{१ २} उत्सो
^{२१} देवः । ^{१ २} हिराण्याश्याः२ः । ^{१ २ २} दूहानज३१२३४ । ^{३ ४} धर्दिवि
^५ यम् । ^{२२} मधूप्राश्याः२म् । ^{१ २} (२) प्रत्नाऽसा१धार । ^{३ २} स्थमाः३ ।
^१ सा२३४५ । ^{३ १ १ १ १} दार३४५त् (३) ॥ १४ * ॥ [१३]

॥ महाकालियम् ॥ ^{५ २ ४ ५ ४ २ ५ २ १} पुत्नऽसा३धस्थमासदात् । ^{२ १} पुत्ना
^{२ १} सधा । ^{२ ३ २ १ १} स्थमासदार३त् । ^{२ २ २ २} आपृच्छियाम् । ^१ धार३४ ।
^{३ ४ २ ५} रुण्वाजिय । ^{१ २} षा३सायि । ^{१ ३ २ २} नृभायिहौतौ । ^२ वा३४३ओ
^५ ३४वा । ^४ विषाप्रुक्षणाः । ^४ हो५इ । ^{१ ५ १} डा(३) ॥ १५† ॥ [१४]

॥ वासिष्ठम् ॥ ^{१ ४ २ २ ३ ४ ५ २ २ ३ ५} उत्सोदेवोदिर । ^{२ २ ३ ५} ययाओ२३४वा ।
^{४ ५} इयाद्यायि । ^{२ १} ऊवेहो२यि । ^{१ २ २ २} उत्सोदेवोदिराण्याश्याः२ः ।
^{१ २ २} दुहानजधर्दिवियम् । ^{१ २} मधूप्राश्याः२म् । ^{५ २ १} ईश्या ॥ (२) प्रत्न

५ १ ४ १ १ १
 ५ सार३४धा । स्थमासार३४पदाईपुईत् । अवा३सार३

१ १
 ४पुयि (३) ॥ १६* ॥ [१५]

१ २ १ १ २ २ १ १
 ॥ मद्वावैष्टन्मम् ॥ पुनानः सोऽहायि । मधारयोवा ।

१ २ २ १ १ १ २ २
 आपोवसा । नोऽर्षा१सार३यि । होवा३हायि । आ

१ १ २ १ १
 रन्मधायोनिमृत् । स्थसायिदा१सार३यि । होवा३हा

२ १ २ १ १
 यि । उत्सोदा१यिवार३ः । होवा३हायि । हिर । ण्या

२ ५ २ २ १ २ १ १ २
 २यार३४औहोवा ॥ (१) उत्सोदेवोहायि । हिरण्ययोवा ।

१ २ २ १ २ १ २ २
 उत्सोदेवः । हिराण्या१यार३ः । होवा३हायि । दुहा

१ २ २ १ २ १ २ १
 नऊधद्विवियम् । मधूपा१यार३म् । होवा३हायि । प्र

२ १ २ १ २ १
 त्ना५सा१धार३ । होवा३हा । स्थमा । सार३दार३४

५ २ २ १ १ २ २ १ १ १
 औहोवा ॥ (२) प्रत्न५सधोहायि । स्थमासदोवा । प्रा

१ १ २ १ २ २ २ १
 त्ना५सध । स्थमासा१दार३त् । होवा३हायि । आपृ

^{१ २ ३} कुरुणांवा । ^{१ २} जियार्पाश्माश्चयि । ^{१ २ ३} होवाश्चायि । नृ
^१ भायिद्वौश्ताश्चः । ^{१ २ ३} होवाश्चायि । विच । चाश्चाश्च
^{५ ६ ७} ४ औहोवा । ^८ दोश्चश्चः (३) ॥ १२ ॥ [१६]

॥ कालेयम् ॥ पुनानाशः समिधारया । अपीवसा ।

१२ ३ १ १ १२ ३ १ ३ ४
नोऽर्घसा२३यि । आरत्नधा३ः । यो२३४ । निमन्तस्य
५ २ १ १ १ ३ ४ १ १ ५ ४
सी । दा३मायि । उत्सोदेवौ । वा३४३ओ३४वा । हि
५ ४ १ ४ २ ३ ४ ५ २ १ १ २ १
रापुण्ययाः ॥१॥ उत्सोदा३यिवोदिरण्ययाः । उत्सोदेवो ।

२३ २ १ २३२ २ १ ३ ४ ५
हिरण्यया२३ः । दुहानज३ । धार३४ः । द्विविन्मधु ।

प्रा३याम् । पु॒त्ना॑स॒धौ । वा॑३४३ओ३४वा । स्थिमा५

सदात् ॥६) प्र॒त्नन्त्सा॑श्चस्थमासदात् । प्र॒त्नन्त्सा॑ ।

१ ३२ ११ १२ ३ २ १ १२ २
स्थामासदा२३त् । आपुच्छिया३म् । धा२३४ । सु३वा

* ज० मा० १२प्र० १अ० १२सा० ।

१. "महाकालेयम्"—इति ख० पु० ।

^५जिय । ^१षा^१सायि । ^१नृभा^{३२ २}यिद्वौ^२तौ । ^५वा^१३४३ओ^२३४वा ।

^४विचा^४प्र^४क्षणाः । ^४क्षो^४प्र^४ई । डा(३) ॥ १३ * ॥ [१७]

॥ वषट्कारणिधनम् ॥ पुनानःसोमधारया । पुनाना

३ःसोमधारया । अपोवसानो^{४ २ ३ ४ २ ३ ४ ५ २}३आर्षसा^{२ २}रयि । नो^{४ २ ३ ४ २ ३ ४ ५ २}आर्षा

^{१ २ ३ ४ २ ३ ४ ५ २}१सा^{२ २}रयि । ओमो^१श्वा । आरत्नधा^{१ २ ३ ४ २ ३ ४ ५ २}योनिमृतस्या^१३सायि

^७दसा^{२ १ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}रयि । स्यसायिदा^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}१सा^{२ २}रयि । ओमो^१श्वा । उत्सो

^{२ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}देवो^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}क्षी^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}रराण्य^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}१या^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}२ः । हिरा^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}ण्या^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}१या^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}२३ः । ओम् । ओ^{१ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}२ ।

^{३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}वा^{३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}२३४ । औ^{३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}होवा ॥ ऊ^{३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}२३४पा(१) ॥ २० † ॥ [१८]

॥ दैर्घ्यश्रवसम् ॥ पुनानःसोमधारयाओ^{२ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}क्षाओ^{२ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}क्षा३

^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}ए । अपोवसानो^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}अर्षसि । ओ^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}३क्षा । ओ^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}३क्षा३ए३४ ।

^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}आरा^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}३४^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}त्नधाः । यो^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}निमृ । तस्या^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}सीदसायि । ओ^{२ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २ ३ ४ ५ २}३

१ ५ २ २ ३ २ ३ २ २ १ ५
हा । ओ३हा३ण३४ । उत्सो३४देवाः । क्षिरो३४वा ।

४ ५ २ २ २ २ २ २ २
ण्यापूयो३हायि ॥ (१) उत्सोदेवोक्षिरण्ययओहाओहा३ण ।

१ २ २ २ २ १ २ ५ २ २ २ २
उत्सोदेवोक्षिरण्ययः । ओ३हा । ओ३हा३ण३४ । दुहा

३ २ १ २ १ २ ५ २ ५
३४नज । धार्दि वि । यन्माधुप्रियाम् । आ३हा । ओ

२ २ ३ २ ३ २ २ १ ५ ४
३हा३ण३४ । पुन्ना३४सधा३ । स्थमो२३४वा । सापू

५ २ २ २ २ २ २ २ २ २
दो३हायि ॥ (२) पुन्नासधस्थमासदोहाओहा३ण । पुन्ना

१ १ २ २ २ ५ २ ५ २ २ २ २ २
सधस्थमासदत् । ओ३हा । ओ३हा३ण३४ । आपा३४

३ २ १ २ २ १ २ ५ २
र्क्षियाम् । धारुणम् । वाजायर्षसायि । ओ३हा ।

५ २ २ ३ २ ३ २ २ १ ५ ४
ओ३हा३ण३४ । नृभा३४यिर्द्वौताः । विचो२३४वा । क्षा

५
पूणो३हायि (३) ॥ १६ * ॥ [१८]

१ २ १ २ ३ २ ४ ५
॥ मैधातिथम् ॥ पुनानःसोहायि । मधा३राया ।

२ १ २ १ २ १ २ १ २
अपोवा२हो३यि । साओ३हो । नाआउवा । षासा

उवा । चारत्नभायोनिमृताऔश्चो । स्थासाउवा । दा

साउवा । उत्सोदेवाऔश्चो । हिरा । औश्चो । वा

होरश्चवा । यथाप्रयोद्देहायि ॥ (१) उदेवोद्देहायि । हि

राण्यायाः । उत्सोदाश्चोशयि । वाऔश्चो । द्वायि

राउवा । एयायाउवा । दुहानऊधर्द्वियाऔश्चो ।

माधाउवा । प्रायाउवा । प्रत्नसधाऔश्चो । स्थमा ।

औश्चो । बाहोरश्चवा । साप्रदोद्देहायि ॥ (२) प्रत्नसधो

द्वायि । स्थमाश्सादात् । प्रत्नसाश्चोशयि । धाऔ

श्चो । स्थामाउवा । सादाउवा । आपृच्छग्रन्धरुणंवा ।

औश्चो । जायाउवा । षासाउवा । नृभिर्द्वीताऔश्च

हो । विचा । औश्चो । बाहोरश्चवा । क्षाप्रणोद्देहा

यि(३) ॥ ७ * ॥ [२०]

१ २ २ २ १ २ १ २
 ॥ वरुणसाम ॥ पुनानःसोमधारयोवा । ओवा ।
 २ २ २ २ २ १ २ १ २ १
 आपोवसा । नोआर्षाश्वायि । आर३रा । नार३
 २ १ २ २ १ २ १ २ १ २
 धाः । योनिमृत । स्यसार३चायि । दसार३चा । उत्सो
 १ २ १ २ २ १ २ १ २ २ १
 देवोहिरण्ययः । ऊर३त्साः । दायिवोच्चिरौ३ । हो३१
 ५ ४ ५ २ २ २ १ २
 २३४ । वा । एयापुयोद्वायि ॥ (१) उत्सोदेवोहिरण्ययोवा ।
 १ २ १ २ २ १ २ १ २
 ओवा । उत्सोदेवः । चिरास्या१या२ः । दूर३चा ।
 १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 नार३ज । धर्द्विवियम् । मधूर३चायि । प्रिया३मा ।
 १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 प्र॒त्न॒स॒ध॒स्थ॒मा॒स॒दत् । प्र॒त्न॒त्ना॒म । सा॒ध॒स्थ॒मौ३ ।
 २ ५ ४ ५ २ २
 हो३१२३४ । वा । सा॒ध॒दो॒द्वायि ॥ (२) प्र॒त्न॒स॒ध॒स्थ॒मा
 १ २ १ २ १ २ १ २
 स॒दो॒वा । ओवा । प्र॒त्न॒स॒ध । स्थ॒मा॒सा॒श॒दा॒रत् ।
 १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 आ॒र॒पा । क्क॒र॒याम् । ध॒रु॒ण॒वा॒जि॒या॒र॒हा । ष॒सा
 २ १ २ २ १ २ १ २ १ २
 र॒था । नृ॒भि॒र्द्वौ॒तो॒वि॒च॒क्ष्णः । नृ॒र॒भीः । धौ॒तो॒वि
 ५ २ ५ ४ ५
 चौ३ । हो३१२३४ । वा । सा॒ध॒णो॒द्वायि (३) ॥ १८* ॥ [२१]

२२ २ २ २ २१
 ॥ वैयश्चम् ॥ पुनानः सोमधारया ३१ । अपोवसा २
 २ १ १ २ २ १२ २ १२ २ २ १
 नो अर्षसा २३यि । होवा ३हायि । आरत्नधायोनिमृता
 १ २ २ ३ ५ १ २ २ २
 २ । स्यासा ३हायि । दा २३४सायि । उत्सो देवो हिरार
 १ २ १ २ ४ ५ ४
 ३हो । एयया । औ ३होवा । होपूइ । डा(१) ॥ १५* ॥ [२२]

२ ४ २ ३ २ ४ ५
 ॥ वषट्कारणिधनम् ॥ उत्सो देवो हिरण्ययः । उ
 २ २ ४ २ ५ ४ ५ २ २ २ २ १ ०
 त्सो दा ३यिवो हिरण्ययाः । उत्सो देवो ही ३राण्यया २ । हि
 १ २ १ २ ५ २ २ २
 राण्यया २३ः । ओमो ३वा । दुहान ऊधर्दि वियम्मा ३धू
 ० १ २ १ २ ५ ३
 प्रिया २म् । मधप्राशया २३म् । ओमो ३वा ॥ (२) पुन २स
 १ ० १ २ १ २
 धस्या ३मा सदा २त् । स्थमासा ३दा २३त् । ओम् । ओ
 २ २ ४ २ २ २ २
 २ । वार ३४ । ओहोवा । ऊर ३४पा(३) ॥ १६† ॥ [२३]

२ १ ४ २ २ २ ५ २ १ २ २ २
 ॥ पृश्नि ॥ पुनाना २३ः सोमधारया चाउ । अपोवसा

* ऊ० गा० १३प्र० २अ० १५सा० ।

† ऊ० गा० १३प्र० १अ० १६सा० ।

नोअर्षसि । आरात्ता१धार३ः । होवा३हायि । योनि

मृत । स्यसायिदा१सार३यि । होवा३हायि । उत्सो

दा१यिवार३ः । होवा३हायि । हायिरण्ययः । इडा

२३ ॥ (१) उत्सोदा२३यिवोहिरण्ययोहाउ । उत्सोदेवोहिर

ण्ययः । दुहाना१जर३ । होवा३हायि । धार्दि१वियम् ।

मधूपा१थार३म् । होवा३हायि । पुन्ना१सा१धार३ ।

होवा३हा । स्थामासदत् । इडा२३ ॥ (२) पुन्ना१सार३ ।

धस्थमासदद्वाउ । पुन्ना१सधस्थमासदत् । आपाच्छा१

थार३म् । होवा३हायि । धारुणंवा । जियार्षा१सा

२३यि । होवा३हायि । नृभायिद्वौ१तार३ः । होवा३

हायि । वायिचक्षणः । इडा२३भा३४३ । ओर३४५ई ।

डा(३) ॥ ३ * ॥ [२४]

२ २ २ २ २
॥ आभीश्वोत्तरम् ॥ पुनानः सोमधारया ॥ १ ॥

२ १ २ १ ० २ ३ ५ २ २ १ २
अपोवसारनो अर्षसायि । आ२३४रा । हा३हा । त्नुधा

२ २ २ १ १ ५ २ २
योनिमृतस्वामी १ दसायि । ऊ२३४त्साः । हा३हायि ।

१ २ २ १ ५ ४ ५ २ २ २ २
दायिवोहिरो२३४वा । एया५यो३हायि ॥ (१) उत्सोदेवोहिर

२ २ २ २ १ ० २ ३ ५ २
णयण । ए । उत्सोदेवो३हायिरणययाः । दू२३४हा । हा

२ १ २ ० २ २ ५ १
३हा । नऊधर्दिवियन्माधुपूयम् । प्रा२३४त्नाम् । हा

२ १ २ १ ५ ४ ५ १
३हायि । साधस्थमो२३४वा । सा५दो३हायि ॥ (२) पुत्न

२ १ २ २ २
सुधस्थमासददे । ए । पुत्नम् मधा३स्थामा१सदात् । आ

५ २ २ १ २ ० २ २
२३४पा । हा३हा । छन्धरुणम्वाजायर्षसायि । न्ह२३

५ २ २ १ २ १ ५ ४
४भीः । हा३हायि । धीतोविचो२३४वा । हा५णो३

५
हायि (३) ॥ ४ * ॥ [२५]

॥ पौष्टमुद्रम् ॥ पुनानःसीमधारया । औहोवा । ए
 द्रिया । हाउ । अपोवसा^२नो^१अर्षसि । आरात्ता^२धा
 रः । योनिमृता^२ । स्थामायिदा^१२३४सायि । उत्सो ।
 दायिवौवा^२ओ^३२३४वा । हा^५३हायि । द्विरा^१प्रणययाः ॥ (१)
 उत्सोदेवो^१हिरण्ययः । औहोवा । एद्रिया । हाउ ।
 उत्सोदेवो^१२हिरण्ययः । दुहाना^११ऊ२ । धौर्द्विविया^१३म् ।
 माधुप्रार^१३४याम् । प्रत्ताम् । साधौवा^१ओ^२२३४वा । हा
 ३हा । स्थमा^१प्रसदात् ॥ (२) प्रत्त्सधस्थमा^१सदत् । औ
 होवा । एद्रिया । हाउ । प्रत्त्सधा^१२स्थमा^२सदत् ।
 आपा^१र्क्षा^२१यारम् । धारुणंवा^१३ । जायर्षा^१२३४सायि ।
 नृभायिः । धौतौवा^१ओ^२२३४वा । हा^५३हायि । विचा^१प्र
 णाः । हा^५५ई । डा(३) ॥ १० * ॥ [२६]

५ र २ ४ र ५ र ४
 ॥ आष्कारणिधनं काण्वम् ॥ पुनानाः सोमधार
 ५ १ र २ र २ १ २ २ २
 या । आपोवसा । नोआरर्षसाउ । वा३२ । आर
 २ १ २ २ ३ ४ ५ २ १ र ५ १ २
 त्नाधाः । योनिमृता । स्यसीदार३४सायि । ऊर३त्साः ।
 १ र २ र १ ५ र २ ४ र ५
 देवोहि । रण्यार३४पुयाई५ईः ॥ (१) उत्सोदा३यिवोहिः
 ४ ५ १ र २ र १ २
 ण्ययाः । उत्सोदेवः । हिरा३३ण्ययाउ । वा३२ । दु
 १ र २ १ २ ३ २ १ २ १ ५ १ २
 हानऊ । धर्दिवियाम् । मधुप्रा३३४याम् । प्रा३३त्ना
 १ २ १ र ५ २
 म् । सधस्थम् । आसा३३४५दाई५ईत् ॥ (२) प्रत्नसा
 ४ ५ र ४ ५ १ २ १ २
 ३धस्थऽमासदात् । प्रात्नसध । स्थमा३३सदाउ । वा
 २ १ २ १ २ ३ ४ ५ २ १ ५
 ३२ । आपृच्छियाम् । धरुणंवा । जियर्षा३३४सायि ।
 १ २ १ र २ र १ ३ १ १
 वृ३३भीः । धौतोवि । चक्षार३३४पुणाई५ईः । आ३३
 १ १
 ४५ष३) ॥ ११ * ॥ [२७]

१ र २ १
 ॥ सोमसाम† ॥ पुनानः सोरमधारया । आपो३३वा

सा२ । नो^१अर्षसी । आरा^१रत्नाधा२ः । योनिमा^१र्त्ता
 २ । स्थसी^१दसी । जत्सो^१रदायिवा२ः । हिरण्यार^१श्या
 ३४३ ॥ (१) उत्सो^१देवो२रहिरण्ययाः । जत्सो^१रदायिवो२ ।
 हिरण्ययाः । दृष्टा^१रनाज२ । धर्हि^१वाया२म् । मधु
 प्रियाम् । प्रात्ना^१र०साधा२ । स्थमासा^१र३दा३४३त् ॥ (२)
 प्रत्न^१सधा२स्थमासदात् । प्रात्ना^१र०साधा२ । स्थमा
 सदात् । आपा^१रर्क्ष्या२म् । धरूणांवा२ । जियर्ष
 सायि । नृभा^१रयिह्वौता२ः । विचक्षा^१र३णा३४३ः । ओ
 २३४पूर्व । डा (३) ॥ १६ * ॥ [२८]

॥ बार्हदुक्थ्यम् ॥ पुनानः^१सोम । धा^१ररया । अपो
 वसानो^१अर्षा२र३सायि । आरत्नाधा२ः । योनिमा^१र्त्ता२ ।
 स्थसी^१दसायि । उत्सो^१दा२र३यिवाः । हिरण्यार^१श्या३ या ३४

३ ॥ (१) उत्सोदेवोच्चि । रा॒र॒ण्ययाः । उत्सो॒द्दे॒वाच्चि॒र
 ण्यार॒श्याः । दू॒क्षा॒शना॒ऊ॒र । धा॒र्हि॒वाया॒र॒म् । मधु
 प्रिया॒स् । प्र॒त्न॒स॒ार॒श॒धा । स्थ॒मासा॒र॒श॒दा॒श॒श॒त् ॥ (२)
 प्र॒त्न॒स॒ध॒स्थ॒म् । आ॒र॒स॒दा॒त् । प्र॒त्न॒स॒ध॒स्थ॒मासा॒र॒श
 दा॒त् । आपृ॒च्छाया॒र॒म् । धा॒रु॒णांवा॒र । जि॒यषे॑सा
 यि । नृ॒भि॒द्वौ॒र॒श॒ताः । वि॒च॒क्षार॒श॒णा॒श॒शः । ओ॒र॒श॒श॒श॒ई ।

• डा (३) ॥ ७ * ॥ [२८]

॥ पृ॒ष्ठम् ॥ पु॒ना॒श्वः॒ सोम॑ध॒ रया । अ॒पो॒व॒सानो॒अ
 र्ष॑सा॒र॒श॒यि॒क्षो॒इया । आ॒र॒त्न॒धा॒य नि॒मृ॒त॒स्य॒सौ॒द॒सा॒र॒श॒यि
 क्षो॒इया । उत्सो॒दा॒र॒श॒यि॒वाः । हि॒र॒ण्यार॒श्या॒श॒शः ॥ (१)
 उत्सा॒श॒दे॒वा॒हि॒र॒ण्ययाः । उत्स॑दे॒वा॒हि॒र॒ण्यया॒र॒श॒क्षो॒इया ।
 दु॒क्षान॒ऊ॒ध॒र्हि॒वि॒य॒म॒ध॒प्रिया॒र॒श॒क्षो॒इया । प्र॒त्न॒स॒ार॒श॒धा ।

^{१२}स्थमासो^२र^१दो^२र^१४३त् ॥(२) ^{५४}प्र^२न्ना^२३^२स^२ध^२स्थमा^२सदात् ।

^१प्र^२त्न^२स^२ध^२स्थमा^२सदा^२र^१३^२द्वो^२इया । ^{१२१}आ^२पृ^२च्छ^२य^२न्ध^२रू^२णा^२वा^२जि^२य^२र्ष

^१सा^२र^२यि^२द्वो^२इया । ^{११}नृ^२भि^२र्द्वौ^२र^२ताः । ^१वि^२च^२क्षार^२३^२णा^२३४३ः ।

^१ओ^२२३४पृ^२ई । डा (३) ॥ २० * ॥ [३०]

॥ ^{५४}कौ^२ल्म^२ल^२व^२र्द्धि^२षम् ॥ ^२पु^२ना^२३^२ना^२३^२सो^२म^२धा^२रयां । ^१अ

^२पो^२व^२सानो^२आ^२र्षा^२सा^२२३४यि । ^{१२}आ^२र^२त्न^२धा^२यो^२नि^२मा^२र्त्ता । ^१ऐ

^१हो^२यि । ^{१२}स्यो^२र^२सी^२द^२सा^२यि । ^{२२}उ^२त्स^२दे^२वो^२हि^२रो^२वा^२३^२ओ^२र^२३

^५४वा । ^४ए^२ष्या^२५^२यो^२ई^२हो^२यि ॥(१) ^{५४}उ^२त्सो^२३^२दा^२३^२यि^२वो^२हि^२र^२ण्यया ।

^{१२}उ^२त्सो^२दे^२वो^२हि^२रा^२२^२ण्यया^२२३४ः । ^{२२}दु^२हान^२ज^२ध^२र्दि^२वा^२याम् ।

^{२१}ऐ^२हो^२यि । ^१मा^२२^२धु^२प्रि^२याम् । ^{२१}प्र^२त्न^२स^२ध^२स्थमो^२वा^२३^२ओ^२२३४

^५वा । ^४सा^२५^२दो^२ई^२हो^२यि ॥(२) ^{५४}प्र^२न्ना^२३^२सा^२३^२ध^२स्थमा^२सदात् ।

^१प्र^२त्न^२स^२ध^२स्थमा^२२^२सा^२दा^२२३४त् । ^{२२}आ^२पृ^२च्छ^२य^२न्ध^२रू^२णा^२वा । ^{१२}ऐ

होयि । जा॒र्य॒र्षसा॒यि । नृभिर्द्वौतोविचोवा॒शीर॒३४
वा । ऋ॒पु॒णो॒द्वा॒यि (३) ॥ २१ * ॥ [३१]

॥ वा॒शम॒ ॥ पु॒नानः॒सो । म॒धारा॒श्या॒२ । अ॒पोव
सानो॒आ॒र्षा॒शसा॒२यि । आ॒र॒त्न॒धा॒योनि॒मृत॒स्यसा॒यिदा॒शसा
२यि । उ॒त्स॒दा॒र॒३यि॒वा॒३ । द्वा॒र॒यि॒रा॒२३४औ॒होवा ।
स्था॒२३४णाः ॥ (१) उ॒त्स॒दे॒वाः । द्धि॒रा॒ण्या॒श्या॒श्या॒२ः ।
उ॒त्स॒दे॒वो॒द्धि॒रा॒ण्या॒श्या॒२ः । दु॒हान॒ऊ॒ध॒र्द्वि॒विय॒म्भ॒धू॒प्रा॒श्या
२म् । प्र॒त्न॒स॒ार॒३धा॒३ । स्था॒२मा॒२३४औ॒होवा । सा
२३४दा॒त् ॥ (२) प्र॒त्न॒स॒धा । स्थ॒मा॒सा॒श॒दा॒२त् । प्र॒त्न॒स
स॒धस्थ॒मा॒सा॒श॒दा॒२त् । आ॒पृ॒च्छ॒प्र॒न्ध॒रु॒णं॒वा॒जि॒या॒र्षा॒शसा॒२
यि । नृभिर्द्वौ॒२३ता॒३ । वा॒र॒यि॒चा॒२३४औ॒होवा । द्धा
२३४णाः (३) ॥ ३ * ॥ [३२]

॥ मोधुच्छन्दसम् ॥ पुनानःसो । हो । मधारयाइण ।

अपोवसा । नोअर्षा२३४५सायि । आरत्नधायोनिमृत ।

स्यसायिदासा । औहो३४वाद्यायि । उत्सोदायिवा ।

औहो३४वाद्यायि । हिरण्या२३या३४३ । ओ२३४पुई ।

डा (१) ॥ २० * ॥ [३३]

॥ गौरीवितम् ॥ उत्सः । देवो३ । हिरण्ययाः ।

उत्सोदेवोहिरण्यया२३ । दूहानज३१२३ । धर्दि वियम् ।

धूप्रियाम् । प्रान्तसधा३१२३ । स्थमोवा । सापूदो

इद्यायि२) ॥ १२ † ॥ [३४]

॥ उभयतस्तोभं गौतमम् ॥ हाउपुनानःसोमधारया

हाउ । आपोवसा । नोआर्षसा२३४यि । हाहोयि ।

* ऊ० गा० १२प्र० १ख० ६०सा० ।

† 'महागौरीवितम्'—इति ख० पु० ।

‡ ऊ० गा० १२प्र० ३ख० १२सा० ।

^{१ १} ^{१ २ १ २} ^{३ २ १} ^१
 आरत्नधायोनिमृतास्यासौदसा३४यि । हाहोयि । ज
^२ ^२ ^{३ २ १} ^{२ १} ^५ ^४
 त्सोदायिवा३४ः । हाहो३ । हिरोर३४वा । एया५यो६
^५ ^{३ २} ^{२ २ २} ^२ ^{१ २ ३ २}
 दायि ॥ (१) हाउत्सोदेवोद्विरण्ययोहाउ । ऊत्सोदेवः ।
^{१ ७} ^{३ २ १} ^{२ १ २ २} ^{१ २}
 द्विरण्यया२३४ः । हाहोयि । दुहानजधर्द्वियम् ।
^१ ^२ ^{३ २ २} ^१ ^२ ^{३ २ २}
 माधुप्रिया३४म् । हाहोयि । प्रात्न५साधा३४ । हाहो
^{२ १} ^५ ^५ ^{२ २}
 ३ । स्थमो२३४वा । सा५दो६दायि ॥ (२) हाउप्रत्न५
^२ ^१ ^२ ^{१ ७}
 सधस्थमामदद्वाउ । प्रात्न५सध । स्थमामदाम२३४त् ।
^{३ २ २} ^{२ १} ^{२ १ २ २} ^१ ^२ ^{४ २}
 हाहोयि । आपृच्छयन्धरुणंवा । जायर्षसा३४यि । हा
^१ ^२ ^{३ २ २} ^{२ १} ^५
 दायि । नृभिर्द्वौता३४ः । हाहो३ । विचो२३४वा ।
^४ ^५
 क्षा५णो६दायि (३) ॥ ११ * ॥ [३५]

^{२ १ २} ^{४ २ ५ २}
 ॥ द्विद्विङ्कारं वामदेव्यम् ॥ पुनाना२३ः सोमधारया ।

^{१ १} ^{२ २} ^{२ २} ^२ ^{२ २} ^{२ ३ २ २} ^१
 आपोवसानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृताः स्यसौहो३ । ऊम्भा

२ । दार३सायि । उत्सोदेवोऽहिरौहो३ । ऊम्मा २ ।

ण्यया । औ३होवा ॥ (१) उत्सोदार३यिवोहिरण्ययाः ।

ऊत्सोदेवोहिरण्ययोदुहानऊधर्दिवियाम्मधौहो३ । ऊम्मा

२ । प्रा३रयाम् । प्रत्न॥सधास्थमौहो३ । ऊम्मा २ ।

सदात् । औ३होवा ॥ (२) प्रत्न॥सार३धस्थमासदात् ।

प्रात्न॥सधस्थमासदापृच्छपन्धरुणवाऽजियौहो३ । ऊम्मा

२ । पार३सायि । नुभिह्वौतोऽविचौहो३ । ऊम्मा २ ।

क्षणा । औ३होवा । होपई । डा ॥ २५ ॥ [३६]

॥ द्वैगतम् ॥ पुनाना३ःसोमधारया । आपोवमा ।

नोआर्षा३सार३यि । आरा३ । हो३हो३वा । तनधायो

निमृत्तस्यामी३ठमा २यि । उत्सो३र३ । दार३यिवार३३औ

होवा । ए३ । हिरा३रण्यया३३३३३ ॥ (१) उत्सोदा३यि

४२ ५ ४ ५ १ २ २ २ १ २ १ २
 वोहिरण्ययाः । उत्सोदेवः । हिराण्याश्याः । दुहाः ।

५ २ २ १ २ ० १
 होश्चोश्वा । नऊधर्दिव्यम्माधुप्रायश्चम् । प्रन्नाश्चम् ।

१ १ २ ५ २ १ १ १ १ १ १ १ १
 सारधार्श्चौश्वा । ए३ । स्थमाश्चसदाश्च४५त् ॥ (२)

५ २ ४ ५ ४ ५ १ २ १ २
 प्रन्नाश्चस्थमाश्चसदात् । प्रात्नश्चस्थमासाश्चदा

३ २ ५ १ १ १ २ ०
 श्वा । आपाः । होश्चोश्वा । ऊर्ध्वरुणंवाजायर्षा

१ १ ३ ५ २ १
 सारयि । नृभाश्चयिः । धौश्चतार्श्चौश्वा । ए३ ।

१ ३ १ १ १ १
 विचाश्चक्षणाश्च४५ः । (३) ॥ १६ * ॥ [३७]

२ २ १ २ २ २ १
 ॥ अर्वापुष्याद्यम् ॥ पुनानःसोमधारया । ऊवे२३ ।

२ १ २ ५ २ १ १ २ २ २ २ २ २
 अपोवमानोअर्षसि । ऊवे२३ । आरत्नधायोनिमृतस्यसी

१ १ २ २ २ २ १ २ १
 दसि । ऊवे२३ । उत्सोदेवांहिरण्ययः । ऊवे२३ ॥ (१)

१ २ २ २ २ २ १ २ १ २ २ २ २
 उत्सोदेवांहिरण्ययः । ऊवे२३ । उत्सोदेवांहिरण्ययः ।

१ २ २ १ २ २ १ २ १ २ २
 ऊवे२३ । दुहानऊधर्दिव्यम्माधुप्रियम् । ऊवे२३ । प्रन्नाश्च

२ १ २ १२ २ १ २ १ २ १ २ १ २
सधस्थमासदत् । ऊवेर३ । आपृक्कप्रन्धरुणावाज्यषसि ।

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
ऊवेर३ । नृभिर्द्वौतोविचक्षणः । ऊवेर३ । ऊवेर३ ।

१ २ २ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
होवा३हा३ । हा३४ । औहोवा । अर्कोदेवानां२पर

१२ १ २ १ १ १ १ १
मेवियो२मार३४५न् (३) ॥ १७ * ॥ [३८]

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
॥ द्यौतानम् ॥ हा३ । औ३हा३ । औ३हा३ ।

२ १ २ २ १ २ २ २ २ २ २ २ २ २
ह्यायि । उत्सोदेवा२ । हिरण्या२३४याः । उत्सोदेवां

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
२ । हिरण्या२३४याः । दुहानऊधर्दिवियारम् । मधू

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
प्रार३४याम् । प्रत्न३सधार । स्थमासा२३४दात् । हा

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
३ । औ३हा३ । औ३हा३ । हा३४ । औहोवा । आ

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
हो३३४५(२) ॥ ८ * ॥ [३९]

१ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
॥ नौधसम् ॥ ऊ२३४त् । सोदेवोद्विर । एयायाः ।

^{१ १ २ २} ^२ ^{१ २ २} ^{१ २} ^{१ २}
उत्सोदेवो । ह्यग्निराण्याश्याः । दूरश्चा । नाजधः ।

^{१ १ २} ^{२ ४} ^४ ^{१ २} ^१
दिवि । याम् । माधुप्राश्नयाम् । प्राश्नयाम् । सा

^{२ १} ^४ ^३ ^५
धस्थमोश्नयाम् । साश्नयाम् (२) ॥ ५ * ॥ [४०]

^{३ ४ २ २ ३ ४} ^{४ ५} ^{३ २} ^{३ ४ २ ५}
॥ श्यैतम् ॥ उत्सोदेवो हिर । अग्निराण्याश्याः ।

^{१ २ २ २} ^{१ ०} ^{४ ५} ^{१ २ १ २}
उत्सोदेवः । हिराण्याश्याः । ओईहा । दुश्चानज

^४ ^१ ^२ ^{१ ५} ^३ ^५
धः । दायिवाश्नयाम् । मधूर । प्राश्नयाम् । प्रन्थ

^० ^{२ १} ^१ ^३ ^{५ २ २} ^३
सधास्थाम् । जम्मायि । साश्नयाम् (२) ॥ ५ * ॥ [४१]

^५
श्नयाम् (२) ॥ ५ * ॥ [४१]

^{३ ४ २ २} ^२ ^{१ २}
॥ कण्ववृद्धत् ॥ औहोपुनानः सोऽग्ने । मधाराश्याः

^{३ ४ २} ^{१ २ २ २ २} ^{१ २}
श्नयाम् । औहोपुनानः सोऽग्ने । मधाराश्याः

^{३ ४ २} ^{१ २} ^{१ २}
श्नयाम् । औहोपुनानः सोऽग्ने । मधाराश्याः

^{३२ २}यि । ^{१ २}हाहोयि । ^{३२ १}उत्सोदाशियिवा२३४ः । ^१हाहो । ^३हि
^२रा३ । ^१ण्यार३४याः । ^५उज्जवा६हाउ । ^५वा ॥ (१) ^{३२ २}औहो
^{३२ २}उत्सोदेवा३ण । ^१हिराण्याश्या२३४ः । ^{३२ २}हाहोयि । ^{१ २}जत्सो
^{३२ २}देवोहिरण्ययः । ^{१ २}दूहाना१ज२३४ । ^{३२ २}हाहो । ^{१ २}धाद्वि
^{१ २}यम् । ^{३२ २}मधूप्रा१या२३४म् । ^{१ २ २ २}हाहोयि । ^{१ २ २ २}दूहानज ।
^{१ २}धर्दायिवा१या२३४म् । ^{३२ २}हाहोयि । ^{१ २}मधूप्रा१या२३४म् ।
^{३२ २}हाहोयि । ^{१ २}प्रत्नात्सा१धा२३४ । ^{३२ २}हाहो । ^{३ २}स्थमा३ । ^१सा
^५२३४दात् । ^५उज्जवा६हाउ । ^{३२ २}वा ॥ (२) ^{३२ २}औहोप्रत्नत्सधा
^{१ २}३ण । ^{१ २}स्थमासा१दा१दा२३४त् । ^{३२ २}हाहोयि । ^{१ २}प्रान्नत्सध
^२स्थमासदत् । ^{३२ २}आपाच्छा१या२३४म् । ^{३२ २}हाहोयि । ^१धारु
^{१ २}णवा । ^{१ २}जियार्पा१सा२३४यि । ^{३२ २}हाहोयि । ^{१ २}आपृच्छयम् ।
^{१ २}धरुणा१वा२३४ । ^{३२ २}हाहोयि । ^{१ २}जियार्पा१सा२३४यि ।

३२ २ १ २ ३२ २ ३ २
 चाहोयि । नृभायिद्वौ^१तार^२३४ः । चाहौ । विचा^३ ।

१ ५ ५
 चार^४३४णाः । उ^५ऊवा^५ह^५हाउ । वा (३) ॥ ८ * ॥ [४२] ८

तृतीय-तृचे—प्रथमा ।

१ ०२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
 प्रतुद्रवपरिकोशनिषीदनृभिः पुनानो अभिवाजमर्ष ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
 अश्वन्नत्वावाजिनंमर्जयन्तोच्छावहोरशनाभिर्नयन्ति ॥ १५ ॥

“हे सोम ! “तु” क्षिप्रं “प्रद्रव” अश्वयज्ञं प्रकर्षेणागच्छ ।
 गत्वा च “कोश” द्रोणकलशं “परि निषीद” निषस्यो भव ।
 “नृभिः” नेटभिः “पुनानः” पूयमानः सन् “वाजम्” अश्वं हवी-
 रूपं त्वम् “अभ्यर्ष” अभिगच्छ । “वाजिनं” बलवन्तं “अश्वं न”
 अश्वमिव तं यथा माजयन्ति । तदवाजिनं त्वां “मर्जयन्तः”
 शोधयन्तः अध्वर्यु-प्रमुखा ऋत्विजः “बर्हिः” “अच्छ” अस्मदीयं
 यज्ञं प्रति “रशनाभिः” रशनावदाय ताभिरङ्गुलीभिः “न-
 यन्ति” ॥ १ ॥

०. ऊ० गा० २२ प्र० २ अ० ८ सू० ० ।

† ऊ० आ० ६, १, ५, १ (२ भा० १०६ पृ०) = ऊ० ७, ३, २२, १ । ऊ० त्रिष्टुप्
 एषमंषोऽनय ।

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
स्वायुधः पवते देव इन्द्र शस्तिहा वृजना रक्षमाणः ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३
पिता देवानाञ्जनिता सुदक्षो

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
विष्टभो दिवो धरुणः पृथिव्याः ॥ २ * ॥

“स्वायुधः” शोभनायुधः । “इन्द्रः” “सोमः” देवः “पवते”
स च देवः “अशस्तिहा” रक्षोहा । “वृजना” वृजनानि उपद्र-
वाणि परिहृत्येति शेषः, “रक्षमाणः” § “पिता” “पालकः”
“देवानां” “तथा” “जनिता” उत्पादकः “सुदक्षः” शोभन-बलः
“दिवः” “विष्टभः” विशेषेण स्तम्भयिता “पृथिव्याः” च “धरु-
णः” धारकः ॥ । एवं महानुभावः पवते । “वृजना” — “वृजन्”
— इति पाठो ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ७, ३, २२, २ ।

१ ‘स्वायुधः’ अस्मिन् सङ्गपरशु प्रामादभिरायुध स्वायुधः । अथवा वक्ष-सुव-
सुक् शम्यक प्रभृतिभिर्द्वयैः स्वायुधः इति वि० ।

२ ‘पवते पृथते’ इति वि० ।

३ ‘अशस्तिहा’ अशस्तयः शयवः । अथवा अशस्ता वाचः अशस्तानि वा कर्माणि
ये कुर्वन्ति तेषां शन्ता — इति वि० ।

§ ‘वृजना रक्षमाणः’ । वृजनं वृजस अथवा वृजनं वृशदं कुत्तितं कर्म तेषो
रक्षमाणः — इति वि० ।

अतएवोक्तं मनुना — ‘अग्नौ प्राजाकृतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते । आदित्या-
ज्जायते वृष्टिः, वृष्टेरस्य ततः प्रजाः (ऋ० ७६ सू० ०)’ — इति ।

अथ तृतीया ।

१ २ १ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २ २ २ ३ २ ३ १ २
 ऋषिर्विप्रः पुरेता जनानां मृभुर्द्विरुशना काव्येन ।

१ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
 सचिद्वेदनिहितं यदा सामपी

२ २ ३ २ १ २
 च्याऽऽङ्ग, ह्यन्नामगोनाम् ॥ ३ * ॥ १०

“ऋषिः” अतीन्द्रियद्रष्टा † “विप्रः” मेधावी “पुरेता”
 पुरतो गन्ता “जनानां” मनुष्याणां “ऋभुः” उरुभासमानः ‡
 “धीरः” धीमान् § “उशनाः” एतन्नामकः ऋषिः यः “सचित्”
 स एव § “काव्येन” स्तोत्रेण “विवेद” लभते । किमिति ?

* ऋ० वे० ७, ३, २२, ३ ।

† “मात्तातृतृधर्माण ऋषयो बभूवुस्ते वरेभ्ये ऽमात्तातृतृधर्भस्य उपदेशेन
 मन्त्रः सत्यदुष्पदेनाय गायन्तोऽयमेव विलम्बदृष्ट्याऽयं द्रव्यं समास्नासिषु वेदस्य वेदा
 इति च । विस्मं भिस्मं भ मनमिति वा णतावन्तः समानकर्मणो भवतः—इति
 निरु० मे० १, २० ।

‡ ‘पुरे’ ण्ता जनानास । पुरतः अग्रतः णति सोमः अथवा पुरतः केना जनाना
 मना । ऋभुर्विभुः—इति वि० ।

§ ‘धीर’ धैर्यमम्य—इति वि० ।

॥ ‘चित्’ शब्दः च शब्दस्यार्थः दृष्टव्यः—इति वि० । “चिदित्येषोऽनेककर्त्री—
 आचार्येऽपिदिदं ब्रूयादिति पूजयासु । • • • । दधिचिदित्युपमार्थे । कुडमापां
 सिदाहरत्यवकुत्तिते • • • ।”—इति निरु० मे० १, ४ ।

उच्यते । “आसां” “गोनां” गवां सम्बन्धि * “यत्” “अपीचम्”
[अन्तर्हितनामैतत् १] अन्तर्हितं “नाम” नामक मुद्रकं पयो-
लक्षणम् । कीदृशम् ? “गुह्यं” गोपनीयम् ॥ ३ ॥ १० ॥

१ २ १ २ ३
॥ औशनम् ॥ प्रातः । द्रवापरिकोशम् । निषीड
२ १ २ १ २ १ १ ३ ४ ५ १
दा । नृभाइः पुना । नोऽभि । वाजमर्षा । अश्वन्न
२ २ ० २ १ २ १ २ १ २
त्वावाजिनम्ना । जयाऽन्ताः । अक्षावर्हाइः । रशना ।
२ २ ४ १ २ १
भाऽऽइः । नाऽयापुन्ताईऽईइ ॥ (१) सृवा । युधाः प
२ २ २ १ २ १ २ १ २ २ ४
वतेदाइ । वईऽन्द । अशास्तिहा । वृजना । रशमा
५ १ २ २ २ ० २ १ २ २
णाः । पितादेवानाञ्जनिता । सुदाऽन्ताः । विष्टम्भो
१ २ १ २ २ ४
दाइ । वोऽधरु । णाऽइः । पाऽर्थाऽपुइव्याइऽपुईः ॥ (२)

* “आसां गोनां गवा मादित्यरश्मिनां वा”—इति वि० । “गोः पादान्ति
(०. १, ५०)” इति नटि रूपम् ।

† “* * * * , अपीचमिति निषीडान्तर्हितनामानि”—इति निष० ३,
२५ । “निषीडं कस्मादग्निर्हितं भवति”—इति यास्ककृतं तत्पञ्चाख्यानम् ३, १८ ।
“अपीच मपगत मपचित मपहित मन्तर्हितं वा”—इति निष० मै० ४, २५ ।

‡ इदं साध्यन्दिनपवसानं तत्तथैवम् । ‘उक्तोसाध्यन्दिनः पवसानः’ इति वि० ।

§ “विष्टवौशनम्”—इति ख० पृ० ।

^{१ २} आर्षाः । ^१ विप्राः ^२ पुरता । ^{२ २} जनाश्नाम् । ^{१ २ २ १} ऋभूर्दीराः ।
^{२ १ २} उशना । ^{२ १ ४ ५} कावियेना । ^{१ २} सचिद्विवेदनिक्षिताम् । ^७ यदा२३
^२ साम् । ^१ अपाइचियाम् । ^{२ १} गुह्यियम् । ^१ ना३४३ । ^२ मा३
^४ गोऽपुनाईपुद्म (३) ॥ ४ * ॥ [१]

^{२ १} ॥ वैश्वज्योतिषाद्यम् ॥ ^{१ १ २} प्रतुद्रवा । ^{२ ४ ४} परिको । ^{२ ४ ४} शन्निषौ
^५ दा । ^{२ १} नृभिः ^{२ १} पुना । ^{२ ३ ४ ५} नोश्चभि । ^{२ १} वाजमर्षा । ^{२ १} अश्वत्तत्वा ।
^{२ १} वाश्जिनम् । ^{२ ४ ४ ५} मर्ज्जयन्ताः । ^{२ १ २} अक्कावर्चायिः । ^{२ १ २} रशना ।
^२ भा३४३यिः । ^{२ ४} नाश्यापुन्ताईपुद्मि ॥ (१) ^{२ १ २} सुवायुधाः । ^७ प
^{१ २} वते । ^{२ ४ ४ ५} देवइन्द्रः । ^{२ १} अशस्तिहा । ^{२ १ २} वृजना । ^{२ ३ ४ ५} रक्षमाणः ।
^{२ १ २ २} पितादेवा । ^{२ १} नाश्ञ्जनि । ^{२ ४ ४ ५} तासुदत्ताः । ^{२ १ २} विष्टम्भोदायि ।
^{२ १} धाश्धरु । ^{२ ४} णा३४३ः । ^{२ ४} पार्थ्यापुयिव्याईपुद्मः ॥ (२) ^{२ १} ऋषि
^{२ १ २} विप्राः । ^{२ ४ ४ ५} पुरणे । ^{२ १ २} ताजनानाम् । ^{२ १ २} ऋभूर्दीराः । ^{२ १ २} उशना ।

^२कावियेना । ^{११}सचिद्विवे । ^२दाशनिहि । ^{२३४}तयदासाम् ।

^{२१२}अपीचियाम् । ^{२१}गुह्यम् । ^१ना३४३ । ^२मा३गो५ना६५

६म् (३) ॥ ७ * ॥ [२] १०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य प्रथमस्याध्यायस्य

तृतीयः खण्डः ।

अथ चतुर्थखण्डे,

प्रथम-सूक्ते — प्रथमा ॥

^{३१२}अभित्वाशूरनोनुमोदुग्धाइवधेनवः ।

^{१२}इशानमस्यजगतः ^{३१२}स्वर्दशमीशानमिन्द्रतस्थुषः ॥ १३ ॥

हे “शूर” विक्रान्तेन्द्र ! “त्वा” त्वाम् “अभि नोनुमः” वयं भृश मभिष्टुमः । तत्र दृष्टान्तः—“अदुग्धा इव धेनवः” अकृतदोहा गावः आदरेण वत्सान् प्रति हम्भारवं कुर्वन्ति तद्वत् वयं स्तुमः

* क० गा० १८प्र० १अ० ७सा० ।

† अथ सोमो न विद्यते । एषां सूक्तत्रयाणां यथाश्रुतएव पाठो व्यवहृत्यते ।

‡ अ० ३, १, ५, १ (१ भा० ४७८ पृ०) = क० वे० ५, ३, २१, २ । क० बृ० ३ ।

क० वशिष्ठः । दे० इन्द्रः । एवमेवाचोत्तरत्वा । ‘इदानीं’ प्रमाणानि इन्द्रस्य निष्क्रेव स्यान्ति, बार्हतान्येव गायत्रिकाणि—इति वि० ।

इत्यर्थः । कीदृशम् ? “अस्य” “जगतः” जङ्गमस्य “ईशानम्” ईश्वरं “तस्युषः” स्थावरस्य “ईशानं” “स्वदृश” सर्वदृशं सर्वज्ञमित्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२ २२ ३ २ ३ ११ २२ ३ २ ३ १२ २२

नत्वावा^१ अन्योदिव्योनपार्थिवोनजातो न जनिष्यते ॥

३ १ २

३ १ २ ३ १ २

अश्वायन्तो मघवन्निन्द्रवाजिनो गव्यन्तस्त्वाहवामहे ॥ २ ॥ ११ ॥

हे “मघवन्निन्द्र !” “दिव्यः” दिवि भवः “त्वावान्” त्वत्सदृशः “अन्यः” न जायते । “पार्थिवः” पृथिव्यां भवोऽपि त्वावान् “न जातः” जायते दिव्यः पार्थिवो वा त्वावान् न जातः न च “जनिष्यते” नोत्पद्यते लोकद्वयेऽपि त्रिष्वपि कालेषुऽऽत्वादृशः कश्चिन्नास्ति त्वमेव समर्थो भवसीत्यर्थः । “अश्वायन्तः” अश्वानिच्छन्तः “वाजिनः” वाज मन्त्र मिच्छन्तः [इच्छाया मिन् प्रत्ययः] हविष्यन्तो वा “गव्यन्तः” गावश्छन्तस्य वयं हे इन्द्र ! “त्वा” त्वां “हवामहे” आह्वयामः ॥ २ ॥ ११ ॥

* सू० वे० ४, ३, ११, ३ ।

† ‘रथकारं पृष्ठम्’—इति वि० ।

‡ ‘भूतभविष्ये उक्ते वर्त्तमान मपि लभ्यते’—इति वि० ।

॥ कण्वरथन्तरम् ॥ ^{१२ १२ १२ १२ २१} अभित्वाष्टूरनोनुमाः । ^{२१ २} अदग्धा

आयि । वा॒धायिना॒वाः । ई॒शानमस्यजगतःसुव॒ह । शा

२३४ मैही । ईशाना २३४ मी । द्रव्य भाजवा २३ । ए३ ।

१ ५ १ २ २ १ २ १ २ १ २ २ १ २ .
स्थुषभा ॥ (१) आयिशानमिन्द्रसुस्थुषाः । ईशानमायि ।

२ १ २ २ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
 द्राक्षस्युष्णः । नत्वावाञ्छन्योदिवियोनपार्थिवार३४ऐ

२१२ ५ २ २ २२
ही। नजातो२३४ना। • जना३१उवा२३। ए३। ध्यत.

२ २ १२ २ १ २ १ २ २
आ ॥ (२) नाजातो न जनिष्यतायि । नजातो ना । जा ३ .

नायिष्याशनायि । अश्वायन्तोमघवन्निन्द्रवाजिनार३४ऐ

ही । गव्यन्ता२३४स्त्वा । इवा३१उवा२३ । ए३ । म

३ २
ह्रस्वा(३) ॥ १८ ॥ [१]

॥ ककुबुत्तरेकखरयन्तरम् ॥ ^{२२ १२ २२ १२ ११} आभित्वापूरनोनुमाः ।

२ १ २ २ १ २ १ २ २
अद्गधात्रायि । वाश्धायिनाश्वाः । ईशानमस्यजगतः

सुवर्हशा२३४मैह्री । ईशाना२३४मी । द्रव्य३आउवा२३ ।

ए३ । स्थुषआ ॥ (१) आयिशानमिन्द्रसुस्थुषाः । नाश्वा

वा३आन् । योदिवियोनपार्थिवा२३४ऐह्री । नजातो

२३४ना । जना३१उवा२३ । ए३ । व्यतआ ॥ (२) ना

जातो नजनिष्यतायि । आ३श्वाया३न्ताः । मघवन्निन्द्र

त्राजिना२३४ऐह्री । गव्यन्ता२३४स्त्वा । हवा३१उवा२३ ।

ए३ । म३हआ (३) ॥ १ * ॥ [२]

॥ वारवन्तीयम् ॥ अभित्वाशाऔहोहायि । रानो

नूर३४माः । अदुग्धाद्वधेनावो२३४हायि । ईशानमस्य

जगतः सुवर्ह३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उज्जवा

२३४शाम् । ईशानम् । आयिन्द्रसुस्थू३४ । औहो

वा । इहा२३४हायि । औहोवा । इहा२३४हायि ।

^{३२ २} औहो३१२३४ । ^{५२ ५} षाः । ^{२२ २ २} एहियाईहा ॥ (१) ईशानमाओ

^{१ १} होहायि । ^{३ ५} द्रासुस्थूर३४षाः । ^{२ १ ५} नत्वावा२३४हायि ।

^{१ २ २ २ २} अन्योदिवियोनपार्था३४ । ^{३२ ४२ ५ १ ३ ५} औहोवा । ^{१ ३ ५} इहा२३४हायि ।

^{२ ३ ५ ६ १ २ १ ७ २ ३२ ४२ ५} उज्जवा२३४वाः । ^{१ ७ २ ३२ ४२ ५} नजातः । ^{१ ७ २ ३२ ४२ ५} नाजनिष्या३४ । ^{१ ७ २ ३२ ४२ ५} औहोवा ।

^{१ ३ ५ ३२ २ ५२} इहा२३४हायि । ^{५२} औहो३१२३४ । ^{५२} तायि । ^{५२} एहियाई

^{५ २ २ २ २ २ १ २ ३ ५} हा ॥ (२) ^{३ ५} नजातोनाऔहोहायि । ^{३ ५} जानायिष्या२३४ता

^{२ १ ५ १ २ २ २ ४*} यि । ^{२ १ ५ १ २ २ ४*} अश्वाया२३४हा । ^{२ १ ५ १ २ २ ४*} तोमघवन्निद्रवाजा३४ । ^{२ १ ५ १ २ २ ४*} औ

^{४२ ५ १ २ ५ २ ५ ५ २ १ २ *} होवा । ^{४२ ५ १ २ ५ २ ५ ५ २ १ २ *} इहा२३४हायि । ^{४२ ५ १ २ ५ २ ५ ५ २ १ २ *} उज्जवा२३४ । ^{४२ ५ १ २ ५ २ ५ ५ २ १ २ *} नाः । ^{४२ ५ १ २ ५ २ ५ ५ २ १ २ *} गव्यन्तः ।

^{१ ७ २ ३२ ४२ ५ १ २ ५ ४२ २} त्वाहवामा३४ । ^{३२ ४२ ५ १ २ ५ ४२ २} औहोवा । ^{३२ ४२ ५ १ २ ५ ४२ २} इहा२३४हायि । ^{३२ ४२ ५ १ २ ५ ४२ २} औहो३

^{५२} १२३४ । ^{५२} हायि । ^{५२} एहियाईहा (३) ॥ १२ * ॥ [३] ११

द्वितीय-वृत्ते प्रथमा ।

^{१ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २} कयानश्चित्रआभुवदूतीमदावृधःसखा ।

^{२ ३ १ २ ३ २}

कयाशचिष्ठयावृता ॥ १ १ ॥

* क० गा० २२ प्र० १ अ० १२ सा० ।

† क० आ० २, २, २, ५ (१ भा० ३८४ पृ०) = ऋ० वे० ३, ६, २४, १ । 'गायत्र'

“सदावधः” सदा वर्द्धमानः “चित्रः” चायनीयः पूजनीयः
 “सखा” मित्रभूतः इन्द्रः “कया” “जती” जत्या तर्पणेन “नः”
 अस्मान् “आ भुवत्” आभिमुख्येन भवेत् ? “शचिष्ठया”
 प्रज्ञावत्तमया प्रज्ञासहितानुष्ठीयमानेन । “कयाहता ?”—केन
 वर्त्तनेन कर्मणा च अभिमुखो भवेत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १२ २२ ३ १ २ ३ १ २

कृत्वासत्योमदानाम् हिष्ठोमत्सदन्वसः ।

१ १ १ ३ २ ३ १ २

दृढाचिदारुजेवसु ॥ २ ॥

“मंहिष्ठः” पूजनीयः “सत्यः” सत्यभूतः “मदानां” माद-
 यितृणां मध्ये “कः” † मदकरः ? “अन्वसः” सोमलक्षणस्यान्वस्य
 रसः ॥ “दृढाचित्” दृढ मपि “वसु” शत्रु-सम्बन्धि गवादिकं

साम । सर्वदेवत्वं वामदेव्यं वा ; यत्कवतीषु तेन प्राजापत्यं, कोहि प्रजापतिः ।
 यदनिरुक्तासु तेन प्राजापत्यं, अनिरुक्तोहि प्रजापतिः ; यद् गायत्रीषु तेनाग्नं यं
 गायत्रीच्छन्दोऽग्निः, यत्तृष्टुप न्यदधु तेनैन्द्रम् ; —एवं सर्वदेवत्वं वामदेवम्—इति
 वि० एवमेवादीनरव ।

† ऋ० वे० ७, ६, २४, २ ।

‡ ‘कः’ प्रजापतिः—इति वि० ।

॥ ‘अन्वस्य चर पुरोडाशादि-लक्षणस्य’—इति वि० ।

धर्मं “आरुजे” आ समन्तात् भङ्क्तुं* हे इन्द्र ! “त्वा” त्वाम्
“मत्स्यत्” मादयेत् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
अभीषूणःसखीनामविताजरितृणाम् ।

३ १ २ ३ १ ९
शतम्भवास्त्यये ॥ ३ ॥ १२ ॥

हे इन्द्र ! “सखीनां” समानख्यातीनां “जरितृणाम्”
“अविता” रक्षिता त्वं “नः” अस्माकं “शतं” शत-सङ्ख्याकम्
‘कृतये रक्षायै ॥ “सु” सुष्टु “अभि भवासि” अभिसुखी भव § ।
“शतम्भवास्त्यये”—“शतम्भवास्त्यतिभिः”—इति पाठो ॥ ३ ॥ १२ ॥

३ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
॥ महावामदेव्यम् ॥ काऽप्या । नश्चाइनाश्चाभुः

५ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
वात् । ऊ । तीसदावृधःस । खा । औश्चोद्वाइ ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
कयाश्शचाइ । छयौद्वाइ । ऊम्माइ । वाश्चोर्त्तोऽप्य

* ‘हृदा हृदानि । चिदिति पूरणः । हृदानि चानि वक्षूनि तान्येव वक्षे,
वक्षो भवे । भङ्क्ता, तानि सम प्रयच्छ’—इति वि० ।

+ ख० वे० ३, ६, ९४, ३ । † ‘मैवावक्षं पृष्ठम्’—इति वि० ।

॥ ‘कृतये चतुर्थ्येकवचनमिदं तृतीया-वञ्चवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् कृतिभिः संसं
वञ्चभिः पाञ्चनैरित्यर्थः’—इति वि० ।

§ ‘शतम्भवासि शतशब्दो वञ्चवाची । एतस्मादेव यदात् यत् वञ्चदेवत्यं कृतं
यदे तेन वैश्वदेव मित्युक्तम् । शतम्भवासि क. शिं सं दीर्घत्वम्—शतं भवसि’—इति वि० ।

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
हाइ ॥ (१) काऽप्रत्वा । सत्योश्माऽदानान् । मा ।

१० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
हिष्ठोनात्मादन्व । सा । औश्चोहाइ । दृढारश्चिदा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
रुजौहोश् । ऊम्माऽ । वाऽऽसोऽऽप्रहायि ॥ (२) आऽप्र

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
भी । घुणाऽसाऽखीनाम् । आ । विताजरायिटृ ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
णाम् । औश्चोहायि । शतारश्मवा । सियौहोश् ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
ऊम्माऽ । ताऽऽयोऽऽप्रहायि ॥ ५ * ॥ [१]

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
॥ स्वारसौपर्णम् ॥ कयानश्चिवा । भूश्वात् । ऊ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
तीसदावृधाः । ऊम् । साऽऽश्वा । कायाऽउवा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
शचि । छयोऽश्वा । वाऽऽर्तोऽहायि ॥ (१) कस्त्वास

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
त्योमदाऽनाम् । मऽहिष्ठोमत्सदा । ऊम् । धाऽऽश्वा

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
साः । दाढाऽउवा । चिदा । रुजोऽश्वा । वाऽऽसो

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
इहायि ॥ (२) अभिघुणःसखीनाम् । अविताजरा ।

१ २ ५ १ १ १ १ १ १
 ऊम् । तृ२३४णाम् । आताडवा । भवा । सियो२
 ५ ४ ५
 ३४वा । ता५योद्वायि ॥ ८ * ॥ [२] १२

अथ प्रगाथरूपे तृतीय सूक्ते—

प्रथमा ।

१
 तंवोदसमृतीष्वसोर्मन्दानमन्वसः ।

३ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
 अभिवत्सन्नस्वसरेषु धेनवद्गृहीर्भिर्नवामहे ॥ १ * ॥

नोधा नाम ऋषिरिन्द्रं स्तौति । हे ऋत्विग्वजमानाः ! “दक्षः”
 दर्शनीयं “ऋतीषहम्” ऋतयो बाधकाः शत्रवः तेषां मभिभवि
 तारं ; पुनः कौटुम्भम् ? “वसोः” वासयितुर्दुःस्वस्व विवासयितुर्नि-
 वारयितुः ; यद्वा वसोः पात्रे निवसतः स्थितस्य तादृशस्यान्वसः
 सोम-लक्षणाद्यान्वस्य पानेन “मन्दानं” मन्दमानं मोदमानं “वः”
 यष्टव्यत्वेन युष्मत्सम्बन्धिनं तं दादश मिन्द्रं “गौभिः” स्तुतिलक्ष-
 णाभिर्वाग्भिः “नवामहे” [नु स्तवने, शब्दे वा] अभिष्टुमः । कु-
 चेति “स्वसरेषु” । [अथ यास्कः—“स्वसराण्यहानि स्वयं सारीणि
 अपिवा स्वरादित्यो भवति स एताति सारयतीति] (निरु० नै०
 ५, ४) सूर्य-नेत्रकेषु दिवसेषु वयम् “अभिष्टुमः” अभितः

०. उ० मा० १० प्र० १ अ० ८ सा० ।

† अ० आ० १, १, ५, ४ (१ सा० ४८५ प०) अ० वे० १, १, १, १ । नोधाः
 काचीयत आर्षन् । इन्द्रो देवता ।

शब्दग्रामः । तत्र दृष्टान्तः—“वत्सं न” यथा धेनवो नव-प्रसूतिका
गावः स्वसरेषु सुष्टु अस्थन्ते प्रेयन्ते गावोऽनेति स्वसराणि गो-
ष्ठानि तेषु वत्सं मभिलष्य शब्दयन्ति तद्वत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३२ ३२ ३१ २ ३१२ ३१२ ३२३१ २

द्युच्छुदानुन्तविषीभिनावृतङ्गिरिन्नपुरुभोजसम् ।

३२ ३१ २ ३११ ३१२३१२ २२

क्षमन्तवाजांशतिनसहस्रिणमक्षगोमन्तमीमहे ॥ २ * ॥ १३ ॥

“द्युच्छ” दीप्तिमन्तं निवासस्थानम् अतिशयितदीप्ति मि-
त्यर्थः । यद्वा, द्युच्छं दिवि द्युलोके क्षियन्तं निवसन्तं “सुदानु”
शोभन-दानं “तविषीभिः” बलैः “आवृतम्” आच्छादितम् । पुनः
कीदृशम् ? “पुरुभजसं” सोमादि-हविः-प्रदानेन बहुभिर्यजमानै
र्भोजयितव्यम् । यद्वा, बहुनां पालयितारम् इन्द्रम् ॥ “क्षमन्तम्”
[टु चु चये] शब्दवन्तम् अनेन पुत्रादिकं लक्ष्यते ; सोत्रादीति
कुर्वाणं “शतिनं सहस्रिणं” शत-सहस्र-सहस्रक-धन-युक्तं
“गोमन्तम्” गवादि-युक्तं “वाजम्” अत्र “मक्ष” शीघ्रं “ईमहे”
याचामहे । यद्वा, पूर्वाह्नीं वाज-विशेषणत्वेन योजनीयः—
प्रदीप्तं शोभन-दान-योग्यं बलादियुक्तं बहुभिः पुत्रमित्रादिभि-
र्भोज्य-शब्दादि-युक्तम् अन्नम् इन्द्रं याचामहे इति ॥ २ ॥ १३

० सू० वे० ६, ६, २, २ ।

† अत्र भोजसं साम ।

‡ ‘तविषीभिरावृतम्’ । तत्र शव इति वक्ष्यमाणं, वक्ष्यवक्षिः सञ्चारैरावृतम् ।
अथवा तविषीभिः सोतुमिच्छतिः मनुष्यजातिभिरावृतम्—इति वि० ।

॥ ‘गिरिं न पुरुभोजसम्’ । न शब्द उपरिष्टादुपचारत्वादुपमाद्यौषः, गिरि-
मिव वक्ष्यमानम् । गिरौ पर्वते वक्ष्यमान-तृप्तकाष्ठान्युपजीवति । अथवा गिरि-
र्मेघः तं सर्वं जगदुपजीवति—इति वि० ।

॥ नौधसम् ॥ ता३४४म् । वो३४४म् । पा३४४म् ।
 वसो३४४म् । ना३४४म् । आ३४४म् । वा३४४म् ।
 स्वस । रायि । धू३४४म् । आ३४४म् । गा
 यिर्भिर्नवो३४४म् । मार३४४म् ॥ (१) आ३४४म् । इ
 ज्जीर्भिर्नवा । मा३४४म् । इन्द्रगीर्भायिः । ना३४४म् ।
 हायि । दूर३४४म् । छदानुम् । तवि । षायि ।
 भायिरोवा३४४म् । गार३४४म् । नपुरुभो३४४म् ।
 जार३४४म् ॥ (२) गार३४४म् । रिन्नपुरुभो । जासास् ।
 गिरिन्नपू । रु३४४म् । जार३४४म् । चूर३४४म् । तंवाजम् ।
 श्रति । नाम् । सा३४४म् । मार३४४म् । गो
 मन्तमो३४४म् । मार३४४म् ॥ ६ * ॥ [१]

॥ अभीवर्तम् ॥ तंवो३४४म् । मार३४४म् । वा

^{१ २}सोमन्दा । ^{१ २}नमाधाशसारः । ^{१ २}आभिवत्सा३१३३४म् ।

^{२ ४ ५ ६}नस्वसरे । ^{२ १ २}पुधायिनाशवारः । ^{१ २}इन्द्राङ्गाश्विभारः । ^३न

^२वाङ् । ^१मार३४५ । ^{३ १ १ १ १}चार३४५यि ॥ (१) ^{४ ४ २ ७ ४}इन्द्राङ्गाश्विभि

^{५ ६ ४ ५}र्नवामहोवा । ^{१ २ २}आयिन्द्रगौर्भिः । ^{१ २}नवामाशहारयि । ^१द्यु

^२क्षुदा३१२३३ । ^{२ ४ ५ ६}नुन्तविषी । ^{१ १ २}भिरावाशन्तारम् । ^१गि

^{१ २}रायिन्नाश्वर । ^{३ २}रुभो३ । ^१जा२३४५ । ^{१ १ १ १ १ १}सार३४५म् ॥ (३)

^{५ ४ २ ४ ५ ६ ४ ५}गिराश्विन्नाश्वरुभोजसोवा । ^{१ २}गायिरिन्नपु । ^{१ २}रुभोजा१

^{१ २}सारम् । ^{२ ४ ५}क्षूमन्तवा३१२३४ । ^{२ १}जग्गतिनम् । ^{२ १}सहा

^१स्वाश्विणारम् । ^{१ २}मक्षूगोशमार । ^{२ २}तमाहयि । ^१मार३

^{३ १ १ १ १}४५ । ^{३ १ १ १ १}चार३४५यि ॥ १४ * ॥ [२]

^{५ ६ २ ४ ५ ४ ५ ५}॥ जनिवाद्यम् ॥ ^{१ १}तंवोदा३स्मृतीषहाम् । ^{१ १}ऊवे

^{१ २}हो३यि । ^{२ १}वसोमन्दानमान्वाशसारः । ^१अभिवत्सन्नस्व

सरा॒रयि॑ । पु॒धा॒यि॒मा॒र॒३४वाः॑ । इन्द्रा॒र॒हो॒यि॑ । गी
 र्भा॒ईयि॑र्हो । न॒वा । मा॒र॒हा॒र॒३४औ॒हो॒वा ॥ (१) इन्द्र॒ङ्गा
 रयि॑र्भिर्न॒वाम॑हायि । ऊ॒वे॒हो॒रयि॑ । इन्द्र॒गी॒र्भिर्न॒वामा॑
 र॒हा॒रयि॑ । द्यु॒त्स॒दानु॑न्तविषा॒रयि॑ । भिरा॒वा॒र॒३४
 र्ता॒म् । गिरा॒रयि॑र्हो॒यि॑ । न॒पू॒र॒हो । रु॒भो । जा॒र
 सा॒र॒३४औ॒हो॒वा ॥ (२) गिरि॒न्ना॒र॒पु॒रु॒भो॒ज॒साम् । ऊ॒वे
 हो॒रयि॑ । गिरि॒न्ना॒र॒पु॒रु॒भो॒१जा॒सा॒र॒म् । क्ष॒म॒न्त॒वा॒ज
 श॒ति॒ना॒र॒म् । स॒हा॒स्रा॒र॒३४यि॑णाम् । म॒त्त॒र॒हो॒यि॑ । गो
 मा॒र॒हो । त॒मी । मा॒र॒हा॒र॒३४औ॒हो॒वा । ज॒नि॒वा॒र॒३
 ४५॒म् ॥ ५ * ॥ [३]

॥ शु॒द्धा॒शु॒द्धी॒या॒द्यम् ॥ तं॒वो॒द॒स्म॒मृ॒ती॒ष॒हाम् । व॒सो
 र्म॒न्दा॒म॒न्धा॒र॒३साः॑ । अ॒भि॒व॒त्स॒न्न॒स्व॒सरे॑षु॒धे॒ना॒र॒३वाः॑ ।

इन्द्रङ्गारश्चिर्भाश्चिः । नार । वामाश्चौहोवा । चा

२३४५यि ॥ (१) इन्द्रगीर्भिर्नवामद्यायि । इन्द्रगीर्भिर्नवा

मारश्चद्यायि । द्युषः सुदानुक्तविषीभिरावारश्चर्त्ताम् । गि

रिन्नारश्चपूव । रुव । भोजारश्चौहोवा । सारश्च४५म् ॥ (२)

गिरिन्नपुरुभोजसाम् । गिरिन्नपुरुभोजारश्चसाम् । क्षु

मन्तवाजः प्रतिनः सद्यस्वारश्चिणाम् । मक्षूगोरश्चमाश् ।

तारम् । ईमाश्चौहोवा । चारश्च४५यि ॥ ८ * ॥

॥ जनित्रोत्ररम् ॥ तवोदस्ममृती । षद्याश्चम् । वसो

र्त्ता । होयि । होयि । दानामन्धामारश्च४ः । अभि

वन्सन्नस्वसरे । षुधाश्चिनावाः । आयिन्द्रङ्गीर्भिर्नवौह ।

होश्चि । मारश्चारश्चौहोवा ॥ (१) इन्द्रङ्गीर्भिर्नवा ।

मद्याश्चि । इन्द्रङ्गायि । होयि । होयि । भिर्त्तावा

१ ४ ४ ४ ३ ४ ४ ४ ३ ४ ४ ४
१माहार३४यि । द्युत्सुदानुन्विषी । मिराश्वात्ताम् ।

१ १ ५ १ ४ ४ ४ ४ ४ ४
गायिरिन्नपुरुभौ३ । हो३३यि । जारसार३४औहोवा ॥ (२) .

४ ३ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
गिरिन्नपुरुभो । जसारम् । गिरिन्ना । होयि । होयि ।

१ ४ ३ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
पुरुभो१जासार३४म् । कुमन्तवाजश्शतिनम् । सद्वा३

४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
स्वायिणाम् । मात्तूगोमन्तमौ३ । हो३३यि । मारहा

४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
२३४औहोवा । जनी३३वार३४५म् (३) ॥ १० * ॥ [५] .

४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
॥ सौभरम् ॥ तं वो३३दा३३स्माऽमृतीषहोवा । वसोर्म्म ।

४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
न्दानमन्धसोभिवत्सन्नस्वसाररायिषुधार३ । होयि । ना

४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
२३४वाः । इन्द्रङ्गीभिः । नवा३३हा३यि । मारहार३४

४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
औहोवा ॥ (१) इन्द्रा३३ङ्गा३यिभिर्नवामहोवा । इन्द्रङ्गी

४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
भिर्नवामहेद्युत्सुदानुन्वारयिषायिभिरा३३ । हो ।

४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
वार३४र्त्ताम् । गिरिन्नपु । रुभो३३हा३यि । जारसार

३४^{५४४}चौहोवा ॥(२) गिरा^{३४}ह^{२४}बिन्ना^{१४}श^४पु^{५४}र^४भोज^४सोवा । गिरि^१

नृपुरुभोजसंशुभन्तं वाजश्रुताश्चिनाश्चहाश्च । हो ।

५ १२२ ५१ १ १
स्वा२३४यिणाम् । मक्षुगोम । न्तमा३हा३यि । मा२हा

२३४ श्रीहोवा । जर३४पू (३) ॥ ४ * ॥ [६]

॥ आष्कारणिधनं काव्यम् ॥ तं वो दाशम्युत्तीषहा

१ २ २ २ १ १ १ २ १
म् । वासोर्मान्दा । नमा२३न्धसाउ । वा३२ । अभिवत्साम् ।

२३११ २१८ ५ १ २ १८
 .नखसरायि । पुधेना२३४वाः । आरुयिन्द्राम् । गौर्भि

१ १२ ५ २ ४
र्त्त । वामार३४५हाई५ईयि ॥(१) इन्द्र३३यिभिर्त्त

५२४५ १ १२ २ ३

वामहायि । आयिन्द्रजीभिः । नवारश्महाउ । वा३२ ।

१ २१ २३ २१ २१२ ५
द्यक्षसुदा । नुन्तविषायि । भिरावार३४र्त्ताम् ।

गा^१२^२यिरीम् । न^१पु^२र । भोजार^{१२}३४५साई५६म् ॥२॥

१ २ ४ ५ ४ ५ १ २ १ २
गिरिजाहृदभोजसाम् । गायिरिन्नपु । हृभोश्जसा

उ । वा३२ । जुमन्त॑वा । जं॒गतिनाम् । स॒हसा

२३४यिणाम् । मा२३३ । गोमन्तम् । ईमा२३४५५

६५६यि । आ२३४५५ (३) ॥ ८ * ॥ [७]

॥ ककुबुत्तरनौधसम् ॥ ता२३४म् । वोद॒स॒म॒नी ।

षा॒हाम् । वसो॒र्मन्दा । ना॒श्मा॒न्धा॒श्साः । आ॒३३

भी । वा॒त्स॒न्न । स्व॒स । रा॒यि । धू॒धेना॒३४वाः । आ

३३यिन्द्राम् । गा॒यिभिर्न॒वो॒३४वा । मा॒३३४५५ ॥ (१)

आ॒३३४यि । न्द्र॒ङ्गीभिर्न॒वा । मा॒हा॒यि । द्यू॒ञ्जा॒ण्ड

३दा । नू॒३३न्ता । वि । षा॒यि । भा॒यि॒रा॒वा॒३३४त्ताम् ।

गा॒३३यिरीम् । न॒पु॒रु॒भो॒३३४वा । जा॒३३४साम् ॥ (२)

गा॒३३४यि । रि॒न्न॒पु॒रु॒भो । जा॒साम् । जू॒३३मा॒न्ता॒३वा ।

१ २ १ ५ ३ ५ ५
 जार३५शा । ति । नाम् । साच्च३३४यिणाम् । सा

२ १ ५ १ ५ ४ ५
 २३चू । गोमन्तमो३३४वा । मा३३४चे(३)॥ १७* ॥ [८]

११ २ ५२
 ॥ वाङ्मिधनं कौच्चम् ॥ तंवोदात्ता३१२३४म् । च३ती ।

३२ २ ११ १ ५ ५ २ २
 षहा३म् । वसो३म् न्दा३१२३४ । नम । धसा३ः । अ

१ २ ३ ४ ५ २ ३ २ २ १
 भीवात्सा३१२३४म् । नस्वसरेषुधे । नवा३ः । इन्द्राङ्गा

१ ४ २ १ २
 यिर्भा३१२३यिः । नवा५महाउ ॥ (१) इन्द्राङ्गायिर्भा३१

५ २ २ १ २ २
 २३४यिः । नवा । महा३यि । इन्द्राङ्गीर्भा३१२३४यिः ।

५ २ ३ १ २ १ २ २ ३ ४ ५ २
 नवा । महा३यि । द्युत्ता३सूदा३१२३४ । नुन्तविषी

२ ३ २ २ १ २ ४
 भिरा । वृता३म् । गिरायिन्नापू३१२३ । रुभो५पुजसा

२ १ २ ५ २ ३ २
 उ ॥ (२) गिरायिन्नापू ३ १ २ ३ ४ । रुभो । जसा३म् ।

२ १ २ ५ २ २ २ १ २
 गिरिन्नपू ३ १ २ ३ ४ । रुभो । जसा३म् । क्षुमान्तांवा

१५०४ख०४ख०१] उत्तरार्चिकः । १०१

३१२३४। ज०शतिन०सह । स्त्रिणा३म् । मन्तूगोमा

३१२३। तमापुयिमहाउ (३) ॥ १४ * ॥ [८] १३

चतुर्थे प्रगाथे—प्रथमा ॥

१२ ३१२३ १२ ३१ २३१२
तरोभिर्वीविददसुमिन्द्र०सबाधजतये ।

३१२ २२ ३१२ ३२ ३२उ ३ २३ १ २
बृहद्गायन्तःसुतसोमेअध्वरेज्जवेभरन्नकारिणम् ॥ १७ ॥

हे ऋत्विजः ! “वः” यूयं “तरोभिः” वेगैरश्वैरुपेतं वेगै
रेव वा “विददसु” वेदयदसुं धनावेदकम् “इन्द्र” “सबाधः”
बाधासहिताः “जतये” रक्षणाय “बृहद्गायन्तः” बृहत्सञ्ज्ञकं
साम गायन्तः सन्तः परिचरन्तेति शेषः । कुत्र ? इति,
तदुच्यते—“सुतसोमे” अभिषुत-सोमके “अध्वरे” यज्ञे सोम-
यागे ; अहञ्च स्तोता युष्मदर्थं “हुवे” आह्वयामि । कमिव ?
“भरं न” भरं भर्तारं कुटुम्बपोषकं “कारिणं” स्वहित-करण-
शीलं यथा स्वहित-करणायाह्वयन्ति पुत्रादयस्तद्वत्, तथा भूत
मिन्द्रं हुवइति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२उ ३१२ २२ ३२ ३२उ ३ १२ ३१२ २२
नयन्दुध्रावरन्तेनस्थिरामुरोमदेषुशिप्रमन्धसः ।

२३ १२ ३१ २ ३१२ २२ २२ ३२ २२
यआहत्याशशमानायसुन्वतेदाताजरित्रउक्थयम् ॥२॥१४१

* क० गा० २२प्र० १५० १४मा० ।

† क० आ० १, १, ५, ५ (१भा० ४२९ प०) = ऋ० वे० ६, ४, ४७, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, ४, ४७, २ ।

॥ “अथ कालेयं साम”—इति वि० ।

“सुशिप्रं” शोभन-हनुकं शोभन-नासिकं वा [“शिप्रे हनूनासिके वा (६, १०)—इति यास्कः] “यम्” इन्द्रं “दुध्राः” दुर्धराः असुरा-
दयः “न वरन्ते” सङ्ग्रामे न वारयन्ति, तथा “स्थिराः” देवाः
“न” वरन्ते, किञ्च “सुरः” मरणशीला मनुष्याः न वरन्ते, “यः”
च इन्द्रः “अश्वसः” सोमलक्षणस्याश्वस्य “मदे” मदाय सोमपान-
जनिताय* “आट्टत्य”†, “शशमानाय” शंसमानाय‡ “सुन्वते”
अभिषवं कुर्वते “जरित्रे” स्तोत्रे च ॥ “दाता” भवति ।
किम् ? “उक्थ्य” स्तुत्यं धनम् §, तं हुवे इति पूर्वेषु सम्बन्धः ॥

“मदेषुशिप्रं”—“मदेसुशिप्रम्”—इति षकार-सकारो
पाठौ ॥ २ ॥ १४

* मूले “मदेषुशिप्रम्”—इति संहितापाठः, तत्र साधनेन ‘मदे’ इत्येकं पदं
क्षिप्वा सुशिप्रमिति द्वितीयं खोक्तत मत एव ‘मदे’ मदाय, ‘सुशिप्रं’ शोभनहनुक
मित्यादि व्याख्यानम् । विवरणकारस्तु “मदेषु” इति क्षिप्वा शिप्रमिति द्वितीयं
चिच्छेद, तथाहि—‘मदेषु मदनोयेषु सोमेषु सन्निधानभूतेषु, सन्निधान-सप्तम्येषा,
अथवा मदेषु पुरतोऽवस्थितेषु’—इति वि० । पदकारकत-पदपाठोऽपि विवरण-
कार-नय-पोषकः ।

† संहितापाठस्तु “आट्टत्या”—इति, तत्र “द्वयोऽतस्त्रिः (६, २, १३५)”
इति दीर्घः । आट्टत्य आदरं छानेत्यर्थः ।

‡, § वैदिकी क्षुतिस्तु द्विधा भवति, शस्त्रैर्मन्त्रैः क्षोत्रैर्मन्त्रैश्च, तथा चात्र
अप्रगीतमन्त्रात्मक-शस्त्रैः क्षुतिं कुर्वाणः शंसमान उच्यते, तस्मै ; किञ्च प्रगीतमन्त्रात्मक-
क्षोत्रैः क्षुतिकारी क्षोत्रा, तस्मै चेति विवेकः ।

§ ‘उक्थ्यो नाम क्रतुः, तमुक्थ्यम् ; अथवा उक्थ्यानि सामानि तैर्यः सम्भजते
च उक्थ्यः, तमुक्थ्यं सामवन्तं क्रतु मित्यर्थः’—इति वि० ।

॥ मन्त्राकालेयम् ॥ ^{५ ४ २ ५ ४ ५ १ १} तरोभाइर्वीविद्वद्वम् । इन्द्रा

^{१ १ २ ३ २ १ २ ३ २ १ १} सवा । धक्तयारइ । वृद्धायाइ । तारइः । सुत

^{४ ४ ५ ४ १ १ १ ३ २ २ ५ ४} सोमेच । ध्वाइराइ । ऊवाइभरौ । वाइइओइइवा । न

^{५ ४ २ ४ ४ ४ ५ १ १} काऽपुरिणाम् ॥ (१) ऊवेभाइरन्नकारिणाम् । ऊवाइभ

^{१ २ ३ २ १ १ ३ २ १ १ ४} राम् । नकारिणारइम् । नयन्दुध्राइः । वारइः । रन्ते

^{३ ४ ५ ४ २ २ १ २ २ २ ५} नखिराः । मूइराः । मदाइषुशौ । वाइइओइइवा ।

^{४ ५ ४ २ ४ ५ ४ ५ १ १ २ १} प्रमाऽप्रमन्धसाः ॥ (२) मदेषूइशाइप्रमन्धसाः । मदाइषुशा

^{२ ३ २ १ १ ४ २ १ १ ४ ४} इ । प्रमन्धसारइः । यत्राहत्याइ । शारइः । शमाना

^{४ २ १ १ २ २ २ २ ५ ५ ४} यसु । ध्वाइताइ । दाताजरौ । वाइइओइइवा । च

^४ ऊऽप्रविथयाम् । चोऽप्रइ । डा(३) ॥ ७ * ॥ [१]

^{२ २ २ २ १ २} ॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ तरोभिर्वाचौहोहायि । वा

यिद्वा२३४द्यम् । इन्द्र२स्वाध२ऊतायो२३४हायि । वृ

हद्गायन्तःसुतसोमेअध्वा३४ । औहोवा । इहा२३४द्या

यि । उऊवा२३४रायि । ऊवेभ । रान्नकारा३४ । औ

होवा । इहा२३४द्यायि । औहो३१२३४ । णाम् । एहि

या३हा ॥ (१) ऊवेभराऔहोहायि । नाकारा२३४यिणाम् ।

ऊवेभरन्नकारायिणो२३४द्यायि । नयन्दुधावरन्तेनस्थिरामू

३४ । औहोवा । इहा२३४द्यायि । उऊवा२३४राः ।

मदेषु । शायिप्रमन्वा३४ । औहोवा । इहा२३४द्यायि ।

औहो३१२३४ । साः । एहिया३हा ॥ (२) मदेषुशाऔहो

हायि । प्रामन्वा२३४साः । मदेषुशिप्रमन्वासो२३४द्यायि ।

यआहत्याशशमानायसुन्वा३४औहोवा । इहा३द्यायि । उ

ऊवा२३४तायि । दाताज । रायित्रउक्था३४ । औहो

५ १ ३ ४ ६ १ ५ २
वा । इच्छा २३४ द्यायि । और्द्धो १२३४ । याम् । एच्चि

५ ४
याईहा । होपूर्व । डा (३) ॥ १५ * ॥ [२] १४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य प्रथमस्याध्यायस्य

चतुर्थखण्डः ॥ ४ ॥

पञ्चमखण्डे ॥

प्रथमं लघु—प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २ ३
स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया ।

१ २ ३ १ २ ३ १
इन्द्रायपातवेसुतः ॥ १ ॥

हे “सोम !” “इन्द्राय” “पातवे” पातुं “सुतः” अभिषुतः
त्वं “स्वादिष्ठया” स्वादुतमया “मदिष्ठया” अतिशयेन मादयिचत्रा
“धारया” “पवस्व” चर ॥ १ ॥

* ऊ० गा० १० प्र० १ अ० १४ सा ।

† ‘इदानीं सार्धवः पवमानः । तव बहूनि इन्द्रांसि—गयत्रीककुबुष्णिग-
नुष्टुबजगतीति इन्द्रांसि । पुष्कलोऽग्निः संहितः शफः श्लाघाप्रतः चन्वीगव इत्या-
र्याणि । सोमः सोमदेवता । सामदेवता नोच्यते विसृज्यमाना—इति वि० ।

‡ ‘उक्तो माध्यन्दिनः पवमानः—इति वि० ।

॥ ऊ० आ० ५, १, ४, २ (२ भा० ७ पृ० = ऊ० वे० ७, ७, १६, १ ।

अथ द्वितीया ।

३ १ २ १ २ २ २ ३ २ १ २
रक्षोद्याविश्वचर्षणिरभियोनिमयो हते ।

१ १ ३ १ २ १ २
द्रोणे सधस्थमासदत् ॥ २ * ॥

“रक्षोहाः” रक्षसां हन्ता “विश्वचर्षणिः” विश्वस्य द्रष्टा
लोमः “अयो हते” अयसा हिरण्येन हते [तथा च श्रूयते—
“हिरण्यपाणिरभिषुणोति”—इति] “द्रोणे” द्रोणकलशेन
अधिषवण-फलकाभ्यां वा† “सधस्थं” सधस्थानं “योनिम्”
अभिषवस्थानम् “अभ्यासदत्” अभिसुख्येनासीदति ॥

“अयो हते”—“अयो हत”, “द्रोणे”—“द्रुणा”—इति च
पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ २ १ २ ३ १ २
वरिवोधातमो भुवोमर्षिष्ठो वृत्रहन्तमः ।

२ २ १ २ २ १ २
पर्षिराधोमघोनाम् ॥ ३ ‡ ॥ १५

* ऋ० वे० ७, ७, १६, २ ।

† सोमभिषवे प्रथमं तावत् चतुष्कोषमुच्यते । इत्याकारं फलकद्वयं स्थाप्यते, तदु-
परि छण्डमृगचर्मं विस्तीर्य तत्र सोमोऽभिषूयते । ये अधिष्ठान्य वृषते सोम
मृत्विग्भिः, ते अधिषवणे, अधिषवणे च ते फलके, ताभ्याम्; अधिषवणमात्मक-फल-
काभ्यामित्यर्थः । सधस्थोमस्यार्थं तृतीया ।

‡ ऋ० वे० ७, ७, १६, १ ।

हे सोम ! त्वं “वरिवोधातमः” अतिशयेन धनानां दाता*
 “भवः” भव † [‘वेदः’, ‘वरिवः’—इति धननामसु (निघ० २,
 १०, ४-५) पाठात्] “मंहिष्ठः” दाह्यतमश्च ‡ भव [सर्वदातृत्व
 मचीक्यते इत्यपुनरुक्तिः] “वृचहन्तमः” अतिशयेन शत्रूणां
 हन्ता च भव । किञ्च “मघोनां” धनवतां शत्रूणां ¶ “राधः”
 धनञ्च “पर्षि” अस्मभ्यम् प्रयच्छ § ॥

“भुवः”-“भवः”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १५

॥ स० द्धितम् ॥ स्वादिष्ठयाम । दा० इष्ठया । पवा
 २ । स्वा० र० सो । मधा० र० राया । आ० र० इन्द्रा । या० र०
 पा । तवा० र० ३ । हाउवा० ३ । रु० र० ४ ताः ॥ (१) र० र० ५
 विश्व । चार्० र० षणाईः । अभा० र० ६ । यो० र० ७ नीम् ।
 अयो० र० ८ हाताइ । द्रो० र० ९ णे । सा० र० १० धा । स्थमा ११ ३ ।

* ‘वरिव’ वरिष्ठः भवः । धातमः वेद, पाने, पानतमः । एकः पानभूतः, एक
 पानतरः, अन्यः पानतमः । अथवा धाता दाना, स्थापिता वा—इति वि० ।

† ‘भवः भूषोक्तस्य’—इति वि० ।

‡ ‘मंहिष्ठः मंहनीयतमः’—इति वि० ।

¶ ‘मघोनां धनवतां यजमानानाम्’—इति वि० ।

§ ‘पर्षि परित्विष्यते’—इति वि० ।

१ १ ३ ५ ५ ३ ५
हायि । मघोर । नार३४औहोवा । दीर३४शाः (३)

॥ २० * ॥ [२]

॥ जराबोधायम् ॥ १२ १ २ १ २ १ २
खादिष्ठयोवा । मादिष्ठया । प
१ २ २ १ २ ४ ५
वास्वार३सो । मधाराया । इन्द्राया१पार३ताऽ । वे ।
३ २ १ २ १ २ १ २ १
सुतो३४५ई । डा ॥ (१) रक्षोहावोवा । आचषणायिः ।
२ १ २ १ २ २ ४
अभायियो२३नीम् । अयोहातायि । द्रोणेसा१धार३स्था
५ ३ १ १ २ १ १
म् । आ । सदो३४५ई । डा ॥ (२) वरिवोधोवा ।
१ २ २ १ २ १ २ १
तामोभुवाः । म१हायिष्ठोर३वा । चदन्तामाः । पर्षा
१ ५ ३ २ १
यिरा१धार३ः । म । घोनो३४५ई । डा (३) ॥ १०७ ॥ [३]

२ २ २ १ २ १
॥ हाविष्कृतम् ॥ स्वादिष्ठयामदाहाउष्ठया । पव
१ २ १ २
स्वसो । मधारा२३या । इन्द्रा२हो१ । या२३पा । त
१ २ ३ ५ २ २ २ २ १
वे । ह२रता२३४औहोवा ॥ (१) रक्षोहाविश्वचाहाउर्षा

११० सामवेदसंहिता । [१ प्र० १ अ० १५ सू० १, २, ३ ।

१ १ १ १ १ १
णायिः । अभियोनायिम् । अयोहतायि । द्रोणे

१ १ १ १ १ १
होशयि । सार३धा । स्थमा । सार३दार३धौहोवा ॥ (२)

१ १ १ १ १ १
वरिवोधातमोहोउभूवाः । म०हिष्ठोवा । अ०हन्ता३

१ १ १ १ १ १
मार३माः । पर्षा३होशयि । रार३धाः । मघो३र ।

१ १ १ १ १ १
नार३धौहोवा । अ०विष्कृते३३४५ (३) ॥ ७ * ॥ [४]

१ १ १ १ १ १
॥ दक्षिणधनं मौक्षम् ॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठया । औ

१ १ १ १ १ १
होवा । इ०ह्युधायि । पवस्वार३सो । मधारया । इन्द्रा

१ १ १ १ १ १
यार३पा३ । होवा३हा । तवेसूर३४५५ताई५६ः ॥ (१)

१ १ १ १ १ १
रक्षोहाविश्वचर्षणि । औहोवा । इ०ह्युधायि । अभि

१ १ १ १ १ १
यो३र३नीम् । अयोहतायि । द्रोणसार३धा३ । होवा

१ १ १ १ १ १
३हा । स्थमासार३४५५दाई५६त ॥ (२) वरिवोधातमो

१ १ १ १ १ १
भुवः । औहोवा । इ०ह्युधायि । म०हिष्ठो३र३वा ।

चक्षुःक्षमाः । पर्विरा२३धा३ः । होवा३हायि । मघो

२३४५ना६पु६म् । दक्षा३या२३४५ (३) ॥ ४ * ॥ [५]

॥ गौषूक्तम् ॥ स्वादिष्ठयामदौ । हो३होवा३हायि ।

ष्ठया । पव३स्व३सोम३धौ३ । ऊ३वायि । ऊ३वा३रयि । रा

या३र । इन्द्रा३यपात३वौ३ । ऊ३वायि । ऊ३वा३रयि । ख

ता३र३ः । हो३वा३र३३४ औ३होवा । अ३ग्निराऊ३ता३र३

४ पुः(१) ॥ ८ ॥ [६]

॥ खरूपोत्तरम् ॥ र३क्षो३हावौ३हो३र । इ३या । अ३चर्षा

णा३रयिः । अ३भियो३नौ३हो३र । इ३या । अ३यो३हा३ता३रयि ।

द्रो३णो३स३धौ३हो३र । इ३या । स्थि३मा३सा३र३दा३र३३३त् । ओ३र

३४पु३ई । डा(२) ॥ १३ ॥ [७]

११२ सामवेदसंहिता । [१प्र० १अ० १५सू० १, २, ३ ।

५२ २ ४२ ५ २ १ २ १ ५
॥ काक्षीवन्तम् ॥ स्वादिष्टाश्यामदिष्टया । पवास्व

१२ २ १ ५ २ ३२ १ १ ९
सो । मधारया३ । ओ३४ । हाहोयि । इन्द्रायार३पा ।

३२ २ ३२ १ ५ ४ ५ ५ २
तवीहोयि । औहोर३४वा । सू५तोईहायि ॥ (१) रक्षो

१ ४ ५ १ १ १ २ १ ५
हाश्विश्चर्षणायिः । अभायियोनिम् । अयोक्षता३यि ।

२ ३२ २ १२ ५ २ ३२ २
ओ३४ । हाहोयि । द्रोणिसार३धा । स्थमौहोयि ।

३२ १ ५ ४ ५ ५ २ ४२ ५
औहोर३४वा । सा५दोईहायि ॥ (२) वरिवो३धातमो

२ १ १२ १ २ १ ५ २
भुवाः । म्हायिष्ठोवृ । वृक्षन्तमा३ः । ओ३४ ।

३२ २ १ २ ३२ १ ३२ १
हाहोयि । पर्षायिरार३धाः । मऔहोयि । औहोर३

५ ४ ५
४वा । द्यो५नोईहायि(३) ॥ १५* ॥ [८]

५२ २ ४५ ५ ४ ५ १
॥ भासम ॥ स्वादि । ष्टाश्यामा । ईया । दायि

१ १ १ २ ५ २२ ३२ १ १
ष्टाश्या२ । पावस्वसो । म । धौ३हो । वाहायि । र

१ १ २ ५ २ २ १ १ २
या२ । इन्द्रा२३ । या२पा२३४औहोवा । तवेसुना१ ॥ (१)

१ अ० ५ ख० १ सू० १, २, ३] उत्तरार्द्धिकः । ११३

रक्षः । चा३वायि । आ । ईया । चार्पा१णा२यिः ।

आभियोनिम् । अ । यौ३हो । वा३वायि । हता२

यि । द्रोणे२३ । सार३धा२३४ औ३होवा । स्थमा१सदा

१ त् ॥ (२) वरि । वो३धा । ता । ईया । मोमू१वा२ः ।

मा३च्छिष्ठोवृ । त्र । द्यौ३हो । वा३वा । तमा२ः । पर्षा

२३यि । रार३धा२३४ औ३होवा । मघोना१र्म (३) ॥ १६* ॥ [८]

॥ शैशवम् ॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठाय । पवस्वसोमधा ।

रया । इन्द्राया२३४पा । तवा३यिस्व५ता३५६ः ॥ (१)

रक्षो३वाविश्च३र्षा१णा२यिः । आभियोनिमयो३हता२यि । द्रो

णेसा२३४धा । स्थमा३सा५दा३५६त् ॥ (२) वरिवो३धात

मो३भवाः । म३च्छिष्ठोवृ३हन्तमाः । पर्षिरा२३४धाः ।

मा३घो५पुना३५६म् (३) ॥ १८* ॥ [१०]

* ऊ० गा० १८ प्र० १ अ० १६ सा० ।

† ऊ० गा० १८ प्र० २ अ० १८ सा० ।

॥ आश्वसूक्तम् ॥ आश्वौक्षोवाहायि । स्वादिष्ठया । म
 हायि । छया । ऐहीयैही१ । पावस्वसोमधारया । ऐ
 हीयैही१ । आरयि । आयिन्द्रायापा२ । तवे । सू
 रता२३४ औहोवा । शुक्रआहुता२३४५ः (१) ॥ २० ॥ [११]

॥ सचांसाहीयम् ॥ वरा३४यि । वोधातमोभुवः ।
 ओईवा । मदिष्ठोवृचक्षन्ता२माः । पार्षायि । रा
 र३धाः । मचौहो । वाहा३४यि । ओ२३४नोईहा
 यि(३) ॥ १ ॥ [१२]

॥ स्वारकौत्सम् ॥ स्वादीक्षिष्ठा२३ । यामदिष्ठयाई
 या । पवस्वसोमधारया । पावस्वसो । मधारार२या ।
 आयिन्द्रा३हा । यापा३हा । तवेसूर३ता३४३ः ॥ (१) रचो
 हीहा२३ । विश्वचर्षणिरीया । अभियोनिमयोक्षते । आ

^{१२}भियोनिम् । ^{१२}अयोहारशायि । ^१द्रोणे^{१ १ १}श्चायि । ^{१ १}साधा
^२श्हा । ^{१२}स्थमासार^२श्दा^{१ २ १}श्४३त् ॥ (२) ^{४२}वरीक्षीवो^१श्३ । धा
^२तमोभुवर्द्धया । ^५म^१च्छिष्ठो^{१२}वृत्रहन्तमः । ^१मा^२च्छिष्ठो^{१२}वृ ।
^१त्रहन्ता^२श्३माः । ^{१ २}पार्षा^२श्चि^{१ १}हायि । ^१राधो^२श्हायि । ^१मघो
^१श्३ना^२श्४३म् । ^१ओ^२श्३४पुर्द्ध । डा (३) ॥ २० * ॥ [१३] १५

अथ प्रगाथरूपे द्वितीय-सूक्ते—

प्रथमा ।

^{१ २ ३ १ २}पवस्व^{३ १ २}मधुमत्तम^{२ १ २ ३ १ २}इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमदः ।

^{१ २ ३ १ २ ३ १ २}

महिद्यक्षतमोमदः ॥ १ ँ ॥

हे “सोम !” “मधुमत्तमः” अतिशयेन माधुर्योपेतस्त्वम्
 “इन्द्राय” इन्द्रार्थं “मदः” मदकरः सन् “पवस्व” चर ।
 कीदृशः ? “क्रतुवित्तमः” अत्यन्तं प्रज्ञायाः कर्मणो वा लभकः,
 “महि” मंहनीयः “द्युक्षतमः” अत्यन्तं दीप्तः “मदः” मद-
 हेतुः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२ ३१ २४ १२ ३२ ३ २ ३२ २ १२
यस्यतेपीत्वावृषभोवृषायतेस्यपीत्वास्वर्विदः ।

२ ३ १२ ३ क २२ ३ २२ ३ २ ३ १२

ससुप्रकेतोअभ्यक्रमीदिषोच्छावाजन्नैतशः ॥ २ * ॥ १६

“वृषभः” कामानां वर्षकः इन्द्रः, हे सोम ! “यस्य” यं
“ते” त्वां “पीत्वा” “वृषायते” वृषभ इवाचरति, किञ्च
“स्वर्विदः” सर्वं जानतः “अस्य” तव “पीत्वा” पाने सति
“सु प्रकेतः” शोभन-प्रज्ञः ‡ “सः” इन्द्रः वृषभः शत्रूणां
अन्नानि “अभ्यक्रमीत्” अभिक्रामति । तत्र दृष्टान्तः—“न”
“एतशः” [—इत्यश्वनाम (निघ० १, १४, १०)] यथा अश्वः
“वाजं” सङ्ग्रामम् अभि गच्छति तद्वत् ॥

“स्वर्विदः”—“स्वर्दृशः”—इति पाठौ च ॥ २ ॥ १६

२ १ २ ४ ५ २ २ ५ १ १ २ २

॥ सफम् ॥ पवस्वाश्मधु । मत्तार२३४माः । इन्द्राय

१ १ २ ४ २ ५ २ १

सोमार२ । क्रतुवाइत्ताश्मो३ । मा३२३४दाः । महाइ ।

२ ४ २ ५ २ १ २ ४ ५

द्युक्षाताश्मो३ । मा३४५दोईहाइ ॥ (१) महिद्यूक्षत ।

* ऋ० वे० ७, ५, १७, २ ।

† ‘अस्य सोमस्य’—इति वि० ।

‡ ‘सुप्रकेतः सुप्रज्ञः’—इति वि० ।

§ ‘पीता’—इति ‘शर्वतः’—इति, ‘स्वर्दृशः’—इति च ऋग्वेदीयपाठाः ।

^{१ ४} ^५ ^{१ १ २ २ १} ^{१ २ ४}
मोमार३४दाः । यस्यतेपाइत्वां२ । वृषभोवा३र्षा३ ।

^२ ^५ ^{१ १} ^४ ^{२ ४} ^१
या३२३४ताइ । अस्या । पीत्वास्त्रवा३ः । वा३४५इदो

^५ ^{१ १ २} ^{४ २ ५} ^{२ ३} ^५ ^{१ १ १}
ईहाइ ॥ (२) अस्यपी३त्वासु । वर्वा३३४इदाः । ससुप्र

^१ ^१ ^२ ^४ ^२ ^५
काइतो२ । अभियाक्रा३मी३त् । आ३२३४इषाः ।

^{२ १} ^२ ^{२ ४} ^२ ^५
अक्का । वाजान्ना३ए३ । ता३४५शो३हाइ (३) ॥ ८* ॥ [१]

^{१ २} ^{१ २} ^१
॥ शङ्कुसाम ॥ पवस्वमा । ए२ । धुमा । तमाः ।

^२ ^२ ^{१ १ २} ^२ ^१ ^१
इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमार३दाः । माही२द्यू३त्ता३३ ।

^{२ १} ^५ ^४ ^५
तमो२३४वा । मा५दो३हायि (१) ॥ ६* ॥ [२]

^{१ २} ^{१ २} ^१
॥ शङ्कु ॥ पवस्वमा । ए२ । धुमा । तमाः ।

^२ ^२ ^{१ १ २} ^२ ^१ ^१
इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमार३दाः । माही२द्यू३त्ता३३ ।

^{२ १} ^५ ^४ ^५ ^१ ^{१ १ १ २}
तमो२३४वा । मा५दो३हायि ॥ (१) मद्दिद्यु३त्ता । ए२ ।

^१ ^२ ^{२ २ २} ^{२ १ १ २} ^२ ^१
तमाः । मदो । यस्यतेपीत्वावृषभोवृषाया३३तायि । आ

^१स्वा^१र^२पा^३यित्वा^४र३ । ^२सु^१वो^२र३४वा । ^५वा^६पू^७यि^८दो^९द्वा^{१०}यि ॥ (१)

^{११}अ^{१२}स्य^{१३}पी^{१४}त्वा । ^१ए२ । ^१सु^२वाः । ^१वि^२दाः । ^{१२}स^{१३}सु^{१४}प्र^{१५}के^{१६}तो^{१७}अ

^{११}भि^{१२}य^{१३}क्र^{१४}मी^{१५}दा^{१६}र^{१७}यि^{१८}षाः । ^१आ^२क्का^३र^४वा^५जा^६र३म् । ^{११}न^{१२}ओ^{१३}र३४

^५वा । ^४ता^५पू^६शो^७द्वा^८यि^९(३) ॥ ८ * ॥ [३]

॥ ^{१२}स^{१३}त्रा^{१४}सा^{१५}क्षी^{१६}यम् ॥ ^{१२}प^{१३}वा^{१४}र३४ । ^५स्व^६म^७धु^८म^९त्त^{१०}मः । ^५ओ

^५द्वा । ^१इ^२न्द्रा^३य^४सो^५म^६क्र^७तु^८वि^९त्त^{१०}मो^{११}मा^{१२}र^{१३}दाः । ^१मा^२र^३हा^४यि ।

^१द्यू^२र३द्वा । ^१त^२मौ^३र^४हो । ^{१२}वा^{१३}हा^{१४}र३४यि । ^१मा^२र३४दो^३द्वा

^३द्वा^४यि ॥ (१) ^३म^४हा^५र३४यि । ^१द्यु^२क्ष^३त^४मो^५म^६दः । ^५ओ^६द्वा ।

^१य^२स्य^३ने^४पी^५त्वा^६वृ^७ष^८भो^९वृ^{१०}षा^{११}या^{१२}र^{१३}ता^{१४}यि । ^१आ^२र^३स्य^४ा । ^१पा^२र३यि

^२त्वा । ^१सु^२वो^३र३हो । ^{१२}वा^{१३}हा^{१४}र३४यि । ^१वा^२र३४यि^३दो^४द्वा

^३यि ॥ (२) ^३अ^४स्य^५ा^६र३४ । ^१पौ^२त्वा^३सु^४व^५र्वि^६दः । ^५ओ^६द्वा । ^१स^२सु

^१प्र^२के^३तो^४अ^५भि^६य^७क्र^८मी^९दा^{१०}र^{११}यि^{१२}षा । ^१आ^२र^३क्का । ^१वा^२र३जाम् ।

१ ५ २८ ३२ १ १ ५ २८ ३२ १
नञ्चौ३हो । वा२३जाम् । नञ्चौ३हो । वा३३४यि ।

१ ५ ५
ता२३४ओ३चायि(३) ॥ ७ * ॥ [४]

१ २२ २ १
॥ इडाना२सङ्गारम् ॥ औहोयि३ज्जवा३होयि । पव

४ २ २५ २ ९ ४ २२ ३५
स्वमा३धू३मत्तमः । इन्द्रायसोमक्रतुवा३यित्ता३मोमदः ।

२२ २ १ ३ ९ ३ ५ १ १ २ १
औहोयि३ज्जवा३होयि । म३चायिद्यू२३४त्ता । तमोमदः ।

१ २ ४ ५ ४
इडा२३भा३ । ए३दीडा । हो५ई । डा ॥ ५ † ॥ [५] .

५ २ ४ ५ ४ ५ १ १ २ १
॥ कालेयम्* ॥ पवस्वा३मधुमत्तमाः । इन्द्रायसो ।

२ १ ५ २ २
मा२३ । क्रतू३ । वा२३४यित् । तमः । मा३दाः ।

१ ३ २ १ ५ ४ ५
म३चायिद्यु३हो । वा३४३ओ३३वा । तमो५मदाः ॥ (१) म

२ ४ ५ ४ २ ५ २ २ १ १
हिद्यू३क्षतमोमदाः । य३स्यतेपायि । त्वा३३ । वृषा३ ।

१ ५ २ २ १ ३ २ २
भो२३४ । वृषा । या३तायि । अ३स्थापीत्वौ । वा३३४३

* क० गा० ८ प्र० २ ख० ७ चा० ।

† क० गा० १० प्र० ५ चा० ।

‡ “महाकालेयम्”—इति ख० उ० ।

^२ओ^५३४वा । ^४सुवा^५पुर्विदाः ॥ (२) ^५अस्य^२पी^४त्वा^४सुव^५र्विदाः ।

^२ससु^२प्रकायि । ^२तो^१२३ । ^१अभा^५३यि । ^५आ^५२३४ । ^५क्री^५त ।

^२आ^२३यिषाः । ^१अ^३च्छा^२वाजौ । ^२वा^५३४३ओ^४३४वा । ^४न^४५त

^४शाः । ^४क्षो^४५इ^४डा(३) ॥ ५ * ॥ [६]

^२॥ च्या^५वनम् ॥ ^५पवा^५२३४ । ^५स्व^५म । ^५धु^५मा^५२३४त्तमा

^५इः । ^२ह्य^३उ । ^५आ^२यि^५न्द्रा^२या^२३४सो । ^२म^२क्र^२तु^२वि^२तमो^२मा

^५दो^१२३४हा^२यि । ^२म^२ह्य^२यि^२द्यू^२३त्ता^२३ । ^२ता^२मा^२२३ह्य^२३४यि ।

^१मा^५२३४दो^५ई^५ह्य^५यि(१) ॥ ४ † ॥ [७]

^१॥ प्र^२ती^२ची^२ने^२ड^२ङ्गा^२शी^२तम् ॥ ^१प^१व^१स्व^१म^१धु । ^१मा^१२त्त^१माः ।

^२आ^२यि^२न्द्रा^२य^२सी^२म^२क्र^२तु^२वि^२त् । ^१त^१मो^१म^१दा^१२३४ः । ^२ह्य^२ह्यो^२यि ।

^१म^२ह्यि^२द्यू^२त्ता^२ता^२इ^२माः । ^१म^५दा । ^१औ^५३ह्यो^२वा ॥ (१) ^२म^२ह्यि^२द्यू^२त्त ।

^१मो^२२म^२दाः । ^२या^२स्य^२ते^२पी^२त्वा^२वृ^२षभः । ^१वृ^१षाय^१ता^१२३४यि ।

३२ २ १ २ २ १ १ ४ ५
 हाहोयि । अस्यपौत्वास्त्रवाः । विदा । औश्होवा ॥ (२)
 २ १ २२ १२ १ १ २ २
 अस्यपौत्वासु । वार्विदाः । सासुप्रकोतो अभिय । क्र
 १ ० ३२ २ १ २ २ २ २
 मायिदिषारश्ः । हाहोयि । अक्खावाजान्नाश् । ल
 १ ० ४ ५ ४ ४
 शा । औश्होवा । ईडा (३) ॥ १८ ॥ [८]

१ २ ५ २
 ॥ धुरासाकमश्चम् ॥ पवस्वमाश् । चौश्होश् १ । धुम
 १ ५ २ २ २ ५ २
 त्तमाश् । चौश्होश् १ वि । इन्द्रायसोश् । हौश्होश् १
 २ २ ५ २ १ २
 मक्रतुवित्तमोमदाश् । चौश्होश् १ यि । महिद्युक्षाश् ।
 ५ १ २ २ ५ २
 चौश्होश् १ । तमोमदाश् । चौश्होश् १ २ ३ ४ ५ ई ।
 डा (३) ॥ ८ ॥ [९] १६

तृचात्मके तृतीयसूक्ते—

प्रथमा ।

१ २ १ २ ३ २ २ १ २ २ ३ १ २

इन्द्रमच्छसुताइमेवृषण्यन्तु हरयः ।

३ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २

शृष्टेजातासइन्द्रवःस्वर्विदः ॥ १ ॥

* क० गा० १३ प्र० २ ख० १८ सा० । † क० गा० १४ प्र० १ ख० ८ सा० ।

‡ क० गा० ६. २, ३, १ (२ भा० २० १ पृ०) = ख० वे० ३, ४, ८. १ ।

“शुष्टे” [शुष्टीति चिप्रनाम (निरु० ६, १२)] चिप्रं
 “जातासः” जाताः “इन्द्रवः” पाचेषु चरन्तः “सर्विदः”
 सर्वज्ञाः “हरयः” हरितवर्णाः “सुताः” अभिषुताः “इमे”
 सोमाः “दृषण” कामानां चेत्कारम् “इन्द्रम्” “अष्ट यन्तु”
 अभिगच्छन्तु ॥

“शुष्टे”-“शुष्टि”—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २२ ३ १ २२ ३ १
 अयम्भरायसानसिरिन्द्रायपवतेसुतः ।

१ ३ १ १ १ १ १ १
 सोमोजैवस्यचेततियथाविदे ॥ २ * ॥

“भराय” सङ्ग्रामाय “सानसिः” भजनीयः† “सुतः”
 अभिषुतः “अयं” “सोमः” “इन्द्रार्थं” “पवते” चरति यहादिषु
 चरति । ततः सोमः “जैवस्य” [“क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम्
 (१, २, २७५ वा०) ”—इति कर्मणः सम्प्रदान-सङ्ज्ञा, चतुर्थ्यथ
 षष्ठी (२, १, ३६)] जयशील मिन्द्रं “चेतति” जानाति ।
 “यथा” इन्द्रः “विदे” लोकैर्ज्ञायते तथा जानाति ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२१७ १ ११ १ १ १ १ १
अस्येदिन्द्रोमदेष्वाग्रभङ्गभृणानिसानसिम् ।

१२ ११२ ११२ १ १
वज्रश्चवृषणम्भरत्समप्सुजित् ॥ ३ * ॥ १७

“अस्येत्” अस्य सीमस्येव “मदेषु” सञ्जातिषु† “सानसिं” सर्वैः सभजनौर्यः‡ “ग्रामं” गृहीतव्यं धनुः “गृभृणाति” गृह्णाति [“इयहोर्भङ्गदसि”—इति भत्वम्] किञ्च “अप्सु-जित्” उदकार्यं वृषस्य जेता॥ यद्वा, ‘आपइत्यन्तरिक्षनाम (निघ० १, ३, ८) अन्तरिक्षे अहिनामकस्य जेता “इन्द्रः” “वृषणं” वर्धितारं “वज्रं च” स्वकीय मायुधं “सम्भरत्” सम्बिभक्तुः§ [विभर्त्तेरङागमः ॥

“गृभृणाति”—“गृह्णीत”—इति पाठो ॥ ३ ॥ १७

११ १ ४ ५ १ ३ ४
॥ पौष्कलम् ॥ इन्द्रमाश्कसु । तर्हि २ ३ ४ माइ ।

११ ११ २ १ ५ १ १ २ ७ ३
वृषाणंया । त्वहारारश्चयाः । अष्टाइजाता । सर्वैर

* ऋ० वे० ७, ५, ८, ९ ।

† ‘मदेषु निमित्तभूतेषु’—इति वि० ।

‡ ‘सानसिं साधनसमायम्’—इति वि० ।

॥ § विवरणकारणं यथान्तं ‘समप्सुजित्’—इत्येव पदं व्याख्यातवान्, न तु समिति मरदित्वाक्यतेन अप्सुजिदिनि पञ्चमिति । तथाचि—‘समप्सुजित् चङ्गा जेषु जेता’—इति ।

^३ न्दा ^२ २ ^{१ ३ १ १ १ १} ३ ४ ५ वा ^१ ६ ५ ६ः । सुवर्विदा ^२ २ ३ ४ ५ः ॥ (१) च
^{१ २ ४ ५} यन्माश्राय । ^{२, ४} साना ^५ २ ३ ४ साइः । ^{२ १ २ १ १} इन्द्रायपा । ^२ वाता
^३ इह ^५ २ ३ ४ ताः । ^{२ २ १ २} सोमोजै । ^० चा । ^१ स्यचारइता ^३ २ ३ ४ ५
^{२ २ १ ३ १ १ १ १} ताई ५ ६ इ । ^{२ १ २ २ ४ ५} यथाविदे २ ३ ४ ५ ॥ (२) ^२ अस्वेदीन्द्रोम । ^२ दा
^३ इषू ^५ २ ३ ४ वा । ^{२ २ १ २ १} ग्रामङ्ग ^{२, ३} भूणा । ^५ ताइसाना २ ३ ४ साइम् ।
^{१ १} वज्राच्चवा । ^० षणा ^१ २ ३ ४ ५ राई ५ ६ त् । ^{२ ३ ४ १ १} समसुजी २ ३
^{१ १} ४ ५ त् (३) ॥ १० * ॥ [१]

^२ ॥ सुज्ञानम् ॥ ^{२ १} इन्द्रमच्छा । ^{२ १} सुताइमायि । ^{२ १} वृषणं
^१ या २ । ^{२ २ १} तुह्रयाः । ^{१ १} अष्टेजाता २ । ^३ सइ । ^३ दारवा २
^{५ २ २} ३ ४ औचोवा । ^{१ २} सुवर्विदणउपा २ ३ ४ ५ (१) ॥ ७ † ॥ [२]

^{१ २} ॥ रोहितकुलीयाद्यम् ॥ ^{२ १ २} इन्द्रमच्छा । ^{२ १ २} सुताइमे ।
^{२ १ २} वृषणंयन्तुह्रयः ^२ अष्टेजा २ ३ ता । ^{१ २ १ २} सारइ । ^२ दावःसुवा ३ १

उवाच । वीर^५रुदः ॥ (१) अंराम्भरा । यसानसिः ।

इन्द्रायपवतेसुतःसोमोजारश्चित्रा । स्यारश्चे । ताति

यथा^२३३३३ । वीर^५३४४४ ॥२॥ अस्मि^{१ २२ १}दिन्द्राः । मदे^१

८ ८ ८ ८ ११ १ १ १
 षा । आभङ्गभूणतिसानसिवज्ज्वारश्वा । धारशणाम् ।

भारतमा १७ उवार ३ । पहर ३४ जीत् (३) ॥ १७ ॥ [३]

॥ सुज्ञानम् ॥ इन्द्रमच्छा । सुताइमायि । वृषणां

या२। तुह१रयाः। अ१ष्ट१जाता२२। स१इ। दा१रवा२३३

४ औहोवा । सुवर्विदण्ड ॥ (१) अयम्भरा । यसानसा

यिः । इन्द्रायापा२ । वतेसुताः । सोमोजायित्रा२ ।

स्यचे । ता२ता२३४औहोवा । यथाविदण३ ॥(२) अस्ये

दिन्द्राः । म॒देषु॑वा । ग्रा॒भ॒ङ्गाभ्॑णा॒२ । ति॒सान॑नसायि

म. । वज्रञ्चा^१२ । षण्णम् । भार^१रार^२३४षौ^{१२२}दीवा ।

समस्तुजिदेउपा२४५ (४) ॥ ८ * ॥ [४]

॥ प्रथमम् ॥ इन्द्रमच्छा रेह । ता इमोवा । वृषणं

या । तुह्रयाः । श्रुष्टेजातासइन्द्रवःसु । वार३ः । वि

दाउवा । ^{१२}अधिया २ ॥ (१) ^१अयभरा २य । ^२सानसोवा ।

इन्द्रायपा । वतेसुताः । सोमोजैत्रस्यचेततिय । थार३ ।

विदाउवा । ^२ ^{१२}अधिया २ ॥ (२) ^{१२}अस्येदिन्द्रो २म । ^२ ^{१२}देषुवोवा ।

१२१२ १ २३२२ १ २१५ १
 ग्राभङ्गभूषा । तिसानसायिम् । वज्रञ्चवृषणभारत्सम् ।

५२३। ^२पुजाउवा। ^{१२}श्रुधिया२। ^१२३^२श्रुधिया३४३।

१
ओ३४५६ । डा (६) ॥ २० ॥ [५]

॥ ऐडमायास्त्रम् ॥ ^{१ २ १}आइन्द्राम् । ^{२ १२}पाक्का । सुता

१५० १५० १५० १, २, ३] उत्तरार्चिकः । १२७

इमाविः । ^१वर्षणंया३१ । ^{११}तुह्रयाः । ^१अष्टा३१यि । ^{१२}जा
ता । ^१साइन्द्रवा३१ । ^{११}सर्वारक्षयिदा३४३ः(१) ॥ १६ * ॥ [६]

॥ औपगवाद्यम् ॥ ^१इन्द्रमच्छा । ^{१२}सुताइमायि । वृष
णां३३या । ^१तुह्रयः^{१२}अष्टजाता । ^१सइन्द्रा३३वाः । ^१सुव
र्वा३३यिदाः ॥(१) ^१अयम्भरा । ^{१२}यसानसाविः । ^१इन्द्राया
३३पा । ^१वनेसतः^{१२}सोमोजैवा । ^१स्यचेता३३तायि । ^{१२}यथा
वा३३यिदायि ॥(२) ^१अस्येदिन्द्राः । ^{१२}मदेषुवा । ^१ग्राभङ्गा
३३र्भणा । ^१तिसानसिंवज्रच्चवा । ^१र्षणम्भार३३रात् । स
मच्छ३३जीत् । ^१ऐ । ^१द्विया३३यि । ^{१२}द्विया३४औक्षीवा ।
^१ए३ । ^{११}उपा३१२४५ (३) ॥ १ * ॥ [७]

॥ दैवोदासम् ॥ ^{११}इन्द्रा३१म् । ^{१२}अच्छा३१२३४ । सु
ताः । ^{१२}आ३३विमायि । ^{११}वृषा३१ । ^{१२}णंया३१२३४ । ^१तुह्र ।

राश्याः । अष्टाश्रयि । जाताश्रयः । सद् । दाश्र

वाः । सुवाश्र । विदाश्र । ओरश्रवा ॥ (१) अयाश्र

म् । भराश्रयः । यसा । नाश्रयिः । इन्द्राश्र ।

यपाश्रयः । वते । सूरताः । सोमोश्र । जैत्राश्र

यः । स्यचे । ताश्रयि । यथाश्र । विदाश्र । ओ

रश्रवा ॥ (२) अस्येश्रत् । इन्द्रोश्रयः । मदे । पूश्रवा ।

ग्राभाश्रम् । गृष्णाश्रयः । तिसा । नाश्रयिम् ।

वज्राश्रम् । चवाश्रयः । षण्णम् । भाश्रत् । समा

श्र । सजीश्रत् । ओरश्रवा । ऊरश्रपा (३) ॥ १० ॥ [८]

॥ विशोविशीयम् ॥ इन्द्रमच्छम् । सूरताइमा

यि । वाश्रयि । तुष्टर । यःश्रयि । ऊमा

यि । जाश्रत् । सारश्रयि । ओ । ऊवायि ।

दा२३४वाः । ऊम्मायि । सू३वाः । वा२३४यिदाः ।

एहियाद्वा ॥ (१) अयम्भराहम् । या३सानसायिः । आ

श्विन्द्राया३पा । वतेसु । तःसो२३माः । ऊम्मायि ।

जा३यिवा३ । स्या२३४चेहायि । ओ । ऊवायि । ता

२३४तायि । ऊम्मायि । या३था३ । वा२३४यिदांयि ।

एहियाद्वा ॥ (२) अस्येदिन्द्रोऊम्मा३देषुवा । या३भाङ्गा३

भूणा । तिसान । सिंवा२३जाम् । ऊम्मायि । चा३

वा३ । षा२३४ण्हायि । ओ । ऊवायि । भा२३४

रात् । ऊम्मायि । सा३मा३ । सू२३४जीत् । एहिया

ईहा । हो३ई । डा(३) ॥ १ * ॥ [८]

॥ आश्ववृक्षम् ॥ आ३श्वी३होवाहायि । इन्द्रमच्छ ।

सुताः । इमे । ऐहो३यैहो३ । वार्षणंयन्तु हरयःश्रुष्टा

१३० सामवेदसंहिता । [१प्र० १अ० १७सू० १, २, ३ ।

यिजाता । ऐक्षीयैक्षी । आरेयि । साआरेयिन्दावा

रेः । सुवः । वारेयिदार२३४औहोवा । शुक्रभाजता

१.१.१.१
२३४पुः (१) ॥ १० * ॥ [१०]

॥ जराबोधीयम् ॥ इन्द्रमच्छोवा । हताइमायि ।

वृषाणां२३या । तुह्ययःश्रुष्टेजाता । सआयिन्दाश्वार३ः

सू । वः । विदो३४पूई । डा ॥ (१) अयम्भरोवा । या

सानसायिः । इन्द्रया२३पा । वतेसुतःसोमोजैत्रा । स्य

अयिता१ता२३यिया । या । विदो३४पूई । डा ॥ (२) अ

स्येदिन्द्रोवा । मादेषुवा । ग्राभाज्जार२३४र्भणा । तिसान

सिंवज्रच्चवा । षणाभाशरार३त्साम् । अ । सुजो३४पू

ई । डा (३) ॥ ११ † ॥ [११]

॥ आक्षारम् ॥ इन्द्रम् । अच्छा३४ । औक्षो३४पू

१५०५५०४५०२] उत्तरार्चिकः । १३१

५ १ १ १ १ १ १
तादृमायि । वृषणं यन्तु हरारश्चा३४ः । शुष्टा३४यिजा

२ १ २ ४ ५ ३ १ १ १ १ ५
ता । सइन्द्रवाः । सूश्ववि । दार३४५ः ॥ (१) अयम् ।

१ १ ३ ४ ४ १ २ १ १ २ २
भरा३४ । औहो५यसानसायिः । इन्द्रायपवते३२३ता

३ २ ३ २ २ १ १ ४ ५ ४
३४ः । सोमो३४जैत्रा । स्थचेततायि । या३थावि । दा

१ १ १ १ ५ २ ३ २ ३ ४ ४ ४
२३४५यि ॥ (२) अस्मेत् । इन्द्रो३४ । औहो५मदेषुवा ।

१ २ १ २ २ ३ २ ३ २
ग्राम३४भृणातिसानार३सा३४यिम् । वज्रा३४श्चवा । वण

१ ४ ४ ५ ३ १ १ १ १
भरात् । सा३मप्सु । जी२३४५त् (३) ॥ १७ * ॥ [१२] ५७

अथ चतुर्थसूक्ते — प्रथमा ॥

३ १ २ ३ १ २ १ १ २ ३ १ २
पुरोजितीषोअन्धसुःसुतायमादयित्वे ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २
अपश्वान् अथिष्टनसखायोदीर्घजिह्वम् ॥ १ १ ॥

हे “सखायः” सखिभूताः समानख्याना वा हे स्तोतारः !
“वः” यूयं “पुरोजितीः” [पूर्वसवर्णदीर्घः (७, १, ३८)] पुरः-

• ऊ० गा० १४ प्र० १५० १७ सा० ।

† ह० आ० ६, २, १, १ (२ भा० १४१ पृ०) — आ० वे० ७, ५, १, १

१३२ . सामवेदसंहिता । [१ प्र० १ अ० १ सू० १, २, ३ ।

स्थित-जयस्य “अन्धसः” अदनौयस्य सोमस्य स्वभूताय “सुताय”
अभिषुताय “मादयिन्नवे” अत्यन्तं मदकराय रसाय “दीर्घ-
जिह्वा” दीर्घा जिह्वा यस्य सः [“दीर्घजिह्वी च छन्दसि (४,
१, ५८)”—इति ङीष्णत्वेन निपातितः] तादृशं श्वानम्
“अप अघिष्टन” अपअघत अपबाध, यथा श्वा राक्षसा वा सुतं
सोमं न लिङ्गन्ति तथा कुरुतेत्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २२ ४ १ २ ३ १ १ ३ २
योधारयापावकयापरिप्रस्यन्दतेसुतः ।

२ ३ २ ३ २२
इन्दुरश्वोनकृत्यः ॥ २ * ॥

“सुतः” अभिषुतः “कृत्यः” [कृत्वौति कर्मनाम (निघ० २,
१, २०)] कर्मणि साधुर्यः † इन्द्ः सोमः “पावकया” पापानां
शोधयित्रा “धारया” “परि प्रस्यन्दते” परितः चरति ।
कथमिव ? “अश्वोन” यथा अश्वो वेगेन प्रगच्छति तद्वत् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ १ ३ १ ३ २
तन्दुरोषमभीनरःसोमंविश्वामिधिया ।

४ १ २ ३ १ २
यज्ञायसन्वद्रयः ॥ ३ ‡ ॥ १८

● ऋ० वे० ७, ५, १, २ । † ‘कृत्यः कृतिवान् देवामित्यर्थः’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १, ३ ।

“नरः” कर्मनेतार ऋत्विजः “दुरेषं”* [रोषतेर्हिंसार्थस्य
(म्वा० प०) रेफलोपे दीर्घाभावे, ओषतेर्दाहार्थस्य (म्वा० प०)
वा षलि रूपमिति, सन्देहादनवग्रहः] “तन्दुः” वधं दुर्हं वा
सोमम् “अभि” लक्ष्य “विश्वाच्या” सर्वान् कामानश्चिन्ना,
कामान् प्रापयित्वा† “धिया” बुद्ध्या “यज्ञाय” यज्ञार्थम्
“अद्रयः सन्तु” अदारणयुक्ताः‡ भवन्तु ॥

“यज्ञायसन्तुद्रयः”-“यज्ञं हिवन्त्यद्रिभिः”—इति पाठो ॥३॥१८

॥ शावाश्वम् ॥ पुरो३१ । जौ३ती । वो३२ । धा३सः ।
ए३हिया । छ । तायमादा । यि । लवा२इ । ए३हिया २ ।
अप३श्वानाश्वा३थी३ । द्वा३२३ना । ऐ३हा २इ । ए३हि
या २ । सखायोदा३र्घा३जी३ । का३३४पुयो३इचाई ॥(१)
सखा३१ । यो३३दी । घजि । का३३यम् । ए३हिया ।
यो । धारयापा । व । कया२ । ए३हिया २ । परिप्र

* ‘दुरेषम् ओषमित्यर्थः’—इति वि० ।

† ‘विश्वाच्या विश्वगामिन्या’—इति वि० ।

‡ ‘अद्रयः मेघाः वर्षलभावाः, अथवा अद्रयः अभिवर्गाश्च’—इति वि० ।

^{१ ४} स्यान्दा३ता३इ । ^५ ह२३४ताः । ^{१८} ऐ॒द्या॒र३इ । ^{१८} ए॒हिया॒र३ ।
^{१ २ ४} इन्द्र॒रश्चो॒ना३का३ । ^२ त्वा३४५यो॒र्द्वाइ ॥ (२) ^{१२} इन्द्र॒३१ः ।
^{१ ४} आ३श्चो । ^५ न॒क्त । ^{२ ४} त्वा३यः । ^५ ए॒हिया । ^१ ताम् । ^८ दुरो
^{१८} षमा । ^१ भी । ^{१८} नरा॒र३ः । ^८ ए॒हिया॒र३ । ^{१ १ ४} सोमं॒विश्वा॒ची॒श्या
^{५ २८} ३ । ^{१८} धा॒र३४या । ^८ ऐ॒द्या॒र३इ । ^{८ १ २} ए॒हिया॒र३ । ^२ य॒ज्ञाय॒सान्
^४ ३वा३ । ^२ द्रा३४५यो॒र्द्वाइ (३) ॥ ११ * ॥ [१]

^{१८ ८ २} ॥ आन्वी॒गवम् ॥ ^{१८} पुरो॒जिती॒वो॒श्वासाः । ^{१८} सु॒ताय ।
^{८ १ १} मा॒दा॒र३या । ^{१८ ८ २} ऊ॒म्मा॒र३१२ । ^{१ ४} त्वे॒अप॒श्चान् अ॒ग्रि॒ष्टना॒र
^{१११ १ २ २} ३४५ । ^१ सा॒खा३उ॒वा । ^१ यो॒र३दी । ^१ धा॒र३जी । ^१ क्रि॒याम् ।
^{४ ५} औ॒र३३हो॒वा ॥ (१) ^{२ ८ ८ ८} स॒खायो॒दी॒र्घजा॑ऽश्वि॒क्का॒याम् । ^{१ १८ ८} यो॒धा
^{८ २ १} र । ^{१ ८ २ १ १८ १२} या॒पा॒र३वा । ^{१ ८ २} ऊ॒म्मा॒र३१२ । ^{१ १८ १२} क॒याप॒रि॒प्रस॒न्दने॒सु॒ता१ः ।
^{१ २ १ १} आ॒इन्द्रा॑उ॒वा । ^{१ १} आ॒र३श्चो । ^१ ना॒र३का । ^१ त्वि॒या । ^१ औ

^{४ ५} ३क्षोवा ॥ (२) ^२ इन्दुरश्वोनकाऽशर्त्वायाः । ^२ तन्दुरो । ^१ षमा

^२ २३भी । ^१ ऊम्मा २५१२ । ^{१ २ २१२ २५ ३२} नरःसोमंविश्वाचियाधियाऽ१ ।

^{१ १} याज्ञाश्वा । ^१ वारस । ^२ त्वरश्वा । ^{१ २ ४ ५} द्रया । औश्क्षोवा ।

^४ होऽ५इ । डा (३) ॥ १२ ॥ [२]

^{४ २२ ४ ५ २ २} ॥ नानन्दम् ॥ ^{३ १} पुरोजितीवोअ । ^१ धसाः । ^१ सूरश्४ ।

^{२ ५ २} तायमादयि । ^{४ ५} त्नावायि । ^{४ ४ ३ २ ४ ५} अपश्वान्अथि । ^३ छनोर३

^५ ४हायि । ^{४ ३ २ ४ ५} अपश्वान्अथि । ^३ छनोर३४हायि । ^{१ २०} साखा

^{१ १} योदी । ^१ घजोर३४वा । ^५ क्वा५योइहायि ॥ (१) ^{३ ४ २ ५ २ २} सखायोदी

^{३ २} र्घजि । ^१ क्लियाइम् । ^{२ ५ २} योर३४ । ^{४ ५} धारयापाव । काया ।

^{३ ४ ४ ४ ५ २} परिप्रस्यन्दते । ^३ सुतोर३४हायि । ^{४ ३ ४ ५ २} परिप्रस्यन्दते । ^३ सुतो

^५ २३४ हायि । ^{१ २ १ २} आयिन्दूराश्वाः । ^{१ ५ ४} नकोर३४वा । त्वा

^५ ^{३ ४ ३ ४ ५} ^{३ २} ^१
पुयोद्दहायि ॥ (२) इन्दुरश्वोनक्त । त्वियाः । तार३४म् ।

^५ ^५ ^{४ ५} ^{३ ४ ३ ४ ५ ५} ^५ ^५
दुरोषमभौ । नाराः । सोमं विश्वाचिया । धियो र३४हा

^{४ ५} ^{३ ४ ४ ५ ५} ^३ ^५ ^{१ २ १ १}
यि । सोम विश्वाचिया । धियो र३४हायि । याज्ञायास ।

^१ ^५ ^४
तुवोर३४वा । द्रापुयोद्दहायि (३) ॥ १८ * ॥ [३]

^५ ^{३ २} ^{४ ५}
॥ गौरौ वितम् + ॥ पुरः । जितायि । वोअन्वसाः ।

^{१ ५} ^५ ^{१ २ २} ^४
सुमायमादयित्वा र३यि । आपश्चाना र१२३म् । अथा

^{१ ५ ५ ५} ^{४ ५ ४}
पुयिष्ठना । साखायोदा र१२३यि । घजोवा । ङ्गापुयो

^५ ^{५ ५} ^{३ ५} ^{४ ५} ^{१ ५ ५}
द्दहायि ॥ (१) सखा । योदायि । घजिङ्गियाम् । योधा

^५ ^{१ ५} ^४
रयापावकयार३ । पारिप्रस्था र१२३ । दतापुयिसुताः ।

^१ ^५ ^{४ ५} ^{४ ५}
आयिन्दुरश्वा र१२३ः । नकोवा । त्वापुयोद्दहायि ॥ (२)

^{३ ५} ^{४ ५} ^{१ ५ ५}
इन्दुः । अश्वो र३ । नक्तुवियाः । तन्दुरोषमभौ नरा र३ः ।

^१ सोम ^१ विश्वा^४ ३१२३ । ^४ चिया^१ पु^२ धियां । ^१ या^२ ज्ञाय^२ सा^२ ३१२३ ।

^४ तु^५ वो^४ वा । ^४ द्रा^५ प्रयो^५ ई^५ हा^५ यि^५ (३) ॥ १३ * ॥ [४]

॥ कार्त्तयणम् ॥ ^२ पु^२ रो^२ हा^२ हा^२ उ । ^२ जा^५ र^५ ३४^५ यि^५ ती । ^२ वो

^१ आ^२ औ^२ र^२ हो^४ र । ^४ धा^५ साः । ^१ सु^२ ता^२ औ^२ र^२ हो^४ र । ^४ या^५ मा^५ इ ।

^५ हा^२ उ^२ वा । ^२ द^१ यि^१ त्न^१ वे^१ र । ^१ उ^१ पा । ^१ अ^२ प^२ श्वान^२ श्म^२ या^२ शि^२ यि^२ ष्ठा

^२ इ^१ ना । ^१ स^२ खा^२ औ^२ र^२ हो^४ र । ^४ यो^५ दा^५ इ । ^५ हा^२ उ^२ वा । ^२ घा^२ जि

^१ क्रि^२ यम् । ^२ उ^२ पा^२ र^२ ३४^२ ५ ॥ (१) ^२ स^२ खा^२ हा^२ हा^२ उ । ^२ यो^२ र^२ ३४^२ दी ।

^१ घा^२ जि^२ औ^२ र^२ हो^४ र । ^४ क्वा^५ याम । ^२ यो^२ धा^२ औ^२ र^२ हो^४ र । ^५ रा^५ या^५ इ ।

^५ हा^२ उ^२ वा । ^२ पा^२ व^२ क^२ या^२ र । ^१ उ^१ पा । ^१ परि^२ प्र^२ स्य^२ न्द^२ ता^२ शि^२ यि^२ ष्ठ

^२ ताः । ^१ इ^२ न्दू^२ रौ^२ र^२ हो^४ र यि । ^४ आ^५ श्वा^५ इः । ^५ हा^२ उ^२ वा । ^२ न^२ क्त

^१ त्वि^२ यः । ^२ उ^२ पा^२ र^२ ३४^२ ५ ॥ (२) ^१ इ^२ न्दु^२ र्हा^२ हा^२ उ । ^३ आ^५ र^५ ३४^५ श्वाः ।

^{१ १ १ २ ४ ४ १ १ १ २ ४ ४}
नका^१घौ^२हो^३ । त्वायाः । तन्दू^४औ^५हो^६ । रोषा^७हम् ।

^{५ २ २ २ १ २ १ २ २ २ २}
हाउवा । अभीनरा^३ः । उपा । सोमंविश्वाचिया^४धा

^{२ १ २ २ ४ ४ ५ २ १ १}
र्या । यक्षा^१औ^२हो^३ । यासा^४ह । हाउवा । तुवद्रयः ।

^{१ १ १ १}
उपा^२२४५ (३) ॥ १४ * ॥ [पु]

^{४ ४ २ ४ ४ २ १ ३ ४}
॥ तृतीयं त्रैचम् ॥ पुरोजिता । हायि । वोअभ

^{३ ४ १ १ ३ २ ३ ४}
सा^१ह । सुता^२रयमा^३ । दया^४३४पुयि । त्ना^५२४वे ।

^{१ २ १ २ २ ३ १ १ १ २ २ १ १}
अपश्वान^१अथिष्टना^२२४५ । सखायो^३२दी । घजिक्कार

^{२ ३ ४ २ ४ २ २ १ ३ ४ ४ ४}
र्या^१३४हम् ॥ (१) सखायोदा । हो । घजिक्किया^२हमे ।

^{१ १ ३ २ ३ ४ २ २ १}
योधा^१रयार । पावा^२३४५ । कार^३३४या । परिप्रस्यन्द

^{२ २ ३ २ २ १ १ १ २}
तेसुता^१ः । इन्दुरार^२श्वाः । नक्तत्वा^३२र्या^४३४३ ॥ (२)

^{३ ४ ४ २ २ ३ ४ ४ ४ १ १ २}
इन्दुरश्वाः । हो । नक्तत्विया^१ह । तान्दू^२रोषार^३हम् ।

१ अ० ५ ख० ४ सू० १, २, ३ उत्तराश्विनः ।

१३८

^{२ २} अभा३४५यि । ^३ ना२३४राः । ^५ सोमंविश्वानिधियाधिया१ ।

^{५ १ २} यज्ञायार३सा । ^२ तुवद्रार३या३४३ः । ^१ ओ २ ३ ४ ५ ई ।

डा(३) ॥ ८ * ॥ [६]

॥ ऊर्ध्वेऽत्वाष्ट्रीमाम ॥ ^{२, २} पुरोजितीवोअन्धसाः । ^{२ २ १ २ १} सूता

^{२ २} रयमार२ । ^५ दया३४५यि । ^{१ १ १ २} त्वा२३४वे । ^२ अपश्वानश्च

^{१ १ १ १ १} घनार३४५ । ^{३ २ २ २ १} साखायोदायि । ^{२ १} घजिङ्कार३या३४३म् ॥ (१)

^{१ २ १ २ २ १} सखायोदीर्घजिङ्गियाम् । ^{१ १} योधा२रया२ । ^{३ २ २} पावा३४५ ।

^३ कार३४या । ^५ परिप्रस्यन्दर्तसुना१ः । ^{२ ३ २} इन्दुरश्वाः । ^३ नक्त

^२ त्वार३या३४३ः ॥ (२) ^{१ २ १ २ २ १} इन्दुरश्वोनक्तस्त्रियाः । ^{२ १} तान्दू२रोषा

^{२ २} रम् । ^३ अभा३४५यि । ^५ ना२३४राः । ^{१ २ १ २} सोमंविश्वानिधियाधि

^२ या१ । ^{३ २ २ १} यज्ञायसा । ^{२ १} तुवद्रार३या३४३ः । ^२ ओ२३४५ई ।

डा(३) ॥ १० ॥ [७]

^{२ २} ^{२ २} ^२ ^२
 ॥ मधुश्चुत्रनिधनम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसाश्ण । सुता
^{२ १} ^२ ^{२ २} ^१ ^२ ^१
 यमाश्दायित्नवाश् । ह्यश्हा । औश्होश्वा । आयिही
^२ ^१ ^२ ^२ ^१ ^१
 २ । अपश्वानाश्श्चायिष्टनाश् । ह्यश्हा । औश्होश्
^२ ^१ ^{१ २ २ १} ^२ ^२ ^१
 वा । आयिही २ । साखायोदाश् । ह्यश्हायि । औ
^२ ^१ ^१ ^१ ^२ ^{१ २ २}
 श्होश्वा । आयिही २ । घजि । क्कार्याश्श्चौहो
^{२ २ २ २} ^२ ^{२ २} ^{२ २ १} ^१
 वा ॥ (१) सखायोदीर्घजिह्वयाश्मे । योधारयाश्पावकया
^२ ^२ ^१ ^२ ^१
 ३ । ह्यश्हा । औश्होश्वा । आयिही २ । परिप्रस्था
^{१ २ २} ^{२ २} ^१ ^{२ २} ^१
 इन्दातेसुताश् । ह्यश्हा । औश्होश्वा । आयिही २ ।
^१ ^२ ^{२ २} ^१ ^२ ^१
 आयिन्दुरश्वाश् । ह्यश्हायि । औश्होश्वा । आयि
^१ ^२ ^{२ २ २} ^२ ^२
 ही २ । नक्त । त्वार्याश्श्चौहोवा ॥ (२) इन्दुरश्वा
^२ ^२ ^{१ २ २} ^२ ^२ ^१
 क्तवियाश्ण । तन्दुरोषाश्माभीनराश् । ह्यश्हा । औ
^१ ^२ ^२ ^{२ २ २} ^२ ^१
 श्होश्वा । आयिही २ । सोमंविश्वाश्चायाधियाश् ।

१५०५ख० ४सू० १, २, ३ उत्तरार्चिकः । १४१

१ २ ५ २ २ १ १ २ २
द्वाश्वा । औश्चोश्वा । आयिहीर । याज्ञायसा ।

१ २ ५ ३ १ १ १
द्वाश्वायि । औश्चोश्वा । आयिहीर । तुव । द्रा-

१ २ ५ २ १ ३ १ १ १ १ १
रयाश्चोश्वा । मधश्चतारश्चः ४५ः (३) ॥ १५ * ॥ [८]

४ १ ४ १ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पुरोऽपिजि । ताश्चिवोश्चन्धा

५ १ २ २ १ २ १ १ २
साः । द्वातायमा । दाश्यायिन्नाश्वे । अयाश्वा । न

२ १ २ २ १ २ २ २ २
आश्वा । ऊम्मायि । द्वाश्ना । साखायोदीर्घजा

१ २ १ २ १ २ २ २ २
यिक्त्रियाउ ॥ (१) साखा । योदीर्घजिक्त्रायोधरया । पा

१ २ २ १ १ १ १ १
श्वाकाश्वा । पराश्चिप्र । स्यन्दाश्ना । ऊम्मायि ।

१ २ १ २ २ २ २ २ २
द्वाश्वा । आयिन्दुरश्चोनकार्त्वियाउ ॥ (२) आयिन्दूः ।

१ २ २ २ २ २ २ २ २
अश्चोनकृत्यस्तन्दुरोषाम् । आशभायिनाश्राः । सोमा

१ २ २ १ २ २ २ २ २
रवि । आचाश्वा । ऊम्मायि । दाश्या । याज्ञाय

१ २ १ १ १ १ १ १
सन्तुवारद्वयाउ । वाश्चः ४५ (३) ॥ १६ * ॥ [९]

१ १ १ १ १ १ १ १
 ॥ बृहदाग्रेयम् ॥ पुरोजितो वो अन्धसः । ईयइयाहा
 १ १ १ १ १ १ १ १
 यि । सुताय । मा । दायित्ना २३४ वायि । आओ ३४
 ५ ४ ५ १ १ ० १
 हो । इयाहायि । अपश्वा । नाम् । अथा २ यिष्टा २३
 ५ १ १ ५ ४ ५ १ १ १
 ४ ना । आओ ३४ हो । इयाहायि । साखा ३ उवा । यः ।
 १ २ ३ ५ १ १ ५ ४ ५
 दायि । घाजिक्कार २३४ याम् । आओ ३४ हो । इयाहा ॥ (१)
 ५ १ १ १ १ १ १ १
 सखायो दीर्घजिक्क्रियम् । ईयइयाहायि । योधार ।
 १ १ १ ५ १ १ ५ ४ ५
 या । पावका २३४ या । आओ ३४ हो । इयाहायि ।
 १ ० ३ ५ १ १ ५
 परिप्र । स्या । दता २ यिष्ट २३४ ताः । आओ ३४ हो ।
 ४ ५ १ १ १ १ १ १
 इयाहायि । आयिन्दा ३ उवा । अ । ओ । नाकृत्वार
 ५ १ १ ५ ४ ५ १ १ १ १ १ १
 ३४ याः । आओ ३४ हो । इयाहा ॥ (२) इन्दुरश्चो नकृ
 १ १ १ १ १ १ १ १
 त्वियः । ईयइयाहायि । तन्दुरो । घाम् । आभायि
 ३ ५ १ ५ ४ ५ १ १
 ना २३४ राः । आओ ३४ हो । इयाहायि । सोमं वि । श्वा ।

चियारधार३४या । आऔ३४हो । इयाहायि । याज्ञा
 उवा । य । सा । त्वद्धार३४या । आऔ३४हो । इया
 हा । हो५ई । डा(३) ॥ १७ * ॥ [१०]

॥ औदलम् ॥ पुरोजितायि । वोआरन्धसाः । सु
 तायमा३ । दायित्ना२३४वायि । अपश्चानाम् । अथा
 रयिष्टना । सखायो२३दी३ । घार३जा३यि । क्का३४५
 योईहायि ॥ (१) सखायोदायि । घाजारयिक्कियाम् ।
 योधारया३ । पावकार३४या । परिप्रस्था । दाता२
 यिसुताः । इन्दुरार३श्वा३ । नार३का३ । त्वा३४५यो
 ईहायि ॥ (२) इन्दुरश्वाः । नाका२रत्वि५याः । तन्दरोषा
 इम् । आभायिनार३४राः । सोमंविश्वा । चाया२

१ २ १ १ ४ १
 धिया । यज्ञायार३सा३ । त२र३वा३ । द्रा३४५योई
 ५
 द्यायि(३) ॥ ३ * ॥ [११]

१ २ १ १ १
 ॥ ऐङमायास्यम् ॥ आयिपुराः । जायितायि । वोअन्ध
 २ २ १ १ १
 साः । हतायमा३१ । दयित्वायि । आपश्चाना३१म् ।
 २ १ २ २ २ १ २
 अथिष्टना । साखायोदा१यि । घजिक्का२३या३४३म् ॥ (१)
 १ २ १ २ १ २
 आयिसखा । योदायि । घजिक्कियाम् । योधारया३१ ।
 १ २ १ २ १ २
 पावकया । पारिप्रस्था३१ । दतेसुताः । आयिन्दुरश्वा
 २ १ २ १ २ १
 ३१ । नकुत्वा२३या३४३ ॥ (२) आइन्दूः । अश्वो । न
 १ २ २ १ १ १
 कुत्वियाः । तान्दुरोषा३१म् । अभीनराः । सोमंविश्वा
 २ १ २ २ १ १
 ३१ । चियाधिया । याज्ञायसा३१ । तुवद्रा२३या३४३ः ।
 १
 ओर३४५ई । डा(३) ॥ १७ * ॥ [१२]

१ २ २ १ १ १ १ १ १
॥ निषेधम् ॥ पुरोजितौवोश्चन्धसाः । सुतायमा ।
१ १ १ १ १ ४ ४ २ ३
दयित्वारयि । इहा३ । आपाश्चानाम् । द्वाहो२३
४ २ १ १ १ २ १ १ ४ ४
४हा । श्रुतिष्टा२३ना । इहा३ । साखा३योदायि ।
१ २ ४ २ २ ४ २ २ २
द्वाहो२३४हा । घजा३यिच्चापुया६पुईम् ॥ (१) सखायो
२ १ २ १ २ १ २ १ १ २
दीर्घा३जिह्वियाम् । योधारया । पावकया२ । इहा३ ।
१ १ ४ ४ १ २ ४ २ २ १ २ १ १
पारा३यिप्रास्या । द्वाहो२३४हा । दतेह् २३ताः । इहा३
१ २ ४ ४ १ २ ४ २ २ ४ २ ४
३ । आयिन् २राश्वाः । द्वाहो२३४हा । नका३र्त्वा५
२ २ १ १ १ १ १ १ १
या६पुईः ॥ (२) इन्दुरश्वा३ना३कृत्वियाः । तन्दुरोषाम् ।
१ २ १ १ १ १ ४ ४ १ २ ३
अभीनरा२ः । इहा३ । सोमा३वायिश्वा । द्वाहो२३४
४ २ २ १ १ १ १ १ ४ ४ १ २ ३
हा । चियाधा२३या । इहा३ । याज्ञा३यासा । हाहो
४ ६ २ ४ १ १ १ १ १ १
२३४हा । तुवा३द्रा५या६पुईः । चे२३४पु (३) ॥ ६ * ॥ [१३]
१ १ १ १ १ २ २ १
॥ आनूपवाध्रुश्चम् ॥ पुराःपुराः । जितीवोश्चा

१४६ सामवेदसंहिता । [१ प्र० १ अ० १ पृष्ठ ० १, २, ३ ।

२ १ २ १ २ २
आशसारः । सूतायमा । दयायित्नाश्वा रयि । आपा
१ १ १ १ १ २
रयि । आपा रश्चाना रम् । अयिष्ठारश्ना । सखायो
२ १ ४ २ ५ १ २
रदीर् । घारश्जा रयि । क्कारश्च४५योद्द्वयि ॥ (१) सखा
१ २ २ २ १ २ १ २ २ २ २
सखा । योदीर्घाश्चारयिक्कारश्च रम् । योधारया । पा
१ २ १ १ १ २ २ १
वाकाश्चार । पार रयिप्रस्थार । दतेसू रश्ताः । इ
२ २ १ ४ २ ५
न्दूराश्चार् । नारश्कार । त्वाश्च४५योद्द्वयि ॥ (२)
१ २ १ २ २ १ २ १ २ २
इन्दूरिन्दूः । अश्वोनाश्कार्त्वाश्चारः । तान्दुरोषम् ।
१ २ १ १ १ २ १ २
अभायिनाशारः । सोमारं वायिश्चार । चियाधारश्च
१ १ २ २ १ ४ २ ५
या । यज्ञायाश्चार । त्वरश्चार । द्वाश्च४५योद्द्वयि (३)
॥ ११ * ॥ [१४]

२ २ ४ २
॥ वैतद्व्यमोकोनिधनम् ॥ पू५५रोजि । ताश्चिवो
४ ५ १ २ ० १ ३ ५ १
श्चान्धसाः । सूतायमा । दयारयित्नाश्च४५वायि । अ

पा॒र॒श्वा॒र॒३४नाम् । आ॒श्या॒यि॒ष्टा॒शना । सा॒खा॒यो॒दी॒र्घम् ।

जा॒यि । ङा॒श्या॒र॒३४ औ॒हो॒वा ॥ (१) सा॒ऽप्र॒खा॒यः । दा

३यि॒र्घा॒३जि॒ह्वि॒याम् । यो॒धा॒र॒या । पा॒वा॒र॒का॒र॒३४या ।

परा॒र॒यि॒प्रा॒र॒३४स्या । दा॒श॒ता॒यि॒स॒ज्ञाताः । आ॒यि॒न्दुर॒श्वो

न । का । त्वा॒र॒या॒र॒३४ औ॒हो॒वा ॥ (२) आ॒ऽप्र॒यि॒न्दुर ।

श्वो॒शना॒३कृ॒त्वि॒याः । ता॒न्दुरो॒षाम् । अ॒भा॒र॒यि॒ना॒र॒३४

राः । सो॒मा॒र॒वा॒र॒३४यि॒श्वा । चा॒श्या॒धा॒श्या । या॒ज्ञा

य॒सन्तु । आ । द्रा॒श्या॒र॒३४ औ॒हो॒वा । ओ॒३का॒र॒३४

४ पुः (३) ॥ १२ * ॥ [१५]

॥ सोमसाम† ॥ पुरोजिता॒र॒यि॒वो॒अ॒न्ध॒साः । सु॒ता॒र॒

या॒मा॒र॒ । द॒यि॒त्न॒वा॒यि । आ॒पा॒र॒श्वा॒ना॒र॒म् । अ॒यि ।

ष्टना । सा॒खा॒र॒यो॒दा॒र॒यि । र्घ॒जि॒ह्वार॒३या॒३४म् ॥ (१)

सखायोदा रयिर्घजिक्त्रियाम् । योधा रराया र । पाव
 कया । पारा रयिप्रास्या र । दत्तेसुताः । आयिन्दू र
 राश्वा रः । नक्तवार रया र ३४३ ॥ (२) इन्दुरश्वो रनक्तवि-
 याः । तान्दू ररोषा रम् । अभीनराः । सोमा रं वा
 यिश्वा र । चियाधिया । याज्ञा रयासा र । तुवद्रा र ३
 या र ३४३ । ओर र ३४५ ई । डा (३) ॥ १३ * ॥ [१६]

॥ त्रामदस्यवम् ॥ पूर र ३४ । रः । जितायि । वो
 अन्धसार रः । सू र ३४ । ता । यमा । दायित्तवा र ३
 यि । आर र ३४ । प । श्वानाम् । श्वाथिष्टना र ३ । सार
 र ३४ । खा । योदायि । घाजिक्त्रियारमाउ ॥ (१) सा
 र र ३४ । खा । योदायि । घाजिक्त्रियार रम् । योर र ३४ ।
 धा । रया । पावकया र ३ । पार र ३४ । रि । प्रस्था ।

दातेसुता२३ः । आ२३४यि । दुः । अश्वाः । नाह
 त्विया२३ः । ता२३४म् । दु । रोषाम् । आभीनरा
 २३ः । सो२३४ । मम् । विश्वा । चौयाधिया२३ । या
 २३४ । ज्ञा । यसा । त्वद्रया३१उ । वा२३४पू(३)॥१४*॥[१७]

॥ जनित्रोत्तरम् ॥ पुरोजितीवोअ । धसा३ः । सु

ताया । होयि । होयि । मादायित्वावा२३४यि । अ
 पश्चानम् । अथा२यिष्टाना । साखायोदीर्घजौ३ । हो
 ३१यि । क्कारया२३४औहोवा ॥(१) सखायोदीर्घजि ।

क्रिया३म् । योधारा । होयि । २ । यापावकाया२३४ ।

परिप्रस्य । दता३यिहताः । आयिन्दुरश्चोनकौ३ । हो

३१ । त्वा२या२३४औहोवा ॥(२) इन्दुरश्चोनक । त्वि

या३ः । तन्दुरो । होयि । होयि । षामाभीशनारा२३

४ः । सोमं विश्वा । चिथाश्वाया । याज्ञायसन्तुवौ ३ ।
 २ ३ ५ ४ ५ १ २ १ ५
 २ ३ ५ ४ ५ १ २ १ ५
 १ १ १
 १ १
 ४५ मू (३) ॥ ६ * ॥ [१८]

॥ जागतः सोमसाम ॥ पुरोजा ३ यितीवो अन्धसाः ।
 ५ ४ २ ४ ५ ४ ५ ४
 १ २ १ २ १ ७ २ ३ २ २
 सुतायामा २ । दायायित्वे । ओ ३४ । हाहोयि । अ
 २ १ ७ २ ३ २ २ २
 यश्चान्श्वाश्वायिष्टन । ओ ३४ । हाहोयि । सखायो
 २ १ ७ २ ३ २ २ २
 दीर्घजिह्वियम् । दुरा २ । तिना ३४ औहोवा ॥ (१) स
 २ २ ४ ५ ४ ५ १ २ १ २ २ १ ७
 खायोऽदीर्घजिह्वियाम् । योधाराया २ । पावाकया ।
 २ ३ २ १ ७ २
 ओ ३४ । हाहोयि । परिप्रस्यन्दाश्वायिसुतः । ओ ३४ ।
 ३ २ १ २ १ ७ २ ३ २ २ २
 हाहोयि । इन्द्रश्चोनकत्वियः । दुरा २ । तिना ३४ औ
 २ ५ २ ४ ५ ४ ५ २ १ २
 होवा ॥ (२) इन्द्राश्चोनकत्वियाः । तन्दुरोषा २ म् ।
 २ १ ७ २ ३ २ २
 आभायिनरः । ओ ३४ । हाहोयि । यज्ञायसन्त्वद्रयः ।
 १ ३ २ ५ ४ ५ २ ५
 दुरा २ । तिना ३४ औहोवा । उर ३३ पा (३) ॥ ६ † ॥ [१९]

१ १ २ १ २ १ १ २ १
 ॥ शुद्धाशुद्धीयाद्यम्* ॥ पुरोजितौवोऽन्धमाः । सु
 २ २ २ १ १ १ २ १ १ २
 तायमादयित्ना२३वायि । अपश्चान् २ ३ नयिष्टा२३ना । स
 १ २ १ १ २ १ २ १ २ १ २ १ १ १ १ १
 खायो२३दी३ । घा२ । जिह्वा३४ औहोवा । या२३४पु
 १ २ २ २ १ २ १ २ २ २ २ १ १
 म् ॥ (१) सखायोदीर्घजिह्वियाम् । योधारयापावकार
 २ १ १ १ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १
 ३या । परिप्रस्यन्दतेह् २३ताः । इन्दुरा२३श्वा३ । ना२
 १ २ १ २ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
 कृत्वा३४ औहोवा । या२३४पुः ॥ (२) इन्द्रश्चोनकृत्वि
 १ २ १ १ २ १ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
 याः । तन्दुरोषमभीना२३राः । सोमंविश्वाचियाधा२३
 २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 या । यज्ञाया२३सा३ । त२ । अद्रा३४ औहोवा । या
 १ १ १ १
 २३४पुः (३) ॥ ३० ॥ [२०]

१ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 ॥ आकूपारम् ॥ पुरोजार३ईतीवः । अन्धार३४साः ।
 १ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 सुता२यमा । दयित्न्वायि । अपश्चाना२म् । श्रुथिष्ट
 १ २ १ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 ना । सखायोदी२३ । घा२३जा३यि । क्वा३४पुयोह्वा

^{२ १ २} ^{४ २ ५} ^{२ ३} ^५ ^{१ २}
 यि ॥ (१) सखायोऽदीर्घ । जिह्वा२३४याम् । योधा२
^१ ^{२ २ १} ^{१ १} ^{४ २ १} ^२
 रया । पावकया । परिप्रास्या२ । दतेसुताः । इन्दु
^१ ^१ ^४ ^२ ^५ ^{१ १}
 राश्वा२३ः । ना२३का३ । त्वा३४५योऽह्वायि ॥ (२) इन्दु
^{४ २ ५} ^{२ ३} ^५ ^१ ^{१ २} ^{२ २ १}
 राश्चोन । कृत्वा२३४याः । तन्दू२रोषाम् । अभीनराः ।
^{२ २ १} ^{२ १} ^{१ २ १} ^१
 सोमवायिश्वा२ । चियाधिया । यज्ञायासा२३ । त्वर
^४ ^२ ^५
 श्वा३ । द्रा३४५योऽह्वायि (३) ॥ ८ * ॥ [२१]

^{५ २ २} ^{४ २ ५ २ ४} ^५ ^{२ १ १ १}
 ॥ साध्रम् ॥ पुरोजा३यितीवोअन्धसाः । सुतायमा
^{२ २} ^३ ^५ ^{१ २ १ २} ^२ ^{२ १ १}
 २ । दया३४५यि । त्ना२३४वे । अपश्चान् ५ यिष्टना२३
^{१ १} ^{१ २ २} ^५ ^{१ २ ३} ^५ ^४
 ४५ । साखाओ२३४वा । यादाओ२३४वा । घजापुयि
^{५ २ २} ^{४ २ ५ ४} ^५ ^{२ २ १ २ १}
 द्वियाम् ॥ (१) सखायोऽदीर्घजिह्वियाम् । योधारया२ ।
^{२ २ २} ^२ ^५ ^२ ^१ ^{२ २ ३ २}
 पावा३४५ । कार३४या । परिप्रस्यन्दतेसुताः । आयि
^२ ^२ ^५ ^{१ २ २} ^५ ^४
 न्दाओ२३४वा । आश्वाओ २ ३ ४ वा । नका५त्वि

याः ॥ (२) इन्दुराश्वोनकृतियाः । तन्दुरोषारम् । अ
भा३४५यि । ना२३४राः । सोभंविश्वाचिया । धिया १ ।
याज्ञाओर३४वा । यासाओर३४वा । तुवा ५ द्रयाः ।
चो५ई । डा (३) ॥ ८ ॥ [२२]

॥ क्षुल्लककालेयम् ॥ पुरोजितौवोश्न्यासाः । सुता
यमा३ । दयारयित्नाः३४वायि । अपा । अपा३३उ ।
वा२ । श्वान्श्रथिष्टना२३४५ । सखाद्योयियो२३दी ।
घाजिक्त्रियम् । इडा २ ३ ॥ (१) सखायोदीर्घजा १ यिक्का
याम् । योधारया३ । पावा२कार२३४या । परायि ।
परा३३उ । वा२ । प्रस्यन्दतेसुता१ । इन्दुर्होआ२३
श्वः । नाकृतियः । इडा२३ ॥ (२) इन्दुराश्वोनकाश्वार्
याः । तन्दुरोषा३म् । अभारयिनार३४राः । सोमाम् ।

^{२२} सोम^{१२} ३१७ । वा^{१२} २ । विश्वा^{२२} चिया^{२२} धिया^{२२} १ । यज्ञा^{२२} होयि
^२ या^१ २३सा । त्व^२ द्रयः^१ । इडा^१ २३भा^२ ३३ । ओ^१ २३४पुई ।

डा (३) ॥ ६ * ॥ [२३]

॥ कौ^{१२} च्चाद्य^१ म् ॥ पुरोजि^१ तौ^२ होयि । वो^{२२} अन्ध^१ साः ।
^{१२} सुताय^{१२} मा^४ ३ । दाया^२ ३यि^४ त्ना^४ पुवा^२ ६५^{१२} इयि ॥ (१) अप^२ श्वानौ^{१२}
^{२२} हो । आ^{१२} धिष्ट^२ ना । सखा^{१२} यो^२ दा^४ ३यि । घाजा^१ ३यि^२ क्का^४ प्रया
^{२२} ६५^{१२} ईम् ॥ (१) सखा^२ यो^{१२} दौ^२ हो । घाजि^{२२} क्कियाम् । योधा^{२२}
^{१२} रया^४ ३ । पावा^२ ३का^{१२} प्रया^४ ६५^२ ई । परि^२ प्रस्थौ^{१२} हो । दा^{२२} ते^२ सु
^२ ताः । इन्द्र^{१२} रश्चो^४ ३ । नाका^{१२} ३र्त्वा^४ प्रया^२ ६५^२ ईः ॥ (२) इन्द्र
^{१२} रश्चौ^{२२} हो । नाकृ^२ त्वियाः । तन्द्रो^२ षा^२ ३म् । आभा^{१२} ३यि
^४ ना^{२२} प्रा^{१२} ६५^४ ईः । सोमं^{२२} विश्वौ^{१२} हो । चीया^{२२} धिया । यज्ञाय
^{१२} सा^४ ३ । तूवा^२ ३द्रा^४ प्रया^२ ६५^२ ईः (३) ॥ ३ * ॥ [२४]

५ २ ३ २१ ३२ ४ ५ २ १ १ १
॥ गौतमम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः । सुतायमा ।

१ १ ३ २ ३२ ५ १२ २
दयित्वा^१यि । अपा । औहो^२२३४वा । श्वान^३श्वथि ।

१ ३ १ १ १ १ ३ २ ४ २ ३ २ ३ २
ष्टना^४२३४५ । सखा । औहो^५२३४वा । योदा । औहो^६

५ ४ ५ २ २ २ २ ३ ५
२३४वा । घजा^७प्रयि^८क्रियाम् ॥ (१) सखायो^९दी^{१०}र्घजि^{११}क्रिया

२२ १ २ १ २२ १ ४ २ ४ ४
म् । योधारया । पावकया^{१२} । परा । औहो^{१३}२३४वा ।

२ १ २ २ ३ २ ४ २ ३ २ ३ २ ३ २
प्रस्यन्दने^{१४}सुता^{१५}ः । इन्दा । औहो^{१६}२३४वा । अश्वा । औ

५ ४ ५ ३ २ २ ३ ४ ५
हो^{१७}२३४वा । नका^{१८}प्र^{१९}त्वि^{२०}याः ॥ (२) इन्द्र^{२१}श्चो^{२२}न^{२३}कृ^{२४}त्वि^{२५}याः ।

२ १ २ २ १ २ २ १ ३ २ २ ४ ४ ५
तन्द्रो^{२६}षाम् । अभी^{२७}नरा^{२८}ः । सोमा । औहो^{२९}२३४वा ।

२ १ २ २ २ २ ३ २ ४ २ ५ ३ २
विश्वा^{३०}चिया^{३१}धिया^{३२} । यज्ञा । औहो^{३३}२३४वा । यसा ।

३ २ ५ ४ ५
औहो^{३४}२३४वा । तुवा^{३५}पु^{३६}द्रयाः । हो^{३७}पु^{३८}ई । डा (३) ॥ ४* ॥ (२५)

२ २ १ २ २ १ २ १ १ १
॥ आत्रेयम् ॥ पुरोजितायि । वोअन्ध^{३९}२३साः । छ

२ २ १ २ २ १ २ १ २ ०
तायमा । दयित्वा^{४०}२३वायि । अपश्चानम् । आथिष्टा

ना२ । सखायो३दी३ । घजोवा । ज्ञापुयो६हायि ॥ (१)

सखायो३हायि । घजिह्वार३याम् । योधारयापा । व

कार३या । परिप्रस्य । दाते३ह्वता२ः । इन्दुरा३श्वा३ः ।

नकोवा । त्वापुयो६हायि ॥ (२) इन्दुरश्वाः । नक्तुवा२३

याः । तान्दुरोषम् । अभीनार३राः । सोमविश्वा ।

त्वायाधाया२ । यज्ञाया३सा३ । तुवोवा । द्रापुयो६हा

यि (३) ॥ १७ * ॥ [२६]

॥ शुद्धाशुद्धीयाद्यम् ॥ पुरोजितौवोअन्धा३साः । सु

तायमा । दयि । त्नावा२यि । अपाश्वा३ना३म् ।

अथार३यिष्टार३४ना । सखायो२३दी । घाजिह्वियम् ।

इडा२३ ॥ (१) सखायोदीर्घजिह्वार३याम् । योधारया ।

पाव । काया२ । परायिप्रा३स्या३ । दातार३यिह्व २ ३ ४

ताः । इन्दुरारश्वाः । नाक्रत्वियः । इडारश्वाः ॥ (२) इन्दु
रश्मोनकृत्वाश्वाः । तन्दूरोषाम् । अभी । नाराश्वाः ।
सोमांवाश्वाश्वाः । चियारश्वाश्वाः । यज्ञायारश्वाः ।
तूवद्रयः । इडारश्वाश्वाः । ओरश्वाश्वाः । डाश्वाः ॥ १८॥ [२७]

॥ द्विरभ्यस्तत्वाष्ट्रीसाम ॥ पुरः । जिताश्वाः । हाश्वाः
हायि । वोअन्वासारश्वाः । सुता । यमाश्वाः । हाश्वाः ।
दयित्नावारश्वाः । अप । श्वानाश्वाः । हाश्वाः । अ
थिष्टानारश्वाः । सखा । योदाश्वाः । हाश्वाः । घजाश्वाः
होरश्वाः । वा । ह्वापुयोद्हायि ॥ (१) सखा । योदाश्वाः ।
हाश्वाः । घजिह्वायारश्वाः । योधा । रयाश्वाः । हाश्वाः
हा । पावकायारश्वाः । परि । प्रस्थाश्वाः । हाश्वाः । द
तेस्तारश्वाः । इन्दुः । अश्वाः । हाश्वाः । नकाश्वाः

२३४ । वा । त्वा५योईहायि ॥ (२) इन्दुः । अश्वाः ।

१ २ ३ २ १ ५ ३ २ १ १
हा३हा । नक्तवाया२३४ः । तन्दु । रोषा३म् । हा३हा

३ २ २ १ २ ५ ३ २ १ २
यि । अभीनारा२३४ः । सोमम् । विश्वा३ । हा३हा ।

३ २ २ १ ५ ३ २ २ १ २
चियाधाया२३४ । यज्ञा । यसा३ । हा३हा । तुवा३

१ ५ ५ ५
हो२३४ । वा । द्रा५योईहायि (३) ॥ १२ ॥ [२८]

२ १ २ २ २ १ २ १
॥ आ३न्निधनत्वाष्ट्रीसाम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसः । सु

२ ५ २ ५ १ ७ ३ २ १ ७
ताहाउ । यमा३दायित्तावार३यि । यमा३हो । दया

३ ५ १ २ १ ७ ३ २ २
३यित्ना२३४वायि । अपश्वाना३श्वाधिष्टाना३ । श्वाना

१ ७ ३ ५ १ २ २ २ ५ १ ७
३हो । दथार३यिष्टा२३४ना । सखायोदीर्घाजिक्काया

३ २ १ २ ३ ५ १ ३
३म् । सखा३होयि । योदो२३४हायि । घारजा२३४

५ २ २ २ १ १ १ १ १ १ २ २ २ २ १
औहोवा । क्रिया३मा२३४ ५ ॥ (१) सखायोदीर्घजिक्कि

२ १ २ २ ५ २ ५ १ ७ ३ २ १
यम् । योधाहाउ । रया३पावकाया३ । रया३हो ।

पावा^१कार^२३४या । परिप्र^१स्या^२इ^३न्दा^४ते^५ह्ना^६रः । प्र^१स्या^२इ^३हो ।
 द^१ता^२र^३यि^४ह^५र^६३४ताः । इ^१न्दुर^२श्चो^३इ^४ना^५कृ^६त्वा^७या^८रः । इ^१न्दू^२ ।
 इ^१हो^२यि । अ^३श्चो^४र^५३४हा^६यि । ना^१र^२का^३र^४३४ओ^५हो^६वा । त्वि^१ ।
 या^१३आ^२र^३३४५ ॥ २ ॥ इ^१न्दुर^२श्चो^३न^४कृ^५त्व^६यः । त^१न्दू^२ह^३उ । रो^१ ।
 षा^१इ^२मा^३भी^४श^५ना^६रा^७रः । रो^१षा^२इ^३हो^४यि । अ^१भा^२र^३यि^४ना^५३ ।
 ४राः । सो^१मं^२वि^३श्वा^४इ^५चा^६या^७धा^८या^९रः । वि^१श्वा^२इ^३हो^४यि । चि^१ ।
 या^१र^२धा^३र^४३४या । य^१ज्ञा^२य^३सा^४इ^५न्तू^६व^७द्रा^८या^९रः । य^१ज्ञा^२इ^३हो^४ ।
 यि । य^१सो^२र^३३४हा । तू^१र^२वा^३र^४३४ओ^५हो^६वा । द्र^१या^२इ^३आ^४ ।
 २३४५ ॥ ३ ॥ १३ * ॥ [२८]

॥ कौ^१च^२म् ॥ स^१खा^२यो^३दा^४यि । स^१खा^२यो^३दा^४यि । घ^१जि^२ ।
 ह्नि^१याम् । यो^१धा^२रा^३या^४रः । पा^१व^२क^३या । परि^१प्रा^२स्या^३रः ।
 ओ^१न्दा^२ता^३श^४यि^५ह^६ता^७रः । ओ^१इ^२न्दुरा^३र^४श्वाः । ना^१कृ^२त्व^३यः ।
 इ^१डा^२र^३भा^४३४३ । ओ^१र^२३४५ई । डा^१रः ॥ १ ॥ [३०]

ककुबत्तरं यज्ञायज्ञीयम् ॥ पुरोऽपुजि । तारयिवोऽ

अभ्यासाः । सुतायमा । दाश्यायित्नाश्वे । अपा

श्वा । नश्चाश्वया । ऊम्मायि । दृशना । सास्वायो

दीर्घजारयिक्रियाउ ॥ (१) यांयाः । धारया । पाश्वा

काश्या । परारयिप्र । स्यन्दारश्ता । ऊम्मायि । सु

श्ताः । आयिन्दुरश्वीनकारत्विषाउ ॥ (२) यास्ताम् ।

दुरोषाम् । आश्वमायिनाश्वराः । सोमार्वि । श्वाचा

रश्वा । ऊम्मायि । धाश्या । याज्ञायसन्तु वारद्वया

उ । वारद्वय ॥ ३० ॥ [३१]

॥ अभ्यासाकूपारम् ॥ पुरोजितीवोअश्वसः । पूरश्वा ।

रोजितीवोपुयिवोअश्वसाः । सुतायमादयित्नावे । सुरश्वा ।

तायमौहोपदयित्नावायि । अपश्वानश्चथिष्टनम् । आ

२३४ । पञ्चानौहोप्रश्नविष्टना । सखायोदीर्घजिह्वियम् ।
 सा२३४ । सखायोदीहोप्रर्घजि । ऋप्रयोईहायि ॥ (१) सखा
 योदीर्घजिह्वियम् । सा२३४ । सखायोदीहोप्रर्घजिह्विया
 म् । योधारयापावकया । यो२३४ । धारयोहोप्रपा
 वकया । परिप्रस्यन्दतेसुतः । पा२३४ । रिप्रस्यौहोप्रन्द
 तेसुताः । इन्दुरश्वोनकृत्वियः । आ२३४यि । दुरश्वौ
 होप्रनकृ । त्वाप्रयोईहायि ॥ (२) इन्दुरश्वोनकृत्वियः ।
 आ२३४यि । दुरश्वौहोप्रनकृत्वियाः । तन्दुरोषमभीनरः ।
 ता२३४म् । दुरोषौहोप्रअभीनराः । सोमंविश्वाच्याधि
 या । सो२३४ । मंविश्वाहोप्रच्याधिया । यज्ञायसन्त्वं
 द्रयः । या२३४ । ज्ञायसौहोप्रन्तुव । द्राप्रयोईहा

यि(३) ॥ ६ * ॥ [३२]

१६२ सामवेदसंहिता । [१ प्र० १ अ० १८ सू० १, २, ३ ।

॥ श्यैतम् ॥ ^{४ ३ २ ४ ५ २ २ ३ २ ४ २ ५ १} पुरोजितीवोच । धसा३४ औहोवा । सू
^{२ २ २ १ ७ ५ ५ १} तायमा । दयायिन्नवार३४यि । ओईहा । अ । पाश्चा
^{२ १ ३ ५ १ २ २ १} र३नाम् । अथारयि । द्यार३४ना । सखायोदायिर्घा३
^{२ १ १ ५ २ २} जा । ऊन्मायि । द्वारया२३४ औहोवा(३) ॥ ७ * ॥ [३३]

॥ नौधसम् ॥ ^{१ २ ५ २ ४ ५} पू२३४ । रोजितीवोच । धासाः ।
^{१ १ २ १ २ १ २ १ २} सुतायमा । दा३यायिन्ना३वे । आ२३पा । आ । नाम् ।
^{१ ३ ५ १ २ १ २ १ ५ ३} श्रायिष्टार३४ना । सा२३खा । योदीर्घजो२३४वा । की
^५ र३४याम्(३) ॥ ८ * ॥ [३४]

॥ महादैर्घतमसम् ॥ ^{१ १ १ २ १} हाउपुराः । जायिती । वो । अन्ध
^{२ १ २ १ २ २ २} सा३ः । अन्धसाः । सुतायमादयिन्नवेअपश्चान्श्रुथा
^{२ १ १ २ २} यि । द्यार३ना२ । द्याना२ । सखायो । दीर्घजा३यि ।
^{१ ३ ५ २ २ १ २ १ २ २ १} द्वारया२३४ औहोवा ॥ (१) हाउसखा । योदी । घा ।

जिह्वियाम् । जिह्वियाम् । योधारयापावकयापरिप्र
 स्यन्दतायि । सू१ता२ः । सू१ता२ः । इन्दुरा । श्वोनका
 ३ । श्वोनका३ । त्वारया२३४औचोवा ॥ (२) हाविन्दूः ।
 आश्वः । ना । कृत्विया३ः । कृत्वियाः । तन्दुरोषम्
 भौनरस्सोमंविश्वाचिया । धा१या२ः । धा१या२ः । यज्ञा
 या । सन्तुवा३ । सन्तुवा३ । द्रा१या२३४औचोवा ।
 १११११
 ई२३४५(३) ॥ १३ * ॥ [३५]

॥ मरायम् ॥ पू२राः । जायितीवोषन्धसः । सः । सः ।
 सू१ता । श्मा । दयित्न्वेअपश्चान्श्शुधिष्टननन । सा
 खा । योदी१र्घजिह्वियम् । यम् । यम् ॥ (१) साखा ।
 योदी१र्घजिह्वियम् । यम् । यम् । योधा । रया ।
 पावकयापरिप्रस्यन्दतेसुतः । तः । तः । आयिन्दूः । अ

^१ओ । ^२नक्तृत्वियः । यः । यः ॥ (२) ^१आयिन्दूः । ^२अओ ।

^२नक्तृत्वियः । यः । यः । ^{१ २}तान्दू । ^{१ २ २}रोषमभीनरस्सोमंविश्वा

^२चाधिया । ^२या । ^२या । ^{१ २}याज्ञा । ^१यसा । ^२तुवद्रथः । यः ।

^५यः । ^५हाउहाउहाउ । ^५वा३ । ^{१ १ १ १}ई२३४५ (३) ॥ १५ * ॥ [३६]

^{२ २}॥ महावात्सप्रम् ॥ ^२हाउहाउहाउ । ^१ओ । ^१ओहो

^२षा । (श्वन्तिः) । ^{१ २}पुरोजितायि । ^२वी । ^{१ २}अन्धसो । ^२धसो ।

^२धमः । ^२सुतायैमा । ^{२ ५}दा । ^{१ २}यित्त्वे । ^२यित्त्वे । ^२यित्त्वे

^२वे । ^२अपश्चानम् । ^{२ ५}आ । ^१थिष्टन । ^१थिष्टन । ^१थिष्टन ।

^{२ २ २}सखायोदी । ^{२ ५}घा । ^१जिह्वियम् । ^१जिह्वियम् । ^१जिह्वि

^{२ २ २}यम् ॥ (१) ^{२ ५}सखायोदी । ^१घा । ^१जिह्वियम् । ^१जिह्वि

^{२ २ २}यम् । ^{२ ५}जिह्वियम् । ^१योधारया । ^१पा । ^२वकया । ^२वक

^२या । ^२वकया । ^{२ ५}परिप्रस्य । ^{१ २}दा । ^२तेसुतः । ^२तेसुतः । ^२ते

सुतः । इन्दुरश्वः । ना । कृत्वियः । कृत्वियः । कृत्वियः ।
 यः ॥ (२) इन्दुरश्वः । ना । कृत्वियः । कृत्वियः । कृत्वियः ।
 त्वियः । तन्दुरोषम् । आ । भीनरः । भीनरः । भीनरः ।
 नरः । सोमंविष्वा । चा । याधिया । याधिया । याधिया ।
 धिया । यज्ञायस । त । अद्रयो । द्रयो । द्रयो । द्रयो ।
 उ३ । ओ । होहोवा । २ । ओ । हो । हो२ । वार
 ३४ । औहोवा । ई२३४५ (३) ॥ ८ * ॥ [३७] १८

अथ पञ्चमसूक्ते—

प्रथमा ।

अभिप्रियाणिपवतेचनोहितो

नामानियक्कोचधियेषुवर्धते ।

आसूर्यस्यवृद्धतोवृद्धन्नधि

रयंविष्वञ्चमरुद्धद्विचक्षणः ॥ १ ॥

“चनोहितः” [चन इत्यन्ननाम, चायतेरसुनि चन इत्यौषा-
दिक-सूत्रेण निपातितः] चनसे अन्नाय हितः, यद्वा आहिताहः
सोमः “प्रियाणि” जगतः प्रीणयितृणि “नामानि” नमन-
शीलानि, तान्युदकानि “अभि पवते” अभितः करोति ।
“येषु” अन्तरिक्षस्थितेषु उदकेषु “यद्वाः” महानयं सोमः “अधि-
वर्हते” अधिकं प्रवृद्धो भवति, अपां मध्ये सोमो वसति खलु ।
ततः “बृहत्” महान् सोमः “बृहतः” महतः परिवृढस्त्व
“सूर्यस्य” विष्वच्च” विष्वग् गमनम् “अधि रथम्” उपरि रथं
“विचक्षणः” सर्वस्य विद्वष्टा “अरुहत्” आरोहति “अग्नी
प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्य मुपतिष्ठते (मनु० ३ अ० ७६ श्लो०)”-
इति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
चतस्रजिह्वापवतेमधुप्रियं

३ १ २ २ २ २ ३ १ २ २
वक्तापतिर्द्वियोअस्याअदाभ्यः ।

१ २ ३ २ २ १ २ ३ २ १ २
दधातिपुत्रः पित्रोरपीच्याऽश्नाम-

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
तृतीयमधिरोचनन्दिवः ॥ २ * ॥

“ऋतस्य” सत्यभूतस्य यज्ञस्य “जिह्वा” मुखत्वेन जिह्वा-
स्थानीयः सोमः “प्रियं” प्रियकरं “मधु” मदकरं रसं *
“पवते” चरति । कीदृशः ? “वक्ता” शब्दकृत् ; यद्वा,
स्तोत्रभिः क्रियमाणाः स्तुतयः साध्वीयस्य इति प्रतिश्रवणस्य
कर्त्ता “अस्या धियः” एतस्य कर्मणः “पतिः” पालयिता
“अदाभ्यः” रक्षोभिर्हिंसितुं मशक्यः “पुत्रः” यजमानः “पित्रोः”
पिता माता उभयोः † “अपीच्यम्” अन्तर्हितं यत् “नाम” तौ
न जानीते नाम कर्मवेलायां तस्मात्तयोरपरिज्ञायमानं “दिवः”
द्युलोकस्य “रोचनं” दौष्यमानं “तृतीयं” नाम सोमेऽभिषूयमाणे
हिरण्यमयेति “अधि दधाति” अत्यन्तं धारयति ; “नक्षत्रव्याव-
हारिक-नाम्नी प्रभाष्य सोमयाजी तृतीय मस्य नाम”—इति
भगवता बोधायनेनोक्तम् ॥

“अधिरोचनम्”—“अधिरोचने”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

अवद्युतानःकलशाञ्चक्रद

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

नृभिर्येमाणःकेशाश्चाहिरण्यये ।

* ‘मधु लादुतमं द्रवम्’—इति वि० ।

† ‘मातापित्रोर्नाम, यद्यपि मातापित्रोः पृथग्यन्तरिचयोः’—इति वि० ।

३१ ३ १२ ३ १२ ३१ २
अभीकृतस्य दोहना अनूषताधि

३२ ३२ २ १२
त्रिपृष्ठ उषसो विराजसि ॥ ३ * ॥ १८

“द्युतानः” [द्युतदीप्तौ (श्वा० आ०)] दीप्यमानो “वृभिः”
कर्म्मनेष्टभिर्ऋत्विग्भिः “हिरण्यये” हिरण्यमयकोशे अधिषवण-
चर्म्मणि ; तस्य हिरण्यमयत्वं “हिरण्यपाणिरभिषुणोति”—इति
हिरण्य-सम्बन्धात् ; तादृशे “कोशे” “येमानः” [छान्दसे
कर्म्मणि लिटि कानचि रूपम्] नियम्यमानः सोमः † “कल-
शान्” द्रोणाभिधान् प्रति “अवाचिक्रदत्” अवक्रदति शब्दा-
यते । ततः “ऋतस्य” सत्यभूतस्य यज्ञस्य “दोहनाः” दोग्धार
ऋत्विजः “इमं” सोमम् “अभ्यनूषत” अभिष्टुवन्ति [“ग्रावाणो
वत्सा ऋत्विजो दुहन्ति”—इति तैत्तिरीयक-ब्राह्मणे एषां दोग्धृत्व
मभिहितम्] “त्रिपृष्ठः” त्रीणि सवनानि तान्येव पृष्ठानि यस्य
स तथोक्तः ‡ [त्रिषु च सवनेषु सोमस्य विद्यमानत्वात् ।
त्रिवक्त्रादित्वादुत्तरपदान्तोदात्तत्वम्] हे सोम ! तादृशस्त्वम्
“उषसः अधि” यागाहनि “विराजसि” [“अधिशीङ्स्थासाम्

* ऋ० वे० ७, २, ३२, ३ ।

† “येमानः स्तूयमानः”—इति वि० ।

‡ “त्रिपृष्ठः त्रिस्थाने त्रिस्तोकावस्थानः ; अथवा त्रिपृष्ठः ऋग्यजुःसामभिः ;
अथवा त्रिभिर्गोर्देवैः सवनैर्वा”—इति वि० ।

(१, ४, ४६)"—इति द्वितीया] तेष्वहस्य, विशेषेण दीप्यसे ।

यद्वा राजिरन्तर्णीतस्थर्थः ; अहानि प्रकाशयसि ॥

“येमाणः”—“येमान”—इति, “अभीष्टतस्य”—“अभीष्टतस्य”
—इति, “विराजसि”—“विराजति”—इति पाठाः ॥ ३ ॥ १८

१ १ २ १ २ १ २ १
॥ कावम् ॥ अभ्योवा । प्रियाणिपवताइ । चनोहा

१ २ २ २ १ २ १ २ १
इतारः । नामानियद्धोअधियाइ । धुवर्हानारइ । आ

२ २ १ १ २ ४ ५ २ १
मूर्यस्यवृहता । वृहन्नाधीरइ । राथार्वाइश्वा । चमरू

१ २ ४ २ १
च्चारइत् । वाइचारत्ताऽपुणाइपुइः ॥ (१) कृनोवा । स्यज्जि

२ २ १ १ २ २
च्चापवताइ । मधुप्रायारम् । वक्तापनिर्दियोअस्याः ।

२ २ १ १ २ १
अदाभायारः । दधातिपुत्तःपिन्नाः । अपीचायारम् ।

१ २ ४ ५ २ १ १ २ ४
नामाइतार्त्ति । यमधाइरोरइ । चानाइन्दाऽपुयिवाइपु

२ २ २ २ १ २ १
ईः ॥ (२) अयोवा । द्युतानःकलशाश् । अचिक्रादार

१ २ २ २ २ १ २ १
त । नभिर्येमाण कोशआ । हिरण्यायारइ । अभीष्ट

तस्य^१दोहनाः । अनूषा^{२ २ १}तार^{२ २ ४ ५ २ १}३ । आधी^१श्चा^२इपा । छडषा

सो^१र^{२ ४}३ । वाइरा^१जाऽपुसा^२ई^३ई^४इ^५(३) ॥ १३ * ॥ [१]

॥ ऐडकावम^४ ॥ ए^४पु । अभिप्रिया^{४ ५ १}२ । णिपवतायि^{३ ४ ५} ।

ए^४पु । चनोहिताः । ए^४पु । नामानिया^{४ ५ १}२ । द्यो^{३ ४ ५}अधिया

यि । ए^४पु । पुवर्द्धतायि^{४ ५ १} । ए^४पु । आसूरिया^{४ ५ १}२ । स्यवृ

हताः । ए^४पु । बृहन्नधी^{४ ५ १} । ए^४पु । रथंविश्वार^{४ ५ १} । चमरु

क्षात् । ए^४पु । विचक्षणाः ॥ (१) ऋतस्यजा^{४ ५ १}२रथिः । द्या

पवतायि । ए^४पु । मधुप्रियाम् । ए^४पु । वक्तापतार^{४ ५ १}थिः ।

धियोअस्याः । ए^{३ ४ ५}पु । अदाभियाः । ए^{४ ५ १}पु । दधातिपूर^{४ ५ १}त् ।

त्रःपित्रोः । ए^{३ ४ ५}पु । अपीचियाम् । ए^{४ ५ १}पु । नामद्वतार^{४ ५ १}२

यि । यमधिरा । ए^{३ ४ ५}पु । चनन्दिवाः ॥ (२) ए^{४ ५ १}पु । अवद्यु

ता^११ । नःकलशा^{२ ४ ५ ४ ४ ५ ४ ४}५ । ए५ । अचिकदात् । ए५ । नृभि^{५४}
 र्ये^१मार^{२ ४४ ५ ४ ४ ५ ४ ४} । यःकोशभा । ए५ । हिरण्ययायि । ए५ । अ
 भिष्ट^५तार^१ । स्यदोहनाः । ए५ । अनुषता । ए५ । अ
 धिचिपार^५ । छउषसाः । ए५ । विराजसायि । द्वा^{२ ४ ५ ४ ४ ५ ४ ४}५
 ई । डा(६) ॥ २ * ॥ [२]

॥ वैखानसम् ॥ अभिप्रीश्याणिपवतायि । चनोच्चि^{५ २ ४४ ५ ४ ५ २ १ २}
 ताः । नामानियार^{१ २४ ३४ २ १ २४ २ १ २ १ १}३ । द्वाअधियायि । पुवार्द्धतायि ।
 आसूरिया । स्यवृ^{२४ ३ २ १ ७ १ २ ३ १}२रुतोर^१३ । वृद्धन्नधायि । रथांवि
 ष्ठा । चमरुद्धा^{१ २ ३ १ १ २ ३ २ ५ २}२३त् । विचक्षणा^{२ ३ २ ४ ३}२४३ ॥ (१) अतस्सा^१३
 जिह्वापवतायि । मधूप्रियाम् । वक्तापतार^{४ ५४ ४ ५ २ १ २ १ २ ३४ २ १ २ ३४}२३यिः । धियो
 षस्याः । अदाभि^{२ १ २ १ २ ३४ २ १ ७ १}याः । दधातिपूत् । त्रःपा^१२यिचोर^१३ ।

अपीचियाम् । नामाढतायि । यमधिरो२३ । चनन्दि

वा३४३ ॥ (२) अवद्यू३तानः कलशान् । अचायिकृदात् ।

नृभिर्येमा२३ । णः कोशआ । क्षिराण्ययायि । अभीक्ष्ण

ता । स्यदो२३ रक्षना२३ । अनूषता । अधायित्रिपा । छ

उषसो२३ । विराजसा ३४३ यि । ओ २३४ पु३ ।

डा(३) ॥ १८ * ॥ [३]

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ अभाऽपुयिप्रि । या३णा३यिपव

तायि । चाऽनोद्धितोनामानियाद्धोअधियायि । षू३श्वा

र्द्धा३तायि । आसू२र्यस्यवृद्धतोवृद्धन् । धिरा२३याम् ।

ऊ३म्मायि । वा३यिश्वा । च । मरु३द्विचा३र३णाउ ॥ (१) णा

आ । तस्यजिह्वापवतेमधुप्रियंवक्तापतिर्द्वियोअस्याः । आ

१ १ १ १ १ १
दाभाश्याः । दधा२रतिपुत्रः पित्रोरपीचि । यन्ना२३

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
मा । ऊम्मायि । ता३र्त्ता । यामधिरोचनार१न्दिवाउ ॥ (२)

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
वाचा । वद्युतानः कलशा२श्चिक्रदन्नुभिर्द्येमाणः कोशचा ।

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
चा३यिराण्याश्यायि । अभी२रञ्जतस्यदोहनाचनूष । त

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
आ२३धा । ऊम्मायि । चा३यिपा । छाउषसोविरा३ज

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
साउ । वा२३४५ (३) ॥ १५ * ॥ [४]

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
॥ वैधृतवासिष्ठम् ॥ अभिप्रियाणी२ । प । वतार३यि ।

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
चनोद्वा२३४यिताः । नामानियाद्भो२ । अ । धियार३

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
यि । पुवर्द्धा२३४तायि । आसूरियास्या२ । वृ । क्षतो

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
२ । वृक्षनार२३४धायि । रथंविषाञ्चा३म् । अ । रुद्धा

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
रक्षत् । विचार३क्षापूणाई ५ ईः ॥ (१) अतस्यजायिद्वा२ ।

प । वता^१र^२यि । मधुप्रा^३र^४३४याम् । वक्तापतायि^५क्षी^६र ।

यः । अस्या^१रः । अदाभा^२र^३३४याः । दधातिपू^४न्ना^५रः ।

पि । चो^१रः । अपायिचा^२र^३३४याम् । नामद^४तायि^५या^६र

म् । अ । धिरो^१र^२३ । चना^३इन्दा^४पूयिवा^५इ^६पू^७इः ॥ (२) अ

वद्युताना^१रः । क । लशा^२र^३ । अचा^४यिक्ता^५र^६३४दात् ।

नृभि^१र्यमाणा^२रः । को । श^३आ^४र^५ । क्षिरा^६ण्या^७र^८३४यायि ।

अभी^१क्षता^२स्या^३रः । दो । चना^४रः । अनू^५षा^६र^७३४ता । अ

धिचि^१पा^२र्ष्ठा^३रः । उ । षसो^४र^५३ । विरा^६ज्जा^७पूसा^८इ^९पू^{१०}इ

यि^१(इ) ॥ १४ * ॥ [५]

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरायण्यस्य प्रथमस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे,

प्रथमसूक्ते प्रगाथे—प्रथमा ।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यज्ञायज्ञावो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रप्रवयममृतञ्जातवेदसम्विद्यमित्रन्नशंसिषम् ॥ १॥

हे स्तोतारः ! “वः” यूयं “यज्ञायज्ञा” यज्ञे यज्ञे सर्वेषु
यागेषु “दक्षसे अग्नये” प्रवृद्धाग्नये “गिरा गिरा” स्तुतिरूपया
वाचावाचा स्तोत्रं कुरुतेति शेषः । च शब्दो भिन्नक्तमो वः-इत्य-
स्मात् परो द्रष्टव्यः । यूयं “च” स्तोत्रं कुरुत । “वयम्” अपि
“प्रप्रशंसिषम्” [“प्रसमुपोदः पादपूरणे (८, १, ६०)”—इति
प्र-शब्दस्य द्विरुक्तिः पादपूरणार्था ; व्यत्ययेनैकवचनम् (३, ४,
८८) ; चान्दसोलुक् (७, १, ३८)] प्रशंसाम कीदृशम् ?
“अमृतम्” मरणरहितं “जातवेदसम्” जातानां वेदितारं जात-
प्रज्ञं जातधनं वा “मित्रं न” सखिभूतमिव “प्रियम्” अनु-
कुलम् । यद्वा, व्यत्ययेन (३, ४, ८८) त्वमित्यस्य वसादेशः ;
अग्नय इति च कर्मणि चतुर्थी, “क्रियाग्रहणं कर्तव्यम्”—इति
कर्मणः सम्प्रदानत्वात् ; च-शब्दश्च चणिति निपातः, चेदर्थे
वर्तते ; दक्षस इति च दक्षेर्द्विकर्मणः (भा० आ०) अन्त-

● ६० आ० १, १, ४, १ (१ भा० १४० पृ०) = ऋ० वे० ४, ८, १, १ । ‘अग्नि-
वेदान्तस्यार्थं मग्निः स्तोत्रदेवता’—इति वि० ।

भावितास्यर्धाक्षि रूपम् ; चण्-योगात् “निपातैर्यद्यदिहन्त०
(८, १, ३०)”—इति निघात-प्रतिषेधः । तत्राय मर्थः—हे
स्तोतः ! त्वं यज्ञे यज्ञे इमं मग्निं गिरा गिरा स्तुत्या स्तुत्या च
दक्षसे च वर्हयसि चेत् वयमपि अमृतत्वादिगुणकं तं
प्रशंसामः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ ४ २ ३ २ ३ १ ४ २ ३ १ ४ २ ३ १ २
उज्जीनपातस्सहिनायमस्मयुर्द्वाशेमहव्यदातये ।

२ ३ १ १ ३ १ ४ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
भुवद्वाजेष्वविताभुवद्भुधउतत्रातातनूनाम् ॥ २ * ॥ २० * †

“उज्जः” अन्नस्य बलस्य “नपातं” पुत्रं प्रशंसिष मित्यनुवङ्गात्
प्रशंसामित्यर्थः ‡ । “हिना” [- इति निपात-हय-समुदायो
हीत्यस्यार्थे ¶] “सः” खलु “अयम्” अग्निः § “अस्मयुः”
अस्मान् कामयमानो भवति । वयञ्च “हव्यदातये” हव्यानां
हविषां देवेभ्यो दात्रे तस्मा अग्नये “दाशेम” हवींषि दद्याम ।

* ऋ० वे० ४, ८, १, २ ।

† ‘अथ अग्निहोमं माम्’—इति वि० ।

‡ ‘उज्जः अन्नानि । न पातं, न शब्द उपमायां यः यथा, अन्नानि । पिबन्तं
पातयन्तं भक्षयन्तं वा’—इति वि० ।

¶ ‘हिना, हिना मनुष्यः ; हिनायुर्द्वा नशक्तिर्हीनप्रज्ञो वा’—इति वि० ।

§ ‘अयं यजमानः’—इति वि० ।

तम् “उत” अपिच “तनूनाम्” तनयाना मस्मत्पुत्राणाञ्च*
 “वाता” रक्षिता “भुवत्” भवतु ॥ २ ॥ २०

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ यज्ञाऽप्यय । ज्ञाश्चोऽग्नायाइ ।
 आइराइरा । चाइदाक्षाइसाइ । पप्रौऽवयममृतम् ।
 जाताइइवा । ऊम्माइ । दाइसाम् । प्रायमित्रऽसुशा
 रऽसिपाउ ॥ (१) प्रायाम् । माइत्राम् । सूइशाऽसी
 इषाम् । ऊर्ज्जीनपाइतऽसहि । नायाइइमा । ऊम्मा
 इ । स्माइयूः । दाशेमहव्यदाइतयाउ ॥ (२) दाशे । मा
 चा । व्याइदाताइयाइ । भुवदाजेऽष्ववि । ताभूइइवा
 त् । ऊम्माइ । वाइर्द्धाइ । ऊतत्रातातनूऽनाउ । वा
 ३४५ (३) ॥ १४ ॥ [१]

॥ विशोविशीयम् ॥ यज्ञायज्ञाहम् । वोऽअग्नयायि ।

* ‘तनूनां शरीरिणाम्’—इति वि० ।

† ऊ० गा० १ प्र० १ अ० १४ सा० ।

इराइरा । चाइदाश्वाइसायि । पप्रौरवयममृतम् । जा
 तारइवा । ऊम्मायि । दाइसाइम् । प्रारइयइहायि ।
 ओ । ऊवायि । मारइयित्राम् । ऊम्मायि । सूइ
 शाइ । सारइयिषाम् । एहियाइहा ॥ (१) प्रियन्मित्रम् ।
 इम् । सूइशइसिषाम् । ऊइर्जोनाइपा । तइसहि । ना
 थारइमा । ऊम्मायि । स्माइयूइः । दाइयइहायि ।
 ओ । ऊवायि । मारइहा । ऊम्मायि । व्याइदाइ ।
 तारइयायि । एहियाइहा ॥ (२) दाशेमहाइम् । व्याइ
 दातयायि । भूइवादाइजे । षवि । ताभूरइवात् । ऊ
 म्मायि । वाइर्द्धाइयि । ऊरइतहायि । ओ । ऊवा
 यि । चारइता । ऊम्मायि । ताइनूइरइनाम् ।
 एहियाइहा । होइई । डा(३) ॥ ५ * ॥ [२]

॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ ^{१ २ २ २ १ १} यज्ञायज्ञा^१औहो^१हायि । वो^१
^{२ ५ २ २ १ १ १ २} अग्रा^२२३४यायि । इरा^२इराचदन्ना^२सो^२२३४हायि । पप्रौ^२
^{२ २ २ २ २ २ २ २ ५} वयममृत^२ज्ज्ञातवेदा^२३४ । औहो^२वा । इहा^२२३४हायि ।
^{२ २ ५ २ २ १ २ २ ३ ३ २} उज्ज्वा^२२३४साम् । प्रियम्नि । त्रा^२सुश^२सा^२३४ । औ^२
^{४ २ ५ १ २ ५ २ २ ५ ५ ५} होवा । इहा^२२३४हायि । औहो^२३१२३४५ । षाम् । ए^५
^{५ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २} हिया^५इहा ॥ (१) प्रियम्नित्रा^२औहो^२हायि । सूश^२सा^२२३४
^{५ २ २ २ ५ १ २ २ २ २ २} यिषाम् । जज्जीना^२२३४हा । पात^२सहिनायमस्मा^२३४ ।
^{३ ४ २ ५ १ २ ५ २ ३ ५ २ २ १ २ २} औहोवा । इहा^२२३४हायि । उज्ज्वा^२२३४यः । दाशेम ।
^{१ ० २ २ ३ ४ २ ५ १ २ ५ ३ २} हाव्यदाता^२२३४ । औहोवा । इहा^२२३४हायि । औ^३
^{२ ५ ५ २ २ २ २ २ १ २ २ १} हो^२३१२३४ । यायि । एहिया^२इहा ॥ (२) दाशेमहा^२औहो^२
^{२ ३ ५ २ २ ५ २ २ २ २ २ २} हायि । व्यादाता^२२३४यायि । भुवादा^२२३४हा । जिष^२
^{२ २ ३ ४ २ ५ १ २ ५ २ २ २} विताभुवदा^२३४ । औहोवा । इहा^२२३४हायि । उज्ज्वा

^५ २३४^{१ १ २ २}द्यायि । ^{३ ४ ५}उतत्रा । ^{१ २}तातनू^{३ ४ ५}३४ । ^{१ २}ओहोवा । इहा^५
^५२३४^{३ ४ २}द्यायि । ^{५ २}ओहो३१२३४ । ^{५ २}नाम् । ^५एहियाद्द्या^३३)

॥ ११ * ॥ [३]

॥ महावैश्वामित्रम् ॥ ^५हयायि । ^{४ ५ ४}हया३ । ^{४ ५ ४}ओहाओ
^५हा । ^२हयायि । ^{४ ५ ४ ५}हया३ । ^२ओहाओहा । ^२हयायि । ह
^{४ ५ ४ ५}या३ । ^{२ २}ओहाओहा । ^{३ ४ २ १}यज्ञायज्ञा । ^२वोअग्राया^{३ ४ २}रयि ।
^२इराइरा । ^{३ २ १}चदक्षासा^२रयि । ^{३ २ १}पप्रोवयममृतञ्जा । ^{३ २ २}तवे
^१दासा^{३ २ १}रम् । ^{३ २ १}प्रियम्नित्राम् । ^{३ २ १}सुश^२सायिषा^१रम् ॥ (१)
^२प्रियम्नित्राम् । ^{३ २ १}सुश^२सायिषा^१रम् । ^२ऊर्जः । ^१नापा
^२र । ^२नापा^{३ २ १}र । ^{३ २ १}त^२सहिना । ^{२ २}यमस्मायू^{३ ४ २ १}रः । ^{२ २}दाशेम
^{३ २ २ १}हा । ^{२ २}व्यदाताया^{३ ४ २ १}रयि ॥ २) ^{३ २ १}दाशेमहा । ^{३ २ १}व्यदाताया^{३ ४ २ १}र
^१यि । ^{३ २ १}भुवत् । ^{३ २ १}वाजा^{३ ४ २ १}रयि । ^{३ २ १}ध्वविता । ^{३ २ १}भुवद्वा^{३ ४ २ १}र्द्धारयि ।

उतत्राता । तनूनाश्म । उतत्रा । तातनूनाश्म ।

हयायि । हयाश् । ओहाओहा । हयायि । हयाश् ।

ओहाओहा । हयाहि । हयाश् । ओहाओहा ।

हो४इडा । हो४इडा । हो२३४५ई । डा(३) ॥ २० * ॥ [४]

॥ दैर्घश्रवसम् ॥ यज्ञायज्ञावोअग्रयओहाओहाश् ।

इराइराचदक्षसे । ओ३हा । ओ३हाश्ण३४ । पप्रौ ३४

वयाम् । आमृतम् । जातावेदसाम् । ओ३हा ।

ओ३हाश्ण३४ । प्रिया३४मित्राश्म । सुशो२३४वा ।

साधुयिषो६हायि ॥ (१) प्रियामित्रं सुशं सिषमोहाओ

हाश्ण । ऊज्जीनपा । ओ३हा । ओ३हाश्ण३४ । त

सा३४हिना । यामस्ययुः । ओ३हा । ओ३हाश्ण३४ ।

दाशा३४यिमहाश् । व्यदो२३४वा । ता५यो६हायि ॥ (२)

^{२२ २} दाशेमहव्यदातयओच्चाओच्चाश्ण । ^२ भुवद्वाजायि । ^{१ २ २} ओ

^१ ३हा । ^५ ओ३हाश्ण३४ । ^{२ २} पुवा३४विता । ^{३ १} भुवद्दुधे । ^{१ २ २} ओ

^२ ३हा । ^५ ओ३हाश्ण३४ । ^{२ २} उता३४तृता३ । ^{२ २} तो२३४वा । ^१

^४ नूपनोद्चायि ३) ॥ २१ * ॥ [५]

^{२ २} ॥ कण्वबृहत् ॥ ^२ औद्दोयज्ञायज्ञाश्ण । ^{२ १ २} वोआग्नाश्या

^{३ २} २३४यि । ^१ हाहोयि । ^{२ २ २} आयिरादूराचदक्षसे । ^{१ २} पप्तीवा१

^{३ २} यार३४म् । ^{२ २} द्वाहो । ^१ सुशा३ । ^५ सार३४यिषाम् । ^५ उ

^५ ऊवाद्दहाउ ॥ (१) ^{२ २} औद्दोप्रियन्मित्रा३मे । ^२ सुशा३सा१यि

^{३ २} षार३४म् । ^१ हाहोयि । ^{२ २ २} ऊज्जीनिपा । ^{१ २} त३साद्वा१यिना

^{३ २} २३४ । ^१ द्वाहोयि । ^{२ २} यमास्मा१यू२३४ः । ^{३ २} हाहोयि । ^{१ २} दा

^१ शायिमा१हार३४ । ^{३ २} द्वाहो । ^{२ २} व्यदा३ । ^१ तार३४यायि ।

^५ उऊवाद्दहाउ । ^५ वा ॥ (२) ^{२ २ २ २} औद्दोदाशेमहाश्ण । ^२ व्यदा

ता^१या^१र^१३४यि । हा^{१२}द्यो^२यि । भू^१वा^१दा^१जे । पु^१वा^१वा^१यिता^१
 २३४ । हा^{१२}द्यो^२यि । भु^१वा^१दा^१र्द्वा^१२३४यि । हा^{१२}द्यो^२यि । उ^१
 ता^१न्ना^१ता^१२३४ । हा^{१२}हो । तन्^१३१२३४नाम् । उ^१ज्ज^१वा^१हं
 हा^१उ । वा(३) ॥ ८ * ॥ [६] २०

अथ ढचात्मक-द्वितीये सूक्तेः—प्रथमा ।

२ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
 ए^१क्षु^१ब्र^१वा^१णि^१ते^१ग्न^१इ^१त्ये^१तरा^१गिरः ।

३ १ २ ३ १ २
 ए^१भि^१र्व^१र्द्वा^१स^१इ^१न्दु^१भिः ॥ १ ‡ ॥

हे “अग्ने !” “एहि” आगच्छ “ते” तुभ्यं च तदर्थं “गिरः”
 स्तुतीः “इत्या” इत्य मनेन प्रकारेण “स ब्रवाणि” सुष्ठु ब्रवा-
 णीत्याशास्यते । ताः स्तुतीः शृण्वित्यर्थः । “ज”—इत्येतत्
 पूरकम् । “इतराः” असुरैः कृताः स्तुतीः शृण्विति शेषः ।
 तथा च ब्राह्मणम्—“अग्निरित्येतरागिर इत्यसुराहि वा इतरा-
 गिरः”—इति । अपिच आगतस्त्वम् “एभिः” एतैः इन्दुभिः
 सोमैः “वर्धसे” वर्धस्व ॥ १ ॥

० ज० गा० २२ प्र० १ अ० ८ सा० ।

† ‘उक्तोऽग्निष्टोम इदानीं मुक्त्योऽभिधीयते’—इति वि० ।

‡ इ० आ० १, १, ७ (१ भा० १०४ पृ०) = ऋ० वे० ४, ३, २४, १ । ऋ०
 साकमन्थः । इ० गायत्री । एवमेवोत्तरच ।

अथ द्वितीया ।

१ एक १२ १२३ १ २ ३ १ २

यत्रक्वचतेमनोदक्षन्दधमउत्तरम् ।

२ ३ १ २

तत्रयोनिङ्गणवसे ॥ २ * ॥

हे अग्ने ! “ते” तव “मनः” अनुग्रहात्मक मन्तःकरणं “यत्र” यस्मिन् देशे “क्वच” कस्मिंश्चिद् यजमाने वर्त्तते, “तत्र” तस्मिन् यजमाने वर्त्तमाने “उत्तरम्” उद्गततरं श्रेष्ठं “दक्षं” बलकर मन्त्रं वा “दधमे” धारयसि तथा “योनि” स्थानं च “ङ्गणवसे” तस्मिन् यजमाने करोषि ।

“तत्र योनि”-“तत्रामदः”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २२३ १ २ ३ १ २२३

नहितेपूर्त्तमक्षिपङ्गवन्नेमानाम्यते ।

२ ३ १ २

अथादुवोवनवसे ॥ ३ † ॥ २१

हे अग्ने ! “तं” त्वदीयं “पूर्त्त” पूरकं तेजः ‡ “अक्षिपत” अक्ष्णोः पातकं विनाशकं “न हि भुवत्” न भवतु सर्वदा

* ऋ० वे० ४, ५, २४, २ ।

† ऋ० वे० ४, ५, २४, २ ।

‡ विवरणनये “पूर्त्तम्”—इति पाठः । अतएव ‘पूर्त्तं पावनात्मकम्’—इति व्याख्यातम् ।

१ अ० ६ ख० २ सू० १, २, ३] उत्तरार्द्धिकः ।

१८५

अस्माकं दर्शनसामर्थ्यं करोतु । हे “नेमानां पते” नेमशब्दो-
ऽल्पवाची, मनुष्याणां मध्ये कतिपयानां यजमानानां * पते
पालक ! “अथ” अतः कारणात् “दुवः” [दुवस्यतिः परिचरण-
कर्मा (निघ० ३, ५, ५)] अस्माभिर्यजमानैः कृतं परिचरणं
“वनवसे” सम्भजस्व ॥ ३ ॥ २१

५ २ २ २ ४ २ ५ १ २

॥ साकमश्वम् ॥ एक्षूपू३ब्रवाणा६इताइ । अग्नइत्ये

तरागा२इराः । एभा२इर्वर्द्धा । सयार२हा३४३इ । दू२

३४भो६हाइ । यत्रकू३वचतेमा६नाः । दक्षन्दधसउत्ता

२राम् । तत्रा२र्योनाइम । कृणार२हा३४३इ । वा२३

४सो६हाइ ॥ (२) नहिता३इपूर्त्तमक्षा६इपात् । भुवन्ने

मानाम्या२ताइ । अथा२दुवाः । वना२३हा३४३इ । वा

२३४सो६हाइ (३) ॥ १५ ॥ [१]

५ २ २ २ १ १

॥ साकमश्वम् ॥ एहियूषाऔहोहायि । ब्रावा३णार

३४यितायि । अग्राआ२३४यिहायि । येतरागा३४ । औ

* ‘नेमानां शरीरणां इन्द्रियाणां वा’—इति वि० ।

† ऊ० गा० १५० १५० १५० १५० ।

^{४८ ५} होवा । ^{१ ३} इह्वा२३४हायि । ^५ उज्ज्वा२३४राः । ^{२ ३} एभिर्व । ^५ २८१२

^{१ ७} धंसइन्द्र३४ । ^{३८ ४८ ५} औहोवा । ^{१ ३} इह्वा२३४हायि । ^५ औहो३१२

^{५८} ३४ । ^५ भीः । ^२ एहियाइहा ॥ (१) ^{२ २ १ २} यत्रकुवाऔहोहायि ।

^१ वातायिमा२३४नाः । ^{२ १} दक्षान्दा२३४हा । ^५ धसउमा३४ । ^{१ २}

^{४८ ४८ ५} औहोवा । ^{१ ३} इह्वा२३४हायि । ^५ उज्ज्वा२३४राम् । ^{२ ३} तन्

^{१८} यो । ^{१ ७ २} नायिक्कुणवा३४ । ^{३८ ४८ ५} औहोवा । ^{१ ३} इह्वा२३४हायि । ^५

^{३८ २} औहो३१२३४ । ^{५८} सायि । ^५ एहियाइहा ॥ (२) ^{२ २ २ २} नक्षितेपूऔ

^{१ २} होहायि । ^३ तामक्ष्वा२३४यिपात् । ^५ भुवान्ना२३४यिहायि । ^{२ १}

^{१८ २} मानापा३४ । ^{३८ ४८ ५} औहोवा । ^{१ ३} इह्वा२३४हायि । ^५ उज्ज्वा२३

^५ ४तायि । ^{२ १ २ २} अथादु । ^{१ ७ २} वोवमचा३४ । ^{३८ ४८ ५} औहोवा । ^{१ ३} इहा

^५ २३४हायि । ^{३८ २} औहो ३१२४५ । ^{५८} साई । ^{५८} एहियाइ

^५ हा(३) ॥ १२ * ॥ [२] २१

अथ तृतीयसूक्तो, प्रगाथे—

प्रथमा ।

२२२ १. १ २ १७ २ १२ २ १२
वयमुत्वामपूर्वस्थरन्नकश्चिन्नन्तोवस्यवः ।

१ २ २ १ २
वज्रिञ्चित्त्वं हवामहे ॥ १ * ॥

हे “अपूर्व्य” त्रिषु सवनेषु प्रादुर्भूतत्वादभिनव ! हे “वज्रिन्”
वज्रवन्निन्द्र ! “भरन्तः” सोमलक्षणे रन्नेस्त्वां पोषयन्तः “वयम्”
“चित्त्र” चायनीयं विविधरूपं वा “त्वामु” त्वामेव “अवस्यवः”
रक्षणे मात्मन इच्छन्तः सन्तः “हवामहे” आह्वयामः । तत्र
दृष्टान्तः—“स्थूरं न” यथा भरन्तः व्रीह्यादिभिर्गृहं परयन्तो
जनानां स्थूरं स्थूलं गुणाधिकं “कश्चित्” कश्चित् पुरुषं यथाह्वयन्ति
तद्वत् ।

“वज्रिन्”-“वाजः”—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२२ १ १ २ १२ २ १२ २ १ २ २ २ २ २
उपत्वाकर्मन्नूतयेसनोयुवोग्रश्चक्रामयोधृषत् ।

१ २२ ३ १ २ २ २ १ २ २ २
त्वामिद्वयवितारं ववृमहे सखायइन्द्रसानसिम् ॥ २ † ॥ २२

* अ० आ० ५. १, २, १ (१ भा० ८३० पृ० १ = अ० वे० ६. २. १, १ ।

† अ० वे० ६. १, १, २ ।

प्रथमपादः प्रत्यक्षकृतः ! हे “इन्द्र !” “कर्मन्” अग्निष्टो-
मादि कर्मणि * “ऊतये” रक्षणाय “त्वा” त्वाम् “उप”
गच्छामः† । द्वितीयः पादः परोक्षकृतः । “यः” इन्द्रः “वृषत्”
धृष्णोति शत्रून् अभिभवति [“अ धृषा प्रागल्भ्ये (स्वा० प०),
“बहुलं कन्दसि (२, ४, ७३)”—इति शप्रत्ययः] “युवा” तरुणः
“उयः” उद्गूर्णः स इन्द्रः “नः” अस्मान् प्रति “चक्राम” आग-
च्छतुः; यद्वा, चक्राम अस्मानुत्साहयुक्तान् करोतु [क्रमतेः
सर्गार्थं व्यत्ययेन परस्मैपदम्] ॥ परोऽर्द्धचर्चः प्रत्यक्षकृतः ।
“सखायः” समानस्थाना वन्धुभूता वा वयं “सानसि” [“वनषण
सम्भक्तौ (स्वा० प०) सम्भजनीयम् “अवितारं” सर्वस्य रक्षितारं
“त्वामित्” त्वामेव “वहमहे” वृणोमहे सम्भजामहे । “हि”
प्रसिद्धौ [हि-प्रयोगादनिघातः (८, १, ३४)] ॥ २ ॥ २२

५ ४ २ ४ ५ ४ ५ २ २ १
॥ सौभरम् ॥ वयाश्मूश्त्वामपूर्वियोवा । स्थूरन्नक

७ १ ७ १ ३ ५ १
चिद्गराश्न्ताश्वाश् ३ । हो । स्याश् ४ वा । वज्रिश्चित्रम् ।

५ २ १ ३ ५ २ ४ ९
हवाश्चाश् ३ । मारद्वाश् ३ औद्वा ॥ (१) वज्राश्चाश्

४ ५ २ ४ ५ १ २ २ १ ०
इत्प्रह्वामहोवा । उपत्वाकर्मन्नुता रयाइसना २ ३ ।

१ ३ ५ १ २ ५ ९ १ १
होइ । यूश् ४ वा । उग्रश्चक्रा । मयोइहाश् ३ । धार

* ‘कर्मन्, कर्मणा यः सम्भजते तस्य सम्भोधनं हे कर्मन्’—इति वि० ।

† ‘उप, समीपं स्थिता’—इति वि० ।

१ ५८ ८ ५ ४ ५८ ४ ५ १८
 षा१२३४ औहोवा ॥ (२) उग्राश्चाश्क्रामयोधृषोवा । त्वा
 १ १ १ ५ १ ८
 मिध्यविता २ रां ववा २३ । हो । मा२३४ हाइ । सखाय ।
 ५ २ १ ५ ५८ ८ ३ १ १
 इ । द्रसाश्चाश्इ । ना२सा२ ३ ४ औहोवा । ऊ २ ३
 १ १
 ४ पु(३) ॥ १६ * ॥ [१]

५ २ ४८ ५ ४८ ५ ५८ १ २ १
 ॥ कालेयम् ॥ वयमूतत्वामपूर्विया । स्वरान्नकात् ।
 १ १ २ १ ५ २ २ १
 चिह्नरा२३ । ताः । आ२३४ । व । स्यात्वाः । वज्रा
 २ २ २ ५ ४ ५
 यिच्चित्तौ । वा ३ ४ ३ औ३४वा । हवा५महायि ॥ (१) व
 १ ४ ५ ४८ ५ २ १ २८ १ १८ १ ४
 जिश्चाश्चिच्छवामहायि । उपात्वाका । मन्नूता२३ ।
 १ १ ५ २ २ १ १ २ १ ४
 याहयि । सा२३४ः । नः । यू३वा । उग्राश्चक्रौ । वा
 २ ५ ४ ५ २ ४८ ५ ४
 ३४३ औ३४वा । मयो५धषात् ॥ (२) उग्राश्चाश्क्रामयो
 ५ २ १ २ १ १ १ २ १
 धृषात् । तुवामिहयि । अविता२३ । रा३म् । वा
 ५ २ २ १ २ २ १ २
 २३४ । वृ । मा३हायि । सखाय औ । वा३४३ औ ३ ४
 ५ ४ ४
 वा । द्रसा५नसायिम् । होपुई । डा(३) ॥ १० * ॥ [२] २२

अथ चतुर्थद्वये—प्रथमा ।

२ ३ क २२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अधाहौद्रिगिर्वणउपत्वाकामइमहेससृग्महे ।

३ २ ३ १ १ ३ २ २
उदेवग्मन्तउदभिः ॥ १ * ॥

“अधाहि” सम्प्रति हि “त्वा” त्वां “कामे” काम मभिलषित-
मर्थम् “इमहे” । यद्वा, “कामे” कामान् कमनीयान् स्तोमान्
“उपससृग्महे” उपसृजामः त्वां प्रापयाम इत्यर्थः । तत्र दृष्टान्त
माह—“उदेव” यथा उदकेन “ग्मन्तः” गच्छन्तः पुरुषाः
“उदभिः” अञ्जलिनोत्चिष्योदकैः समीपस्थान् पुरुषान् क्रीडार्थं
संसृजति तद्वदित्यर्थः ॥

“कामइमहेससृग्महे”-“कामान्महससृग्महे”—इति च
पाठाः । “उदेवग्मन्तः”-“उदेवयन्तः”—इति च पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वार्षत्वायव्याभिर्वर्जन्तिष्ठुरब्रह्माणि ।

३ १ २ ३ १ २
वावृध्वाऽसच्चिदद्रिवोदिवेदिवे ॥ २ † ॥

० अ० आ० ५, १, २, ८ (१ भा० ८१६ पृ०) = अ० वे० ६, ७, १, १ ।

† अ० वे० ६, ७, २, १ ।

हे “अद्रिवः” वज्रिन् ! “शूर” इन्द्र ! “वार्ण” यथोदक-
मुदकस्थानं “यव्याभिः” नदीभिः [‘अवनयः’, ‘यव्या’—इति
(निघ० १, १३, १-२) नदीनामसु पाठात्] “वर्द्धन्ति” वर्द्धयन्ति,
तथा “ब्रह्माणि” स्तोत्रैः * “वावृध्वांसं” “चित्” यथा निरु-
दकं देशं नदीभिः तथा न किन्तु प्रवृद्धमेव “त्वा” त्वां “दिवेदिवे”
अन्वहं वर्द्धयन्ति स्तोतारः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ १ २ ३ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ ३ १ २
युञ्जन्तिहरीद्विपरस्यगाथयोरौरथउरुयुगेवचोयुजा ।

३ १ २ ३ १ २
इन्द्रवाचास्वर्विदा ॥ ३ १ ॥ २३ ॥

“द्विपरस्य” गमनशीलस्येन्द्रस्य “उरुयुगे” महायुगे “उरौ”
महति “रथे” “इन्द्रवाचा” इन्द्रस्य वाहनभूतो “वचोयुजा”
वचनमात्रेणैव युज्यमानौ “स्वर्विदा” स्वर्गाख्य मिन्द्रस्य स्थानं
जानन्तौ “हरी” एतन्नामकावश्यौ “गाथया” ॥ स्तोत्रेण
स्तोतारः “युञ्जन्ति” योजयन्ति ॥

* ‘ब्रह्माणि’ अन्नानि, वैविधसहस्रानि वा, स्तोत्र-शस्त्राणि कर्माणि
वा—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, ७, २, ३ ।

‡ “अथ नामधेयम्”—इति वि० ।

॥ ‘गाथया, एकवचनं बहुवचनस्य स्थाने दृष्टव्यम्, गाथाभिः—इति वि० ।

“उरुयुगेवचोयुजाइन्द्रस्यवाहास्वर्विदा”-“इन्द्रवाहावचोमुजम्”
—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २३

॥ नार्मधम् ॥ अधाहीन्द्रगिर्वणाश्ण । उपात्वाङ्का ।
मई२मा२३४द्वाइ । सद्यग्माहा । औद्यौहो२३४वा ।
ज२३४देहाइ । वग्मान्ताज । औद्यौहो२३४वा । दार
३४भीः । एहियाद्वा ॥ (१) वार्णत्वायव्याभी३रे । वर्द्धा
नौ३ग्नु । रत्रार३द्वा२३४णी । वावृध्वात्सा । औद्यौहो
२३४वा । चा२३४इदद्वाइ । द्विवोदाइवा । औद्यौहो
२३४वाइ । एहियाद्वा ॥ (२) युञ्जतिहरीद्विराश्ण ।
स्य । गा । य । या । उरीरा३याइ । उरुयू२३४
गाइ । वचोयूजा । औद्यौहो२३४वा । आ२३४इन्द्रद्वा
इ । वाहाद्वा । औद्यौहो२३४वा । वा २३४इदा ।
एहियाद्वा । द्यौऽपृई । डा(३) ॥ १७ * ॥ [१]

॥ द्यौतानम् ॥ ^२हा३ । ^{५ २}ओ३च्चा३ । ^{५ १}ओ३च्चा३ । ^२चा
^{१ २}यि । ^१अधाह्रियारयि । ^{२ २ ३}द्रुगिर्वा२३४णाः । ^५उपत्वाका२ ।
^{२ २ ३}मईमा२३४चायि । ^५सा३ । ^{२ ३}हृग्मा२३४चायि । ^५उदेवग्मा
^१२ । ^{२ २ ३}तऊदा२३४भायिः ॥ (१) ^{१ २}वार्षित्वार । ^{२ २ ३}यवीया२३४
^५भौः । ^१वईन्तिष्टार । ^{२ २ ३}रत्राह्मा२३४णी । ^५वा३ । ^{२ ३}वृध्वा
^५२३४साम् । ^१चिदद्रिवोर । ^{२ २ ३}दिवंदा२३४यिवायि ॥ (२)
^१युञ्जन्तिच्चा२ । ^{२ २ ३}वीर्वायिषार३४यिरा । ^५स्यगाथयार
^{२ २ ३}उरौरार३४थायि । ^१उरूयुगे२ । ^{२ २ ३}वचोयूर३४जा । ^५इन्द्र
^२वाच्चा२ । ^{२ २ ३}सुवर्वा२३४यिदा । ^५चा३ । ^२ओ३च्चा३ । ^५ओ
^१३ चा ३ । ^२चा ३ ४ । ^{५ २ २}ओहोवा । ^{१ २}आओ ३ हो २ ३
^{१ १}४ ५ ॥ ८ * ॥ [२] २३

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरायणस्य प्रथमस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः ॥ १ ॥

• ज० गा० १० प्र० २ ख० ८ सा० ।

† 'अग्निहोम उक्त्यन्तोक्तः । षोडशी च मन्त्राणां-समान्नाथेन ऋक्-समान्नाथेन चान्तरितः । इदानीं मन्त्राणां यज्ञव्यः—इति वि० ।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
 पुमर्थाश्चतुरोदेयाद् विद्यातीर्थं-महेश्वरः ॥ १ ॥

॥ इत्युत्तरार्चिके प्रथमस्यार्द्ध-प्रपाठकः ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवक्तृ-
 श्रीवीरबुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धूरन्धरेण सायणा-
 चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
 प्रकाशे उत्तराग्रन्ये प्रथमोऽध्यायः ॥



यस्य निश्चसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निश्चमे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयाध्याय आरभ्यते ॥



तव,

पान्तमाव इति प्रथम-खण्डे—

तृचात्मके प्रथमे सूक्ते,

प्रथमा ।

२ ४ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ २

पान्तमावोऽन्धसइन्द्रमभिप्रगायत ।

१ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विश्वासाद् शतक्रतुमर्चिष्ठ चर्पणीनाम् ॥ १* ॥

हे ऋत्विजः ! “वः” युष्मदीयं “अन्धसः” सोमलक्षणमजं
“आ पान्तम्” आभिमुख्येन पिबन्तं [पा पाने (म्वा० ष०) ;
कान्दसः शपोलुक् (२, ४, ७३) ; ‘सर्वे विधयश्चन्दसि विक-
ल्पन्ते’—इति “न लोकाव्यय (२, ३, ६५)”—इति षष्ठी-
प्रतिषेधाभावः ; ततोऽन्धस इत्यस्य “कर्तृकर्मणोः (२, ३,

६५)” —इति षष्ठी । षष्ठी] सोम माभिमुख्येन पिबन्त
मेतादृशम् “इन्द्रम्” “अभि प्रगायत” प्रकर्षेण अभिष्टुत ।
कीदृशम् ? “विश्वासाहं” सर्वेषां शत्रूणामभिभवितारं सर्वेषां
भूतजातानां वा, अतएव “शतक्रतुं” बहुविधप्रज्ञानं बहुविध-
कर्माणि वा “चर्षणीनां” मनुष्याणां “मंहिष्ठ” धनस्य
दाढतमम् । यद्वा, यजमानानां यष्टव्यत्वेन पूजनीय मिन्द्रं
प्रगायतेत्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २
पुरुहूतम्युरुष्टुतङ्गाथान्याऽऽऽसनश्रुतम् ।

२ २ १ २
इन्द्रइतिब्रवीतन ॥ २* ॥

हे ऋत्विग्यजमानाः ! “पुरुहूतं” यज्ञेषु बहुभि राहूतं
“पुरुष्टुतं” बहुभिः स्तोत्रशस्त्रादिभिः स्तुतमतएव “गाथान्यं”
गानयोग्यं गातव्यं+ “सनश्रुतं” सनातनया प्रसिद्धम्, एवंविधं
देवम् “इन्द्रइति” यूयं “ब्रवीतन” ब्रुवीध्वम् [ब्रूष् व्यक्तायां
वाचि (अदा० उ०)]—इत्यस्य लङि व्यत्ययेन (३, ४, ८८)
ध्वमस्तनवादेशः, अतएव गुणः ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ६, ६, १५, १ ।

+ ‘गाथानि स्तोत्र-शस्त्र मन्त्राणि, ताभिः कीयते यः स गाथान्यः तं गाथान्यम्’—
इति वि० ।

‡ ‘सनश्रुतः सदावाचो, सदैव विष्णुतम्’—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

२ ३ १ १ २ १ २ ३ १ २ २ २ २ २

इन्द्रइन्द्रोमहोनान्दातावाजानानृतुः ।

२ १ २ ३ १ २

महा^१अभिज्ञायमत् ॥ ३* ॥ १

“इन्द्रइत्” पूर्वोक्तलक्षण इन्द्रएव “नः” अस्मभ्यं “महोनां” मघोनां धनवतां पश्वादि-लक्षण-धन-युक्तानां “वाजानाम्” अन्नानां “दाता” भवतु । कौटुम्भम् ? “नृतुः” [“नृतिअद्योःकूः” —इति कूप्रत्ययः, ऋखण्डसः] सर्वस्य नर्तयिता^१; यदा [नृ नये, (क्रा० पा० प०) औणादिक-तु-प्रत्ययः, धातो-ऋखण्डसः] स्तोत्रभ्यो गवादिनेता ; अतएव “महान्” स इन्द्रः “अभिज्ञु” अभिगत-जानुकम्^२; अस्मभ्यम् “आ यमत्” आयच्छतु ददातु^३ । यदा स इन्द्रः अभिज्ञु अस्मदभिमुखं मागच्छत धनं स्वहस्तयोः परिगृह्य अस्मान् नयतु, —धनं गृहीत्वा अस्मभ्यं ददात्वित्यर्थः ॥

“मघोनाम्”-“महोनाम्”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १

॥ वैतहव्यमोकोनिधनम् ॥ पाऽपुन्तम् । आ^४इवो^२

४ ५ १२ ७ १ ५ १
३अन्धसाः । आइन्द्रामभाइ । प्रगारयार^५३४ता । विश्वा

● ऋ० वे० ६, ६, १५, ३ ।

† ‘नृतुः नृभ्योहितः’—इति वि० ।

‡ ‘अभिज्ञु सर्वस्य ज्ञाता’—इति वि० ।

१ ‘आयमत्—यमु वज्रने, सर्वं जगत् कर्ममयैः पार्श्वैर्वज्रानि’—इति वि० ।

^{१ ४ ५ ६ १ २ ३ ४ १ २ १ २}
 रसार३४क्षाम् । शाङ्गनाका३४म् । म३४दिष्टचर्ष ।
^{१ २ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४}
 णा३४ । नार३४मा३४औहोवा ॥ (१) पू३४रु३४ । ता३४म्य३४
^{४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६}
 सुष्टुताम् । पूरु३४ताम् । पुरु३४रु३४र३४ताम् । गाथा
^{१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६}
 रनार३४याम् । सा३४नाश्रू३४ताम् । आ३४इन्द्रइति३४ । वा
^{१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६}
 इ । तार३४नार३४औहोवा ॥ (२) आ३४इन्द्रइत् । नो३४
^{१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६}
 मा३४होनाम् । आ३४इन्द्रइन्तो । मा३४हो३४र३४नाम् । दा
^{१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६}
 तार३४वार३४जा । ना३४श३४नार्त्तुः । मा३४हा३४अभि३४जु । आ ।
^{१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६}
 यार३४मा३४र३४औहोवा । ओ३४इ३४कार३४र३४५ः ॥ १८* ॥ [१] १

अथ द्वितीयल्लेखे, प्रथमा ।

^{१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६}
 प्रव३४इन्द्राय३४मा३४दन३४च३४र्य३४श्राय३४गाय३४त ।

^{१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६}
 सुखायः३४सोमपा३४व ॥ १९ ॥

* क० मा० १ प्र० १ अ० १८ क्षाम ।

† क० अ० १, २, ३, ४ (१ मा० १५८ पु०) = क० वे० ५, ६, १५, १ ।

हे “संखायः” स्तोतारः ! “वः” यूयं “हयंश्वाय” हरिनाम-
काश्चोपेताय “सोमपावने” सोमानां पात्रे “मादनं” मदकरं
सूर्यकरं स्तोत्रं प्रगायत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१७ ११ ११ १ १ १२ २७ ३ १२
शंसे दुक्थं सुदानव उत द्यक्षं यथानरः ।

१ ० ३ १ २

चक्रमासत्यराधसे ॥ २* ॥

“उत” अपिच हे स्तोतः ! “सुदानवे” शोभन दानाय
“सत्यराधसे” सत्यधनायेन्द्राय^१ “उक्थं” स्तोमः^२ “यथा नरः”
अग्रे स्तोतारः^३ “द्युक्षं” दीप्तिः साधनभूतं स्तोत्रं शंसति,
तद्वत् त्वमपि “शंस” उच्चारय । इदिति पूरणः^४ । वर्य-
मपि “चक्रम” स्तोत्रं करवाम ॥ २ ॥

* ऋ० व० ४, २, १४, १ ।

† ‘सत्यराधसे’—राधः अन्नं धनं वा, सत्यं वा । सत्यान्नाय, सत्यधनाय, सत्य-
सत्याय वा—इति वि० ।

‡ ‘उक्थं’—उक्त्यानि सामानि, हे उद्गातः ! गायत्र्य सामानि । अथवा
उक्थं शस्त्रमुत्पन्ने मन्त्रं शं स्तोतः ! एकवचनं जात्यपेक्षम्, उक्त्याति शंस ।—
इति वि० ।

§ ‘यथा नरः’—यथा मनुष्याः । प्रथमेषा षष्ठीस्थाने द्रष्टव्या यथा मनुष्यस्य स्तुतिः
क्रियते—इति वि० ।

§ “अथ ये प्रष्टव्ये ऽर्च्ये ऽमिताक्षरेषु ग्रन्थेषु वाक्य-पूरणा आगच्छन्ति पद-पूरणाश्च
मिताक्षरेष्वर्थकाः कस्योमिद्विनि”—इति जि० नै० १, ८ ।

अथ दृतीया ।

१ २ २ १ ७ ३ १ २
 त्वन्नइन्द्र वाजयस्त्वङ्गव्यः शतक्रतो ।

१ २ ३ १ २
 त्वं हिरण्ययुर्वसो ॥ ३ * ॥ २ +

हे “इन्द्र !” “त्वं” “नः” अस्माकं “वाजयुः” अन्नकामो भव ।
 हे “शतक्रतो” बहुविध-कर्मवन्निन्द्र ! ३ “त्वं” “नः” अस्माकं
 “गव्युः” गोकामो भव । हे “वसो” वासयितरिन्द्र ! त्वं
 “हिरण्ययुः” हिरण्यकामोऽपि भव । [“छन्दसि परेच्छायामपि
 दृश्यते (वा० ३, ३, ८) ”—इति क्वच् ॥ ३ ॥ २

॥ शान्त्यम् ॥ प्रवइन्द्रार । यमादार३४नाम् । प्रवा
 २इन्द्रा । औ३हो । यार३४मा । दा३नाम् । हरा
 २अश्वा । औ३हो । यार३४गा । या३ता । सखा२
 या३सो । औ३हो३ । मायो२३४वा । आ३५वो३हा
 इ ॥ (१) श३र्से दु३यारम् । सु३दानार३४वाइ । श३सा

● ऋ० वे० ५, ३, १५, ३ ।

+ ‘जौरीवितेः तदेवापम्’—इति वि० ।

‡ ‘शतक्रतो—वज्रभिः क्रतुभिरिष्टवान् यः स शतक्रतुः । अथवा क्रतुरिति
 कर्मनाम प्रज्ञानाम वा, वज्रकर्मा वज्रप्रज्ञोवा’—इति वि० ।

१ १ १ ३ ५ २ २
 २इदुक्था । औ३होइ । स्वर३४दा । ना३वाइ । उ
 १ २ २ ३ ५ २ २ १
 ता२दुक्ता । औ३होई । या२३४था । ना३राः । च
 १ २ १ १ ५ ४ ५
 क३म । सा । औ३होइ । त्या२रो२३४वा । धा३५मोईहा
 १ ३ २ ३ ५ २ १
 इ ॥ (२) तुवन्नआ२इ । इवा३जा२३४यूः । तुवा२न्नआ ।
 १ २ ३ ५ २ १ १
 औ३होइ । द्रा२३४वा । जा३यूः । तुवा२ङ्गव्यूः । औ
 १ ३ ५ २ २ १ १
 ३होइ । शा२३४त । क्रा३ताउ । तुवा२र्हिरा । औ
 २ १ ५ ४ ५
 ३होइ । ण्यायो२३४वा । वा३५मोईहाइ(३) ॥ १८* ॥ [१] र

अथ तृतीयवृत्ते, प्रथमा ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ १ २
 वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रत्वायन्तःसखायः ।

१ २ ३ २ ३ १ २
 कण्वाउक्थेभिर्जरन्ते ॥ ४ ॥

हे “इन्द्र !” “त्वायन्तः” त्वामात्मनइच्छन्तः “सखायः”
 समानख्याना वयं “तदिदर्थाः” यद्विषयं स्तोत्रं तत्तदित्, तदेवार्थः

* ऊ० गा० १प्र० १अ० १८सा० ।

† इ० आ० २, २, २, ३ (१भा० ८३० पृ०) = इ० वे० ५, ७, २०, १ ।

प्रयोजनं येषां ; तादृशाः सन्तः “त्वा” त्वां “जरामहे” स्तुमहे ।
 “उ”—इति पूरणः । “कश्वाः” कश्वागोत्रोत्पन्नाः अस्मादीयाः
 पुत्रादयश्च “उक्थेभिः” उक्थैः शस्त्रैः “जरन्ते” त्वां
 स्तुवन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १ १ १ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १
 नघेमन्यदापपनवजिन्नपसोनविष्टौ ।

२ ३ ३ २ १ २
 तवेदुस्तोमैश्चिकेत ॥ २ * ॥

हे “वजिन्” वज्रवन्निन्द्र ! “अपसः” अपस्विनः कर्मवतः †
 “तव” सम्बन्धिनिधः “नविष्टौ” अभिनवे यागे वर्त्तमानोऽहं
 “अन्यत्” त्वद्विषयादन्यत् स्तोत्रं “नघेम्” ‡ नैव “आपपन”
 अभिष्टौमि [पनतेः स्तुतिकर्मणः (स्वा० आ०) उत्तमे णलि
 रूपम्] ; “तवेदु” तवैव “स्तोमैः” § स्तोमं स्तोत्रं “चिकेत”
 अभि जानामि ॥ त्वामेव सर्वदा स्तोमीत्यर्थः ॥ २ ॥

* अ० वे० ५, ७, २०, २ ।

† “अपस्”—इति कर्मनामसु पथमं जेघयट् कप् (२, १, १) ।

‡ “तव—वष्टोषा द्वितीयार्थे द्रष्टव्या त्वां ० ० ० चिकेत”—इति वि० ।

§ “न, घ, ईम्”—इति त्रयोऽप्येते उपसर्गाः—इति वि० ।

§ “स्तोमैः—ऋतुभिः”—इति वि० ।

॥ “चिकेत—चेतमां कुर्याः”—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

३१ ३३२ ३ ३ ३ १२ १२

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तस्वप्नाय स्पृहयन्ति ।

१ २ ३ २ ३ १ १

यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥ ३ * ॥ ३ १

“सुन्वन्तं” सोमामिषवं कुर्वन्तं यजमानं “देवाः” इन्द्रादयः सर्वे “इच्छन्ति” रक्षितुम्, “स्वप्नाय न स्पृहयन्ति” स्वप्नावस्थान्तस्व सुन्वतो नेच्छन्ति सर्वदा प्रबुद्धमेव कुर्वन्तीत्यर्थः [“स्पृहेरीप्सितः (१, ४, ३६)” — इति कर्मणि चतुर्थी; स्पृहईप्सायां चुरादि रदन्तः] । यतएव मतः कारणात् “अतन्द्राः” अनलसा देवाः “प्रमादं” प्रकर्षेण मदकरं तदीयं सोमं “यन्ति” शीघ्रं प्राप्नुवन्ति ॥ ३ ॥ ३

५ ९ ४२

॥ काण्वम् ॥ वयमूश्त्वातदिदर्याः । ऐहिहार

१२

१

२

३

४

११

१

३

इ । वयमुत्वातदिदर्या इन्द्रत्वायन्तः सखारश्याः । कार

५

१

२

१

५

१

३४णवाः । ऊ । कथाइ । भिज्जोर् २३४वा । रन्ताश्या

११११

५२१

४२

५

१२

१२

२३४५ ॥ (१) नधेमाइन्यदापपना । ऐहिहारइ । नधे

०. ऋ० वे० ५, ७, १०, ३ ।

† ‘अथ काण्वं साम । कण्वस्यार्धम्’ — इति वि० ।

‡ ‘प्रमादं’ — मदमोदतृप्तावित्यस्येदं रूपम् । प्रकर्षेण तप्यन् — इति वि० ।

मन्यदापपनवजिन्नपसोनवार३इष्टाउ । तार३४ वेत् ।

ज । स्तो । मैथोर३४वा । वोता ३ या २ ३ ४ ५ ॥ (२)

इच्छन्ता३इदेवाःसुन्वन्ताम् । ऐहिहा २इ । इच्छन्तिदेवाः

सुन्वन्तन्नस्वप्नायस्पृह्यार३न्ती । यार३४न्ती । प्रा । मा ।

दमोर३४वा । तन्द्रा३यार३४५ (३) ॥ २० * ॥ [१] ३

अथ चतुर्थतृचे, प्रथमा ।

इन्द्रायमद्वनेसुतम्यरिष्टोभन्तुनोगिरः ।

अर्कमर्चन्तुकारवः ॥ १ * ॥

“मद्वने” [माद्यतेः (दि०, प०) कनिष्] मदनगौलाय
“इन्द्राय” तदर्थं “सुतं” सोमं “नः” अस्मदीयाः “गिरः” स्तुति-
लक्षणा वाचः परिष्टोभन्तु [स्तोभतिः स्तुतिकर्मा (निघ० ३,
१४, ४)] सोमं स्तुवन्तु । ततः “कारवः” स्तुतिकारिणः
स्तोतारश्च “अर्क” सवैरर्चनीयं सोमम् “अर्चन्तु” पूजयन्तु ॥ १ ॥

२०६ . सामवेदसंहिता । [१ प्र० २ अ० ४ सू० १, २, ३ ।

“देवासः” देवाः इन्द्रादयः “विकद्रुकेषु” आभिन्नविके-
 ष्वहंसु ज्योतिर्गौरायुरिति विकद्रुकाः, * तेषु “चेतनं”
 [चित्ती सञ्ज्ञाने (म्या०, प०)] चेतन्ति जानन्ति अनेन
 स्वर्गादिकमिति चेतनो ज्ञानसाधनो यज्ञः तम् “अन्नत” अतन्वत
 स्वैः स्वैः कर्म्मभिः पालनैश्च विस्तारितवन्तः [तनु विस्तारे
 (तना०, उ०) लङि “बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)”—इति
 विकरणस्य लुक्, “तनिपत्योऽच्छन्दसि (६, ४, ८८)”—इति
 उपधालोपः “तमित्” तमेव यज्ञं “नः” अस्माकं “गिरः” स्तुति-
 लक्षणा वाचः “वर्द्धन्तु” वर्द्धयन्तु ॥ ३ ॥ ४

१ २ १ १ १ १ १ १ १ १
 . ॥ श्रौतकथम् ॥ इन्द्रायमद्वनेसुतम् । इन्द्रायमोवा ।
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
 द्वाश्नायिहृताम् । परिष्टो । भार३ । द्वाश्द्वा३ ।
 १ २ ५ १ १ १ १ १ १ १
 त्नोर्गार३४इराः । आमच्चर्का३ । द्वाश्द्वा । तुका
 १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
 रा३श्वा३४३ ॥ (१) यस्मिन्विश्वामधिश्रियः । यस्मिन्विश्वो

• ज्योतिर्गौरायुरितौति चतुर्थ-षष्ठम-वष्टाना आभिन्नविकाना मङ्गा नाम्नां
 प्रतीकमाचम । अलि गवामयनादिकं सप्तम् ; तच्च, एकषष्ठ्युत्तरविंशतदिननिर्वर्त्तं
 भवति । तच्च, प्राक्षीयोऽतिराचनानां प्रथममहः, चतुर्विंशतानां द्वितीयमहः, उक्त्वा-
 नाम तृतीयम्, ज्योतिर्गौ चतुर्थमहः, आरुर्गौ पञ्चममहः, आयुर्ज्योतिरिति नामकं
 षष्ठमहः, एतान्येव षडङ्गानि आभिन्नविकान्युच्यन्ते ; तेष्वेव शेषाण्यङ्गानि चतुर्थादीनि
 कोषि विकद्रुकाणांति ।

वा । आ३धा३यिआ३याः । रण३न्ति । सा३र३ । हा३हा
 ३ । प्रा३सा३र३सा३र३४दाः । आ३इन्द्र३सु३ते३ । हा३हा
 यि । ह३वामा३र३हा३र३४यि ॥ (२) त्व३क३द्रु३केषु३चे३त३न३म्* ।
 त्व३क३द्रु३को३वा । षू३र३चा३यि३ता३ना३म् । दे३वा३सः । या३र३ ।
 हा३हा३ । आ३मा३र३न्ना३र३४ता । ता३मि३द्व३र्द्धा३ । हा३
 हा । तु३नो३गा३र३यि३रा३४३ः । ओ३र३४३पु३इ । डा३(३) ॥ १३ ॥ [१]४

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरायन्यस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

प्रथमः ॥ खण्डः ॥ १ ॥

०, † “वि”—इति ख० पु० पाठः ।

‡ क० ना० २ प्र० १ ख० १ सा० ।

¶ ‘उक्तः प्रथमपर्व्यायः’—इति वि० ।

अथ द्वितीयखण्डस्य—

प्रथम-तृचे, प्रथमा ।

४ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
अयन्तद्द्रसोमोनिपूतोअधिबर्हिषि ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
एदौमस्यद्रवापिव ॥ १ ॥

हे “इन्द्र !” “ते” तुभ्यं त्वदर्शम् “अयं सोमः” “बर्हिषि अधि” वेद्यामास्तीर्णं दर्भे “निपूतः” नितरां दशापवित्रेण शोधितः अभिषवादिसंस्कारैः संस्कृत इत्यर्थः । “इम्” इदानीम् “अस्य” इमं सोमं प्रति “एहि” आगच्छ । आगत्य च यत्र रसात्मकः सोमो ह्यते तं देशं “परिद्रव” शीघ्रं गच्छ, तदनन्तरं सोमं “पिब” ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २ २ २
शाचिगोशाचिपूजनायर्णायतेसुतः ।

१ २ १ १ २
आखण्डलप्रह्वयसे ॥ २ ॥

“शाचिगो” [शाचयः शक्ता गावो यस्यासौ शाचिगुः ; यद्वा, शच् व्यक्तायां वाचि (म्वा०, आ०), अस्मादौणादिक इच् प्रत्ययः]

• ‘इदानीं मध्यमोऽभिधीयते’—इति वि० ।

† ऋ० ऋ० २, १; २, ५ (१भा० ३६५पृ०) = ऋ० वे० ६, १, १४, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, १, २४, २ ।

शाचयः व्यक्ताः प्रख्याता गावो रश्मयो वा यस्य तादृश ! *
 हे “शाचिपूजन” [पूज्यतेऽनेनेति पूजनम्] स्तोत्रादि-प्रख्यात-
 पूजन ! † “ते” तव “रणाय” रमणाय सुखजननाय “अयं”
 सीमः “सुतः” अभिषुतः ; अतः कारणात् हे “आखण्डल”
 शबूणामाखण्डयितः इन्द्र ! ‡ “प्रह्वयसे” प्रकृष्टाभिः स्तुतिभिः
 राह्वयसे । इत आगत्य इमं सीमं पिबेत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
 यत्तेश्चवृषोणपात्प्रणपात्कुण्डपायः ।

२ २ ३ १ २ २ २
 न्यस्मिन्दध्रामनः ॥ ३ ॥ ५ §

हे “शृङ्गवृषोणपात्” [शृङ्गवृषामा कथित् ऋषिः तस्य
 चेन्द्रः स्वयमेव पुत्रतया जज्ञे—इत्याख्यायिका । नपादित्व-
 पत्यनाम] हे शृङ्गवृष-पुत्र ! [शृणन्ति हिंसन्तीति शृङ्गाणि-
 रश्मयः, तैर्वर्षतीति शृङ्गवृद्धादित्यः, तस्य न पातयितः स्वकीये
 ऽवस्थानेऽवस्थापयितः ! । “सुबामन्विते (२, १, २)”—इति
 षष्ठ्यन्तस्य पराङ्गवद्भावेनामन्वितानुप्रवेशात् समुदायस्याष्टमिकं

* ‘शचीति कर्मनाम, कर्मणि प्रयुक्तं गावः प्रदीयन्ते यस्य असौ शाचिगुः’—
 इति वि० ।

† ‘शाचिपूजनः—कर्मणि पूज्यते शाचिपूजनः’—इति वि० ।

‡ ‘आखण्डलः—इन्द्रस्य नामंतत्’—इति वि० ।

॥ ऋ० वे० ६, १, २४, ३ ।

§ ‘अथ देवोदासीर्दसधर्मो । देवोदासमहोने, और्द्धसद्मनं सने एकादे ।
 —इति वि० ।

सर्वानुदात्तत्वम् । ईदृश !] हे इन्द्र ! “ते” तव सम्बन्धि
 “प्रणपात्” प्रकर्षेण नपातयिता रक्षिता, “कुण्डपाय्यः” [कुण्डैः
 पीयते अस्मिन् सोम इति कुण्डपाय्यः क्तविशेषः । “ऋतौ
 कुण्डपाय्य-सञ्चाय्यो (३, १, १३०)” —इति पिबतेरधिकरणे यत्-
 प्रत्ययो युगागमश्च निपात्यते—एतत्सञ्ज्ञो यः] क्तुरस्ति ; “अ-
 स्मिन्” कुण्डपाय्य-ऋतौ “मनः” स्वान्तं “आ नि दध्रे” अभितो
 वर्धमानाः कुण्डपायिनामान ऋषयः पुरा निदधिरे सम्यक्
 त्वद्देवत्वं क्तुमनुष्ठितवन्त इत्यर्थः । [दधातेर्लिटि “इरयोरे (६,
 ४, ७६)” —इति रे-भावः* ॥ ३ ॥ ५

॥ रात्रिदैवोदासम्† ॥ अयन्तइन्द्रसोऽ४मः । नार३

४यि । पूतोअधिवर्द्धिषी । निपूतोअधिवर्द्धा २३ यिषी ।

ऐह्योयिमार३स्या । द्रवापार३४यिबा६पु६ ॥ (१) शाचि

गोशाचिपू । जना३ । आ२३४ । य॒रणा॒यते॒सुताः ।

* अत्रैवं आचष्टे विवरणकार-भाष्यः—“यः” “ते” तव चे सोम ! “नपात्”
 न पिबति तस्य दृष्ट्या जन्म ; “प्रणपात्” प्रणिपत्य अदृष्ट्या पातयः । “कुण्डपाय्यः”
 अथ कुण्डाश्चमसाः कुण्डप्रतिष्ठाः तैः पीयते कुण्डपाय्यः । अथवैतानौन्द्र-विशेष-
 खानि । शृङ्गवान् दृषः प्रधानभूतो गोः, तादृश इन्द्रः ; तस्य यः प्रकर्षेण सोमपानं
 कल्पयति कुण्डाकारेणैव सैरितदेष । नि अस्मिन् दध्रे, नि-शब्दो न-शब्दस्यार्थे
 द दृषः ; न अस्मिन् यजमानं दध्रे धारयति इन्द्रः आत्मीयं मनः अनुपस्थाप ?”—इति ।

† ‘रात्रिदैवोदासम्’—इति ख० पु० पाठः ।

१ १ २ २ १ १ १ १ १
अयत्त्रणायतेसुताः । आखण्डारशला । प्रह्यार३४५

३ ४ ५ ३ २ १
साई५ईयि ॥ (२) यस्तेष्टङ्गवृषः । नपा३त् । प्रार३४ ।

५ ४ २ ४ ५ १ २ १ १ २ १
णपात्कुण्डपायियाः । प्रणपात्कुण्डपाया३३याः । निय

२ १ २
स्मा २ ३ यिन्दा । ध्रुवामा २ ३ ४ ५ ना ई ५ ६ः । ई २

५
३ ४ चा (३) ॥ २ * ॥ [१]

२ १ १ १ २ २ १ २
॥ और्ध्वसङ्गनम् ॥ अयन्तइन्द्रसोमः । उवाचायि ।

१ २ २ १ २ २
निपूतोअधिबर्हिष्युवार३होयि । निपूतोअधिबर्हिष्युवार३

२ २ १ २ ३
होयि । आयिदीमस्या । द्रावापा२३४५यिवाई५६ ॥ (१)

१ २ १ २ १ २ १ १ २ २
शाचिगोशाचिपूजन । उवाचायि । अयत्त्रणायतेसुत

१ २ १ २ २ २
उवार३होयि । (वार२) । आखण्डला । प्राह्यार३४५

१ २ २ २ १ २ १
साई५ईयि ॥ (२) यस्तेष्टङ्गवृषोणपात् । उवाचायि । प्रण

२ २ १ २ १
पात्कुण्डपाय्यउवार३होयि । (वार२) । नायस्मिन्दा ।

१ ३ २ १ १ १ २ १ १ २
 आचामा^१२३^३पुना^३६५^३६ः । सुवृत्तिभिर्^२मादनम्भरे^१रुषुवा^२
 १५(३) ॥ ३ * ॥ [२] ५

अथ द्वितीयतृचे, प्रथमा ।

१ २ २ २ १ २ ३ २ १ १ २ २
 आतनइन्द्रक्षुमन्तच्चित्रङ्^२ग्राभंसङ्^२गृभाय ।

१ २ २
 महाहस्तीदक्षिणेन ॥ १ † ॥

हे “इन्द्र!” त्वं “महाहस्ती” महाहस्तवान्, तदानोमेव
 “नः” अस्मदर्थं “क्षुमन्तं” शब्दवन्तं स्तुत्यमित्यर्थः । “चित्रं”
 चायनीयं “ग्राभं” ग्राहकं ग्रहणार्हं वा धनं “दक्षिणेन” हस्तेन
 “तु” क्षिप्रं “आ सङ्गृभाय” आभिसुख्येन सङ्गृहाण ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ २ ३ २ १ १ २ ३ २ २
 विद्वाहित्वातुविकूर्मिन्तुविदेष्णन्तुवीमघम् ।

३ १ २ २
 तुविमात्रमवोभिः ॥ २ ‡ ॥

* क० गा० १ प्र० २ अ० ३ सा० ।

† क० आ० १, २, १, ३ (१ भा० ३७६ पृ०) = ऋ० वे० ६, ५, ३७, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, ५, ३७, २ ।

हे इन्द्र ! “त्वा” त्वां “विद्म हि” जानीमः खलु । कीदृ-
शम् ?—इति, “तुविकूर्मि” बहुकर्माणं, * “तुविदेष्ण”
बहुप्रदेयं, † “तुविमघ” बहुधनं “तुविमात्र” बहुप्रमाणम्,
“अवोभिः” रक्षणेऽर्पितम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ १२ ३ १२ २४ ३ १ २
नहित्वाशूरदेवानममर्त्तासोदित्सन्तम् ।

१ १३ ३ १ २
भीमन्नगांवारयन्ते ॥ ३ ॥ ई ॥

हे “शूर !” “दित्सन्तं” दातुमिच्छन्तं “त्वा” त्वां “देवाः”
“न हि वारयन्ते” न निवारयन्ति खलु ; तथा “मर्त्तासः”
मनुष्या अपि न वारयन्ते “भीमं न गां” भयजनकं दृप्तं वृष्टभं
यदसौ प्रवृत्तमिव, तं यथा वारयितुं न शक्नुवन्ति तद्वत् ॥ ३ ॥ ई

१२२ २१ २ २
॥ आकूपारम् ॥ आतूनइ । द्रक्षुमाशन्ताम् । चि

* ‘तुविकूर्मि’ तुविशब्दो बज्रवाचो, कूर्मिशब्दो मनुष्यवाचो कर्मवाचो वा
इति वि० । ‘तुवि’—इति निघण्टौ बज्रनामसु द्वितीयं पदम् (३, १) । कूर्मि-
शब्दस्तु मनुष्यनामसु कर्मनामसु वा पठितो न दृश्यते ।

† ‘तुविदेष्ण’—देष्णं दानं बज्रदानम्—इति वि० ।

‡ ॥ वे० ६, ५, ३७, ३ ।

॥ ‘आकूपारं’ साम । ‘आकूपाराङ्गिरसी गोधा च आर्षम्’—इति वि० ।

॥ ‘रात्राकूपारम्’—इति ॥ पु० पाठः ।

^{१ २} चङ् ^१ ग्राभ ^{२ १ २} ण्सङ्गुभा ^१ रया । ^१ चिचङ् ^१ ग्राभ ^१ ण्सम् । ^१ गृ । ^१ औ३
^१ होयि । ^१ भा२३४या । ^५ ऐहोयि । ^{२ १ १} महाहस्तीदक्षा२३हो
^{१ २ १} यि । ^{३ २} औहो । ^५ वाहो२३४वा । ^४ णाऽ५यिनोईहायि ॥ (१)
^{१ १ २} विद्वाहित्वातुवि । ^{२ २} कूर्मर्मिम् । ^{१ २} तुविदेष्णन्तुवीमा ^१ रघाम् ।
^{१ १ २} तुविदेष्णन्तु । ^१ वा । ^{२ २} औ३होयि । ^३ मा२३४घाम् । ^५ ऐ
^१ होयि । ^२ तुविमात्रमा२३होयि । ^{१ २ १} औहो । ^{१ २} वाहो२३
^५ ४वा । ^४ वोऽ५भोईहायि ॥ (२) ^५ नदित्वागूर । ^{१ २ २} दा३यि
^१ वाः । ^{१ २ २} नमर्त्तासोदित्वा ^१ रन्ताम् । ^२ नमर्त्तासुः । ^१ दा । ^१ औ
^२ ३होयि । ^३ त्मा२३४न्ताम् । ^५ ऐहोयि । ^{२ १ १} भीमन्नगांवारार
^१ ३होयि । ^{२ १ १} औहो । ^{१ २} वाहो२३४वा । ^५ याऽ५न्तो ^४ ई
^५ हायि (३) ॥ ४ * ॥ [१] ई

अथ तृतीयद्वये, प्रथमा ।

३ १ १ ३ १ ३ १ १ ३ १ २
अभित्वावृषभासुते सुतं सृजामि पीतये ।

३ १ १ ३ १ २
तम्याव्यश्रुहीमदम् ॥ १ * ॥

हे “वृषभ” हे इन्द्र ! “त्वा” त्वां “सुते” सोमसिभिषुते सति
“सुतम्” अभिषुतं सोमं “पीतये” पानाय “अभिसृजामि” ।
“तम्य” तृष्य । “मदं” मदकरं सोमं “व्यश्रुहि” च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १ ३ १ २ ३ २ ३ २ २ ३ १ २
मात्वामूरा अविष्यवीमोपहस्वान आदभन् ।

१ २ ३ १ २
माकीं ब्रह्मदिषं वनः ॥ २ † ॥

हे इन्द्र । “त्वा” त्वां “मूराः” मूर्खा मूढाः, मनुष्याणाम्पुः
“अविष्यवः” पावनकामाः “मा दभन्” मा हिंसन्तु । “उपह-
स्वानः” उपहसनपराय “मा” भवन्तु । “ब्रह्मदिषं” ब्राह्मणानां
हेष्टारं “मा कीं वनः” मा भजेथाः ॥

“ब्रह्मदिषं”-“ब्रह्मदिषः”—इति पाठौ ॥ २ ॥

* ख० आ० २, २, ३ (१ भा० २२८ पृ०) = ख० वे० ६, ३, ४६, ९ ।

† ख० वे० ६, ३, ४६, २ ।

‡ आत्मपरिवारमावाणमिति भावः ।

॥ वनः—यद्यपि वनतिः कृति-कर्मा तथाप्यत्र सम्भजने द्रष्टव्यः ; मा यज्ञेन
सम्भज्याम—इति वि० ।

२१६ सामवेदसंहिता । [१ प्र० २ अ० ७ सू० १, २, ३ ।

अथ तृतीया ।

२ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १ १
इहत्वा गोपरीणसम्महे मन्दन्तुराधसे ।

१ २ ३ १ २ २ २
सरो गौरो यथापिब ॥ ३ * ॥ ७ †

हे इन्द्र ! “त्वा” त्वाम् “इह” अस्मिन् यज्ञे “गोपरीणसं”
गव्येन पयसा सस्मिन् सोमं ‡ “महे” महते “राधसे” धनाय वा
“मन्दन्तु” मनुष्या मादयन्तु । त्वञ्च सोमं “यथा” “गौरः”
मृगः “सरः” § पिबति, तथा “पिब” ॥

“परीणसं”-“परीणमां”—इति पाठो ॥ ३ ॥ ७

२ १ २ २ २ १ २ २ १ १
॥ आर्षभम् ॥ अभित्वा वृषभा सुते । सुतृष्टजो वा ।

२ १ १ २ २ १ २ १ १
मिपीताया रयि । सुतृष्टजामि । पीता रय्यायि । वा

• अ० वे० ६, ३, ४६, ४ । † ‘अथ आर्षभं साम’—इति वि० ।

‡ ‘गोपरीणसम्’—गावः परि समन्तात् नीयन्ते दक्षिणा यस्य स गोपरीणस
इन्द्रः—इति वि० ।

§ राधसे—राधः अन्नं सोमस्य च तस्मिन् सन्निधानभूते सोमे—इति वि० ।

§ ‘सरः सरणं कृत्वा’—इति वि० । “सरः”—इति निघण्टौ उदकनामस्य अष्ट
त्रिंशत्तमं पदम् (१, १२) ।

॥ ‘गौरः यथापिब—तथाच ब्राह्मणे—‘गौरमृगो व अ भञ्जा अरणादाजानं
पिबति’—इति—इति वि० ।

२३३३ । वारया२३४औद्योवा । शुद्धीमदार२३४५म् ॥(१)

मात्वामूराअविष्यवः । मोपहस्त्रोवा । नआदाभा२न् ।

मोपहस्त्रानः । आदार३भान् । मा२३की३म् । ब्रा३

ह्यार३४औद्योवा । द्विषवना२३४५ः ॥(२) इक्ष्वागोपरो

णसम् । महेमन्दोवा । तुराधासा२यि । महेमन्दन्तु ।

राधा२३सायि । सार३रा३ः । गौ२रा२३४औद्योवा ।

यथापिवा२३४५(३) ॥ ५ * ॥ [१] ७

अथ चतुर्थल्लेखे—प्रथमा ।

इदं वसोसुतमन्धः पिवासुपूर्णमुदरम् ।

अनाभयिनूरिमाते ॥ १ * ॥

हे “वसो” वासयितरिन्द्र ! “इदं” पुरोवर्त्तमानं “सुतम्” अभिषुतम् “मन्धः” अन्नं सोमलक्षणं “पिब” । यथा—“उदरं”

* क० गा० १प्र० २ख० ५सा० ।

† ख० गा० १, १, १, १० (१भा० १०४ पृ०) = क० वे० ३, ७, १७, १ ।

“त्वदीयं” जठरं “सुपूर्णम्” अतिशयेन सम्पूर्णं भवति तत्रे-
त्यर्थः । हे “अनाभयिन्” [आ समन्ताद् बिभेति—इत्याभयी;
बिभेतेरौणादिक इति: ; न आभयी अनाभयी तादृश !]
हे इन्द्र ! “ते” तुभ्यं त्वदर्थं “ररिम” उक्तलक्षणं
सोमं दध्मः [रादाने (अदा०, प०) क्वान्दसो (१,२,१०५)
लिट् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

नृभिर्द्धौतः सुतोऽश्वैरव्यावारैः परिपूतः ।

२ ४ ५ ३ २ ४ १ २
अश्वोननिक्तोनदीषु ॥ २ * ॥

“तृभिः” अध्वरस्य नेतृभिः ऋत्विग्भिः “धौतः” तृणाद्य-
पनयनेन शोधितः [यद्वा ; धौतः धूतः आधूतः, अदाभ्यगृहेण
आधूननेन संस्कृतः, तदनन्तरम् “अग्नेः” अश्वभिर्ग्रावभिः करण-
भूतैः “सुतः” अध्वर्युभिष्टुतः ततः “अव्यावारैः” अविमेषः

● ऋ० वे० ५, ७, १७, २।

† ग्रहः=ग्रहोत्तमोमं सोमपानपाचम् । ते च प्रातःसवने उपांशुप्रभृतयः, माध्यन्दिने सवने मरुत्वतोयादयः, तृतीयसवने त्वादित्यादयः । किञ्चित्तरिक्ताः षोडश्यादि-भागविशेषे नियुक्ताश्च सन्ति बहवः षोडशोत्यादयः । तैत्तिरीयानिर्दिष्टाः षोडश्यादिभ्यनामकः ; स च यस्मिन्नौदम्बरे प्रातः संश्रुयते होतुस्तस्मिन् होतृषमसस्या निपाभ्यासञ्ज्ञाश्च पानौघं तस्मिन्निखः सोमलताः प्रविष्ट्याग्नये त्वेत्यादिविभिर्मेन्त्रैः क्रमेण गृह्यन्ते विहितञ्चित् कात्यायनेन “षोडश्यां गृह्यात्यासिच निपाभ्याः प्रातः तस्मिन्लूष्णीं बीजंशून्डभायाग्नये त्वा शायवच्छन्दमिति (य० वा० ८, ४७) प्रतिमन्त्र सपथामः सर्वत्राग्निपेता (१२. ५, ११-१५)”—इति ।

तन्मन्त्रिभिः वासैः “परिपूतः” शोधितः, दशापवित्रस्य नाभि-
पूततया जर्ष्णास्तुकया हि सोमः परिपूयते ; तदुक्तम् भगवता
आपस्तम्बेन—“शुक्लामूर्ष्णास्तुकां यजमानाय प्रयच्छति तां शक्वटे
दशापवित्रस्य नाभिं कुरुते शुक्लञ्च लक्ष्याः पवित्र मोतं भवति”—
इति * । “नदीषु” नदनास्वप्सु † “अश्वीन” अश्वद्वयं
“नित्तः” निर्णित्तः शोधितः ‡ ; यथा अप्सु स्नातो अश्वः
अपगतमलः सन् दीप्तो भवति, एवं वसतीवर्याख्याभिरद्विरभि-
षुतः सोमो दीप्तो भवतीत्यर्थः । ईदृशो यः सोमः “तन्तेयवम्”
—इत्युत्तरया सम्बन्धः ॥

“धीतः”—“धूतः”—इति पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ ३ १ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तन्तेयवम्यथागोभिः स्वादुमकर्मश्रीणन्तः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रत्वास्मिन्सधमादे ॥ ३ ॥ ८ §

“तं” पूर्वोक्तगुणं सोमं हे इन्द्र ! “ते” त्वदर्थं “यवं यथा”
यवमयं सवनीय-पुरोडाशमिव “गोभिः” गवि भवैः क्षीरादिभिः

* स्पष्टञ्चेतत् समलं यजुर्वेदजपनेदि-पंहितायां सप्तमाध्यायचतुष्टये ।

† ‘नदीषु’—अधिकरणभूतासु—इति वि० ।

‡ ‘नित्तः’—स्नातः—इति वि० ।

॥ सू० वे० ५, ७, १७, २ ।

§ ‘अव गारं साम’—इति वि० ।

अपणद्रव्यैः “श्रीणन्तः” मिश्रीकुर्वन्तः “स्वादु” रसवस्त्रिणास्वाद-
नीयम् “अकर्म्म” अकार्म्म * [करोतेर्लुङि “अन्ने घम (१,
४, ८०)”—इति च्चेर्लुक्] । यस्मादेवं तस्मात् हे “इन्द्र!”
“त्वा” त्वां तादृशं सोमं पातुम् “अस्मिन्” वर्त्तमाने “सधमादे”
सधमादने यज्ञे आह्वयामीति शेषः ॥ ३ ॥ ८

१ २ २ २ २ १
॥ गारम् ॥ इदं वसो सुतमन्वा३ण । पिवासुपू३र्णा

७ २२ २ १ २ २ ७ २२ २ १
मुदरौ । हो३वा । पिवासुपू३र्णामुदरौ । हो३वा । आ

२ २ १ २२ १ २ ४ ५ २ २
नाभा३यीन् । ररिमाता । औ३होवा ॥ (१) नृभिर्हो

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
तः सुतो अश्ना३यिरे । अव्यावारै३ः पारिपूतौ । हो३वा ।

१ २ २ २ ७ २ २ २ १ २ २ २ १ २ २ २ २ २
अव्यावारै३ः पारिपूतौ । हो३वा । आश्चोना३नी । तो

२ २ १ २ ४ ५ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
नदीपू । औ३होवा ॥ (२) तन्नेवयं यथा गोभी३रे । स्वा

१ ७ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
दुमका३र्मा श्रीणन्तौ । हो३वा । स्वादुमकर्मा श्रीणन्तौ ।

* ‘यवं यथा गोभिः स्वादुम् अकर्म्म कृतवन्तः । गोभि रिति तृतीया-वञ्चवचनं
चतुर्थी-वञ्चवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । गोभ्यः यवं यथा, गोभ्यः स्वादुमत्पाद्यानयति
तद्वत् तथापि सोमम् अकर्म्म करवाम । श्रीणन्तः प्रीणयन्तः, अण्ववा ००० ।—
इति वि० ।

^१ हो^१वा । ^१ आ^१इन्द्रा^१त्वा^१स्मीन् । ^१ स^१धमा^१दा । ^१ औ^१हो^१

^१ वा । ^१ हो^१ऽप्र^१ई । डा ॥ ६ ॥ [१] ८

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रव्यस्य प्रथमस्याध्यायस्य -

द्वितीयः खण्डः ॥ २ ॥

अथ तृतीय-खण्डे —

प्रथमतृचे, प्रथमा ।

^१ इ^१द^१म् ^१ अ^१नु^१ ^१ अ^१नेना^१नु^१क्रमेण^१ उ^१द्देशानु^१क्रमेणेत्यर्थः ; ^१ “सु^१तम्”

^१ पि^१वा^१त्वा^१ऽअ^१स्य^१गि^१र्वणः ॥ १ ॥

हे “राधानां पते” धनानां स्वामिन् ! “गिर्वणः” गीर्भिः
स्तुतिभिः वननीय ! हे इन्द्र ! “ओजसा” बलेनावहितः त्वम्
“इदम् अनु” अनेनानुक्रमेण उद्देशानुक्रमेणेत्यर्थः ; “सुतम्”
अभिषुतम् “अस्य” इमं सोमं “नु” क्षिप्रं “पिबहि” ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ १ ३ ३ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २

यस्तेअनुस्वधामसत्सुनियच्छतन्वम् ।

१ २

सत्वाममत्तुसोम्य* ॥ २ ॥

हे इन्द्र ! “ते” त्वदर्थं “यः” सोमः “स्वधाम” अन्नम्
 “अनु” सत्यं यावभिः अभिषुतः “असत्” भवेत् [अश्लेर्ल-
 टाडागमः । यदृत्तयोगान्न निघातः (८, १, ६६), आगमस्या-
 नुदातत्वे धातुस्वरः (६, १, १६२)] । “सुते” तस्मिन् सोमे
 “तन्व” ‡ स्वकीयं शरीरं “नियच्छ” प्रेरय “सः” सोमः हे
 “सोम्य” सोमार्हं ¶ ! “त्वा” त्वां “ममत्तु” मादयतु ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २

प्रतेअश्रोतुकुक्ष्योःप्रेन्द्रब्रह्मणाशिरः ।

१ २ १ २ ३ २

प्रवाह्यशूरराधसा ॥ ३ § ॥ ८ ॥

* “सोम्यम्”—इति ऋ-पाठः । † ऋ० वे० ३, ४, १६, ६ ।

‡ “कन्दसुभथा (६, ४, ८६)”—इति सूत्रस्थेन “तन्वादीनां कन्दसि वज्रसम्”
 —इति वार्तिकवचनेनोवङ्गोवैकस्मिपकलं बोध्यम् ।¶ “सोम्य—सोमानां स्वाभिन् पते !”—इति वि० । “सोममर्हति यः (४, ४,
 १२०)” इत्यसौ योऽत्र साययमते सङ्गच्छते ।

§ ऋ० वे० ३, २, १६, ७ ।

॥ ‘अन घतश्चप्रिषधनं साम’—इति वि० ।

हे “इन्द्र !” “सः” सोमः “ते” तव “कुक्ष्योः” कुक्षे रुभयोः
पाश्वर्योः “प्राप्नोतु” प्रकर्षेण व्याप्नोतु [अशू व्याप्ता वित्यस्य
(स्वा०, आ०) लोटि व्यत्ययेन परस्मैपदम् (३, १, ८५) निघातः
(८, १, ७०)] तथा “ब्रह्मणा” स्तोत्रेण सहितः * म सोमः
“शिरः” शरीरम् [अवयविना अवयवो लक्ष्यते] त्वच्छरीरं
प्राप्नोतु । हे “शूर” विक्रान्तेन्द्र ! “राधसा” धनेन निमित्तेन
तव “बाह्व” अपि प्राप्नोतु ॥

“राधसा”—“राधसः”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ८

॥ घृतस्य निधनम् ॥ इदं चानूञ्जो जसा । सुतं
राधा । नाम्पातौ । होवाश्चायि । पिबातुव । स्यगा
यिर्वाणौ । होवाश्चायि । पिबातुवौ । होवाश्चा ।
स्यगायिः । वारुनाश्चाहोवा ॥ (१) यस्ते अनुस्वाश्चा
मसात् । सुतायिनिय । चतानुवमौ । होवाश्चायि ।

* ‘ब्रह्मणा अग्नेन, शिरः ; अथवा ब्रह्मणा चैविद्यलक्षणम् शिरः । ००० ।
बाह्व ००० । व्याप्नोतु ००० । एतदुक्तं भवति समन्तात् मदीयेन यज्ञेन—
इति वि० ।

१ १ १ १२ २ २ १ १२
सत्वामम । तुसोमायौ । होवाश्हायि । सत्वाममौ ।

२ १ १२ १ ५२ २ १२
होवाश्हा । तुसो । मा१र्या२३४औहोवा ॥ (२) प्रतेअ

२ १ १ १ १ १२ २
श्रोत्र३कुशियोः । प्रायिन्द्रव्र । ह्यणाशायिरौ । होवा

२ १ २ १ २ २ १
श्हायि । प्रवाहृगृ । रराधामौ । होवाश्हायि । प्र

१ २२ २ १ १२ ३ ५२ २
वाहृगौ । होवाश्हा । ररा । धा१सा२३४औहोवा ।

१ १ ३ १ १ १ १

घृतश्रुता२३४पुः (३) ॥ ७ * ॥ [१] ८

अथ द्वितीय-वृत्ते, प्रथमा ।

१३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १२ १२

आत्वितानिषीदतेन्द्रमभिप्रगायत ।

१ २ ३ १ २

सखायस्तोमवाहसः ॥ १ ङ ॥

“तु”[-शब्दः चिप्रार्थी निपातः, दाभ्या माङ्भ्याम् एतमिति
शब्दोऽभ्यसनीयः] । हे “सखायः” ऋत्विजः ! चिप्रम् अस्मिन्

कर्मणि आगच्छत आगच्छत [आदरार्थोऽभ्यासः] । आगत्य च “निषीदत” उपविशत । उपविश्य च “इन्द्रम्” “अभिप्रगा-
यत” सर्वतः प्रकर्षणं स्तुत । कीदृशाः सखायः ? “स्तोमवा-
हसः” विवृत्यच्चदगादिस्तोमानस्मिन् कर्मणि वहन्ति प्रापयन्ती-
ति ॥ [“अर्त्ति-स्तु-सु-हु-सृ-ष्ट-क्षि-क्षु-भा-या-वा-पदि-यक्षि-नीभ्यो
मन् (३०, १, १३७)” —इति स्तौतेर्मन्-प्रत्ययान्तः स्तोमशब्दो
निवादाद्युदात्तः (६, १, १८७) । स्तोमं वहन्तीति स्तोमवाहसः
“वहि-हा-धाज्-हभ्यश्छन्दसि”-इत्यसुन् प्रत्ययः, तत्र णिदित्य-
नुवृत्तेः “अत उपधायाः (७, २, ११६)”-इत्युपधाया वृद्धिः ;
कृदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वे (६, २, १३८) प्राप्ते “गतिकारकयोरपि
पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वञ्च (३०, ४, २२६)”-इत्यौणादिकसूत्रात्
समासआद्युदात्तः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ १ ३ १ २ २ ३ १ २
पुद्गतमस्युद्गणामीशानं वार्याणाम् ।

२ ३ १ ३ १ २ ३ १
इन्द्रोऽसोमेसचासुते ॥ २ * ॥

सखायोऽभिप्रगायतेति पदद्वयमत्रानुवर्त्तते । हे “सखायः”
ऋत्विजः ! “सचा” यूयं सर्वे सह यदा सचा परस्परसमवायेन

“सुते” अभिषुते सोमे प्रवृत्ते सति “इन्द्रम्” अभिप्रगायत ।
 कीदृशमिन्द्रम् ? “पुरुतमं” पुरुन् बहुन् शत्रून् तामयति
 ग्लापयतीति पुरुतमः [तसु ग्लानौ (दि०, प०)—इति धातोर्ग्ल-
 नात् पचाद्यचि चित्वादन्तोदात्ते ऽपि (६, १, १६३) कदुत्तरपद-
 प्रकृतिस्वरं (६, २, १३) बाधित्वा “परादिश्चन्द्रसि बहुलम्”
 (६, २, १८८)—इत्युत्तरपदाद्यदात्तत्वम्], “पुरुणां” बज्रनां
 “वार्याणां” वरणीयानां धनानाम्* “ईशानं” स्वामिनम् ॥ २ ॥

अथ छतौया ।

१ १ ० २ ३ १ २ ३ २ ० १ २

सघनोयोगआभुवसरायिसपुरन्ध्या ।

२ ३ १ २ ३ १ २ २ २

गमद्वाजेभिरासनः ॥ ३ ॥ १० ॥

घ-शब्दोऽवधारणार्थोनिपातः, § सर्वैस्तच्छब्दैः सम्बध्यते ।
 “स घ” स एवेन्द्रः पूर्वमन्त्रोक्तगुणविशिष्टः “मः” अस्माकं ॥
 “योगे” पूर्वमप्राप्तपुरुषार्थस्य सम्बन्धे** “आ भुवत्” आभिमुख्येन

* अनेन सूत्रेण तु सकृद्व्यवहारोऽपि विकल्प्यते, परमय पठितवार्त्तिक-
 लोकेनैवान्यथापि सर्वत्र दृष्टानुविधायः कल्प्यन्ते । तथाच—“परादिश्च परान्तश्च
 पूर्वान्तश्चापि दृश्यते । पूर्वादयश्च दृश्यन्ते अत्ययो बज्रतन्त्रः”—इति ।

† ‘वार्याणाम् उदकानाम्’—इति वि० ।

‡ अ० वे० १, १, १८, ३ ।

¶ ‘अत्र देवातिथं साम’—इति वि० ।

§ ‘घ—इति पदपूर्वाणः’—इति वि० ।

॥ ‘नः’—अस्माभ्यम्—इति वि० ।

** ‘योगे’—यत्र देवता युज्यन्ते असौ योगः, यज्ञः—इति वि० ।

भवतु पुनर्षार्थं साधयत्वित्यर्थः [भवते राशीर्लिङि परतो
 “लिङ्ग्राशिष्यङ् (३, १, ८६)”—इत्यङ् प्रत्ययः, तस्य ङित्वेन
 गुणाभावात् उवडादेशः], स एव “राये” धनार्थम् “आभु-
 वत्” आभवतु ; स एव “पुरम्या” योषित्या * भवत् [यद्वा,
 बहुविधायां बुडावाभवत् “पुरन्विर्बुधोः”—इति यास्कः (६,
 १३)] स एव “वाजेभिः” देवैः अत्रैः सह “नः” अस्मान् †
 “आगमत्” आगच्छतु [गमेर्लोट् तिप्, “इतयलोपः परस्मै-
 पदेषु (३, ४, ८७)”—इति इकार-लोपः, “बहुलं कन्दसि
 (२, ४, ७३)”—इति शपोलुक्, “लेटोडाटौ (३, ४, ८४)”—
 इत्यडागमः, आगमाअनुदात्ताः इति तस्यानुदात्तत्वे धातु-
 स्वरएव (६, १, १६२) शिष्यते ॥ ३ ॥ १०

॥ दे॒वातिथ॑म॒ ॥ आ॒ढ॒३४ । ए॒ता॒नि । षी॒दाई॒ता ।
 इन्द्र॑मभा॒यि । प्र॒गा॒य॒ता । सा॒खा॒य॒स्तो॒म । वा । औ
 ३॒हो । व॒श॒र॒३४२३४॒साः । ह॒या॒यि । सा॒खा॒यः॒स्तो॒म ।
 वा । औ॒३॒हो । ऊ॒म्मा॒२३ । द्वा॒३४५॒सो॒द्वा॒यि ॥ (१)

* ‘पुरम्या—रण्या’—इति वि० । “पुरन्विर्बुधोक्तकः पुरन्विर्भगः पुरस्तात्तस्या-
 न्वादेश इत्येक मित्र इत्यपरं स बहुवचनतः पुराण दारयितृत्वमो वचन इत्यपरम्”—
 इति मित्र० मै० ६, ११ ।

† ‘नः’—अस्मान्—इति वि० ।

^{३ १} पुरु३४ । ^{५ ५} तम्पु । ^{१११ १} हृद्दणाम् । ^{२ ११} ईशानंवा । ^१ रियाणा
^२ म् । ^{१ ११ ११ १} इन्द्र० सोमेस । ^{१ २} चा । ^१ औ३हो । ^{१ २} ववा २ ह २
^५ ३४तायि । ^{२ १} हयायि । ^{२ ११ ११ १} इन्द्र० सोमेस । ^{२ १} चा । ^{२ १} औ३हो ।
^१ ऊम्मा २३ । ^२ हृ३४५तो३हायि ॥ (२) ^५ सघा ३४ । ^{२ २} नोयोगे ।
^{५ २} आभू३वात् । ^५ सरायेसाः । ^{२ १} पुरन्धिया । ^{२ ११ ५ १} गमद्वाजेभिः ।
^२ आ । ^२ औ३हो । ^{१ ३} ववा २ सा २३४नाः । ^५ हयायि । ^{२ १} गम
^{१ २ २ १} द्वाजेभिः । ^२ आ । ^१ औ३हो । ^२ ऊम्मा २३ । ^२ सा ३४५
^५ नो३हायि (३) ॥ ८ * ॥ [१] १०

अथ तृतीयदृचे, प्रथमा ।

^{१ २} योगेयोगेतवस्तरंवाजेवाजेह्वामहे ।
^{२ १ २ ३ १ २}

^{१ २ ३ १ २ ३ १ २}
 सखायइन्द्रमूतये ॥ १ १ ॥

• ऊ० गा० १ प्र० २ अ० ८ सा० ।

† ऊ० आ० १, २, २, ८ (१ भा० ३७१ पृ०) = व० वे० ११, १४ = ऊ० वे० १, १, २८, २ ।

“प्रत्नस्य” पुरातनस्य “ओक्सः” स्थानस्य स्वर्गरूपस्य * सकाशात् “तुवि प्रति” बह्वन् यजमानान् प्रतिगन्तारम् । [अथ प्रतिशब्दो भौमसेनो भोमइतिवत् प्रतिगन्तृ-शब्दं लक्षयित्वा तद्वारा तदर्थं लक्षयति, अतः प्रति प्रतिनिधि-प्रतिदानयोरिति-वत् सत्ववचनत्वेनानिपातत्वादनवायत्वे “पूरणगुणेत्यादिना (२, २, ११) न षष्ठी-समास-निषेधः] । “नर” पुरुष-मिन्द्रम् “अनुहुवे” अनुक्रमेण कर्मस्वाह्वयामि [द्वेओलिटि “बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)”—इति पूर्ववत् । सम्प्रसारण-पर-पूर्वत्वे द्विवचन-प्रकरणे “छन्दसि वा (६, १, १ वा०)”—इति वक्तव्यमिति द्विवचनाभावः । “यद्वृत्तयोगादनिघातः (८, १, ६६)] । “यं” “ते” त्वामिन्द्रं “पिता” अस्मदीयो जनकः “पूर्व” पुरा स्वकीयानुष्ठानकाले “हुवे” आहूतवान्, तमाह्वयामीति पूर्वचान्वयः ‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ १
आघागमद्यदिवत्सहस्रिणीभिरुतिभिः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
वाजेभिरुपनोहवम् ॥ ३ वा ॥ ११ §

* ‘ओक्सः—गृहस्य, उदकस्य, बलस्याग्रस्य वा’—इति वि० ।

† ‘तुविप्रति—तुविपुर्विति बहुनाम, बहुप्रतिम्, प्रतिशब्देनाथ शचवो गृह्यन्ते, बहुशच मिन्द्रम्’—इति वि० ।

‡ ‘यं ते पूर्व पिता ऊवे—अन्तराग्रनद्याद्यम् हे मदीयान्तराग्रन् ! तम् इन्द्रं ऊवे, यं ते तव पूर्वतने काले तदीयः पिता आहूयते ।’—इति वि० ।

§ अ० वे० १, १, २८, ४ ।

§ ‘अथ सोमं धं साम’—इति वि० ।

साहजिणी । भिरु॒र॒तायि॑भायिः । ह॒वायि॑ । औ॒र॒हो

र॒३४वा॑ । वाजे॑भि॒रु । प॒नो॒र॒हावाम् । ह॒वायि॑ । औ

र॒हो॒र॒३४वा॑ । वाजे॑भि॒रु । ह॒वा॒र॒यि । औ॒र॒हो॒र॒३४

वा॒५५६ । प॒नो॒र॒ह॒वा॒र॒३४पु॑म् (३) ॥ ८ ॥ [१] ११

अथ चतुर्थल्ले, प्रथमा ।

इन्द्र॑सुतेषु॒सोमे॑षु॒क्रतु॑म्पुनी॒ष॒उ॒क्त्य॑म् ।

विदे॑वृ॒धस्य॑द॒क्षस्य॑महा॒हिषः॑ ॥ १० ॥

“सोमेषु” “सुतेषु” अभिषुतेषु सत्सु हे “इन्द्र !” त्वं तान् पोत्वा “क्रतु” कर्मणां कर्त्तारम् “उक्त्यम्” स्तोतारश्च “पुनीषे” शोधयामि । यदा सोमेष्वभिषुतेषु उक्त्याख्यं “क्रतु” यागं तैः सोमैः पुनीषे यजमानैः पूतं कारयामि । किमर्थम् ? “वृधस्य” वर्षकस्य “दक्षस्य” बलस्य “विदे” लाभाय “सः” तादृशस्त्वं “महान्” “हि” खलु ; अतएवं कर्त्तुं शक्ताषीत्यर्थः ॥

“इन्द्रसुतेषु”-“इन्द्रसुतेषु”—इति, “पुनीषे”-“पुनीते”—इति, “दक्षस्यमहाहिषः”—“दक्षसोमहान्हिषः”—इति च पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ ४

३ २ ३

१ २ ३ २

सप्रथमेव्योमनिदेवानां सदनेवृधः ।

३ १ ३ १ २ ३ ४ १ २ ३ ५

सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सजित् ॥ २* ॥

४ “सः” इन्द्रः “प्रथमे” प्रथिते विस्तीर्णे मुख्ये वा †
“व्योमनि” विशेषेण रक्षके च “देवानां” “सदने” सीदन्त्यस्मि-
न्निति सदनं स्थानं स्वर्गाख्यं तत्र ‡ स्थितः सन् “वृधः” यज-
मानानां वर्द्धयिता च भवति । तथा “सुपारः” सुष्ठु पारयिता
प्रारब्धस्य सम्यक् परिसमापयिता ¶ “सुश्रवस्तमः” अतिशयेन
शोभनं श्रवोऽन्नं यशोवा यस्य स तथोक्तः, “समप्सजित्” सम्यक्
अप्सूदकेषु प्राप्येषु सक्तु यत् तद्विघातनो वृत्रादेर्जेता ; यद्वा,
आप इत्यन्तरिक्षनाम (निघ० १, ३, ८) अन्तरिक्षे वर्त्तमा-
नानामसुराणां जेता § तमु हुवे इत्युत्तरत्र सम्बन्धः ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ६, १, ७, २ ।

† ‘प्रथमे ऋषे’—इति वि० ।

‡ ‘देवानां सदने स्थाने यज्ञे’—इति वि० ।

¶ ‘सुश्रेण पार्यते यष्टु’ यः सः सुपारः—इति वि० ।

§ ‘समप्सजित्—सङ्ग्रामेषु जेता’—इति वि० । “समप्सु”—इति सङ्ग्राम-
नामसु निघण्टौ दृश्यते (२, १७, २९) तदेव पाठभेदान् समप्सु—इत्येवात्र विवरण-
लक्षणाः ।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
तमुद्भवे वाजसातय इन्द्रभराय शुष्मिणम् ।

१ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २
भवानः सुम्ने अन्तमः सस्वावृधे ॥ ३* ॥ १२ +

“तमु” पूर्वोक्तगुणमेव “शुष्मिणं” बलवन्तम् “इन्द्रं” वाज-
सातये’ बलानां मत्तानां वा सातिर्लाभो यस्मिन् तादृशाय
“भराय” सङ्ग्रामाय ; यद्वा, [धियन्ते तस्मिन् हवींषीति भरो
यज्ञः, प्रायेण सङ्ग्रामनामानि यज्ञनामत्वेन च दृश्यन्ते] भराय
यज्ञार्थं “हुवे” आह्वयामि । हे इन्द्र ! त्वं “सुम्ने” सुखे धने
वा लिप्सिते सति “नः” अस्माकम् “अन्तमः” अन्तिकतमः
सन्निकृष्टतमो भव [तमेतादृशेति अन्तिकशब्दस्य तादि लोपः] ;
“वृधे” वर्धनार्थञ्च “सस्वा” समानख्यानो मित्रभूतो भव ॥

“तमुद्भवे” — “तमुद्भे — इति पाठौ ॥ ३ ॥ १२

१ २ २ १ १ १ १ १
॥ कौत्सम् ॥ इन्द्रसुतेषु सोमेषू । क्रतुरेम्पुनायि । ष

१ २ २ १ १ १ २ १
उक्थियाम् । विदेवाह्वारि । स्यदक्षस्या । महाह्वा

१ २ २ २ २ १
यिषारि । महाह्वारिषारि ३४३ः ॥ (१) सप्रथमे वियोमा

नी० देवा०ना०सा० दनवृधाः० सुपाराःसु०२० अ
वक्षमाः० समसूजो०२०त्० समा०२०सुजो०३०४०३०त्॥२॥
तमु०ज्जवेवाजसातायायि० इन्द्रा०२०भरा० यशु०३०क्रिणाम्०
भवानाः०२० द्वा०२० स्ने०अ०न्त०माः० सखा०वा०र्द्धा०२०रयि० स
खा०वा०र्द्धा०२०रयि० सखा०२०३०वृ०धा०३०४०३०रयि० ओ०२०३०४०५०६०॥

ਭਾ(੩) ॥ ੧੦ * ॥ [੧]

॥ उद्धृषीयम् ॥ इन्द्रसुतेषु सोमेषा । क्रतुम्युनीष उक्त्वा
रश्याम् । विदारहो शयि । वारश्वा । स्यदाश्वा
स्या । महाश्वा रश्वा यिषाः । माहाश्वा । उप ।
हाश्वा यिषोश्वा यि ॥ (१) सप्रथमे व्योमनिया । देवाना
सदने वारश्वाः । सुपाश्वा । राश्वा । अवाश्वा
हमाः । समष्ट्वा रश्वा जीत् । सामाश्वा । उप । ण्व

“जर्जः” बलस्य “नपातं” [नपादित्यपत्यनाम (निघ० २, २, १३)] पुत्रं “प्रियम्” अस्माकम् “चेतिष्ठम्” अति-
शयेन ज्ञातारं प्रज्ञापकं वा “अरति” गन्तारं स्वामिनं वा.
“स्वध्वरं” शोभन यज्ञं “विश्वस्य” सर्वस्य यजमानस्य “दूतम्”
“अमृतं” नित्यम् “अग्निम्” “एना” एतेन “नमसा” स्तोत्रेण
हे ऋत्विग्यजमानाः ! ‘वः’ युष्मदर्थम् “आहुवे” आह्वयामि ॥१॥

अथ द्वितीया ।

१९ ३२ ३१९ ३ १२ ३क २२
सयोजते अरुषा विश्वभोजसा सदुद्रवत्स्वाहुतः ।

३१ २ ३२ ३१३ १२ ३२७ ३ १२
सुब्रह्मायज्ञः सुशमीव सूनान्देवराधोजनानाम् ॥२॥ १३†

“सः” अग्निः “अरुषा” आरोचमानो “विश्वभोजसां”
विश्वस्य पालयितारा वश्वौ “योजते” स्वकीये रथे “युनक्तु”
[यदा, “विश्वभोजसा” विश्वस्य रक्षकेण “अरुषा” आरोचमा-
नेन तेजसा “योजते” अयुज्यत] । तदनन्तरं यः अग्निः
“स्वाहुतः” स्तोत्रभिः सुष्ठु आहुतः सन् “दुद्रवत्” आनेतुं देवान्
प्रति भृशं द्रवतु गच्छतु । कीदृशः ? सुब्रह्मा शोभनस्तुतिकः
शोभनाज्ञोवा “यज्ञः” यद्व्यः “सुशमी” शोभनकर्मा च भवति ;
ततः “वसूनां” वासकानां “जनानां” यजमानानां सम्बन्धि
“राधः” हविलक्ष्णं धनं “देव” द्यातमान मग्निमिति गच्छ-
त्विति शेषः ॥ २ ॥ १३

॥ वारवन्तीयम् ॥ ^{१ २ २ २ २} एनावोअ । ^{२ १ १} औहोहायि । आ

^{१ २ ५} यिन्नामार३४सा । ^{२ २ २ २ २ १ ५} ऊर्ज्जोनिपातमाऊवो२३४हायि । ^१ प्रिय

^२ अतिष्ठमरति सुवध्वा३४ । ^१ औहोवा । ^{२ ४ ४ २ ५ १ २ ५} इह्वा२३४हायि ।

^{१ २ ५} उऊवा२३४राम् । ^{१ १ २ १ ० २} विश्वस्य । ^{३ ४ ४ २ ५} दूतममा३४ । ^{५ २} औहोवा ।

^{१ २ ५} इह्वा२३४हायि । ^{३ ४ २} औहो३१२३४ । ^{५ २} ताम् । ^{५ २} एहियाई

^५ हा ॥ (१) ^{२ २ २ १ १} विश्वस्यदू औहोहायि । ^{२ ५} तामामार३४र्ताम् ।

^{२ १ ५} सयोजार३४हा । ^{१ २ २ २ २} तेअरूपाविश्वभोजा३४ । ^{३ ४ ४ २ ५} औहोवा ।

^{१ २ ५} इह्वा२३४हायि । ^{१ २ ५} उऊवार३४सा । ^{२ १ २ १ ० २ २} सदुद्र । ^{१ ० २ २} वात्सुवाऊ

^{३ ४ ४ २ ५ १ २ ५} ३४ । ^{३ ४ २} औहोवा । ^५ इह्वा२३४हायि । ^{३ ४ २} औहो३१२३४ । ^५ ताः ।

^{२ ५} एहियाईहा ॥ (२) ^{१ २ २ १ २} समुद्रवा औहोहायि । ^{२ ५} स्वाह्वा२३४ताः ।

^{१ १ ५} सुब्राह्मा२३४हायि । ^{१ २ २} यज्ञःसुशमीवसू३४ । ^{३ ४ ४ २ ५} औहोवा ।

^{१ २ ५} इह्वा२३४हायि । ^{२ ३ ५} उऊवार३४नाम् । ^{२ २ १ २ २} देवरा । ^१ धोज

ना३४ । औहोवा । इद्वा२३४हायि । औहो३१२३४ ।

नाम् । एहियाईचा(३) ॥ ८ * ॥ [१]

॥ महावामदेव्यम्† ॥ आऽपुयिना । वोआ३ग्ना३यिन्न

मसा । ऊ । जोनपातमाऊवेप्रियच्चेतिष्ठमरति० सुवध्व ।

राम् । औ२३होहायि । विश्वार३स्यदू । तमौहो३ ।

ऊम्मा२ । माऽरर्त्ता३५हायि ॥ (१) वाऽपुयिश्च । स्यदू३ता

हममृताम् । साः । योजनेअरुषाविश्वभोज । सा ।

औ३होहायि । सदू२३द्रवात् । सुवौहो३ । ऊम्मा२ ।

ऋऽतो३५हायि ॥ (२) सापुऽदु । द्रवा३त्सू३वाऊताः ।

ख । ब्रह्मायज्ञःसुशमीवसू । नाम् । औ२३होहायि ।

देवा२३०राधाः । जनौहो३ । ऊम्मा२ । नाऽ२मौ३५

हायि ॥ ११ ‡ ॥ [२]

^{१ २ २} ॥ अ॒ध॒य॒म् ॥ ^१ ए॒ना॒वो॒ आ॒र॒ग्नि॒म् । नम॒सो॒वा । ऊ॒ज॒र्जी
^{२ १} न॒पा । ^{२ ३ २ २ १} त॒मा॒ज्ज॒वा॒यि । ^{२ १ २ २ १} प्रि॒य॒च्चे॒ति॒ष्ठ॒म॒र॒ति॒स्त्व॒ध्व॒रं॒वि॒श्व
^{२ २ १} स्त॒दू॒त॒म् । ^२ आ॒र॒३ । ^{१ २} मृ॒ता॒उ॒वा । ^१ अ॒धि॒या॒र ॥ (१) वि
^१ श्व॒स्य॒दू॒र॒त॒म् । ^{२ १ २ २ १} अ॒मृ॒तो॒वा । ^{२ २ २ २ १} स॒यो॒ज॒ते । अ॒रू॒षा॒वा॒यि ।
^{२ २ २ १} श्व॒भो॒ज॒सा॒स॒न्दू॒द्र॒व॒त्सु । ^२ आ॒र॒३ । ^{१ २} ऊ॒ता॒उ॒वा । ^{१ २} अ॒धि॒या
^१ र ॥ (१) ^२ स॒दु॒द्र॒वा॒र॒त्सु । ^{२ १ २ २ १} आ॒ज्ज॒तो॒वा । ^२ सु॒ब्र॒ह्मा॒या । ज्ञः
^{२ २ १} सु॒श्र॒मा॒यि । ^{२ २ २ २ १} व॒सू॒ना॒न्दे॒व॒रा॒धो॒ज । ^२ ना॒र॒३ । ना॒उ॒वा ।
^{१ २} अ॒धि॒या॒र ॥ १४ * ॥ [३] १३

अथ द्वितीय-प्रगाथे—

प्रथमा ।

^{१ २} प्र॒त्यु॒द॒र्श्या॒य॒त्यु॒ऽऽ॒च्छ॒न्ती॒दु॒हि॒ता॒दि॒वः ।
^{१ २ ३} अ॒पो॒म॒हो॒वृ॒ण॒ते॒च॒क्षु॒षा॒त॒मो॒ज्यो॒ति॒ष्कृ॒णो॒ति॒स्र॒न॒री ॥ १ † ॥

० क० भा० २१ प्र० १ अ० १४ सा० ।

† क० भा० ४, १, १, १ (१ भा० ६११ प०) = ऋ० वे० ५, ६, १, १ ।

“भाष्यंती” आगच्छती “उच्छन्ती” तमांसि विवासयन्ती
वर्जयन्ती “दिवः” द्युलोकस्य सूर्यस्य वा “दुहिता” पुत्री, एव-
ञ्छूता उषाः “प्रति अदर्शि” सर्वैः प्रति दृश्यते ; “उ”—इति
पूरणः ; सैषा “मही” महत् “तमः” नैशमन्त्रकारं “चक्षुषा”
दर्शनेन “अप उ’ [—इति निपातद्वय समुदायः अपेत्यस्यार्थे]
“वृणुते” निवारयति । एवं कृत्वा “सुनरी” जनानां सुष्ठु
नैत्री उषाः “ज्योतिः” प्रकाशं “कृणोति” करोति ॥

“वृणुतेचक्षुषा”—“व्ययतिचक्षुषे”—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२४१२ ३२३१२ ३१२ २२ ३२

उदुस्त्रियाः सृजते सूर्यस्सचा उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।

१ २२३२ ३१२ ३२३ १ २

तवेदुषोव्युषिर्द्वयस्यचसम्भक्तेनगमेमहि ॥ २ * ॥ १४ †

“सूर्यः” सर्वस्य प्रेरकआदित्यः “उस्त्रियाः” रश्मीन् “सचा”
सह युगपदेव “उत्सृज्यते” उद्गमयति । तथा “उद्यत्” उद्ग-
च्छत् प्रादुर्भवन् “नक्षत्रं” नभसि दृश्यमानं ग्रहनक्षत्रादिकम्
“अर्चिवत्” दीप्तिमत् करोति ; [“सौरेण तेजसा हि नक्तं
चन्द्रप्रभृदृषी नक्षत्राणि मासन्ते”, “सुषुम्नः सूर्यरश्मिखन्दमा
गन्धर्वः”—इति हि निगमान्तरम् । एवञ्च सति हे “उषः”

* ऋ० वे० ४, ६, १, २ । † त्रयोदशसूक्ते यज्ञामवासानि इहापितज्ञाभान्वेव ।

उषोदेवते ! “तव” “सूर्यस्य” च “व्यधि” विवासने प्रकाशने सति
 “भक्तेन” अन्नेन “सङ्गमेमहि” वयं गच्छेमहि । “इत्”-शब्दः

‘पूर्वकः ॥ २ ॥ १४

॥ वारवन्तीयम् ॥ प्रत्युवदा^२ औ^२ हो^१ दायि^१ । शी^३ आ^३ या^३ २३४
 तायि^५ । उ^२ च्छन्ती^२ दु^२ हिता^२ दायि^२ वो^२ २३४ दायि^५ । अ^१ पो^२ म^२ हो^२
 मृ^२ णुते^२ च^२ क्षु^२ षा^२ ता^२ ३४ । औ^{३४} हो^४ वा^५ । इ^{१२} द्वा^५ २३४ दायि^२ । उ^२ ऊ^२
 वा^३ २३४ मा^५ । ज्यो^{२४} ति^१ ष्कृ^१ । णो^१ ति^१ सू^१ ना^२ ३४ । औ^{३४} हो^५ वा^५ ।
 इ^{१३} द्वा^५ २३४ दायि^५ । औ^{३४} हो^२ ३१ २ ३४ । रा^५ यि^२ । ए^२ द्धि^२ या^२ ई^२
 द्वा^५ ॥ (१) ज्यो^{२४} ति^२ ष्कृ^२ णो^२ औ^२ हो^२ दायि^२ । ता^३ यि^५ सू^५ ना^५ २३४ रा^५
 यि^{२१} । उ^५ दू^{१२} स्त्री^२ २३४ द्वा^२ । या^{३४} ः ष्ज^२ ते^२ सू^२ रि^२ यः^२ सा^{३४} ३४ । औ^{३४}
 हो^{४२} वा^५ । इ^{१३} द्वा^५ २३४ दायि^५ । उ^२ ऊ^२ वा^२ २३४ द्वा^२ । उ^{२१} द्य^२ न्न^२ ।
 क्षा^{१०} त्र^२ म^{३४} र्चा^५ ३४ । औ^{१२} हो^५ वा^२ । इ^{३४} द्वा^२ २३४ दायि^५ । औ^{३४} हो^२ ३
 १ २ ३४ । वा^५ त् । ए^२ द्धि^२ या^२ ई^२ द्वा^२ ॥ (२) उ^२ द्य^२ न्न^२ क्षा^२ औ^२ हो^२ द्वा^२

यि। त्रामर्शा२३४यिवात्। तवेदूर३४हायि। षोक्वि
 षिसूरियस्या३४। औहोवा। इह्वा२३४हायि। उऊ
 वार३४चा। सम्भक्ते। नागमेमा३४। औहोवा। इ
 द्वा२३४हायि। औहो ३१२३४। हायि। एहिया६
 हा(३) ॥ ८ * ॥ [१]

॥ वामदेव्यम् ॥ प्राऽप्युत्। अदा३र्शा३आयतायि। ज।
 ऋन्तीदुहितादिवोअपोमहोवृणुतेचक्षुषात्। मा। औ३
 होहायि। ज्योता२३यिष्कुणो। तिसौहो३। ऊम्मा
 २। नाऽररो३पुहायि ॥ (१) ज्योऽपुतिः। कृणो३ता३यि
 सूनरायि। जत्। उस्त्रियाःहजतेसूरियस्साचा। औ
 र्होहायि। उद्या२३न्नमा। त्रमौहो३। ऊम्मा२।
 चाऽरयिवो३पुहायि ॥ (२) ऊऽपुद्यत्। नक्षा३त्रा३मर्द्धिवात्।

ता। वेङ्गषोवियुषिसूरियस्य। चा। श्रीहोदायि।

सम्भारश्क्तना । गमौहोश् । ऊम्भार । माऽरहोश् ।

२.
द्वयि(४) ॥ १२ * ॥ [२]

॥ शुध्यम् ॥ ^१प्रत्युवदा^२रिं^१ । ^२आयतो^१वा । ^{२१}उच्छ

१२ १ २२२ २१ २२ १२ २२ १ १२१ १२ १२

नीदू । हितादिवाः । अपोमहीब्रणुतेचक्षुषातमोज्यो

तिष्कृ० ११ । स २३ । नराडवा । अधिया २ ॥ (१)

१२ २ १ २१ २१ २ २ २२
ज्योतिष्क णो ऽस्ति । सूनरोवां । उदुस्त्रियाः । हजते

स । रियः सचाउद्यन्नक्षत्रम् । आ२३ । विवाउवा ।

१२ अध्यायः ॥ उद्यन्नक्षत्रम् । अर्चिवोवा । तवेदुषो ।

२३२१ १ १ २४ १ १
वियुषिसू । रियस्यचसभक्तनग । मारइयि । महाउ

१२
वा। अधियार(३) ॥ १५ † ॥ [३] १४

अथ तृतीये प्रनाथे—

प्रथमा ।

३१ २ ४ १२ ३१ १

इमाउवान्दिविष्टयउस्माहवन्तअश्विना ।

३१ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १२ २२
अयंवामङ्गेवसेशचीवस्वविशंविशं हि गच्छथः ॥ १ * ॥

“इमाः” “दिविष्टयः” दिवमिच्छन्त्यः प्रजा ऋत्विजोऽपि
“उ”—इति चार्थे ; हे “अश्विना !” “उस्मा” वासकी उस्मो वा
“हवन्ते” आह्वयन्ति “अयं” स्तोतापि हे “शचीवसो” कर्मधन !
“वा” युवाम् “अवसे” अस्मद्रेक्षणाय युवयोस्तर्पणाय वा “अह्वे”
आह्वयामि । किमर्थम् ? एवं प्रजा अपि, अयमपीत्यादरोक्ति-
रिति “विशं विशं हि गच्छथः” सर्वाः स्तुतिकर्त्रीः प्रजाः प्रति
युवां गच्छतः खलु, तस्मादेवमुच्यत इति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३२ ३ १ २ ३१ २ ३१ २ ३१ २

युवच्चिन्तन्दद्युर्भीजनन्नराचोदेथाः सूनृतावते ।

३ १७ ३ १२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २२
अर्वाग्रथः समनसानियच्छतम्पिवतः सोम्यम्नधुः ॥ २ * ॥ १५ ॥

* अ० आ० ४, १, १, २ (१मा० ६१३प०) = अ० वे० ५, ५, २१, १ ।

† अ० वे० ५, ५, २१, २ ।

‡ त्रयोदश-चतुर्दशस्तथोर्यत्रामानि सामानि

इहापि तन्नामानि ।

हे “न-रा” नेतारावन्धिनो ! “युवं” युवां “चित्रः” चायनीयं
 “भोजनं” धनं “ददधुः” धारयेथे, तद्धनं “सूनुतावते” स्तुति-
 मते स्तावते “चोदेथां” प्रेरयतम्, * तदर्थं “समनसा” समान-
 मनस्वी सन्तो “रथं” युवयोः सम्बन्धिनम् “अर्वाग्” अस्मदभि-
 मुखं “नियञ्क्तं” नियमतम्, तथा कृत्वा “सोम्य” सोमसम्ब-
 न्धिनं “मधु” मधुरसञ्च † “पिबतम्” ॥ २ ॥ १५

१२ २ २ १ १
 ॥ वारवन्तीयम् ॥ इमाउवाऔहोहायि । दायिविष्टार
 ५ २ २ १ ५ १ १ २
 ३४याः । उस्माद्धवन्तेअश्वायिनो२३४हायि । अयंवामङ्गे
 २ २ २ ३२ ४२ ५ १३ ५ २
 अवशेशचोवा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उऊ
 ३ ५ २ १ २ १ ० १ ३२ ४२ ५
 वा२३४सू । विशंवि । शाद्दिगच्छा३४ । औहोवा ।
 १ २ ५ ३२ १ ४२ ५
 इहा२३४हायि । औहो३१२३४ । थाः । एहियाईहा ॥ (१)
 २ २ २ १ १ २ ५ १ २
 विशंविशाऔहोहायि । हायिगच्छा२३४थाः । युवाच्चा

● ‘चोदेथां सूनुतावते—एवं चोदनां कुरुतां यथा सूनुता वयं भवेम !’—
 इति वि० ।

† ‘सोम्य’ मधु—सोमे भवं स्वादुद्वयम्—इति वि० । ‘मये च (४, ४, १३८)
 —इति पा० । ‘सोमश्चायः स्थान्मयङ्गर्थे । सोम्यं मधु सोममयमित्यर्थः ॥’—
 इति च तत्र दूषितः ।

२३४यिद्यायि । चन्ददयुर्भोजनना३४ । औहोवा । इहा

२३४द्यायि । उज्जवा२३४रा । चोदेयाम् । छनूतावा३४ ।

औहोवा । इहा२३४द्यायि । औहो३१२३४ । तायि । एहि

याईहा॥(२) चोदेयासूऔहोद्यायि । नार्त्तावा२३४तायि ।

अर्वाया२३४हा । थसमनसानियक्का३४ । औहोवा ।

इहा२३४द्यायि । उज्जवा२३४ताम् । पिबतम् । सौमि

यम्मा३४ । औहोवा । इहा२३४द्यायि । औहो३१२३

४ । धू । एहियाईहा । होपई । डा(३) ॥ १०* ॥ [१]

॥ वामदेव्यम् ॥ आऽप्रियिमाः । उवा३न्दा३यिविष्टयाः ।

ऊ । साहवन्तेअश्विनाअयंवामङ्गेअवसेशचीव । छ ।

औ३होद्यायि । विशा२३विशाम् । हिगौहो३ । ऊम्मा

२ । काऽरथो३प्रद्यायि ॥(१) वाऽप्रियिशम् । विशा३

१ ४ ५ १ २ १ १
ह्यऽऽयिगच्छथाः । यू । वच्चित्रन्ददयुर्भोजनन्न । रा ।

१ २ २ १ २ २ १ १ १
औरहोहायि । चोदेरथाऽसू । नृतौहोः । ऊम्मा

१ २ १ २ १ १ १ १
२ । वाऽरतोऽपहायि ॥ (२) चोऽपुदे । थाऽसूऽनाऽ

४ २ ५ १ २ २ १ १
र्तावतायि । आ । र्वाग्रथाऽसमनसानियच्छ । ताम् ।

२ २ १ २ १ २ १ १
औरहोहायि । पिबार्थत्सो । मियौहोः । ऊम्मा

१ २ १ १ १ १ १ १
२ । मारधोऽपहायि ॥ १२ * ॥ [२]

१ २ १ १ १ १ १ १
॥ अयधम् ॥ इमाउवारन्दि । विष्टयोवा । उस्ता

१ १ २ २ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
हवा । तेअश्विना । अयवामङ्गेवसेशचीवस्त्रविशंविश

१ २ १ १ १ १ १ १
हि । गारऽ । च्छथाउ । वा । अूधिया २ ॥ (१) वि

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
शंविशा २ हि । गच्छथोवा । युवच्चित्राम् । ददयुर्भो ।

२ २ १ २ २ २ २ १ १ १ १ १ १ १
जनन्नराचोदेथाऽह्नृ । तारऽ । वताउवा । अूधिया

१ २ २ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १ १
२ ॥ (२) चोदेथाऽसू २ नृ । तावतोवा । अर्वाग्रथाम् ।

२३ ११ २ १ २ २ १ १
 समनसा । नियच्छतम्विबतः सोमि । यार३म् । मधा
 उवा । १२ अधिया२ । १२३हिया ३ ४ ३ । १ चोर३४पुई ।
 डा ॥ १६ * ॥ [३] १५

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

चतुर्थः खण्डः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डे ॥—

अस्यप्रवेति नवर्चसूक्ते, प्रथमा ।

२ १ ३ २ ७ २ १ १ २ १ २ ३ १ २
 अस्यप्रत्नामनुद्युतः शुक्तन्दुद्दे अह्नयः ।

१ २ ३ १ २ २ २
 पयःसहस्रसामृषिम् ॥ १ ॥

“अस्य” सोमस्य “प्रत्नां” पुरातनां “द्युतं” द्योतमानां
 तनुम् “अनु” “शुक्तं” दीप्तं “सहस्रसां” अभिलषितस्यापरि-

● क० गा० १प्र० २७० १६सा० ।

† ‘समाज्ञा’ सन्धिः । अथ षोडशिकोऽतिरात्रो ब्राह्मण-समाज्ञायेऽथ ऋक्समा-
 ज्ञाये न तथा कल्पकारः छलसो ज्योतिष्टोमोऽतिरात्रः षोडशिकः । तथा च लक्ष-
 कारः—अतिरात्रो ०००—इति वि० ।

‡ ‘इदानीं’ इदंशब्दस्य प्रथमसहस्रस्य षड्विधव्यमानम्—इति वि० ।

॥ य० वा० १, १६=ह० वे० ७, १, १, १ ।

मितस्य फलस्य दातारम् “ऋषिम्” अतीन्द्रियकर्मफल-
द्रष्टारं “पयः” पातव्यं * “अद्भ्यः” कवयः † “दुह्रे”
दुहन्ति ‡ ॥ १ ॥

* ‘पयः—क्षीरम्’—इति वि० ।

† ‘अद्भ्यः—अर्हाकाराः’—इति वि० ।

‡ अत्र महीधरः—“गायत्रावत्यारदृष्टा गोऽग्निपयोदेवत्या । अस्याग्नेः प्रजां
चिरन्तनकालमवां द्युतमनु दीप्तिमनुहृत्य । अद्भ्यः नास्ति क्षीर्येषामीदृशा लज्जागृहिता
दोग्धारः ऋषिं गां शुक्रं शुद्धं पयो दुदुह्रे ददुहरे । दुह्रेर्लिङ्गि इरषो रे इति
रे आदेशे रूपम् । ऋष गतौ । अर्षति दोहनस्थाने गच्छतीति ऋषिगाः । तां
धोमार्थं दुग्धवन्तः । मायं दोहनकालेऽग्निप्रकाशाभावे दुह्यमानं पयो भूमौ पति-
ष्यतीति शुद्धया दोग्धणां लज्जा भवति । सत्यामग्निदीप्तौ स्कन्दशङ्कानुदयालज्जाभा-
वादद्भ्यो दोग्धारः । किभूताऽऽषिं सहस्रसाम् । षोऽन्नकर्मणि । सहस्रसाम्—
कानि कर्माणि स्युति समापयति क्षीरदध्याज्यहविःप्रदानेनेति सहस्रसा ताम् । स्युतेः
क्लिप् । तद्वास्या ऋचोऽर्थान्तरम् । गाम्प्रकृत्याग्निहोत्राक्षणे श्रूयते । तामुद्वाग्नि-
रभिदधौ मिथुन्येऽनया स्यामिति तांसम्बभूव तस्यां रेतः प्रासिञ्चत्यथोऽभवदित्या-
दि (२.२.४.१५) । तदभिप्रायमेवा ऋग्वदिति । अद्भ्यः गावः नास्ति क्षीरं लज्जा यासां ता
अद्भ्यः अलज्जा उज्वलाः प्रशस्या इत्यर्थः । मलिनो हि लज्जते । अद्भ्यो गायोऽस्यः प्रोः
प्रजां चिरन्तनीमात्मानुपक्तां द्युतं दीप्तिं शुक्रं शुक्ररूपापन्नां द्युतमेव पयो दुग्धं दुदुह्रे
दुहन्ति क्षान्ति । अग्निना शुक्ररूपेण मिक्तां स्वकान्तिमेव गावो दुग्धरूपेण क्षरन्तो-
त्यर्थः । सहस्रसाम् षिमेति विशेषणद्वयं पयसः । सहस्रं सनोति सहस्रसाम् ।
चातुमास्यं प्रशुसोमानां सभक्तारम् । पुंस्त्वमार्षम् । जनसनखनक्रमगमो विडिति
विट्प्रत्यये विडनोरनुनासिकस्यादित्याकारे वेलोपे सहस्रसा इति रूपम् । तथा ऋषिं
द्रष्टारम् । गवि वर्तमानं द्रष्टृत्वं पयस्युपवर्त्यत । सा क्षीरानुदोष्य हिंसकारेत्युपक्रम्य
ते देवा विदाश्चक्रेष साम्ना हिङ्गार इत्यादिना यन्त्रेण गोभिर्हिङ्गारो दृष्ट इति
प्रत्ययादि । यद्वा सहस्रसाम् षिमेति विभक्तिलिङ्गवचनव्यत्ययेन अद्भ्य इत्यस्य विशे-
षणद्वयम् । किभूता अद्भ्यः सहस्रसाः ऋषयः । पूर्ववदथा वा—इति ॥

अथ द्वितीया ।

२१ २१२ २२२१२ २२

अयं सूर्य इवोपदृगयं सरां सिधावति ।

३ २३ २२३ १२ २२

सप्तप्रवत आदिवम् ॥ २ ॥

“अयं” सोमः “सूर्य इव” यथा सूर्यः सर्वस्य लोकस्योपद्रष्टा, तथा कर्मणाम् “उपद्रक्” उपद्रष्टा ; अपिच “अयं” सोमः “सरांसि” त्रिंशत् उक्थपात्राणि [—इति केचिद् वदन्ति, अपरे तु त्रिंशद्दहोरात्राणि सरांसौति], तानि “धावति” प्रति गच्छति [तथाच यास्काः—“तत्रैतद् याज्ञिका वेदयन्ते त्रिंशदुक्थपात्राणि, माध्यन्दिने सवने एकदेवतानि, तान्येतस्मिन् काले एकेन प्रतिधानेन पिबन्ति, तान्यत्र सरांस्युच्यन्ते—त्रिंशदपरपक्षस्याहोरात्राः त्रिंशत् पूर्वपक्षस्येति नैरुक्ताः (५, ११) इति ॥] । अपिचायं सोमः “दिवम्” अधिकृत्य “सप्त प्रवत” सप्त नदीरातिष्ठतिः ॥ २ ॥

• ऋ० वे० ७, १, २, २ ।

† “तथा एतावान्दमस्य आगामिन्य आपो भवन्ति रस्मयस्ता अपरपक्षे पिबन्ति । तथापि निगमो भवति । यमचित्तिमक्षतयः पिबन्तीति तं पूर्वपक्षं आप्यायन्ति । तथापि निगमो भवति । यथा दवा अंशुमाय ययन्तीति”—इति च तत्किंष्टांशः ।

‡ ‘सप्त प्रवत—सप्त लोकान् प्रवत । अथवा सप्त जन्दांसि’—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

१ १२ २२ १ १२ २२ ३१ २
अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि ।

१ २ ३ १२ २२
सोमो देवो न सूर्यः ॥ ३* ॥ १६ †

“पुनानः” पूयमानः “अयं” “सोमः” “विश्वानि” सर्वाणि
“भुवना” भुवनानि सर्वेषां भुवनानाम् “उपरि” “तिष्ठति” ।
तत्र दृष्टान्तमाह—“देवो न सूर्यः” यथा सूर्यो देवः सर्वेषां
भुवनानामुपरि तिष्ठति तद्वदयं सोमोऽपीत्यर्थः ॥ ३ ॥ १६

३ २ २
॥ सत्रासाक्षीयम् ॥ अस्या ३३ । प्रत्नामनुद्युतम् ।

५ ५ १ २ १ १
ओद्वा । शुक्रन्दुदुहे अद्वा रयाः । पारयाः । सार ३

२ १ ५ २ ५ २ २ १ ५ ५
हा । ससौ र्हो वाचा ३४ ३यि । आर ३४ र्पोद्वायि ॥

२ २ २ २ ५ ५ १
(१) अया ३४म् । सूर्य इवोपहृक् । ओद्वा । अय ७

२ २ १ १ २ १ ५
सरा ७ सिधावा रतायि । सारता । पार ३वा । तत्रौ

२ ५ २ २ १ ५ ५ २ २
र्हो । वाचा ३४ ३यि । दार ३४ यिवोद्वायि ॥ (२) अया

* मृ० व० ७, १, २, ३ ।

† मूलोत्प्रेतदका भवे षोडशं सूक्तम्, विवरणादि-मतेष्वेवमेव । ‘उक्तः प्रथमप-
र्यायः’—इति वि० ।

३४म् । विश्वानितिष्ठति । ओद्वा । पुनानोभुवनो
 पाररायि । सोरमो । दारशयिवाः । नसौरहो । वा
 हा३४शयि । रार३४योद्वायि(३) ॥ ८ * ॥ [१]

॥ आमद्योयवम् ॥ अस्यप्राश्नामनुद्यताम् । शु
 क्रान्दू१दू२ । ह्ये आर३हयाः । पयःसहा । संसार३
 मृषाउ । वा३ ॥ (१) अयं सूर्य इवोपदृक् । अयं सा
 शरा२ । सिधार३वतायि । सप्तप्रवा । तआर३दिवाउ ।
 वा३ ॥ (२) अयं वाशयिश्चानितिष्ठनायि । पुनानो१भू२ । व
 नोर३परायि । सोमोदेवाः । नसूर३रियाउ । वा३ ।
 स्तोषे३४पू (३) ॥ ३ † ॥ [२]

॥ जराबोधौयम् ॥ अस्यप्रत्नोवा । आनुद्यताम् ।
 शुक्रान्दू२३दू । ह्ये याः सा१हा३श्वा । साम् । ऋषो३

४५ई । डा ॥ (१) अय॑सूर्यो॒वा । आयि॑वोप॒द्वक् ।

अया॑स॒र॒रा । सि॒धावा॑तायि । स॒प्ताप्रा॑श॒वार॒ताः ।

आ । दि॒वो॒३४५ई । डा ॥ (२) अयं॑वि॒श्वोवा । नायि॑

तिष्ठ॑तायि पु॒नानो॑र॒भू । वनो॑पारायि । सोमो॑दा॒श

यि॒वार॒ना । सू । रियो॑३४५ई । डा (३) ॥ १० ॥ [३]

॥ हावि॑भ॒तम् ॥ हाव॑स्यप्र॒क्षामनु॑द्य॒त्त॒घाउ । शु॒क्र

न्दु॒दू॒३ । क्वे॒अ॒ह्ना॒र॒३४याः । ऐ॒र॒हो॑श्चा॒र॒३यि॒क्षी । प

याःसा॒॑श्वा । स॒साम् । आ॒र॒र्षा॒र॒३४औ॒क्षीवा ॥ (१) हा

वय॑सूर्य॒इवो॑प॒द्व॒घाउ । अय॑स॒रा॒३ । सायि॑धा॒वा॒र॒३

४तायि॑ । ऐ॒र॒हो॑श्चा॒र॒३यि॒क्षी । स॒प्ताप्रा॑श्वा । त॒न्ना ।

दा॒र॒यि॒वा॒र॒३४औ॒क्षीवा ॥ (२) हाव॑यंवि॒श्वानि॑तिष्ठति॒घाउ ।

पु॒मानो॑भू॒३ । वा॒नोपा॑र॒३४रायि॑ । ऐ॒र॒हो॑श्चा॒र॒३यि॒क्षी ।

१८ २ २ १८ ३ ५८८ २ १
सोमोदाश्रयिवाः । नह् । राश्या२३४ औहोवा । द्वि

२११११
यते२३४५ ॥ ८ * ॥ [४]

२ १ २ १ २ १ २
॥ आशुभार्गवम् ॥ अस्वप्रत्नाम् । नूद्य३ताम् ।

१ २ १ ३ ५ ५ १ १
शुक्रन्दुदू३ । हेआ२ह्वा२३४याः । पयाःसा१हार ।

१ २ १ ५ ५ १ १ २ २
ससा३म् । आ२३४योईहायि ॥ (१) अय॑स्त्र्यः । इवो

२ १ २ १ ३ ५ १
पा३ह्क् । आय॑सरा३ । सायिधा२वा२३४तायि । म

२ ३ २ १ ५ ५ २ १
प्राप्रा१वा२ । तआ३ । दा२३४यिवोईहायि ॥ (२) अर्थ

२ २ २ १ २ २ १ ३
विश्वानि । तिष्ठा३तायि । पूनानोमू३ । वानो२पा२३

५ १८ २ ३२ १ ५ ५
४रायि । सोमोदा१यिवारः । नह् । रा२३४योईहा

यि ॥ १८ * ॥ [५]

२ २ १ २ १
॥ मार्गीयवाद्यम् ॥ अस्थौहोवा । प्रात्नार॑म् । अ

१ ३ ५ १ १ २ २ १ २ १
नूद्य२३४ताम् । शुक्रन्दुदू । हेआ२ह्वा१श्या२ः । पयः ।

^१हा । ^२औ३^१होयि । ^३सा२३४^५हा । ^१सा२^३सा२३४^५औ३^१हो
^२वा । ^१ए३ । ^{११११}ऋषा२३४^२पुयिम् ॥ (१) ^२अयौ३^१होवा । ^१सू
^३र्यारः । ^५द्वोपा२३४^{११}हृक् । ^२अय॑सरा । ^{१२}सिधावा॑शंता२
^१यि । ^२सप्त । ^३हा । ^५औ३^१होयि । ^३प्रा२३४^५वा । ^१ता२^१आ
^५२३४^२औ३^१होवा । ^२ए३ । ^{११११}दिवा२३४^२पुम् ॥ (२) ^२अयौ३^१होवा ।
^१वायिञ्चा२ । ^३निता॑यिष्टा२३४^५तायि । ^१पुना॑नोभु । ^१वनो
^२पाशरा॑यि । ^१सोमः । ^३हा । ^५औ३^१होयि । ^३दा२३४^५यि
^५वाः । ^१ना२^१सू२३४^५औ३^१होवा । ^२ए३ । ^१रिया॑ २३
^१४ पुः (३) ॥ २० * ॥ [६]

^१॥ सौमि॑त्रम् ॥ ^२अस्य॑प्र॒त्नामनुद्य॑ता॒श्मे । ^१शुक्र॑न्दु
^१दुह्रे । ^२आ२१५२३ । ^१ह्रया॑३४३ः । ^१पा२३४^१याः । ^१सहा
^१२ओ२३ । ^४स्रसो॑वा । ^५आ५५^५र्षी६हायि ॥ (१) ^२अय॑म् र्य्य

इवोपहृ३गे । अयं॑सरा॑सि । धा॑र॒११५२३ । वता॑३४
 शयि । सार॑३५ । प्रवा॑र॒ओर॑३ । तओ॑वा । दा॒पुयि॑वो
 द्वायि ॥२) अयं॑विश्वा॑नितिष्ठता॑ण । पुना॑नोभुव ।
 नो॑र॒११५२३ । परा॑३४शयि । सोर॑३माः । देवा॑र॒ओर
 ३ । नसो॑वा । रा॒पुयो॑द्वायि(३) ॥ १ * ॥ [७]

॥ ऐटतम् ॥ अस्य । ए॒ष॒स्य॑ । प्र॒त्ना॑म । नू॒३ ।
 आ॒र॒नू॒२३४ओ॒हो॒वा । द्य॒२३४ता॑म् । शु॒क्रा॒न्दू॒२३४दू॒ ।
 ह्रे॒आ॑३ । ह्रे॒२आ॑र॒३४ओ॒हो॒वा । द्वा॒र॒३४याः । प॒याः
 सार॑३४द्वा । स॒सा॑३ । सा॒र॒सा॒२३४ओ॒हो॒वा । आ॒२३
 ४र्षी॑म् ॥१) अयम् । ए॒आ॑याम् । सूर्य॑द्वा । वा॑३ ।
 आ॒र॒यि॒वा॒र॒३४ओ॒हो॒वा । पा॒र॒३४द्वक् । अ॒या॑स॒र॒३४

^{२ १}रा । ^{१ २}सिधा३ । ^{१ २}सारयिधा३४^{५ ६ ७}औहोवा । ^१वार४४ती ।
^{२ ३}सप्ताप्रा३४वा । ^{१ २}तआ३ । ^{१ २}तारआ३४^{५ ६ ७}औहोवा । ^१दौ
^५२३४वाम् ॥ (२) ^{१ २}अयम् । ^{१ २}एआयाम् । ^१विश्वानि । ^२ता
^{१ २}इयि । ^{१ २}नारयिता३४^{५ ६ ७}औहोवा । ^३छार३४ती । ^{२ ३}पुनानो
^५२३४भू । ^{३ ४}वनो३ । ^{१ २}वारनो३४^{५ ६ ७}औहोवा । ^{३ ४}पार३४री ।
^{२ ३}सोमोदा३४^५यिवाः । ^{२ ३}नसू३ । ^{१ २}नारसू३४^{५ ६ ७}औहोवा ।
^५रौ३४याः ॥ २ * ॥ [८]

^{१ २}॥ धुरासाकमश्चम् ॥ ^{१ २}अस्यप्रत्ना३म् । ^{५ ६ ७}हौ३हो३१यि ।
^{२ ३}अनुद्युता३म् । ^{५ ६ ७}हौ३हो३१यि । ^{२ ३}शुकन्दुदू३ । ^{५ ६ ७}हौ३हो
^{२ ३}३१ । ^{५ ६ ७}अद्वया३ः । ^{५ ६ ७}हौ३हो३१यि । ^{२ ३}पयःसद्वा३ । ^{५ ६ ७}हौ
^{२ ३}३हो३१ । ^{५ ६ ७}ससामृपा३यिम् । ^{५ ६ ७}हौ३हो३१२३४५ई । ^{५ ६ ७}डा ॥ (१)

अयं सूर्याः । हौश्चोश्चि । इवोपदृक् । हौश्चो
 ३१ । यि । अयं सराः । हौश्चोश्चि । सिधावताः
 यि । अयं सरासिधा । हारहारि । वारः ४८
 यि । साप्ताः उवाः । प्रारवाः ३४ औचोवा । तत्रादि
 यि । हौश्चोश्चि । सप्तप्रवाः । हौश्चोश्चि । तत्रा
 दिवाः ३ । हौश्चोश्चि २३ ४५ ई । डा ॥ (२) अयं विन्वाः ।
 हौश्चोश्चि । नितिष्ठताः यि । हौश्चोश्चि । पुनानोभू
 ३ । हौश्चोश्चि । वनोपराः यि । हौश्चोश्चि । सो
 मोदेवाः । हौश्चोश्चि । नसूरियाः । हौश्चोश्चि २
 ३४ ५ ई । डा ॥ ३ * ॥ [८]

॥ विलम्बसौपर्णम् ॥ अस्य प्रज्ञामनुद्युतम् । ईयद्
 याचायि । शुक्रन्दुद्वा । हारहार । हार २ ३ ४

५ १ २ १ १ ३ ५ २ २ १ २
याः । पाया३ उवा३ । सार३ चार३ ४ औहोवा । स्रसाम्

३ १ १ १ १ २ १ २ १ २ १ २
षार३ ४ ५ यिम् ॥ (१) अयं सूर्य इवोपहव । ईय इयाहा

४ २ ४ २ ५ २ २ १ १ ५
यि । अयं सरांसिधा । हा३ हा३ यि । वार३ ४ तायि ।

३ २ २ १ ३ ५ २ २ २ २
साम्ना ३ उवा ३ । प्रा २ वा २ ३ ४ औहोवा । तच्चादि

३ १ १ १ १ २ १ २ १ २ १ २
वार३ ४ ५ यिम् ॥ (२) अयं विश्वानितिष्ठति । ईय इयाहायि ।

४ २ ४ २ ४ ५ २ २ १ ५ १ २
पुनानोभुवनो । हा३ हा३ यि । पार३ ४ रायि । सोमा३

२ १ ३ ५ २ २ २ २ २
उवा ३ । दा २ यिवा २ ३ ४ औहोवा । नसूरिया २ ३

४ ५ ॥ ४* ॥ [१०] १६

अथ चतुर्थी ।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
एषप्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यःसुतः ।

१ २ ३ १ २
हरिःपवित्रेऽर्षति ॥ १३ ॥

* क० गा० १४ प्रा० २ अ० ४ सा० ।

† मूलेतिथं सप्तदशसूक्तस्य प्रथमा, विवरणादि-मतेष्वेवमेव । तथैवागोतरस्य बोध्यम् ।

‡ इत्यमरस्य पुनः औषमाहा पञ्चम-द्वितीय-द्वितीय-मवसे । अ० वे० ६, ७, २१, ४ ।

“हरिः” हरितवर्णः “देवः” द्योतमानः “एषः” सोमः
 “प्रत्नेन” पुराणेन “जन्मना” जननेन * “देवेभ्यः” देवार्थं
 “सुतः” अभिषुतः सन् “पवित्रे” “अर्षति” आरोचते ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २

एषप्रत्नेनमन्मनादेवोदेवेभ्यस्परि ।

३ १ २ २ २

कविर्विप्रेणवावृधे ॥ २ ॥

“प्रत्नेन” पुराणेन “मन्मना” साधनेन स्तोत्रेण युक्त इति
 शेषः† “देवः” द्योतमानः “एषः” सोमः “देवेभ्यः” देवार्थं
 “कविः” मेधावी सन् “विप्रेण” मेधाविना यजमानेन ऋत्विजा
 “परिवावृधे” परिवर्धते ॥ ५ ॥

अथ षष्ठीः ।

३ २ ३ १ २ २ २ ३ ३ १ २

दुहानःप्रक्षमित्ययःपवित्रेपमृषिच्यसे ।

१ २ ३ १ २

क्रन्दन्देवाञ्जजीजनः ॥ ३ ॥ १७

* ‘जन्मना—कर्मणा, जन्मा वा’—इति वि० ।

† ‘मन्मना—मन्य बलमभिधीयते, बलेन’—इति वि० ।

‡ मूले त्वेतदन्तमेव सप्तदशं सूक्तम्, विवरणादि-तयोऽप्येव संव ।

॥ ऋ० वे० ६, ८, ११, ४ ।

“प्रत्नमित्” पुराणमेव “पयः” रसं * “दुहानः” हे सोम !
पवित्रे परिषिच्यसे । हे सोम ! त्वं “क्रन्दन्” शब्दं कुर्वन्
“देवान्” इन्द्रादीन् “अजीजनः” स्वसमीपे जनयति । यत्र
सोमोऽभिषुते तत्र देवा नियतं प्रादुर्भवन्तीत्यर्थः ॥

• “अजीजनः”-“अजीजनत्”—इति पाठौ † ॥ ६ ॥ १७

अथ सप्तमी ‡ ।

१२ १ १ २ ३ २ १ १ २ ३ १ १
उपशिक्षापतस्थषोभियसमाधेद्दिशन्वे ।

१२ ३ २ ३ २
पवमानविदारयिम् ॥ १ णा ॥

• हे “पवमान” सोम ! “उपशिक्ष” त्वं समीपे कुरु । कान् ?
“उपतस्थुषः” उपक्रम्य स्थितानस्मदभिमतानित्यर्थः । “शन्वे”
शत्रुषु अस्मद्विरोधिषु “भियस” भयम् “आधेहि” कुरु जय ।
किञ्च तेषां शत्रूणां “रयिं” धनं “विदाः” § अस्मभ्यं विद्धि
देहीत्यर्थः ॥ ७ ॥

* ‘पयः’—स्वादुद्रव्यम्, अथवा पय उदकं चौरं वा—इति वि० ।

† “षिच्यस”-“षिच्यते”—इत्यपि पाठभेदः ।

‡ मूले त्रियमष्टादशसूक्तस्य प्रथमा, विवरणादिमतेऽप्येव मेव । तथैवातोत्तरत्रयोध्यम् ।

॥ ऋ० वे० ६, ८, ९, ५ ।

§ ‘विदज्ञाते, विद्लृप्ताभे, विदसनायामित्यस्यैवं रूपम्—इति वि० ।

अथ अष्टमी-नवम्योर्ऋषोः प्रतीकमेव माम्नातम्—“उपोषु-
जातमसुरम्”—इति, “उपास्मैगायतानरः”—इति च ॥

तेष्वष्टमी प्रदेशान्तरेः आम्नाता—

२ ३ २ ३ १ ३ १ १ १ २ ३ १ २
उपोषुजातमसुरं(गोभिर्भङ्गमपरिष्कृतम् ।

१ २ ३ १ २
इन्दुदेवाअयामिषुः) ॥ २० ॥

“जातं” सम्यक् प्रादुर्भूतम् “असुरम्” वसतीवरीभिः अङ्घ्रिः
प्रेरितं “भङ्ग” शब्दं भङ्गकं “गोभिः” गोविकारैः पयोभिः
“परिष्कृतम्” अलङ्कृतं संस्कृतम् “इन्दु” सोमं “देवाः” इन्द्रादयः
“उप उ”—इति निपातद्वयसमुदायः उपेत्यस्यार्थे वर्तते सुष्ठु “उप
अयामिषुः” उपागच्छन्ति ॥ ८ ॥

नवमीत्वेव मन्यत्राम्नाताः—

१ २ ३ १ २ १ १ २
उपास्मैगायतानरः(पवमानायेन्दवे ।

३ २ ३ १ २
अभिदेवाइच्छते) ॥ ३ ॥ १८

० अथैव पद्यमे इति बोध्यम् । परमाद्यर्थजेतम्—भविष्यत्याठस्य पूर्वम्यतौक-
प्रदणमिति ।

† छ० आ० ६, १, १, १ (२भा० ४२ पृ०)—अथैव ४, २, १०, १—आ० वे० ७,
१, २०, १ ।

‡ उत्तराप्रन्थारम्भे एव ।

¶ अथैव १, १, १, १ (२भा० ४२ पृ०)—आ० वे० ६, ७, २६, १ ।

हे “नरः” नेतारः ! यज्ञस्य “देवान्” इन्द्रादीन् “अभि
 इयन्ते” अभिसुख्येन यष्टुमिच्छन्ते यजमानाय चरन्ते “अक्षौ”
 • अभिषूयमाणाय “इन्दवे” सोमाय “उप गावत” उपगानं
 कुरुत ॥ ८ ॥ १८

॥ अ॒ध॒य॒म् ॥ उ॒पोषु॒जा॒र॒त॒म् । अ॒प्न॒रो॒वा । गो॒भि
 र्भ॒ङ्गा॒म् । प॒रिष्कृ॒ता॒म् । इ॒न्दु॒दे॒वी॒श्च । या॒३३ । सि
 षा॒उ॒वा । अ॒धिया॒३ ॥ (१) त॒मि॒द॒र्द्वा॒र॒न्तु । नो॒गि॒रो
 वा । व॒त्स॒स्स॒शायि । श्व॒री॒रि॒वा । य॒इ॒न्द्र॒स्य॒द्वा । दा
 ३३॒म् । स॒ना॒उ॒वा । अ॒धिया॒३ ॥ (२) अ॒र्षा॒नः॒सो॒३॒म् ।
 श॒ङ्ग॒वो॒वा । धु॒श्व॒स्व॒पायि । प्य॒षी॒मि॒षा॒म् । व॒र्द्धा॒सि॒मु
 द्र॒म् । ऊ॒३३ । वि॒थि॒या॒उ॒वा । अ॒धिया॒३ । ए॒३३॒क्षि॒या
 ३४३ । ओ॒३३४५३ । डा ॥ ५ * ॥ [१]

॥ प्र॒ती॒ची॒ने॒ड॒ङ्गा॒शीः ॥ उ॒पोषु॒जा॒त॒म् । आ॒३३॒म् ।

^१राम् । ^२गोभिर्भङ्गम् । ^१परायिष्कृता^०२३४म् । ^{३२२}हाहो
^१यि । ^२इन्दुन्देवा^२आश्या । ^२मिषू । ^१औ^{४५}२३होवा ॥ (१)
^१तमिद्वद्दन्तु । ^२नो^१रगिराः । ^२वात्स^१स^१शिशि । ^१श्वरायि
^०रिवार^{३२२}३४ । ^१हाहोयि । ^२यद्वन्द्रस्या^२हा^१शर्दाम् । ^१सनायिः ।
^{४५}औ^{१२२}३होवा ॥ (२) ^१अर्षानः^२सोम । ^१शा^१रङ्गवायि । ^१धू
^२क्षपि । ^१पुष्यायिमिषा^०२३४म् । ^{३२२}हाहोयि । ^{१२}वर्द्धास^२मूद्रा
^२श्मू । ^१क्विषा । ^२औ^{४५}३होवा । ^{४५}ईडा^३(३) ॥ ११ ॥ [२] •

^{४२}॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ ^४उपा^२ऽपु^{४२}स्ते । ^४गाश्या^२इ^{४२}तानाराः ।

^२पाश्वामाशना । ^२या^१२३आ । ^१जुम्मायि । ^२दाश्वायि ।
^१आभिदेवा^{२२}इया^{३२}रक्षताउ ॥ ^१ते^२(१)आ । ^{१२}भितेमा । ^२धू३
^{१२}नापाश्याः । ^१आथा^{१२}रर्वा । ^२लोआ^२२३णा । ^१जुम्मायि ।
^२आश्यूः । ^१दायिवन्देवायदा^{२२}यिवयाउ ॥ ^१यू^२(२)साः । ^१नः

१ १ २ २ १ १ २
 पवा । स्वा३शा३ज्ञा३वायि । श३ञ्जा३र३ना । य३शा३र३मा ।

१ २ २ १ २ २ १ १
 ऊ३मायि । वा३स्तायि । शा३र्३रा३ज३ज्ञो३ष३धा३र३यि३भ्य३आ३उ ।

॥ ११ * ॥ [३]

१ १ २ ४ २ ५ २ ३ ५ २ १
 ॥ स॒फ॒म् ॥ उ॒प॒शी॒र॒क्षा॒प । त॒स्यू॒र॒३४॒षाः । भि॒या

२ १ २ ४ १ ५ १ १
 सा॒र॒म् । आ॒धा॒यि॒ही॒र॒शा॒र । नै॒र॒३२॒३४॒वायि । प॒वा ।

२ १ ४ २ ५
 मा॒ना॒वी॒र॒दा॒रः । रा॒३४॒५॒यो॒द्द॒हा॒यि ॥ २ * ॥ [४] १८

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरायनस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

• क० मा० ११ प्र० २ अ० १ सा० ।

† क० मा० ११ प्र० १ अ० २ सा० ।

‡ 'प्रथमस्याङ्गोपदिष्टव्यमानमुक्तम् । तृष्टसौमिकस्येदमङ्गः प्रथमोऽभिधोपवर्ती
 विषयः कश्चिद्व्यवमानम्'—इति वि० ।

षष्ठे खण्डे *—

प्रथमतृचे, प्रथमा ।

१ २२ १ १ १ १ २ १ १ २
प्रसोमासोविपश्चितोपोनयन्तर्जर्मयः ।

१ २ २ १ २
वनानिमहिषा इव ॥ १† ॥

“विपश्चितः” मेधाविनः “जर्मयः” प्रवृद्धाः “सोमासः” सोमाः
“अपः” वसतैर्वर्षाभ्याः “प्र नयन्ते” प्राप्नुवन्ति । तत्र दृष्टान्तः—
“वनानि महिषा इव” यथा प्रवृद्धा सृगा वनानि प्राप्नुवन्ति
तद्वत् ॥

“अपोनयन्ते” “अपानयन्ति”—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १ २२ १ १ २ २ १ २ २ २ १ २
अभिद्रोणानिवभ्रवःशुक्राक्षतस्यधारया ।

१ २ १ २
वाजङ्गोमन्तमत्तरन् ॥ २‡ ॥

० ‘इदानीं’ साध्यन्दिनः पवमानो वक्तव्यः, स च विच्छिन्ना उक्तः । स च उच्यते—
प्रसोमास इति—इति वि० ।

† सू० आ० ५, १, ५, १ (२भा० ११ पृ०)=सू० वे० ६, ८, २२, १ ।

‡ सू० वे० ६, ८, २२, १ ।

“अभि” जरन्तीति शेषः अभि शब्दश्रुतेरचित-क्रियाध्या-
हारः । किम्प्रति ? “द्रोणानि” द्रोणकलशान् * [यद्यपि
‘द्रोणकलगणैक एव तथापि तत्प्राधान्यादितराण्यपि पात्राणि
द्रोणानीत्युच्यन्ते । अथवैकस्मिन्नेव पूजार्थं बहुवचनम् । के
“बभूवः” बभूवर्णाः सामाः “शुक्राः” दीप्ताः । केन प्रकारेण ?
“धारया” धाराकारेण । कस्मै प्रयोजनाय ? † ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सुताइन्द्रायवायवैवरुणायमरुद्भ्यः ।

१ ५ ३ १ २
सोमाअर्षन्तुविष्णवे ॥ ३ ‡ ॥ १८ ॥

“सुताः” अभिषुताः सामाः इन्द्रादिदेवार्थम् “अर्षन्तु”
गच्छन्तु § ॥

“अर्षन्तु”-“अर्षन्ति”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १८

* ‘द्रोणानि—द्रोणकलश सम्बन्धानि ग्रह-वमसादीनि पात्राणि, तानि’—
इति वि० ।

† परदान्वयः ।

‡ अ० वे० ६, ८, ११, १५ ।

§ ‘अथ गायत्री भवति’—इति वि० ।

§ पूर्वार्थान्वयः ।

१ २ १ २ १२
॥ आश्वम् * ॥ अभिद्रोणा रनिवभ्रवाः । शुक्राकृतस्य

२ १ २२ २ २ १ ५ १
धारा रया । वाजङ्गोमा २३ न्ताम् । आत्ता ३ उवा ३ ।

११११
रा २३४ पुन (२) ॥ ११ १ ॥ [१]

१ २ ५ ३ २ १
॥ सोमसाम ‡ ॥ सुताइन्द्रा । यवायवायि । वारु

२ २ २३ २ १ २ ५ ५
णायारमा ३ । रुद्धियाः । सोमा आपी ३४ । चाउ । तु

४
वाप्रयिणवायि । होपू ३ । डा (३) ॥ १२ १ ॥ [२]

१ २ २ १ २ १२
॥ आश्वम् ॥ प्रसोमासो रविप्रश्चिताः । अपोनयन्त

२ १ २ १२ २ ५ २ ११
ऊर्मा रयाः । धनानिमा २३ ही । पा ३ उवा ३ । वा २३

११ १ २ १ ३ १२ २
४५ ॥ (१) अभिद्रोणा रनिवभ्रवाः । शुक्राकृतस्य धारा

१ २ २ १२ २ १ ५ २ १
रया । वाजङ्गोमा २३ न्ताम् । आत्ता ३ उवा ३ । रा २

१११ १ २ २ १ २
४५ पुन ॥ (२) सुताइन्द्रा रयवायवायि । वरुणायमरुद्धा

* “आश्वसूक्तम्” — इति ख० पु० पाठः । † ऊ० गा० १ प्र० २ अ० ११ सू० ।

‡ “आश्वसोमसाम” — इति ख० पु० पाठः । § ऊ० गा० १ प्र० २ अ० १२ सू० ।

१ २२१२ १ ६ १ ११
 २याः । सोमा^{२२१२}अर्षा^१२३३३ । वायिष्णा^६३३वा^१३ । वा^{११}२३

११
 ४५यि(३) ॥ १२ * ॥ [३]

१ २ २२१२ १ १
 ॥ आप्रु^{१ २ २२१२}भार्गवम् ॥ प्रसोमा^१सोवि । पञ्चा^१३यिताः ।
 १२ २ १ १ ५ १ १
 आपो^{१२}नया^२३ । ता^१ज^१२३^५र्मा^५२३४याः । वना^१ना^१३यिमा^१२ ।
 २२ १ ५ ५ १ १ २ २
 द्विषा^{२२}३ः । आ^१२३४यिवो^५३३^५हायि ॥ (१) अभि^{१ १ २ २}द्रोणा^२नि ।
 १ २ १ २ २ १ ५ १२
 बभ्रा^१३वाः । श्रु^१क्रा^२३३ता^२३ । स्या^१धा^२२रा^५२३४या । वाजा^{१२}
 १ २२ १ ५ ५ २ १२ २
 ज्ञो^१३मा^{२२}२ । तमा^१३ । आ^५२३४रो^५३३^{२ १२ २}हायि ॥ सुता^२इन्द्रा^२
 २२ २ १ २ २ १ ५ ५
 य । वाया^{२२}३वायि । वारु^१णाया^{२ २}३ । मा^१३३२^५द्वा^५२३४याः ।
 १२ १ २२ १ ५
 सोमा^{१२}आ^१३र्षा^{२२}२ । तुवा^१३यि । णा^५२३४वो^५३३^५हायि(३) ॥ ११† ॥ [४]

१ २ २ १ २ १ २ १ १ १ १
 ॥ जरा^{१ २ २ १ २ १ २ १ १ १ १}बोधीयम् ॥ प्रसोमा^१सोवा । वायि^{१ १ १ १ १ १ १ १}पश्चिताः । अपो
 १ २ १ ४६ ५२
 ना^१३३या । तज^{२ १}३र्मा^२याः । वना^{४६}ना^{५२}३यिमा^{५२}२३३हायि । षाः ।

११ इवो३४५ई । डा ॥ (१) अभिद्रोणोवा । नायिबधवाः ।

११ शुक्राआ२३र्त्ता । स्थधाराया । वाजाङ्गो१मा२३न्ताम् ।

४ अ । श्रो३४५ई । डा ॥ (२) सुताइन्द्रोवा । यावाय

१ वायि । वरुणा२३या । मरुद्गायाः । सोमाआ१र्षा

४ २३न्तू । वि । णवो२३४ई । डा (३) ॥ १२ * ॥ [५]

१ ४२ ३२ १
॥ सोमसाम† ॥ प्रसोमासाः । विपास्विताः । आपो

२ २ २२ ३२ १ २ ४
नाया३न्ता३यि । ऊर्मयः । वानानायिमा३४ । हाउ ।

४ १ २२ ४ २ १
हिषा५इवा ॥ (१) अभायिद्रोणा । निबाधवाः । शुक्रा

२ २ २२ ३२ १ २ ४
अर्त्ता३स्था३ । धारया । वाजाङ्गोमा३४ । हाउ ।

१ १ २ ३ २ १
तमा५क्षरान् ॥ (२) सुताइन्द्रा । यवायवायि । वारु

१ १ २ ३ २ १ २ ४ ४
णाया३मा३ । रुद्धियाः । सोमाआ१र्षा३४ । हाउ । तु

४
वा५यिष्णवायि । हो५ई । डा (३) ॥ १३ * ॥ [६]

* उ० गा० १४प्र० १४० १२सा० । † “गायत्रीसोमसाम”—इति च० पु० पाठः ।

‡ उ० गा० १४प्र० १४० १२सा० ।

१ २ २ २ २ १ २
॥ रौहितकुलीयम्* ॥ प्रसोमासोविपाः । चिना२ः ।

१ २ १ १ २ १ १ २ १
अपोनयन्तजुर्मा२३याः । वाना२नायिमा२३ । हिषो२

५ ४ ५ २ १ २ २ १ २
३४वा । आप्रयिवो६हायि ॥ (१) अभिट्रोणानिवा । भ्रवा

१ २ २ १ २ १ १
२ः । शुक्रा३तस्यधारा२३या । वाजा२ङ्गोमा २३ ।

२ १ ५ ४ ५ १ १ २ २ १
तमो२३४वा । चाप्रो ६ हायि ॥ (२) सुताइन्द्रायवा ।

२ १ २ २ १ २ १ १
यवा२यि । वरुणायमरुङ्गा२३याः । सोमा२आर्षा२३ ।

२ १ ५ ४ ५
तुवो२३४वा । ष्णाप्रवो६हायि ॥ १४ ँ ॥ [७]

१ २ १ २ १ २ ३ २
॥ मार्गीयवाद्यम् ॥ प्रसौहोवा । मासो२ । विपा

३ ५ १ २ २ १ २ १ २
स्यार३४यिताः । अपोनय । तजुर्मा२या२ः । वना ।

२ २ ३ ५ १ ३ ५ २
हा । औ३होयि । नार३४यिमा । हा२यिषार३४औ

२ २ १ १ १ १ २ २ १ २ १
हावा । ए३ । इवा२३४५ ॥ (१) अभीहोवा । द्रोणा

१ ३ २ ३ ५ १ २ २ १ २
२ । निवाभार३४वाः । शुक्रा३त । स्याधा१राया२ ।

* “रौहित कुलीयोत्तरम्”—इति ख० पु० पाठः । † उ० गा० १४ प्र० १ अ० १८ सू० १ ।

२अ० ६ख० १सू० १, २, ३] उत्तरार्चिकः ।

२७३

^{१२}वाजम् । ^२हा । ^१औश्चोयि । ^४गोर३४मा । ^१तारमा२

^{५२ १}३४औहोवा । ^२ए३ । ^{१ १११२}क्षरा२३४५न् ॥ (२) ^{२ २ १ १}सुतीहोवा ।

^१सायिन्द्रा२ । ^{३ २ ३}यवाया२३४वायि । ^५वरुणाय । ^{१ २२}मरुद्गा१

^{१२ २}यारः । ^१सोमाः । ^२हा । ^१औश्चोयि । ^३आ२३४र्षा ।

^{१ १}त्वरवार३४औहोवा । ^{५२ २}ए३ । ^{१ १ १११२}ष्णुवार३४पुयि (३) ॥ ११* ॥ [८]

^१॥ आभीकम् ॥ ^{२ २}प्रा२३४सोमासो५ । ^{२ ४}विपौहोश्चायि

^५ताः । ^{१ २}अपोनयन्तऊश्मार्श्याः । ^{२ २}वनाना २ ३ ४ यिमा ।

^१ह्यायिषा३उवा३४३ । ^२आ३४५यिवो६हायि ॥ (१) ^५आ२३४

^२भिद्रोणा५ । ^{२ ४}निबौहोभ्रावाः । ^५शुक्रातस्यधा१रा३या ।

^{२ ३}वाजङ्गो२ ३४ मा । ^५तामा३उवा३४३ । ^{१ १ १ २}क्षा३४५रो६हा

^५यि (२) ॥ १५ १* ॥ [९]

^{२ २ २ १ २}॥ ऐडसौपर्णम् ॥ ^{१ २ ३}प्रसोमासोवा । ^{१ २ ३}वायिपश्चा२३४यि

• ज० गा० १८प्र० १अ० ११सा० । † उ० गा० १८प्र० १अ० १५सा० ।

ताः । अपोनया । तज्जर्म्मा^१२३४याः । वारिना । ना
 रश्मिमा । हायिषा^१इवा । औश्होवा ॥ (१) अभिद्रो^१णो
 वा । नायिबभ्रा^१रश्मवाः । शुक्रा^१च्छता । स्थधा^१रारश्
 ४या । वारिजाम् । गोरश्मा । तामक्षरान् । औश्
 रश्मोवा ॥ (२) सुताइन्द्रोवा । यात्राया^१रश्मवायि । वरु
 णाया । मरु^१रङ्गा^१रश्मयाः । सोरमाः । आ^१रश्मि ।
 त्वविष्णवा । औश्होवा । चो^१पृई । डा (३) ॥ १६* ॥ [१०] १८

अथ प्रगाथात्मके—

द्वितीयमूक्ते, प्रथमा ।

प्रसोमदेववीतयो^१सिन्धुर्न^१पिष्ये^१अणं^१सा ।

अग्निः^१पयसाम^१दिरोनजा^१गृवि^१रक्षा^१कोश^१मधश्चुतम् ॥ १॥

हे “सोम !” त्वं “देववीतये” देवानां पानाय तदर्थम् “अर्ण-
सा” वसन्तीवर्याख्येन “प्रपिप्ये” प्राप्यायसे । तत्र दृष्टान्तः—
“सिन्धुः न” यथा सिन्धुः उदकेन प्रपिप्ये प्रप्यायते तद्वत् [प्यायते-
र्लिटि “लिङाङीञ(६, १, २८)”—इति षी-भावः], स त्वं “मदिरो
न” मदकरः सुरादिरिव “जागृविः” जागरणशीलः । यद्वा,
नेति सम्प्रत्यर्थम् । इदानीं मदकरी जागरणशीलस्त्वम् ।
“अंशोः” लताखण्डस्य “पयसा” रसेन “मधुश्रुतं” मधुर-रसस्य
स्वारयितारं “कोशं” द्रोणकलशम् “अच्छ” अभि गच्छसि ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आह्वयतो अर्जुनो अत्के अव्यतप्रियः सूनुर्मर्ज्यः ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तमोऽहिन्वन्त्यपसोयथारथन्नदौष्ठागमस्त्योः ॥ २ ॥ २० ॥

“ह्वयतः” स्पृहणीयः “प्रियः” प्रीणयिता “सूनुर्न” सूनुरिव
“मर्ज्यः” मार्जनीयः “अर्जुनः” श्वेतवर्णः ‡ सोमः “अत्के”
रूपे विचित्रे ¶ “आ अव्यत” आह्वयति “तम्” “इम्” §

● ख० वे० ७, ५, १४, ३ ।

† ‘अत्क शौभाजयं साम’—इति वि० ।

‡ ‘अर्जुनः’—तृणसवर्णः । “एतानि अर्जुनानि सोमप्रतिनिधौ” तस्मादर्जु-
न इत्युक्तम्—इति वि० ।

¶ ‘अत्कं—मिक्ते, सोमप्रवासित’—इति वि० ।

§ ‘तम् इम्—इति प्रदपूरणः’—इति वि० ।

एनं सोमम् अङ्गुल्यः “नदीषु” नदमानासु वसतीवरीषु
 “गभस्त्वोः” वाहोः “आ” आभिमुख्येन “हिवन्ति” प्रेरयन्ति ।
 तत्र दृष्टान्तः—“अपसः यथा” वैगवन्तः शूराः जनाः “रघ”
 सङ्ग्रामेषु प्रेरयन्ति तद्वत् ॥

“अर्जुनः”—“अर्जुने”—इति पाठौ ॥ २ ॥ २०

॥ यौधाजयम् ॥ ^{३ २}प्रसो^२३१ । ^२मा^४३दे । व । वा^५यि
^३तार^५३४यायि । ^१सायि^२न्धू^१३ः । ^{३ २ १}नपा^२र्यि । ^{३ २ १}प्येआ^२३४पू ।
^३णार^५३४सा । ^२अ^{१ १ १}शोःपया । सा । ^{२ २}मदिरो^१२ । नजा
^३३४पू । ^३गृ^५२३४वीः । ^२अ^१क्का^१२ । ^{३ २}कोशार^१म् । ^{३ २}मधू^१३४पू ।
^३शूर^५२३४ताम् ॥ (१) ^{३ २}अ^२क्का^४३१ । ^५को^{१ ३}३शम् । म । ^{३ २}धू^१शूर
^५३४ताम् । ^{१ २}आ^{१ २}क्का^१३ । ^{३ २}कोशार^१म् । ^३मधू^१३४पू । ^३शूर
^३३४ताम् । ^{२ २ १ २ १}आ^२द्या^{१ २}र्यता । अ । ^{३ २}जु^१नोआ^१२ । ^{३ २}त्वेआ^१३
^३४पू । ^५व्या^२३४ता । ^२प्रिया^१२ः । ^{३ २}हू^१नूरः । नमा^१३४पू ।
^३जी^५२३४याः ॥ (२) ^{३ २}प्रिया^२३१ः । ^{२ ४}हू^५३नुः । न । ^{३ २}मा^१र्जा

२३४याः । प्रायाः । हनूः । नमाः४५ । जी२३४
याः । तमायिहिन्वा । ति । अपसो२ । यथा३४५ ।
रा२३४याम् । नदा२यि । षूवा२ । गभा३४५ । स्ती
२३४योः(३) ॥ १३ * ॥ [१]

॥ वज्रम् ॥ प्रसो४म । दा४यिववो । तया३यि ।
सायिन्धूः । नपायि । प्येआर्णासा३ । आ२गोःपया
३ । सामा२दा२३४यिराः । नजा । गृवौवाओ२३४वा ।
अका । कोशौवाओ२३४वा । मधू५युताम् ॥ (१) अ
च्छा४को । शा४मधु । शुता३म् । आच्छा । कोशाम् ।
मधू५युता३म् । आहृय्यजो३ । अर्जु२नो२३४आ । त्की
अ । व्यजौवाओ२३४वा । प्रियः । हनौवाओ२३४वा ।
नमा५र्जियाः ॥ (२) प्रिया४ःह । नू४र्नम । जिया३ः ।

^{४ ५} प्रायाः । ^{१२} प्रायाः । ^१ छनूः । ^२ नमाञ्जीयाः । ^{१ २} जामी
^१ हिन्वाः । ^१ तियाः ^१ पारः ^५ ३४साः । ^२ यथा । ^{१ १} रथौवा ^१ औरः
^५ ४वा । ^२ नदी । ^{३ १} षुवौवा ^१ और ^५ २४वा । ^४ गभापुस्तियोः । ^४ हो
 पुई । डा (३) ॥ १३* ॥ [२]

^{५ ४} ॥ अभीवर्त्तः ॥ ^१ प्रसोऽमाऽदेववौतयोवा । ^{५ ५} सायिन्धु
^१ र्जपि । ^{२ १ १} प्येआर्णाः ^१ १साः ^२ २ । ^{१ २} आः ^१ शोः ^{१ २} पयाः ^{१ २} १२२३४ । ^{१ २} सा
^{४ ५} मदिरः । ^{१ १ २} नजागृ ^{१ १} श्वीः ^{१ १} २ । ^{१ १} अक्काको ^{१ १} १शाः ^{१ १} २म् । ^{१ १} मधुः ।
^१ श्रूः ^{१ १ १ १} ३४५ । ^१ तारः ^{१ १ १ १} ३४५म् (१) ॥ १३* ॥ [३]

^{५ २ १ ४ ५ ४ ५} ॥ गौगवम् ॥ ^१ प्रसोऽमाऽदेववौतयायि । ^१ सायिन्धूः ।
^{१ २ १} नपियेआः । ^{४ ५} णासा । ^{२ १ २} आः ^४ शोः ^१ पयसामद्दारः ^१ ३यिरोः ।
^{३ २ ४ ५} नजागृ ^{२ १ २} श्वीः । ^{३ २ ४ ५} आः ^{३ २ ४ ५} शोः ^{३ २ ४ ५} पयसामदिरः । ^{३ २ ४ ५} नजागृ ^{३ २ ४ ५} श्वीः ।

^{१ २ २२} आच्छाको । ^१ शा । ^{२ २} औश्हो । ^{१ ५} मधो२३४वा । ^४ श्रू५तो

६द्वायि(१) ॥ १७ * ॥ [४]

^{१ २ १ २ १ २ १} ॥ शुद्धाशुद्धीयाद्यम्[†] ॥ प्रसोमदेववीतयायि । सि

^{२ १ १} न्धुर्न^२पिथ्ये^१ अर्णा२३सा । ^{१ २} अ^{२ २ १ २}शोपयसामदिरोनजागृ२३

^२ वीः । ^{१ २} अच्छाको२३शा३म् । ^१ मा२ । ^{३ २ ५ २ २} धुश्चू३४औहोवा ।

^{२ १ १ १ १} तार३४५म्(१) ॥ १८ ‡ ॥ [५]

^{५ २ २ ४ २ ५ ४ २ ५} ॥ गौङ्गवम् ॥ प्रसोमा३देववीतयायि । ^१ सायिन्धू

^{१ ४ २ २} रः । ^{४ ५} नपिथ्ये^{१ १ २} आ३ । ^२ णासा । ^{१ १ २} अ^२शोपयसामदा३र्यि

^{१ ४ २ ४ ५} रो२ । ^{२ १ २} नजा३गृवी । ^{२ १ २} अ^{२ २}शोपयसामदिरः । ^{३ २} नजा३

^{४ ५} गृवीः । ^{१ २ २ २} आच्छाको । ^१ शा । ^{१ २} औश्हो । ^{१ ५} मधो२३४वा ।

^{४ ५ २ ४ ५ ४ ५} श्रू५तो६द्वायि ॥ (१) ^{५ २ २ ४ ५ ४ ५} अच्छाको३शम्माधुश्रुताम् । ^१ आच्छा

^{१ २ २ २} रः । ^{४ ५} कौशम्माध३ । ^{२ २ १ २} श्रूताम् । ^२ आहय्यतोअज्जुनो३

* क० गा० २ प्र० २ अ० १७ सा० । † “पदानां शुद्धाशुद्धीयम्”—इति ख० पु० पाठः ।

‡ उ० गा० २ प्र० २ अ० १८ सा० ।

^{१ १ ३२ १ ४ ५ २२ १ २ २ १}
आ२ । त्क्वेआश्वाजा । आहव्यतौअज्नुनोअ । त्क्वे

^{२ ४ ५ १ १२ १ २ २ १}
आश्वाता । प्रायःष्ट । ना । औश्हो । नमो२ ३४

^{५ ४ ५ ५ २ ४ ५ ४ ५ १}
वा । जापुयोईहायि ॥ (२) प्रियःह्वनुर्नमर्जियाः । पा

^{१२ ३ २ ४ ५ २१२}
या२ः । ह्वनुर्नमा३ । जायाः । तमीह्विन्वन्त्यपा२३

^{१ १ ३२ ४ ५ २ १२ ३२}
सो२ । यथाश्वायाम् । तमीह्विन्वन्त्यपतः । यथा३

^{४ ५ १२२ १ २ २ १ ५}
स्थाम् । नादीषु । आ । औश्हो । गभो२३४वा ।

^{४ ५}
स्तापुयोईहायि ३ ॥ १७ * ॥ [ई]

^{३१ २ ४ ५}
॥ यौधाजयेक्षारान्तम् ॥ प्रुसे३१ । मा३दे । व ।

^{२ ३ ५ १ २ १ २}
वायिता२३४यायि । सायिन्धू३ः । नपाऽरयि । ष्येअ

^{३११११ २ १ ११ २२ १}
र्णा३४५ । सार३४५ । अग्नीःपया । सा । मदिराऽर ।

^{२ ३११११ २ १}
नजागृ३४५ । वी२३४पुः । अक्का२ । कोशाऽरम् ।

^{३११११ ३ ३ २ ४}
मधुश्चू३४५ । तार३४५म् ॥ (१) अक्का३१ । को३शम् ।

^१ होवा । ^१ ए३ । ^{३ १ १ १ १} मधू२रसु१ता२३४पु॒म् ॥ (१) ^{५ ४ २} अ॒च्छा॒को॒श्
^{४ ५ ४} इ॒श॒म॒धु॒श्चु॒ता॒म् । ^{१ ४ १४} आ॒च्छा॒को॒श॒म् । ^{१ १} मधू॒सू॒ता॒म् ।
^{४४ २} आ॒हा॒३ । ^५ द्यौ॒श्चो॒३ । ^१ वा । ^{१ ४} र्यतो॒अ॒जु॒नो॒अ॒त्के॒अ॒व्या॒ता
^१ २ । ^{१ १ १ १ १} प्रि॒या॒२३ । ^{५ ४ ४ ५ ४} ह॒र॒ना॒२३४ औ॒द्यो॒वा । ^१ ए३ । ^१ न॒मा॒२
^{१ २ १ १ १ १} र्जि॒र्या॒२३४५ ॥ (२) ^{५ २ ४ ५ ४} प्रि॒यः ह॒नु॒र्न॒म॒र्जि॒याः । ^{१ २} प्रा॒यः ह॒नुः ।
^{१ २} न॒मा॒र्ज्या॒श्या॒ः । ^{२ २} त॒मा॒श॒यि॒म् । ^{५ १ २} द्यौ॒श्चो॒३वा । ^१ हि॒न्व
^{४ २} न॒त्य॒प॒सो॒य॒था॒रा॒श्या॒२म् । ^१ न॒दा॒२३॒यि । ^{१ १ १ ५ ४} धू॒र॒वा॒२३४ औ॒
^४ द्यो॒वा । ^१ ए३ । ^{३ १ १ १ १} ग॒भा॒२स्ति॒यो॒२३४५ः (३) ॥ १२ * ॥ [८]

^{५ ४ २ ४ ४ ५ ४} ॥ पौ॒रु॒ह॒न्म॒न॒म् ॥ ^५ प्र॒सो॒मा॒३दे॒व॒वी॒त॒या॒यि । ^१ सा॒यि

^१ न्यु॒र्न॒पि । ^{४ १ २} प्ये॒चा॒र्णा॒श्या॒२ । ^१ णा॒सा॒२ । ^{१ ४ १} आ॒शोः॒प॒य ।
^{१ ५} सा । ^१ म॒दि॒रो॒३ । ^{१ २} म॒दि॒रो॒३ । ^{१ १ ३} ना॒जा॒गृ॒२३४वी । ^५ आ

^{१ २ १} अकाकोशम् । ^{१ १} माधुयूर३४ताम् । ^५ मधूपुशुताम् ॥ (१)

^{५ २ १ ४ ५ ४ ५} अचकाकोशमधुशुताम् । ^{१ २ २ २} आकाकोशम् । ^{१ २} मधुयू

^१ शतारम् । ^{१ १} श्रुतारम् । ^{१ ५} आहव्यतः । ^२ आ । ^२ जुनो

^१ आ३ । ^{१ २ १} जुनोआ३ । ^{१ १ १ ५} त्केचव्या२३४ता । ^{१ २ २ १} प्रायःसूनुः ।

^{१ १ १ ५} नमाजर्जा२३४याः । ^४ नमापुर्जियाः ॥ (२) ^{५ १ ४ ५} प्रियःसूनुर्न

^{४ ५} मर्जियाः । ^{१ २ २} प्रायःसूनुः । ^{१ २} नमाजर्जाश्या२ः । ^१ जाया२ः ।

^{१ २ १} तामीर्चिन्व । ^{१ ५} तायि । ^१ अपसो३ । ^{१ १} अपसो३ । ^{१ २} याथा

^{२ ५} रा२३४याम् । ^{१ २ २ १} नादीषुवा । ^{१ ३ ५} गाभस्ता२३४योः । ^४ गभा

^४ प्रस्तियोः । ^४ होपुई । ^४ डा(३) ॥ १३ * ॥ [८]

॥ हारायणम् ॥ ^{१ २} प्रसोमदौहो ^२ रयिववीतयायि । ^{२ १} सा

^{२ २} यिन्धुर्नपिप्ये ^{१ २} अर्णसा । ^{१ २} शोःपाश्या । ^{१ २} सामदिरो । न

२ १ १ २ २ १ १ ५
आश्वा । गृवीरः । अक्काकोशमधोवाश्चो२३४वा ।

४ ५ १ २ २ १
सूतोद्हायि ॥ (१) अक्काकोशौहो रयिमधुश्रुताम् । आ

२ २ २ १ १ १ १ २
क्काकोशमधुश्रुताम् । आहार्यातो । अज्ज् नोआ

२ २ २ १ १ २ २ १ ५
त्केआश्वा । व्यातारः । प्रियःसूनुर्नमोवाश्चो२३४वा ।

४ ५ १ २ २ १
जाप्रयोद्हायि ॥ (२) प्रियःसूनौहो रयिनमर्जिजयाः । प्रा

२ १ १ १
यःसूनुर्नमर्जिजयः । तमायिहाशयिन्वा । तियपसो ।

२ २ १ १ २ २ १ ५
यथाश्वायि । राथारम् । नदोषुवागभोवाश्चो२३४वा ।

४ ५
स्ताप्रयोद्हायि(३) ॥ १४ * ॥ [१०]

१ १ २ ४ ४ ४
॥ दिहिङ्कारं वामदेव्यम् ॥ प्रसोमाश्च देववीतयायि ।

१ २ २ २ २ २ २
सायिन्धुर्नपिये अर्णसांशोः पयसामदिरोऽनजौहो ३ ।

१ १ २ १ २ २ २ २ १
ऊम्मारः । गृ२३वीः । अक्काकोशमधोहो । ऊम्मा

२। शुताम् । औ२३होवा ॥(१) अच्काको ३ २ ३ श

मधुशुताम् । आच्काकोशमधुशुतमाह्व्यतोअर्जुनो

आत्कओहो३ । ऊम्मा२ । व्या२३ता । प्रियस्त्वनुर्नमौ

हो३ । ऊम्मा२ । जिया । औ३होवा ॥(२) प्रियःस्त्वर

नुर्नमर्जियाः । प्रायःस्त्वनुर्नमर्जियस्तमोहिन्वत्यपसो

यथौहो३ । ऊम्मा२ । रा२३थाम् । नदीषुवाऽगमौ

हो३ । ऊम्मा२ । स्तियोः । औ २ ३ होवा । हो५

ई । डा(३) ॥ १७ ॥ [११]

॥ कावुरयतरं ॥ प्रासोमदेववीनयायि । सिन्धुर्न

पायि । ष्ये३आर्णा३सा । अ३शोःपयसामदिरोनजागृ

वार३४एहि । अच्काको२३४शाम् । मधा३१उवा२३ ।

ए३ । स्तमा ॥(१) आच्काकोशमधुशुताम् । अच्का

कोशाम् । मा३धु३नु३ताम् । आ३र्च्य३तो३अर्जु३नो३अ३त्के३

अ३व्य३ता३२३४ऐ३ह्यै । आ३र्हा३र्या३३तो । अ३र्जु३नो३अ३म्के३अ

व्य३ता३२३४ऐ३ह्यै । पि॒यःसू॒२३४नूः । म॒मा३१उ॒वा३२३ । ए३३ ।

जि॒य॒आ ॥ (२) प्रा॒यःसू॒नु॒र्न॒म॒र्जि॒याः । पि॒यःसू॒नूः । ना

३मा॒ज्जा॒श्याः । तमी॒ष्टि॒न्वन्त्य॒प॒सो॒य॒था३२३४मै॒ह्यै । ता

३मा॒यि॒ष्टि॒हा॒श्रि॒न्वा । ति॒य॒प॒सो॒य॒था॒र॒था३२३४मै॒ह्यै । न॒दौ

पू॒२३४वा । ग॒भा३१उ॒वा३२३ । ए३३ । स्ति॒यो॒वा ॥ ६* ॥ [१२] २०

अथ तृतीयतृचे, '†' प्रथमा ।

प्र॒सो॒मा॒सो॒म॒द॒च्यु॒तः॒अ॒व॒से॒नो॒म॒घो॒ना॒म ।

सु॒ता॒वि॒द॒ये॒अ॒क्र॒मुः ॥ १ ॥ ३ ॥

० क० मा० २२ प्र० १ अ० ६ सा० ।

† 'उक्त्वोमाध्यन्दिनः पवमानः, उक्त्वानि गायत्र्याणि ००० । आर्चयः पवमानो
वक्त्रयः तस्य ज्योतिष्टोमवत् हव्यांसि सान्नाह्यावनामर्धयेरिषोचाने'—इति वि० ।

‡ क० आ० ५, १, १ (१ भा० ३० पु०) = ऋ० वे० ६, ८, ११, १ ।

“सोमासः” सोमाः “मदद्यतः” मदन्नाविणः “सुताः”
अभिषुताः सन्तः “विदधे” यस्मै “मघोनां” हविष्यतां “नः”
अस्माकं “अवसे” अन्नाय कीर्त्तये वा “प्र अक्रमुः” प्र गच्छन्ति ॥ •

“मघोनां”-“मघोनः”—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ १२ ३ १ २ २
आदी० च सोयथागणं विश्वस्याविवशन्मतिम् ।

२ ३ १ २२
अत्योनगोभिरज्यते ॥ २ * ॥

“आत्” अपिच “ईम्” अयं सोमः “हंसो” यथा “गणं”
जनसङ्घं स्वगतिविशेषेण स्वनेन वा प्रविशति, तद्वत् “विश्वस्य”
सर्वस्य स्तोत्रजनस्य “मतिं” स्तुतिं बुद्धिं वा “अवीवशत्” वृशं
नयति ; स च सोमः “अत्यो न” अश्व इव “गोभिः” गव्यैरुदकै
र्वा “अज्यते” सिध्यते सिन्धौक्रियते ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आदी० न्निनतस्यपोषणोहरि० ह्विन्वन्त्यद्रिभिः ।

१ २ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रायपीतये ॥ ३ ‡ ॥ २१

० ख० वे० ६, ८, २१, २ ।

† ‘हंसः—आदित्यः’—इति वि० ।

‡ ख० वे० ६, ८, २२, ३ । अचोवच पुनः ५, १, ४, २ । परं तत्र तु “इतन्नि
तस्य”—इति पाठः ।

“आत्” अयिष “ईम्” एनं “हरिं” हरितवर्णम् “इन्दुम्”
 सोमं “त्रितस्य” ऋषेः “योषणः” * अङ्गुलयः “अद्रिभिः”
 ग्रावभिः “हिव्वन्ति” । किमर्थम् ? इन्द्राय इन्द्रस्य “पीतये”
 पानार्थम् ॥ ३ ॥ २१

॥ स०^{१८ २२ २}हितम् ॥ प्रसोमासोम । दा^१रच्युताः । अ^१
 वा^१र । सा^२र३यिनो । मा^१रघोनाम् । सू^१र३ताः ।
 वा^१रयिदा । धे^{३८}आर३ । हाउवा३ । का^२र३४
 मूः^५ (१) ॥ १४† ॥ [१]

॥ आशु^{१ २ २ १ २}भार्गवम् ॥ प्रसोमासोम । दच्युताः ।
 आवसेनो३ । मा^{१ १ ३ ५}रघोर३४नाम् । सुतावा१यि । दा^{१ २}र ।
 धे^{३२ २}आ३ । का^{१ ५ ५}र३४मोद्दयि(१) ॥ २० ‡ ॥ [२] २१

* ‘योषणः’—युमिश्रणं, मिश्रणकर्तारः ऋत्विजः,—इति वि० ।

† उ० गा० १ प्र० ९ अ० १४ सू० ।

‡ उ० गा० ११ प्र० १ अ० १० सू० ।

अथैकैर्च चतुर्थसूक्तेः—प्रथमा ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अयापवस्वदेवयूरेभन्पर्येषिविश्वतः ।

२ ३ १ २
मधोर्धाराअसृक्षत ॥ १ ॥ †

हे सोम ! “देवयुः” देवान् कामयमानः त्वम् “अया” अनया धारया “पवस्व” चर । ततः “रेभन्” शब्दायमानः “पवित्रं” “विश्वतः” “पर्येषि” परिगच्छसि । अनन्तरं “मधोः” मदकरस्य तव “धाराः” आत्मोयाः “असृक्षत” सृज्यन्ते ॥

अत्र द्वितीय-तृतीय-पादौ व्यत्ययेन ‡ पाठौ ॥ १ ॥

अथैकैर्च पञ्चमे—प्रथमा ॥ ।

१ २ ३ १ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पवतेर्ह्यतोक्षरिरतिङ्गराप्सिरुद्धा ।

२क २२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अभ्यर्षस्तोहभ्योवीरवद्यशः ॥ २ ॥ §

• भूली, गानप्रत्ये, पदकारनये, विवरणमते चेदमपि सूक्तं तृचं ; तथाचेदमेव सूक्तमस्य प्रपाठकस्यान्यमिति ।

† सू० वे० ७, ४, ११, ४ ।

‡ तथाच—“अयापवस्वदेवयुर्मधोर्धाराअसृक्षत । रेभन्पर्येषिविश्वतः”—इति सू० पाठः ।

॥ भूलादिमते लिख्यत्कृद्वाविंशति-सूक्तस्य द्वितीयेति ।

§ सू० भा० ६, २, ३, ११ (२ भा० २२० पृ०) = सू० वे० ७, ५, ११, ३ ।

“हृथ्यतः” स्पृहणीयः “हरिः” हरितवर्णः सोमः “रंघ्रा”
 तृतीयाया आकारः साधुवेगेन “हरांसि” कुटिलानि अमृजून
 पवित्राणि “अति पवते” अतीत्य गच्छति । किं कुर्वन् ? स्तोत्रभ्यः
 “वीरवत्” पुत्रयुक्तं “यशः” “अभ्यर्षन्” अभिगमयन् पवते ॥ २ ॥

अथैकं षष्ठे प्रथमा * ।

१ २ ३ १२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २२

प्रसुन्वानायान्धसोमर्त्तनिवष्टतद्वचः ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २२

अपश्चानमराधसं हतामखन्नभृगवः ॥ ३ ' ॥ २२

॥ इति प्रथमः प्रपाठकः ॥

“सुन्वानाय” । षष्ठार्थे चतुर्थी (२, ३, ६२ वा०) । सुन्वानस्य अभि-
 षूयमाणस्य “अन्धसः” अदनीयस्य सोमस्य “तत्” प्रसिद्धं “वचः”
 वचनं घोषं “मर्त्तः” मारकः कर्मविघ्नकारी “न प्र वष्ट” न भजतां
 न शृणोत्विति यावत् । तथा हे स्तोतारः ! “अराधसं” साधक-
 कर्म-रहितं “श्चानम्” “अपहत” । तत्र दृष्टान्तः—“मखं न”
 यथा पुरा अपराद्धं मखम् एतन्नामानं “भृगवः” अपहतवन्तः
 तथा अपहतेत्यर्थः ॥

“प्रसुन्वानाय”-“सुन्वानस्य”, “वष्ट”-“हृत”—इति पाठौ ॥ १ ॥ २२

• मूलादिनये लिख्यम् द्वाविंशति-सूक्तस्य तृतीयेति ।

† व० आ० ६, ९, १, ८ (१ भा० १६८ पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, ९, ९ = अचै-
 वीतगायां पुनः ६, २, ३, १ ।

॥ आक्षारम् ॥ पव । तेद्वा३४ । औक्षोप्यृतोद्वा
 यिः । अतिङ्करासिर । द्वा३३या३४ । अर्षा । स्तो
 त्भ्योवायि । रा३वद्य । शा३३४५ः(३) ॥ १६ * ॥ [१]
 ॥ गौरोवितम् ॥ प्रसु । न्वाना ३ । यच्चन्धसाः । म
 र्त्तिनवष्टतद्वचा३३ः । आपश्चाना३१२३म् । अरा५धसा
 म् । द्वातामखा३१२३म् । नभोवा । गा५वो६द्वायि ॥
 (३) ॥ १७ * ॥ [२]

॥ सुज्ञानम् ॥ पवतेद्वा । र्यृतोद्वायिः । अजिङ्का
 रा२ । सिर । द्वाया । अभियार्षा २ । स्तोतृ । भ्यो
 र्वा३३४ औक्षोत्रा । रवद्यग्रय३उपा३३४५(२) ॥ १५ * ॥ [३]
 ॥ काशीजम् ॥ पवतेद्वा । र्यृतोद्वा३३रा३४यिः ।

० क० गा० १६प० २अ० १६सा० ।

† क० गा० १प० २अ० १७सा० ।

‡ क० गा० ६प० २अ० १५सा० ।

^१अजिह्वरा । ^२सिर^२ह्वा^२र^२या^२३४ । ^१अभियर्षा । ^२स्तो^२तृ^२भ्यो

^२वीर^१वत् । ^१या^३२ । ^३शा^४ २ ३ ४ । ^४औ^२हो^२वा । ^३ऊ^२ २ ३ ४

^५पा(२) ॥ १६ ॥ [४]

॥ पौष्कलम् ॥ ^{२ १ २ ४ ५}पवते^१द्द^२र्घ्य^३ । ^{१ २}तो^५द्वा^५ २ ३ ४ रायिः ।

^{२ १ २ १}अतिह्वरा । ^{२ ३}सायि^५र^{२ १}ह्वा^३र^३या^३३४ । ^३अभा^३अर्षा । ^३स्तो^३तृ

^{१ ३}भ्यो^{२ १ ३ १ १ १ १}२३४५वा^२६५^२इयि । ^२रव^२द्य^२शा^२र^२३४५ः ॥ २ ॥ [५] २२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः ॥ ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।

युमर्थाश्चतुरोदेयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ १ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-

श्रीवीर-बुद्ध-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-

चार्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-

प्रकाशे उत्तरायन्ये द्वितीयोऽध्यायः ॥

* ऊ० गा० ६ प्र० २ अ० १६ सू० ।

† ऊ० गा० ६ प्र० २ अ० २ सू० ।

‡ 'विद्वत्सौमिकं प्रथममहः समाप्तम्'—इति वि० ।

॥ 'समाप्तश्च प्रथमः प्रपाठकः'—इति वि० मूलादिसर्वसम्मतञ्च तदिति ज्ञम् ।

यस्य निश्चसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।

निर्भमे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः आरभ्यते * ॥

तव,

पवस्ववाचइति पञ्चतृचात्मके प्रथमखण्डे —

प्रथमल्लेखे—प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

पवस्ववाचोऽग्निः सोमचित्राभिस्तुतिभिः ।

३ १ १ २ ३ १ २

अभिविश्वानिकाव्या ॥ १ ॥ †

हे “सोम !” “अग्निः” मुख्यः‡ त्वं “चित्राभिः” पूज-
नीयैः॥ “स्तुतिभिः” रक्षणीयैः सह “वाचः” अस्मदीयाः स्तुतीः

* ‘इदानीं द्वितीयमहाराभ्यतं द्वितीयं प्रपाठकः । पञ्चदशसौमिकं द्वितीय-
महः’—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७, १, २८, ५ ।

‡ ‘अग्निः प्रधानभूताः’—इति वि० । अग्निश्चन्द्रश्चैव वाचस्यौ भगवान्
यास्तुः—“अग्निगमनेनेति वाग्निगमनेनेति वाग्निगम्यादिन इति वा । अपिवाग्निमित्ये-
तदनर्थकमुपपन्नमाददीत”—इति ६, १५ ।

¶ ‘चित्राभिः विचित्राभिः नानाप्रकारैः’—इति वि० ।

प्रति “पवस्व” । [उत्तरार्द्धे उक्तमेवार्थं विशदयति—]
 “विश्वानि” सर्वाणि “काव्या” काव्यानि स्तुत्यात्मकानि वाक्यानि
 “अभि” पवस्वेति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ ५ ३ १ ९ ३ २ १ १ २ १ २ ३ १ २
 त्वस्मुद्रिया अपोग्रियो वाच ईरयन् ।

१ २
 पवस्व विश्वचर्षणे ॥ २ ॥ *

हे “विश्वचर्षणे” सर्वस्य द्रष्टः सोम ! “अग्रियः” मुख्यः
 त्वं “वाचः” † “ईरयन्” प्रेरयन् “समुद्रियाः” आन्तरिक्षाणि‡
 “अपः” उदकानि॥ “पवस्व” धारया चर ॥

“विश्वचर्षणे”-“विश्वमेजय”—इति छन्दोग-बहुवानां
 पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ २ २ ३ १ २
 तुभ्येमाभुवना कवे महिम्ने सोमतस्थिरे ।

१ २ ३ १ २
 तुभ्यन्धावन्ति धेनवः ॥ ३ § ॥ १

* ऋ० वे० ७, १, २९, १ ।

† ‘अग्रियो वाचः’—प्रधानभूताः ऋग्यजुःसामलक्षणाः—इति वि० ।

‡ ‘समुद्रिः’—इत्यन्तरिक्षनामसु निधण्टौ पञ्चदशं पदम् (१, ३) ।

॥ ‘समुद्रिया अपः’—समुद्रं भवाः आपः समुद्रियाः । द्रोणकलशः समुद्रः—
 इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, २९, १ ।

हे “कवे” कान्तकर्मन् सोम ! “तुभ्यं” तव “महिम्ने”
 “इमा” इमानि “भुवना” भुवनानि “तस्थिरे” तिष्ठन्ति त्वामेव
 पुरस्कुर्वन्तीत्यर्थः । किञ्च “धेनवः” नवप्रसूतिकाः देवानां
 हविःप्रदानेन प्रीणयित्वा गो गावः * “तुभ्यं” त्वदर्थमेव ‘आशिरं
 प्रयस्व मे’—इति “धावन्ति” आगच्छन्ति ॥

“धावन्तिधेनवः”—इति कन्दोगाः, “अर्घन्तिधेनवः”—
 इति बह्वृचाः ॥ ३ ॥ १

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

१ ५ २ १ २ ३ २ ३ १ २ २ २ २ १ २
 पवस्वेन्दोवृषासुतःकृधीनोयशसोजने ।

२ ३ २ ३ १ २
 विश्वाअपद्विषोजहि ॥ १ ॥ †

हे “इन्दो” सोम ! “सुतः” अभिषुतः “वृषा” कामानां
 वर्धिता “पवस्व” धारया चर “जने” जनपदे “नः” अस्मान्
 “यशसः” यशस्विनः “कृधि” कुरु ; “विश्वा” विश्वान् सर्वान्
 “द्विषः” द्वेष्टृन् शत्रून् “अपजहि” मारय च ॥ १ ॥

* ‘धेनवः’—गावः । अथवा धेनव आदित्यरश्मयः—इति वि० ।

† ख० आ० ५, १, ५, ३ (२भा० ३२४०) = ऋ० वे० ७, १, २३, ९ ।

हे “सोम !” “ते” तव “या” यानि “भौमानि” शत्रूणां
भयङ्कराणि “तिग्मानि” तीक्ष्णानि “आयुधा” आयुधानि *
“धुर्वणे” शत्रुबधार्थं सन्ति तैः “आयुधैः” “समस्य” सर्वस्य
शत्रोः “निदः” निन्दायुक्तं “नः” अस्मान् “रक्ष” पालय ॥३॥ २

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा ।

१२ ११ १ २ ११२ ३१२
वृषासोमद्युमा^१असिवृषादेववृषव्रतः ।

२१११
वृषाधर्माणिदध्रिषे ॥ १ ॥ ‡

हे “सोम !” “वृषा” कामानां वर्षिता त्वं “द्युमान्” दीप्ति-
मान् “असि” । अपिच हे “देव” द्योतमान सोम ! “वृषा”
त्वं “वृषव्रतः” वर्षणशीलकर्मासि । किञ्च हे सोम ! “वृषा”
त्वं “धर्माणि” देवानां मनुष्याणाञ्च हितानि कर्माणि “दध्रिषे”
धारयसि ॥

“दध्रिषे”-“दध्रिषे”—इति पाठौ ॥ १ ॥

* ‘शत्रूणां विप्रासतोमरादीनि’—इति वि० ।

† ‘निदः’—नितरां वृषाति निदः, तस्य सम्बोधनं निदः—इति वि० ।

‡ इ० आ० इ० ६, १, २, ८ (२भा० ६३ ४०) = ऋ० वे० ७, १, ३८, १ ।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २
 वृष्णस्तेवृष्णांश्शवोवृषावनंवृषासुतः ।

१२ २२ ३ १२ २२

सत्वंवृषन्वृषेदसि ॥ २ ॥ *

हे “वृषन्” कामानां वर्षक सोम ! “वृष्णोः” वर्षितुः †
 “ते” तव “शवः” बलं ‡ “वृष्णां” वर्षणशीलं भवति “वनं”
 तव भजनमपि, “वृषा” वर्षणशीलं “सुतः” अभिषुतः तव
 रसोऽपि “वृषा” वर्षणशीलः “सत्वं” “वृषेदसि” वर्षणशील
 एवासि भवसि ॥

“सुतोमदः”—इति, “सत्वंसत्यम्”—इति च पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ १ २ ३ २ ३ १२ २२ ३ १२ २२
 अश्वोनचक्रदोवृषासङ्गाइन्दोसमर्वतः ।

१ २ ३ १२ २२

विनोरायेदुरोवृधि ॥ ३ ॥ ॥ ३

हे “इन्दो” सोम ! “वृषा” त्वं “अश्वोन” अश्वइव “सङ्गादः”
 सङ्गन्दसे । अपिच “गाः” पशून् “अर्वतः” अश्वान् अस्मभ्यं

* ऋ० वे० ७, १, ३८, १ ।

† ‘वृष्णोः’—वृषु सेचने (आ० पर०) सेचन-समर्थस्य ते—इति वि० ।

‡ “शवः”—इति बलनामस्य निघण्टौ तृतीयं पदम् (१, ८) ।

॥ ऋ० वे० ७, १, ३८, ३ ।

३ प्र० १ ख० ४ सू० १, २] उत्तरार्द्धिकः ।

२८८

सम्प्रयच्छसीति शेषः । किञ्च “नः” अस्माकं * “राये”
धनाय “दुरः” दाराणि “विवधि” विवृतानि कुरु ॥ १ ॥ ३

अथ चतुर्थतृचे—प्रथमा ।

२ ३ १ २ ३ १ १ ३ १ ९

वृषाक्षसिभानुनाद्युमन्तन्वाह्वामहे ।

१ २ ३ १ २

पवमानस्वर्दृशम् ॥ १ ॥ †

हे सोम ! त्वं “वृषासि हि” अभिमत-फलानां वर्षिता
भवसि खलु । तस्मात् हे “पवमान” पूयमान वा सोम !
“स्वर्दृश” सर्वस्य [सूर्यस्य वा] द्रष्टारं [सर्वे देवैर्द्रष्टव्यं वा]
“भानुना” तेजसा “द्युमन्त” दीप्तिमन्तम् अतिशयेन तेजस्विन-
मित्यर्थः [स्तुतिमन्तं वा], “त्वा” त्वां वयं “ह्वामहे” यज्ञेषु
आह्वयामहे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ १ १ २ ३ १ २ ३ १ २

यदङ्गिःपरिषिच्यसेममृज्यमानआयुभिः ।

१ २ ३ १ २ १ २

द्रोणेसधस्यमश्रुषे ॥ २ ॥ ‡

* ‘नः-अस्माकम्’—इति वि० ।

† ऋ० आ० ५, २, ५, ४ (१ भा० ३३ पृ०) = ऋ० वे० ७, २, १, ४ ।

‡ ऋ० वे० ७, २, १, १ ।

हे सोम ! त्वम् “आयुभिः” मनुष्यैः * ऋत्विग्भिः “मृज्य-
मानः” अतिशयेन शोध्यमानः सन् “अद्भिः” वसतीवर्याख्याभिः
“यद्” यदा “परि सिच्यसे” परितः सिच्यमानो भवसि, तदानीं
“द्रोणे” द्रोणकलशेन गृह्यमाणः सन् “सधस्थ” सह तिष्ठत्यचेति
सधस्थं स्थानं ग्रहचमसादिकम् “अशुषे” व्याप्नोषि ॥

“मृज्यमानआयुभिः”-“मृज्यमानोगभस्त्वोः”—इति, “द्रोणे”-
“द्रुणा”—इति च पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १ २
आपवस्वसुवीर्यमृज्यमानः स्वायुधः ।

३ १ २ ३ १ २
इहोषिन्दवागहि ॥ ३ † ॥ ४

हे “स्वायुध” ! यन्ने ‘स्फुर-कपालादीनि दशायुधानि-इत्यभि-
धीयन्ते, शोभनानि तानि यस्य स तथोक्तः । यद्वा धनुरादीन्या-
युधानि यस्य सः, तादृश हे सोम ! त्वं “मृज्यमानः” मोदमानः
सन् [अन्तर्णीतिस्थर्थः] देवान् स्वयं मादयन् ‡ “सुवीर्य”
शोभनवीर्योपेतं पुत्रादिकमस्माकम् “आ पवस्व” पवतिर्गत्यर्थः,
आ प्रापय । किञ्च हे इन्द्रो ! ग्रहेषु चमसेषु रक्षणशील सोम !

* “आयुधः”—इति निघण्टौ मनुष्यनामसु सप्तदशं पदम् (२ ३) ।

† ऋ० वे० ७, १, १, ५ ।

‡ ‘मृज्यमानः—शोध्यमानः तप्यमानोवा’—इति वि० ।

“इह उ” इहैव ‡ अस्मदीये यज्ञे “स आगहि” सुष्ठु †
आगच्छ ॥ ३ ॥ ४

अथ पञ्चमतृचे—प्रथमा ।

१ २ ३ १ ३ १ २ ३ २
पवमानस्य ते वयम्यवित्रमभ्युन्दतः ।

३ १ ३ २
सखित्वमावृणीमहे ॥ १ ॥ ‡

हे सोम ! “पवित्रम् अभ्युन्दतः” पवित्रमभिदयतः † “पव-
मानस्य” चरतस्य “ते” तव “सखित्वं” सख्यं वयम् अमहीयवः
आङ्गिरसाः स्तोतारः “आ वृणीमहे” प्रार्थयामहे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
ये ते पवित्रमूमयो भिन्नरन्तिधारया ।

१ २
तेभिर्नः सोममृडय ॥ २ ॥ §

हे सोम ! “ते” तव “ये” ऊर्ध्वयः तरङ्गाः ॥ “पवित्रं”

* † ‘उ, सु—इति द्वावपि पदपूरणौ,—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, १८, ४ ।

¶ ‘अभ्युन्दतः—आर्द्रं कुर्वन्—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, १८, ५ ।

॥ ‘ऊर्ध्वयः—त्वदीयाः, सोमसङ्घाताः—इति वि० ।

“धारया” “अभि चरन्ति” तेभिः तैः जर्मिभिः “नः” अस्मान्
 “मृडय” सुखय ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ २ २ २ ३ १ १ ३ १ २
 सनः पुनान आभर रयिं वीरवतीमिषम् ।

१ २ ३ १ २
 ईशानः सोमविश्वतः ॥ ३ * ॥ ५

हे सोम ! “विश्वतः” सर्वस्य जगतः “ईशानः” ईश्वरः
 “सः” अभिषुतः “पुनानः” पूयमानः त्वं “नः” अस्मभ्यं “रयिं”
 धनं “वीरवतीं” पुत्राद्युपेतम् “इषम्” † तम् “आभर”
 आहर ॥ ३ ॥ ५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायणस्य तृतीयस्याध्यायस्य

प्रथमः खण्डः ‡ ॥ १ ॥

—000—

* सू० वे० ७, १, १८, १ ।

† ‘इषं—दृष्टिमन्त्रं वा—इति वि० ।

‡ ‘उक्तं बहिष्यवसानम्’—इति वि० ।

अथ द्वितीयखण्डे *—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

३ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
अग्निन्दुतवृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।

३ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥ †

[अग्नेर्दूतत्वमेतन्नव्याख्याने तैत्तिरीयब्राह्मणे समाख्या-
यते—‘अग्निर्देवानां दूत आसीदुशनाकाव्योऽसुराणाम्’—इति]
तादृशं देवं “दूतम्” अग्निम् अस्मिन् कर्मणि वृणीमहे
भजामः । कीदृशं “होतारं” देवानामाह्वातारं “विश्ववेदसं”
सर्वधनोपेतं [बहुव्रीहौ विश्वं सञ्ज्ञायाम् (६, २, १०६)]—
इति पूर्वपदान्तोदात्तत्वम्] “अस्य” प्रवर्त्तमानस्य यज्ञस्य निदा-
नत्वेन “सुक्रतु” शोभन-कर्माणं शोभन-प्रज्ञं वा ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्तविशपतिम् ।

३ १ २ ३ २
हव्यवाचस्पुरुप्रियम् ॥ २ ॥ ‡

* ‘इदानीमाख्यानि’—इति वि० ।

† ख० पा० १, १, १, २ (१भा० ८७ पृ०) = ऋ० वे० १, १, २२, १ ।

‡ ऋ० वे० १, १, २२, १ ।

[यद्यप्यग्निः स्वरूपेणैक एव तथापि प्रयोगभेदादाहवनी-
यादिस्थानभेदाद्वा बहुविधत्वमभिप्रेत्य] “अग्निम्-अग्निम्”—
इति वीष्मा तं “हवीमभिः” आह्वानकरणैर्मन्त्रैः “सदा हवन्त”
निरन्तरमनुष्ठातार आह्वयन्ति * । कीदृशम् ? “विश्वपतिं”
विशां प्रजानां होत्रादीनां पालकं “हव्यवाहं” यजमान-समर्पि-
तस्य हविषः देवान् प्रति वोढारम् अतएव “पुरुप्रियं” बहूनां
देवानां प्रीत्यास्पदम् ॥ [अग्निमग्निम्—“नित्यवीष्मयोः (८, १,
४)”—इति वीष्मायां द्विर्भावः ; “तस्य परमान्वेडितम् (८,
१, २)”—इत्युत्तरस्य आन्वेडित-सञ्ज्ञायाम् “अनुदात्तञ्च (८,
१, ३)”—इत्यनुदात्तत्वम् । हवीमभिः—“द्वेज् स्पर्द्धायां शब्दे
च (आ०, उभ०) ; आह्वानकरणभूतेषु मन्त्रेषु स्वव्यापार-
स्वातन्त्र्यात् कर्तृत्वविवक्षया “अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते (३, २,
७५)”—इति कर्त्तरि मनिन् ; तस्य छान्दस ईडागमः ; बहुलं
छन्दसि (६, १, ३४)”—इति धातोः सम्प्रसारणम् ; पर-
पूर्वत्वं ; गुणावादेशौ ; निच्चादाद्युदात्तत्वं (६, १, १८) ।
सदा—“सर्वैकान्येत्यादिना (५, ३, १५)” सर्वशब्दाहाप्रत्ययः
“सर्वस्य सोऽन्यतरस्याम् (५, ३, ६)”—इति सभावः ; व्यत्य-
येनाद्युदात्तत्वम् (३, १, ८५) । हवन्त—द्वेजो लट् भस्य
अन्तादेशः (७, १, ३) ; टेरेभावश्छान्दसः (६, ४, ७६) शपि
“बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)”—इति सम्प्रसारणम् ; “तिङ-

* हवीमभिः—होतव्यैः सदा हवन्तः आह्वयन्तः ; यानि होतव्यानि हवीणि, तैः
पुरतोऽवस्थितैः सहाह्वयन्ते इति वि० ।

तिष्ठः (८, १, २८)"—इति निघातः । विष्पतिं—"पत्यावै-
श्वर्ये (६, २, १८)"—इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरि प्राप्ते, "परादि-
श्रुत्सि (६, २, १८८)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम् । हव्य-
वाहम्—"वह प्रापणे (भा०, उभ०), "वह्य (३, २, ६४)"
—इति णिव प्रत्ययः ; कदुत्तरप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १३८). ।
पुरुषां प्रियं—समासान्तोदात्तत्वम् (८, १, २२३) ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१२ १२ ३१ २ ४ २३ १२
अग्नेदेवाद्ब्रह्मवहजज्ञानोवृक्तबहिषे ।

२ ३ १ १२ १२
असिहोतानईडयः ॥ ३ * ॥ ६ †

हे "अग्ने !" "जज्ञानः"‡ अरण्योरुत्पन्नः त्वं "वृक्तबहिषे"
आस्तरणार्थं छिन्नेन बहिषा युक्ताय । तं 'यजमान मनुष्यही-
तम् "इह" कर्मणि हविर्भुजो देवानाह—"नः" अस्मदर्थं
"होता" देवानामाह्वाता त्वम् "ईडोसि" स्तुत्यो भवसि ॥ ३ ॥ ६

द्वितीयतृचेण—प्रथमा ।

४ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
मित्रं वयश्च वामश्चेवरुणश्च सोमपीतये ।

२ ३ २ ३ १ २
याजातापूतदक्षसा ॥ १ ॥ §

• ऋ० वे० १, १, २२, ३ । † "आग्नेष माध्यमुक्तम्"—इति वि० ।

‡ 'जज्ञानः—जायमानः, अथवा यजमानः'—इति वि० ।

¶ 'इदानीं मैत्रावरुणमुच्यते—इति वि० । आश्रयमिति शेषः ।

§ य० वे० ३३, ४६=ऋ० वे० १, २, ८, ४ ।

“वयम्” अनुष्ठातारः “सोमपीतये” * सोमपानार्थं
 [“दासीभारादित्वात् पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्] “मित्र” “वह्म”
 च उभावाह्वयामः । कीदृशाबुधौ ? “या जाता” यो जाती
 सन्ती प्रदेशं प्रादुर्भवन्ती, “पूतदक्षसा” शुद्धवस्ती † । [पूष-
 पवने (क्रा०, उभ०) ; “निष्ठा (१, २, १०२)”—इति त्तः,
 श्रुतः किति (७, २, ११)”—इति इट् प्रतिषेधः । पूतं
 दक्षौ ययोस्ती “बहुव्रीहो प्रकृत्या (६, २, १)”—इति पूर्वपद-
 प्रकृतिस्वरत्वम् ॥

“याजाता”-“जज्ञाना”—इति पाठी ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

७ १ ३ १ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
 ऋतेनयावृतावृधावृतस्यज्योतिषस्पती ।

२ ३ १ २ २ २

तामित्रावरुणाङ्गवे ॥ २ ॥

“यो” मित्रावरुणौ “ऋतेन” सत्यवचनेन ‡ यजमानानुग्रह-
 कारिणा “ऋतावृधौ” ऋतमवश्यम्भावितया सत्यं कर्मफलं तस्य
 वर्द्धकौ “ऋतस्य” सत्यस्य प्रशस्तस्य “ज्योतिषः” प्रकाशस्य “पती”
 पालकौ § [श्रुत्यन्तरे मित्रावरुणयोरदिति-पुत्रत्वेन श्रुतत्वात्

* “सन्ने ह्येषपचमनविद्भूवीरा उदातः”—इति पा० १ । ३ । २६ ।

† “पूतदक्षौ—पूतत्वेन दक्षत्वेन च सम्पन्नौ”—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० १, २, ८, ५ ।

§ ऋतेन—यज्ञेन—इति वि० ।

§ ‘ज्योतिष’ नक्षत्रजातस्य ज्योतिष्ठीमस्य वा पती—इति वि० ।

हादयादित्येष्वन्तर्भूतत्वेन ज्योतिषः पालकत्वं युक्तम्, श्रुत्यन्तरे च अष्टौ पुत्रासौ अदितेरित्युपक्रम्य मित्रश्च वरुणश्चेत्यादिक-
मान्जातम् तौ मित्रावरुणौ । तथाविधैर्मित्रावरुणैः “सुपां सुलु-
गिति (७, १, ३८) पूर्वसवर्णदीर्घ आकारः] “हुवे” आह्व-
यामि । [द्वेष आत्मनेपदोत्तमपुरुषैकवचने सम्प्रसारणे (६,
१, ३४) पूर्वरूपत्वे च (६, १, १०८) “बहुलं कन्दसि
(२, ४, ७३)”—इति श्रपोलुक् ; टेरेत्त्वम् (३, ४, ३८) ;
“गुणे प्राप्ते “किङ्कति च (१, १, ५)”—इति प्रतिषेधः ; उवङा-
देशः (६, ४, ७७) ; “तिङ्कतिङ्कः (८, १, २८)”—इति
निघातः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरुतिभिः ।

१२ ३१३
करतान्नःसुराधसः ॥ ३ * ॥ ७

अयं “वरुणः” देवः अस्माकं “प्राविता भवत्” प्रकर्षेण रक्षको भवतु। “मित्रः” च “विश्वाभिः जतिभिः” सर्वाभिः प्राविता भवत्। तावुभावपि “नः” अस्मान् “सुराधसः” प्रभूतधनयुक्तान् “करतां” कुरुताम्। [डुकृञ् करणे (उभ०) भौवादिङ्, लोटस्त्व, तसस्ताम्, अकर्त्तरि शप्, गुणोपरत्वम्,

शपः पित्त्वादनुदात्तत्वम् (२, १, ४); तिङ्श्र लसार्धधातुक-
स्वरेण (६, १, १८६) धातुस्वरं (६, १, १६२) शिष्यते ॥३॥ ७

इन्द्रमिन्द्राग्निन इति चतुर्ऋचं तृतीयं सूक्तम् *.

तत्र प्रथमा ।

२ ३ २ १ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ १
इन्द्रमिन्द्राग्निनोबृहदिन्द्रमर्केभिरर्कीणः ।

२ ३ १ २
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ १ '† ॥

“गाग्निः” गीयमान-सामयुक्ता उद्गातारः “इन्द्रमित्”
इन्द्रमेव “बृहत्” “त्वामिद्विहवामहे (छ० आ० ३, १, ५, २)”
—इत्यस्यामृच्युत्यन्नेन बृहन्नामकेन (आ० गा० १, १, २७)
साम्ना “अनूषत” स्तुतवन्तः । [ए स्तुतौ (तु०, प०) ; “णी नः
(६, १, ६५) ” —इति नत्वम् ; लुङि व्यत्ययेनात्मनेपदम् (३,
१, ८५) ; अस्य अदादेशः (७, १, ५) ; सिच इङ्भावः
उकारस्य दीर्घत्वं छान्दसम् (६, १, १३३) ; धातोः कुटा-
दित्वात् सिचो ङित्वेन (१, २, १) गुणाभावः (१, १, ५)]
“अर्कीणः” अर्चन-हेतु-मन्त्रोपेता होतारः “अर्केभिः” उक्थ-
रूपैर्मन्त्रैरनूषत । ये त्वर्वाशिष्टा अध्वर्यवः ते “वाणीः”
वाग्भिः” यजूरूपाभिः इन्द्रम् अनूषत [अर्कस्य मन्त्रपरत्वं यास्के-
नोक्तम् (५, ४) ‘अर्कोमन्त्रोयदनेनार्चन्तीति’] ॥ १ ॥

* ऐन्द्रमाव्यमिदं — इति वि० ।

† छ० आ० ३, १, ५ (१ भा० ४१० पृ०) = छ० वे० १, १, १३, १ ।

अथ द्वितीया ।

१ २ २ ३ ३ २ २ १ २ ३ १ २ ३ १ १
इन्द्रइह्यर्ह्योस्सचासम्मिश्रावचोयुजा ।

१ २ ३ १ १ ३ १ १
इन्द्रोवज्रीहिरण्ययः ॥ २ * ॥

“इन्द्रइत्” इन्द्रएव “हर्ह्योः” हरिनामकयोरश्वयोः “सचा” सह युगपत् “आ सम्मिश्राः” सर्वतः सम्यक् मिश्रयिता । कीदृशयोर्हर्ह्योः ? “वचोयुजा” इन्द्रस्य वचनमात्रेण रथे युज्यमानयोः समिचितयोरित्यर्थः । अयम् “इन्द्रः” “वज्री” वज्रयुक्तः “हिरण्ययः” सर्वाभरणभूषितइत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रवाजेषुनोवसहस्रप्रधनेषु च ।

३ १ ३ १ २ ३ १ २
उग्रउग्राभिहृतिभिः ॥ ३ † ॥

हे “इन्द्र !” “उग्रः” शत्रुभिरप्रपृथ्यः त्वम् “उग्राभिः” अप्रपृथ्याभिः “जतिभिः” अस्मद्वेद्यपरपक्षाभिः “वाजेषु” युद्धेषु “नः” अस्मान् “अव” रक्ष । तथा “सहस्रप्रधनेषु च” सहस्र-सङ्ख्याक-गजाश्वादि-लाभयुक्तेषु महायुद्धेष्वपि रक्ष ॥ ३ ॥

* इ० आ० प० १, २, १ (२भा० २६० पृ०) = ऋ० वे० १, १, १२, १ ।

† इ० आ० प० १, २, ४ (२भा० २६० पृ०) = ऋ० वे० १, १, १२, १ ।

अथ तृचात्मके चतुर्थसूक्ते—

प्रथमा ।

१ १ ३ १२ २२ २१ १ २ १२ २२

इन्द्रे अग्रानमो वृहत्सुवृत्तिमेरयामहे ।

१ १२ २२ ३१ २

धियाधेना अवस्यवः ॥ १ * ॥

“अवस्यवः” रक्षणकामाः वयम् “इन्द्रे” देवे “अग्रान्”
अग्रो च “वृहत्” बृहत्त्वं वर्धकं † “नमः” हविर्लक्षणमन्त्रं ‡
“सुवृत्ति” सुप्रवृत्तां स्तुतिश्च ¶ “आदीरयामहे” प्रेरयामः ।
तथाच “धिया” कर्मणा युक्ता § “धेनाः” ॥ [वाङ्नामैतत्
(निघ० १, ११, ३८)] स्तुतिरूपा वाचश्च अभिप्रेरयामः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२ २२ २१ २ ३ १२ २२ ३१ २

ताहिमश्वन्तईडतइत्थाविप्रामजतये ।

३ २ २ १ १

सुबाधोवाजसातये ॥ २ * ॥

● ऋ० वे० ५, ६, १०, ४ ।

† ‘वृहत्’—महत्—इति वि० ।

‡ ‘नमः’—नमस्कारम्—इति वि० ।

¶ ‘सुवृत्ति’—शोभनां वृत्तिं वर्णनम्—इति वि० ।

§ ‘धिया बुद्ध्या’—इति वि० । “धेीः”—इति कर्मणामसु निघण्टौ एकविंशति-
तमं पदम् (२, १) ।

॥ ‘धेनाः’—घेङ् पाने (भा० प०), पानधर्मार्थाः—इति वि० ।

● ऋ० वे० ५, ६, १०, ५ ।

“ता हि” तौ खलु * इन्द्राग्नी “ग्रन्थन्तः” बहवः
 “विप्रासः” मेधाविनः जनाः “ऊतये” रक्षणाय “इत्थम्”
 अनेन प्रकारेण “ईडते” स्तुवन्ति । तथा “सबाधः” समानं
 परस्परं बाध्यमाना जनाः “वाजसातये” अन्नसातये अन्नलाभाय
 ताविन्द्राग्नी ईडते । यदा ‘वाजसातिः’—इति सङ्ख्यामनाम
 (निघ० २, १७, ३६) सङ्ख्यामार्थम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
 तावाङ्गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वन्तो हवामहे ।

३ १ २ ३ १ २
 मेधसातासनिष्यवः ॥ ३ ॥ ८

“विपन्यवः” स्तोत्रमिच्छन्तः “प्रयस्वन्तः” हविर्लक्षणेनाग्ने-
 नोपेताः ‡ “सनिष्यवः” सनिं धनमात्मन इच्छन्तः वयं “मेध-
 साता” मेधानां यागानां ¶ “सातौ” सञ्चजने निमित्तभूते

* ‘ह्येति यस्मादर्थे’—इति वि० ।

† अ० वे० ५, ६, १०, ६ ।

‡ ‘प्रयस्वन्तः’—प्रकर्षेण यजमान गृहान् प्रति गच्छन्तः—इति वि० ।

¶ “मेधः”—इति निघण्टौ यज्ञनामसु चतुर्थं पदम् (३, १०) ।

सति हे इन्द्राग्नी ! “ता” तौ “वां” युवां “गीर्भिः” स्तुतिभिः
“हवामहे” ॥

“विपन्यवः”—“विपन्यवे”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य तृतीयस्याध्यायस्य
द्वितीयः खण्डः * ॥ २ ॥

वृषापवस्वेति तृतीयखण्डे †—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

१ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
वृषापवस्वधारयामरुत्वतेचमत्सरः ।

२ २ १ २ २ १ २
विश्वाद्धानञ्जसा ॥ १ ‡ ॥

हे सोम ! त्वं “वृषा” स्तोतृणामभिमत-फलस्य वर्षकः सन्
“धारया” त्वदीयया “पवस्व” द्रोणकलशमागच्छ [पवतिर्गति-
कर्मा (निघ० २, १४, १०८) जागतस्व यदा अस्माभिः
इन्द्राय दीयसे तदा “मरुत्वते” सहाया मरुतो यस्य सन्ति तस्यै
इन्द्राय “मत्सरः” मदकारस्य भव । कीदृशः ? “विश्वा” विश्वानि
सर्वाणि व्याप्तानि वा धनानि “ञ्जसा” आक्रीयेन बलेन

* ‘उक्तं प्रातःसवनम्’—इति वि० ।

† ‘इन्द्राग्नीं माध्वन्दिनं सवनमभिधीयते’—इति वि० ।

‡ ख० षा० ५, १, ४, २ (१भा० १०४०) ख० वे० ७, १, २, ४ ।

युक्तः सन् स्तोतृभ्यः तानि “दधानः” प्रयच्छंस्त्वं मादधिता
भवेति समन्वयः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ १ २ ३ १ २
तत्त्वाधर्त्तारमोण्योऽऽप्यवमानस्वर्दृशम् ।

३ १ २ २ २ ३ १ २
हिन्वेवाजेषुवाजिनम् ॥ २ * ॥

हे “पवमान” पूयमान पुनान वा सोम ! “ओष्णीः”
[आवाष्टधिवी नामैतत् (निघ० ४, ३०, १५)] तयोः
“धर्त्तारं” धारकम् अतएव “स्वर्दृशं” सर्वस्य सूर्येव द्रष्टारं, सर्वे
र्दृष्टव्यं वा । “वाजिनं” बलवन्तं तं पूर्वोक्तगुणं प्रसिद्धञ्च “त्वा”
त्वां “वाजेषु” सङ्ग्रामेषु त्वां प्रेरयामि [यद्वा “वाजेषु” विषयेषु
प्रेरयामि, अन्नादिकं प्रयच्छेत्यर्थः १ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ २
अयाचित्तोविपानयाद्दरिःपवस्वधारया ।

२ ३ १ २
युजंवाजेषुचोदय ॥ ३ † ॥ १० ¶

* ऋ० वे० ७, २, ३, १ ।

† ‘वाजेषु—अश्वेषु । सप्तम्येषा, अधिहरकभूतेषु । वाजिनं अश्ववन्तं देववन्तं
वा’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, २, ३, २ ।

¶ ‘इह योक्ताश्च’ साम’—इति वि० । ‘योक्ताश्च-प्रभृतीनि सामानि तेषां नाम्ने
वार्धप्रतिपत्तिः’—इति च वि० ।

हे “पंचमान” सोम ! “अया” * [अय पय गतो (आ०, आ०) पचाद्यच् (१, १, १३४), तृतीयाया आकारः (७, १, ३८)] कर्मार्थमितस्ततो गच्छन्तीभिः “विपा” [विप प्रेरणे (चु०, उभ०) हवींथग्नौ प्रेरयन्तीति विपा अङ्गुलयः । एक-वचनं छान्दसं प्रत्येक-विवक्षया वा] एताभिर्मदीयाभिरङ्गुलिभिः “चितः” ज्ञातः निर्गतः अभिषुतः “हरिः” हरितवर्णः त्वं “धारया” सन्ततया “पवस्व” द्रोणकलशं ग्रहांश्च गच्छ । किञ्च “युजं” † सखायम् इन्द्रं “वाजेषु” सङ्ग्रामेषु ‡ “चोदय” प्रेरय । यदाह्माभिरिन्द्रार्थं सोमा दीयन्ते तदानीमिन्द्रः स्तुत्यानेन दृष्टः सन् यवून् हन्तीत्यर्थः ॥ ३ ॥ १०

॥ यौक्ताश्वम् ॥ औहोहोहायि । वृषा । पवस्वा३
 धाराया३ । माहुरत्वा२३४तायि । ओयि । चमा२३ ।
 चमारत्सार३४राः । औहोहोहायि । विश्वा । दधा२
 नार३४ओ । जासार३४औहोवा ॥ (१) औहोहोहायि ।
 तन्वा । धर्त्तारा३मोणायो३ः । पावा२ मा २ ३ ४ ना ।

* ‘अया—अनया धिया विचक्ष्य पालयिष्या’—इति वि० ।

† ‘युजं—योजम्’—इति वि० ।

‡ ‘वाजेषु—अङ्गेषु’—इति वि० ।

^१ओयि । ^०सुवार३ । ^१सुवा^१रु^३रु^३३४शाम् । ^{२२१}औहोहोहा
^१यि । ^१हिन्वायि । ^{१२}वाजार्^३यिषू^३रु^३४वा । ^१जार्^३यिना^३रु^३४
^२औहोवा ॥ (२) ^{२२१}औहोहोहायि । ^१अया । ^{१२}चित्तोवी^३रपा
^१नाया३ । ^१हारार्^३यिः । ^३पार३४वा । ^१ओ । ^०स्वधार३ ।
^१स्वधार३रार३४या । ^{२२१}औहोहोहायि । ^१युजाम् । ^{१२}वाजार्^३यि
^३षू^३रु^३४चो । ^३दाया २ ३ ४ ^{२२२}औहोवा । ^२ओयि । ^३ज्वर
^२आ(३) ॥ १८ * ॥ [१]

^१॥ सन्तनि ॥ ^२वृषाहाउ । ^१पावस्वधा३१उवार३ । ^१रा
^५रु३४या । ^{२१}मरुत्वतेचमत्सरा१ः । ^२विश्वाहाउ । ^१दाधान
^१ओ३आउवार३ । ^५जार३४सा ॥ (१) ^१तन्त्वाधर्त्तारिमोस्थोः
^{२२}पवमानसुव^१रु^३शार३४५म् । ^१हिन्वेहाउ । ^{१२२}वाजेषुवा३
^५१उवार३ । ^{२१२}जार३४यिनाम् ॥ (२) ^{२१२}अयाचित्तोविपानया

१५०३५०१५०१,२,३। उत्तरार्द्धिकः ।

३१७

१ १ १२ ३११११ १ १ १२१ १
हरिःपवस्वधारयार३४५ । युजाएहाउ । वाजेपुचोश्चा

उवार३ । दार३४या(३) ॥ १ * ॥ [२]

१२ १ १ १ १ १ ५
॥ ऐउसौपर्णम् ॥ वृषापवोवा । स्वाधारार३४या ।

१ १ १ १ ० १ ५ १
मरुत्वतायि । चमारत्सार३४राः । वारयिश्वा । दार

२ १ १२ १ १ ४ ५ १ २ १ १
३धा । नाओजसा । औश्चोवा ॥(१) तन्त्वाधर्तोवा ।

१ २ १ ५ २१, २२ १ ० ३ ५
रामोणार३४योः । पवामाना । सुवारद्दृ २ ३ ४ ग्राम् ।

२ १ १२ १ ४ ५
हारयिन्वे । वार३जायि । पूवाजिनाम् । औश्चोवा ॥(२)

१ २ १ १ २ ३ ५ १ १ १
अयाचितोवा । वायिपानार ३ ४ या । हरायिःपवा ।

० ३ ५ १ १ १ १२ १
स्वधारार३४या । यूरजाम् । वार३जायि । पूचोदया ।

२ ४ ५ ४
औश्चोवा । चोपुई । डा(३) ॥ २ * ॥ [३]

१ १२ १ १ १ १
॥ रोहितकुलीयोत्तरम् ॥ वृषापवस्वधा । रया२ ।

१ २ १ १ १ १ २ २
मरुत्वतेचमत्सार३४राः । वायिश्वा रदाधा३३ । नओ३३४

वा । जा॒प्र॒सो॒ई॒हायि ॥ (१) तन्त्वाध॒र्त्तार॒मो । णि॒यो

रः । पव॒मान॒सुव॒हृ॒र॒शाम् । हा॒यिन्वे॒र॒वाजा॒र॒श्वि ।

षु॒चो॒र॒श्व॒वा । जा॒प्र॒यि॒नो॒ई॒हायि ॥ (२) अ॒याचि॒तो॒वि॒पा ।

न॒या॒र । ह॒रिःप॒व॒स्व॒धा॒रा॒र॒श्व॒या । यू॒जा॒र॒वाजा॒र॒श्वि ।

षु॒चो॒र॒श्व॒वा । दा॒प्र॒यो॒ई॒हायि (३) ॥ ३ * ॥ [४]

॥ आ॒म॒ही॒य॒वम् ॥ वृ॒षो॒पा॒श्व॒स्व॒धा॒र॒या । म॒ह॒त्वा॒श्व॒

जा॒र॒यि । य॒मा॒र॒श्व॒राः । वि॒श्व॒ा॒द॒धा । न॒ओ॒र॒श्व॒ज॒सा

उ । वा॒श्व ॥ (१) तन्त्वाध॒र्त्तार॒मो॒णि॒योः । प॒वा॒मा॒श्व॒

ना॒र । सु॒वा॒र॒श्व॒शाम् । हि॒न्वे॒वाजा॒यि । षु॒वा॒र॒श्व॒

जि॒ना॒उ । वा॒श्व ॥ (२) अ॒या॒चा॒श्वि॒तो॒वि॒पा॒न॒या । ह॒रा

यिःपा॒श्वा॒र । स्त॒धा॒र॒श्व॒या । यू॒जं॒वाजा॒यि । षु॒चो॒र

श्व॒या॒उ । वा॒श्व । स्तो॒त्रे॒र॒श्व॒पु (३) ॥ १ † ॥ [५]

॥ हाविष्मत् ॥ हाउवृषापवस्वधारयाहाउ । मरु
 त्वताश्चि । चामत्सारा३४राः । ऐ२हो१आ २ ३ यिहो ।
 विश्वादाश्वा । नओ । जा २ सा २ ३ ४ औहोवा ॥(१)
 हाउतन्वाधर्त्तारमोण्योर्हाउ । पवमाना३ । सूवर्ह२३
 ४ग्राम् । ऐ२हो१आ२३यिहो । हिन्वेवा३जायि । षु
 वा । जा२यिना२३४औहोवा ॥(२) हावयाचित्तोविपान
 याहाउ । हरिःपवा३ । स्वाधारा२३४या । ऐ२हो१आ
 २३यिहो । युजांवा३जायि । षुचो । दारया२३४औहो
 वा । हविष्मते२३४५(३) ॥ १ * ॥ [६]

॥ यौक्ताश्चोत्तरम् ॥ वृषाऔहोहोहायि । पवा ३
 स्वाधाशराया३ । माहूरत्वा२३४तायि । चमा३ । ओयि ।
 चमा२त्सा२३४राः । विश्वाऔहोहोहायि । दधारना

२३४ओ । जा२रसा२३४ओहोवा ॥(१) तन्वाओहोहो

हायि । धर्त्ता३रामो१णायोः । पावा२रमा२३४ना ।

सुवा३ । ओयि । सुवा२र्द्धं २३४शाम् । द्विन्वाओहो

होहायि । वाजा२रयिषू२३४वा । जा२रयिना२३४ओहो

वा ॥(२) अयाओहोहोहायि । चित्ता३वायिपा१ना

या३ । हारा२रयिःपा२३४वा । स्वधा३ । ओ । स्वधा

२रा२३४या । युजाओहोहोहायि । वाजा२रयिषू२३४

ओ । दा२या २३४ओहोवा । ओयि । जू२३४

वा(३) ॥ २ * ॥ [७]

॥ आजिगम् ॥ वृषापावा । स्वधाराया । मरुत्व

ते । चामत्सा२राः । विश्वादाधा । नओजा२३सा३

४३ ॥(१) तन्वाधार्त्ता । रमोणायोः । पवमान । खव

हृ२३शाम् । हिन्वेवाजायि । पुवाजार३यिना३४३म् ॥ (२)
 अयाचायित्तो । विपानाया । हरिःपव । स्वाधा१रा२
 ३या । युजांवाजायि । पुचोदा२३या३४३ । ओ२३४५
 ई । डा(३) ॥ १४ * ॥ [८]

॥ स्वारसौपर्णम् ॥ वृषापवस्वधारा३या । मंसुत्वतेच
 मा । ऊम् । त्सा२३४राः । वायिश्वा३उवा । दधा ।
 नओ२३४वा । जापुसोईहायि ॥ (१) तन्त्वाधर्त्तारमोषा
 ३या३योः । पवमानसुवा । ऊम् । द२३४शास् । हायि
 न्वा३उवा । वाजे । पुवो२३४वा । जापुयिनोईहायि ॥ (२)
 अयाचित्तोविपाना३या । हरिःपवस्वधा । ऊम् । रा२
 ३४या । यूजा ३ उवा । वाजे । पुचो२३४वा । दापु
 योईहायि(३) ॥ १५ * ॥ [९]

^{१ २ १} ॥ सुहपोत्तरम् ॥ ^{१ २ १} वृषापवौहो२ । इया । ^{१ २ १} स्वधारा
^{२ १} या२ । ^{१ २ १} मरुत्वतौहो२ । इया । ^२ चमत्सारा२ः । विश्वा
^१ दधीहो२ । इया । ^{२ १ २} नञ्जो२ ३ सा ३ ४ ३ ॥ (१) ^{२ २} तन्त्वा
^१ धत्ताहो२ । इया । ^{२ २ १} रमोणायो२ः । ^{२ १ २} पवमानौहो२ ।
^१ इया । ^{१ १} सुवर्हशा२म् । ^{२ १ २} चिन्वेवाजीहो२ । इया । ^{१ २} पु
^{१ २} वाजा२ ३ यिना ३ ४ ३म् ॥ (२) ^{२ २ १} अयाचितौहो२ । इया ।
^{२ २ १} विपानाया२ । ^१ हरिःपवौहो२ । इया । ^{२ २ १} स्वधाराया२ ।
^{१ २} युजंवाजीहो२ । इया । ^{१ २ २} पुचोदा२ ३ या ३ ४ ३ । ^१ ओ २ ३
४ ५ ई । डा (३) ॥ १८ * ॥ [१०]

^{२ २ २} ॥ ऋषभःपावमानम् ॥ ^२ छाहाउवृषापवा । हा ३ । छा
^{१ १ २} ह्यि । ^५ स्वाधारेरा २ ३ ४ या । ^{१ २ २ २ १} मरुत्वतेचमाशत्सा ३ राः ।
^{२ ३} विश्वादा२ ३ ४ धा । ^{१ २} ओमो ३ । ^{४ ४} नञ्जोवा । ^४ जापूसोईहा

वि॥(१). रामो^१२^३णा^४२३४योः । पवमानसुवा^१२^३३^४ग्राम् ।

ह्रिग्ववा^१२^३४जायि । ओमो^१२ । षुचोवा । जा^४पुयिनो^४६

हायिं॥(२) छा^४हावया^{२२}चित्ताः । हा^२३ । छा^२र्शयि । वा^१

यिपा^४रना^२२३४या । हरिः^१पवस्वधा^२१राया । यु^४ज्ज^२वा^२२३४

जायि । ओमो^४३ । षुचोवा । दा^४पुयो^१६^२हायि(३)॥१८*॥[११]

॥ हरि^१श्रीनिधनम् ॥ वृषा^१पवस्वधा^२२राया । वृषा^१पवा ।

स्वधा^२२राया । मरु^१त्वतेचमा^२हो^२२ । त्सा^१रा २ ३ । हा^२उ

वा । वि^२श्वादा^२२३धा । नओ । जा^१रसा^२२३४ओ^३होवा ॥(१)

तन्त्वा^१धर्त्ता^२रमो^१णियोः । तन्त्वा^२धर्त्ता । रमो^१णियो^२२ः ।

पवमानसुवा^१हो^२२ । दृ^२शा^२३३म् । हा^२उवा । ह्रि^१ग्वेवा

२३जायि । षु^२वा । जा^१र्शयि । ना^२२३४ओ^३होवा ॥(२) अ

या^१चित्तो^२विपानया । अया^१चित्ताः । विपानया^२२ । हरिः

पवस्वधाद्यै२ । राया२३ । ह्यउवा । युजांवा२३जा
 यि । पुचो । दारया२३४ औद्योवा । हरीश्री२३
 ४५ः(३) ॥ १ * ॥ [१२]

॥ गौषूक्तम् ॥ वृषापवस्वधौ । ह्यौद्योवाहायि । रया ।
 मरुत्वतेचमौ२ । ऊवायि । ऊवा२यि । त्सार२ः । वि
 श्वादधानौ२ । ऊवायि । ऊवा२यि । जासा२३ ।
 ह्यौ२वा२३४ औद्योवा ॥ (१) तन्त्वाधर्त्तारमौ । ह्यौद्योवा
 हायि । णियोः । पवमानसुवौ२ । ऊवायि । ऊवा२
 यि । दृशा२म् । ह्रिन्वेवाजेषुवौ२ । ऊवायि । ऊवा
 २यि । जासा२३ । ह्यौ२वा२३४ औद्योवा ॥ (२) अया
 चित्तेविपौ । ह्यौद्योवाहायि । नया । हरिःपवस्वधौ
 २ । ऊवायि । ऊवा२यि । राया२ । युजंवाजेषु

चौ२ । ऊवायि । ऊवा२यि । दाया२३ । दार२वार

३४औद्दोवा । अग्निराऊता२३४पुः(३) ॥ ८ * ॥ [१३]

॥ शाकलम् ॥ वृषापवा२स्वधारया । मरुत्वतेचमत्सा

२३राः । वायिश्वा२ । दाधानओ२३ । ऊम् । जा३

४ ५ सोईद्वायि ॥ (१) तन्त्वाधर्त्ता२रमोणियोः । पवमान

सुवद२३शाम् । द्वायिन्वे२ । वाजेषुवा२३ । ऊम् ।

जा३४पुयिनाईद्वायि ॥ (२) अयाचित्ता२विपानया । च

रिःपवस्वधारार२३या । यूजा२म् । वाजेषुचो२३ । ऊम् ।

दा३४इयोईद्वायि(३) ॥ १० * ॥ [१४] १०

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

वृषाशोणोअभिकनिक्रदद्गा

नदयन्नेषिपृथिवीमुतद्याम् ।

१ १ १ १ २ २ १ १
इन्द्रस्येववगुराष्टण्वआजौ

१ १ १ २ १ १ ३ २
प्रचोदयन्नर्षसिवाचमेमाम् ॥ १ * ॥

“शोणः” शोणवर्णः † “वषा” कश्चिद् वषभः “गाः” पशून्
“अभि” लक्ष्य “कनिकदत्” ‡ शब्दं करोति [एवं “गाः”
सूतीः “अभि कनिकदत्” अभिशब्दायमानः] । तदेवाह—
“नदयन्” शब्दमुत्पादयन् हे सोम ! त्वं “पृथिवीम्” “उत”
अपिच “वाम्” एतौ लोको “एषि” गच्छसि । किञ्च “वग्नुः”
[वग्नु वाङ्नामैतत् (निघ० १, ११, २५) तस्य] वाक्शु
शब्दः “आजौ” सङ्ग्रामे “इन्द्रस्येव” इन्द्रशब्द इव “शृण्वे” सर्वैः
श्रूयते । ततः “प्रचेतयन्” आत्मानं सर्वेषां प्रज्ञापयन् “इमां”
“वाचम्” “अर्षसि” समन्तादागमयसि उच्चैः शब्दायत
इत्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ १ १ २ ३ १ २
रसाय्यः पयसापिन्वमान

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ईरयन्नेषिमधुमन्तमश्रुम् ।

* ऋ० वे० ७, ४, १३, १ । † ‘शोणः—वज्रवर्णः’—इति वि० ।

‡ “दाघन्ति-दर्दन्ति-दर्दन्ति-बोभूतु-तेतिक्ते-ऽलर्था-ऽऽपनीफणत्-संसनिष्यदत्
करिक्तत्-कनिकदद्-भरिधद्-दरिधतो-दविद्यतत्-तरिचतः—सरीक्षपतं—परीहजन्-
सर्व्व्या-ऽऽगनीगतीति च (७, ४, १५)” —इति पाणिनिप्रकरणेनान्तरात् त्रार्धे कृडि चलेरङ्

११

३ १ २

३ १

पवमानसन्तनिमेषिकृण्व

११

३ १ १

न्निन्द्रायसोमपरिषिच्यमानः ॥ २ * ॥

हे सोम ! “रसायः” [रसेरौणादिक आय्य-प्रत्ययः (उ०, ३, ८६)] आस्वादः † “पयसा” “पिन्वमानः” क्षरंस्त्वम् “ईरयन्” “मधुमन्तं” माधुर्योपेतम् “अंशुम्” रसभावम् “एषि” प्राप्नोषि [“अंशुमष्टमात्रो भवति”—इति यास्कः (निरु०,)] । अनेन सोमरसोऽभिधीयते । किञ्च हे सोम ! “परिषिच्यमानः” अङ्गिः परिषिक्तो भवंस्त्वम् “पवमानः” पवित्रे पूयमानः सन् “सन्तनि” [तनु विस्तारे (त०, प०) इ-प्रत्ययः] सन्ततां धारां “कृण्वन्” कुर्वन् “इन्द्राय” इन्द्रार्थम् “एषि” गच्छसि ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २

३ १ २ ११

एवापवस्वमदिरोमदायो

३ १ २ ३ १ २

३ १

दद्याभस्यनमयन्वधस्तुम् ।

१ १ २ ३ १ २

३ १ १

परिवर्णम्भरमाणोरुशन्तं

३ १ १

३ १ २

३ २

गव्युर्नीअर्षपरिसोमसिक्तः ॥ ३ * ॥ ११

द्विर्वचनमभ्यासस्य चतुर्भावाः निगागमस्य । लुङ् चाय “इन्दसि लुङ्-लुङ्-लिटः (३, ४, ६)”—इति घालर्थ-सम्बन्धमात्रे सार्वकालिकः ।

● ऋ० वे० ७, ४, १३, ४ ।

† ‘रसायः’—‘रसवान्’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १३, ४ ।

हे सोम ! “मदिरः” मदकरः त्वम् “उदग्राभस्य” *
 [“क्रिया ग्रहणं कर्तव्यम्”—इति कर्मणः सम्प्रदानसञ्ज्ञा ।
 चतुर्थ्यर्थे बहुलमिति घटी] उदग्राभम् उदकग्राहिणं मेघं “नम-
 यन्” वृष्ट्यर्थं प्रद्वीकुर्वन् । कीदृशम् ? “वधस्त्रुम्”† वृत्रवधेन
 प्रसूयन्तम् “मदाय” मदार्थमेव “पवस्व” पात्रेषु क्षर । किञ्च
 “रुशन्तम्” आरोचमानं श्वेतं “वस्य” “परि भरमाणः” परितो
 बिभ्रत् “सिक्तः” पवित्रे सिच्यमानः त्वं “गव्ययुः” अस्मात्तं गा
 इच्छन् “पर्येषि” परिगच्छ ॥

“वधस्त्रुम्”—“वधस्त्रैः”—इति पाठौ । ३ ॥ ११

॥ इहवद्वासिष्ठम् ॥ औक्षोवाहा ३ क्षोयि । इहा ।
 वृषाशोणो । अभिक । निक्रदद्गाः । नदयन्नायि । षी
 ३ पृथि । वीमुतद्याम् । इन्द्रस्येवा । वग्नुरा । शृण्व
 आजाउ । प्रचोदयान् । अर्षसि । वा३४३ । चा३मा
 ५ यिमा ६५ईम् ॥ (१) रसायियाः । पयसा । पिन्वसा
 नाः । ईरयन्नायिषी३मधु । मन्तम५शूम् । पवमाना ।

* ‘उदग्राभस्य—उदक-सङ्घातस्य वधस्त्रुम्, उदकसङ्घातस्य वधः येन क्रियते
 भवति परिवर्त्तः सोमेन स वधस्त्रुः’—इति वि० ।

† मन्त्रे तु प्रायो वधोऽन्त्यस्यवकारादिर्हस्यते ।

२ १ २ १ ४ ५ २ १ २ २ १ १
 सन्तनिम् । एषिहणवान् । इन्द्रायसो । मा३परि । षा
 २ ४ २ १ २ १
 ३४३यि । च्या३मापुनाईपुईः ॥ (२) एवापवा । स्वा ३
 १ २ १ ४ ५ २ १ २ २ १ २ २ २
 मदि । रोमदाया । उदयाभा । स्या ३ नम । यन्वध
 ५ २ १ २ १ २ २ ३ ४ ५ १ २
 स्तुम् । परिवर्णाम् । भरमा । णोरुशन्ताम् । औहो
 ४ २ १ ४ २ १ २ २ १ ४
 वाहा३होयि । इहा । गव्युर्नीचा । षा३परि । सो३
 २ ४
 ४३ । मापुसाप्रयिक्ताईपुईः (३) ॥ २ * ॥ [१]

२ १ २ २ १ २ १
 ॥ पार्थम् ॥ औ३हो३होयि । वृपाशोणो । अभिक् ।
 २ १ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
 निक्कदङ्गाः । नदयन्नायि । षी३पुथि । वीमुतद्याम् ।
 २ १ २ २ १ २ २ ४ ५ २ १ २
 इन्द्रस्येवा । वग्नरा । शृण्वञ्चाजाउ । प्रचोदयान् । अ
 १ २ ४ २ १ २ १
 र्षसि । वा३४३ । चा३मा ५ यिमाईपुईम् ॥ (१) रसायि
 २ १ २ २ ३ ४ ५ २ १ २ १
 याः । पयसा । पिन्वमानाः । ईरयन्नायि । षी३मधु ।
 २ ३ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
 मन्तमंशूम् । पवमाना । सन्तनिम् । एषिहणवान् ।

^{१ २ १} इन्द्राय सो । ^{२ १} मा३परि । ^१ पा३४३यि । ^{२ ४} च्या३मा५नाई

^{१ २ १} पूईः ॥ (२) ^{१ १} एवापवा । ^{२ ३ ४ ५} स्वा३मदि । ^१ रोम३या । ^१ उद

^{१ २} आभा । ^{२ १} स्या३नम । ^{२ ३ ४} यन्वध३न्म । ^{२ १} परिषणाम् । ^{१ १} भर

^२ मा । ^{१ २ ४ ५} णोरु३शताम् । ^{२ १ २} ओ३ हो३ होयि । ^{१ २} गव्युर्नो३या ।

^{२ १ २} पा३परि । ^{१ ४} सो३४३ । ^{१ ४} मा३सा५यिक्ताईपूईः (३) ॥ ६* ॥ [२] ११

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य तृतीयस्याध्यायस्य
तृतीयः खण्डः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थखण्डे ॥ प्रगाथरूपे —

प्रथमसूक्ते—प्रथमा ।

^{१ २} त्वामिद्धिहवामहेसातीवाजस्यकारवः ।

^{२ ३ १ २ ३ १ २ ३ ६ ३ १ ७} त्वांवृत्रेष्मिन्द्रमत्यतिन्नरस्त्वाङ्गाष्ठास्वर्वतः ॥ १ ॥

* ऊ० गा० ० प्र० १ अ० ६ सू० ।

† “उक्तेमाध्यन्दिनः” — इति वि० ।

‡ ‘या ओतिष्ठोमे देवता परिभाषा सामां सीवावापि’ — इति वि० ।

॥ ऊ० आ० ३, १, ५, २ (१ भा० ४८१ पृ०) = ऋ० वे० ४, ७, १७, १ ।

“कारं वः” स्तोतारो वयं “वाजस्य” अश्वस्य “सातो” सम्भ-
ज्जने निमित्तभूते सति, हे “इन्द्र !” “त्वाम् इत् हि” त्वामेव
“हवामहे” स्तुतिभिराह्वयामहे । हे इन्द्र ! “सत्यति” सतां
पालयितारं श्रेष्ठं त्वां “नरः” अन्येऽपि मनुष्याः “वृद्धेषु”
आवरकेषु शत्रुषु सत्सु “हवन्ते” आह्वयन्ति, तज्जयार्थम् ।
अपि च “अर्वतः” अश्वस्य सम्बन्धिनीषु “काष्ठासु” यथा अश्वः
क्राम्या तिष्ठति तासु “काष्ठासु” सङ्ग्रामेषु युद्धकामाश्च त्वा-
मेवाह्वयन्ति, अतो वयं त्वामेवाह्वयाम इत्यर्थः ॥

“सातो”-“साता”—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

११२५ ३ २ ११ २ २ १ १
सत्वेन्नश्चित्रवज्रहस्तधृष्णुयामहस्तवानो अद्रिवः । *

१ १२ ३ १२ ३ १ २ ३ १ ३ २ २ १ २
गामन्त्र्यमिन्द्रसद्विरसचावाजन्नजिग्यषे ॥२*॥ १२
हे “चित्र” चायनीय ! “वज्रहस्त” वज्रबाहो ! “अद्रिवः”
वज्रवत् १ [यद्वा आट्टणात्यनेनेत्यद्विरशनिस्तद्वत्] एवभूत
हे इन्द्र ! “धृष्णुया” धृष्णुः शत्रूणां धर्मयिता ३ “महः” महान्

* अ० वे० ४, ०, २७, २ ।

† ‘अद्रिवः—वज्रवत् । अथवा अद्रय’ पर्वताः । अथवा अभिवप्रावण ।
ने अद्रिव’—इति वि० । अत्र ‘मनुवसो व सम्बद्धौ बन्दसि (८, ७, १)’—इति
कत्वम् ।

‡ ‘धृष्णुया’—धारणशीलया बुद्ध्या प्रज्ञया वा—इति वि० ।

म तादृशस्त्वं “स्तवानः” अस्माभिः स्तूयमानः सन् “गाम्”
 “रथ्य” रथवाहम् “अश्व” च “सं किर” सम्यक् प्रयच्छ ।
 “जिग्युषे” जितवते पुरुषाय भोगार्थं “सत्रा” महत् प्रभूतं *
 “वाजं न” अश्वमिव यथा शत्रून् जितवते भोगार्थं बहु प्रय-
 च्छसि तद्वत् ॥ २ ॥ १२

॥ वारवन्तीयम् ॥ तुवामिद्धा औद्दोहायि । हार्वामा २३
 ४हायि । सातौवाजस्यकारावो २३४हायि । त्वांवृत्रेषि
 न्नसत्यतिन्ना ३४ । औद्दोवा । इहारा २३४हायि । उज्ज
 वां २३४राः । तुवाक्का । षासुअर्वा ३४ । औद्दोवा ।
 इहारा २३४हायि । औद्दो ३१२३४ । ताः । एहियाईहा । (१)
 तुवाक्का औद्दोहायि । सूअर्वा २३४ताः । सत्वान्ना २३४
 हायि । चित्रवज्रदस्तधृष्णा ३४ । औद्दोवा । इहारा २३४
 हायि । उज्जवा २३४या । महस्त । वानोअद्रा ३४ ।

* ‘सत्रा—सदा’—इति वि० ।

† ‘वाजम्—अश्वम् । न जिग्युषे—न शब्द उपमाधीयः, यथा जिग्युषे ; गमन-
 शीलाय वणिजि यथा धनमप्ययते न हत् त्वमस्मात् देहीत्यर्थः ।

^{३२ ४२ ५} औक्षोवा । ^{१ ३} इहा २ ३ ४ द्यायि । ^५ औक्षो १ २ ३ ४ । ^{३२ १} वाः ।

^{५२} एहियाद्वा ॥ (२) ^५ मक्षस्तवा औक्षो द्यायि । ^२ नो अद्रा १ २ ३ ४

^५ यिवाः । ^{२२ १} गामाश्वा २ ३ ४ द्यायि । ^५ रथियमिन्द्रसङ्गा ३ ४ । ^१

^{३२ ४२ ५} औक्षोवा । ^{१ ३} इहा २ ३ ४ द्यायि । ^५ उज्जवा २ ३ ४ रा । ^{२ १ २ २} सत्रावा ।

^{१ ०} जान्नजिग्यू ३ ४ । ^२ औक्षोवा । ^{३२ ४२ ५} इहा २ ३ ४ द्यायि । ^{१ ३} औक्षो

^{५२} १ २ ३ ४ । ^५ षायि । ^४ एहियाद्वा । ^५ होपुई । ^१ डा (३) ॥ १ ३ ॥ [१]

^{२ २ २} ॥ कण्ववृहत् ॥ ^२ औक्षोतुवामिद्वा ३ ४ । ^{१ २} चवामा १ २

^{३२ २} २ ३ ४ यि । ^{१ २ २ २} हाहोयि । ^२ सातौवाजस्यकारवः । ^{१ २} तुवांवा १

^{३२ १} र्वा २ ३ ४ । ^{१ २} हाहोयि । ^{१ २} षूद्रन्द्रसत् । ^{१ २} पतायिन्नाशरा २ ३ ४ ।

^{३२ १} द्याहोयि । ^{१ २} तुवाङ्गाशष्टा २ ३ ४ । ^{३२ २} द्याहो । ^{१ २} सुआ ३ । ^१ र्वा

^५ २ ३ ४ ताः । ^५ उज्जवाद्वा ३ ४ । ^{२ २ २ २} वा ॥ (१) औक्षोतुवाङ्गाष्टा

^२ ३ ४ । ^{१ २} सुआर्वाशता २ ३ ४ । ^{३२ १} द्याहोयि । ^{१ २} सात्वन्नश्चि । ^१ त्र

^{१ २} वाज्राश्वार३४ । ^{३४ २} चाहो । ^{१ २} स्तधाष्णू^{३४ २} श्यार३४ । ^{३४ २} चाहो
^{१ २} यि । ^{३४ २} महास्ताश्वार३४ । ^{३४ २} चाहो । ^१ नोआ३ । ^{३४ २} द्वा२३४
^५ यिवाः । ^५ उज्जवाद्वाउ । ^{३४ २} वा ॥ (२) ^{३४ २} औहोमहस्तवां३४ ।
^{१ १ २} नोआद्राश्विवार३४ः । ^{३४ २} चाहोयि । ^{१ २} गामश्रुवम् । ^{३४ २} रथा
^२ यियाश्वार३४ । ^{३४ २} चाहोयि । ^{१ २} द्रसाङ्गाश्विरार३४ । ^{३४ २} हा
^२ होयि । ^{१ २} सत्रावाश्वार३४म् । ^{३४ २} चाहो । ^{३४ २} नजाश्वि । ^१ ग्यू
^५ र३४षायि । ^५ उज्जवाद्वाउ । ^{३४ २} वा (३) ॥ १७ * ॥ [२] १२

अथ द्वितीयसूक्ते प्रगाथे—

प्रथमा ।

^{३ १२ ३४ २ १ १ ३ १ २ २ १ २ ३ २}
 अभिप्रवःसुराधममिन्द्रमर्चयथाविदे ।

^{१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
 योजरित्त्वभ्योमघवापुरुवसुससहस्रेणोवशिञ्चति ॥ १ ॥

„पुरुवसुः” पश्वादिबहुधनोपेतः, यज्ञबाहुल्यात् बहुनि
 वासको वा “मघवा” धनवान् “यः” इन्द्रः “जरित्वभ्यः”

स्तोत्रभ्यः अस्मभ्यं “सहस्रेणेव” सहस्रसङ्ख्याकेन धनेनेव
 “शिक्षति” [शिक्षतिर्दानकर्मा (निघ० ३, २०, ८)], पञ्चादि-
 बहुधनम् अस्मभ्यं प्रयच्छतोत्यर्थः । स इन्द्रः “यथाविदे” यथा-
 स्माभिर्विज्ञायते तथा ह ऋत्विजः ! “वः” यूयं “सुराधसं”
 शोभनधनोपेतम् “इन्द्रम्” ऐश्वर्ययुक्तं देवम् “अभि” आभि-
 मुख्येन “प्र अर्च” प्रकर्षणार्थं त ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

० १ २ ० १ २ ३ १ १२ ३ १ २ ३
 शतानीकेवप्रजिगातिधृष्णुयाहन्तिवृत्राणिदाशुषे ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
 गिरेरिवप्ररसाअस्यपिन्विरेदत्राणिपुरुभोजसः ॥ २ * ॥ १३ ।

“धृष्णुया” ‡ धृष्णुः धर्षणशीलः पुरुषः “शतानीकेव”
 यथा शतसङ्ख्याकानि शत्रुसैन्यानि “प्रजिगाति” जयार्थं प्रक-
 र्षेण गच्छति, तद्वत् ; इन्द्रः “दाशुषे” यजमानार्थं “वृत्राणि”
 यज्ञविघातकान् शत्रून् प्र जिगाति ततस्तान् “हन्ति” । किञ्च
 “पुरुभोजसः” बहुधनस्य “अस्य” इन्द्रस्य सम्बन्धीनि “दत्राणि”
 दत्तानि धनानि “प्र पिन्विरे” यजमानार्थं प्रकर्षेण वर्तन्ते ।
 तत्र दृष्टान्तः—“गिरेरिव” यथा गिरेः सकाशात् “रसाः”
 उदकानि पिन्विरे प्रवर्तन्ते तद्वत् ॥ २ ॥ १३

* सू० वे० ६, ४, १४, २ ।

† ‘यामदेव’, मेवावर्णं साम । श्रित्यं, अस्माकम्—इति वि० ।

‡ ‘धृष्णुया’—धारणस्यभावया—इति वि० ।

४ ६ ४ ५ र २ २ ४ ४ ५
॥ श्येत्तम् ॥ अभिप्रवःसुरा । धमा ३ ४ औहोवा ।

१ २ १ ७ ५ ५ १ २ १
आयिन्द्रमर्च । यथाविदा३४यि । ओद्द्वा । योजरि

१ १ १ २ १ ३ ५ २ १ २
तृभ्यः । माघा२३वा । पुहुरे । वार३४सूः । सहस्तेणा

२ २ १ ३ ५ ४ २
यिवा३शा । ऊम्मायि । चा२ ता २ ३ ४ औहोवा ॥ (१)

४ ६ ४ ४ ४ ३ ३ ४ ४ ५ १ २ २ १
सहस्ते णेवशि । अता३४ औहोवा । सहस्ते णे । वशा

७ ५ ५ २ १ २ २ १
यिक्तता२३यि । ओद्द्वा । शतानीकेव । प्राजा २ ३

२ १ ३ ५ १ ३ २
यिगा । तिधार । ण् २ ३ ४ या । हन्तिवृत्राणी३दा ।

१ २ ४ ४ ४ ३ ४ ३ ४ ४ ४
ऊम्मायि । शू२षार३४ औहोवा ॥ (२) हन्तिवृत्राणिदा ।

३ २ ४ ४ ४ ५ १ २ २ १ ७
शुषार३४ औहोवा । हान्तिवृत्रा । णिदाशुषार ३ ४ यि ।

५ ५ २ १ २ २ १ २ १
ओद्द्वा । गिरेरिवप्र । रासा२३आ । स्यपा २ यि ।

३ ५ १ २ २ २ १
न्वार३४यिरायि । दत्राणिपू३भो । ऊम्मायि । जार

३ ४ ४ २ २ ५
सा२३४ औहोवा । वार३४सू (३) ॥ ३* ॥ [१]

॥ अभौवर्त्तः ॥ अभाविप्रा ३ वःसुराधसोवा । आ

यिन्द्रमर्च । यथावा १ यिदा २यि । योजरितृ ३१२३४ ।

भ्योमघवा । पुह्रुवा १२२ः । सहास्रे १णा २यि । वंशा

३यि । चार ३४५ । जार ३४५यि ॥ १) सहास्रे ३णो ३व

शिक्षतोवा । साहस्रेणे । वशायिक्षा १ता २यि । आता ।

नीका ३१२३४यि । वप्रजिगा । तिधार्ष १या २ । हन्ता

यिवा १र्चा २ । णिदा ३ । शूर ३४५ । षार ३४५यि ॥ (२)

हन्ता ३यिवा ३र्चा ३णिदा ३शुषोवा । हान्तिवृत्रा । णिदा ३

१षा २यि । गायिरे ३वा ३१२३४ । प्ररमा ३ । स्यपायिन्वा १

यिरा २यि । दत्राणा १यिप् २ । रुभो ३ । जार ३४५ ।

सार ३४५ः (३) ॥ ७ ॥ [२]

॥ श्यैवनौधसम् ॥ अभिप्रवःसुरा । धमा ३४औहोवा ।

^१आयि^१न्द्रम^{१ ०}र्च^{५ ५} । यथावि^२दार^{१ २}३४यि^१ । ओ^५द्द^५हा^२ । यो^२ २ ३
^२जा^१ । री^२तृ^{१ २}भ्यः^१ । मघ^१ । वा^{१ ३} । पू^५रु^१वार^१३४सूः^१ । सा^२ २ ३
^२हा^{१ २ २ १ ५} । स्ने^३षे^५वशो^{४ ३ २ ४ ५}र३वा^१ । स्ना^२र३४ती ॥ (१) स^३ह^५स्ने^{४ ३ २ ४ ५}षे^१वशि^१ ।
^{३ २}क्षता^{४ २ ४ ५}३४ओ^१होवा^{१ २ २} । सा^{१ ०}ह^१स्ने^१षे^१ । व^१शा^१यि^१क्षता^१ २ ३ ४ यि^१ ।
^{५ ५}ओ^१द्द^२हा^{१ २ २ १ २} । शा^१र३ता^१ । नी^१के^१व^१ । प्र^१जि^१ । गा^१ । ता^१यि^१
^{२ ३ ५}भा^१ष्णु^१र३४या^१ । ह्य^१र३न्ता^{१ २ २ २}यि^५ । वा^१र्त्ता^१णि^१दो^१ २ ३ ४ वा^१ ।
^{३ ५}प्र^{३ ४}ह^{३ ४ ५ २}र३४षे ॥ (२) ह^{३ ९}न्ति^{४ २ ४ ५}वृ^{३ ९}त्रा^{४ २ ४ ५}णि^{४ २ ४ ५}दा^{४ २ ४ ५} । प्र^{४ २ ४ ५}शु^{४ २ ४ ५}षा^{४ २ ४ ५} ३ ४ ओ^{४ २ ४ ५}होवा^{४ २ ४ ५} ।
^{१ २ २}ह्य^{१ ०}न्ति^{५ ५}वृ^१त्रा^१ । णि^{५ ५}दा^१प्र^१शु^१षा^१र३४यि^१ । ओ^१द्द^१हा^१ । गा^१र३यि^१
^{२ १ २ १ २ १}रेः^{२ ३} । आ^५यि^५व^१ । प्र^१र^१ । साः^१ । आ^१ । स्था^१पि^१न्वा^१र३४यि^५रा
^{१ २ १ २ १ ५ १}यि^१ । दा^१र३त्रा^१ । णा^१यि^१पु^१रु^१भो^१ २ ३ ४ वा^१ । जा^१ २ ३ ४
^५साः (३) ॥ ११ * ॥ [३]

॥ वाङ्निधनं क्रौञ्चम् ॥ अभायिप्रावा३१२३४ः । सुरा ।

^{११} धसाश्म । ^{११} इन्द्रमर्चा ^{५२} ३१२३४ । ^{३२} यथा । ^{२२} विदाश्चि । ^{२२} योजा

^१ रिनु ^{३२} ३१२३४ । ^{४५२} भ्योमघवापुह । ^{१२} वद ३ः । ^{२१} सहास्त्रेणा ^२ ३

^१ १२३यि । ^४ वशाप्रयिज्ञताउ ॥ (१) ^{२१} सहास्त्रेणा ^१ ३१२३४यि ।

^५ वशि । ^{३२} क्षताश्चि । ^{२१} सहास्त्रेणा ^२ ३१२३४यि । ^५ वशि । ^{३२} क्षता

^{२१} ३यि । ^२ शतानीका ^३ ३१२३४यि । ^{३५५२} वप्रजिगातिधृ । ^{२१} ष्णुया

^{२१} ३ । ^२ हन्तायिवार्त्ता ^४ ३१२३ । ^{२१} णिदाप्रशुषाउ ॥ (२) ^{२१} हन्ता

^२ यिवात्रा ^{५२} ३१२३४ । ^{३२} णि । ^{२१} दा । ^{२१} शुषाश्चि । ^२ हन्तिवृत्ता

^{५२} ३१२३४ । ^{३२} णिदा । ^{२१} शुषाश्चि । ^२ गिरेरायिवा ^२ ३१२३४ ।

^{३४२५} प्ररसाश्चपि । ^{३२} न्विराश्चिदत्राणायिपू ^{२१} ३१२३ । ^४ रुभोपूज

साउ । वा ॥ (३) ॥ १५ ॥ [४] १३

अथ तृतीयप्रगाथे—

प्रथमा ।

१ १ १ र २ र ३ १ २
त्वामिदाह्नो नरोपीष्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।

१ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २
स इन्द्र स्तोमवाहस इह शुधु पस्व सरमागहि ॥ १ * ॥

हे “वज्रिन्” वज्रवन्निन्द्र ! यं “त्वाम्” “भूर्णयः” हविर्भरण-
शीलाः “नरः” कर्मणां नेतारो यजमानाः “इदा” अद्य “ह्यः”
पूर्वेद्युष “अपीष्यन्” सोममपाययन् । हे इन्द्र ! “सः” त्वं
“स्तोमवाहसः” स्तोत्रवाहकस्य मम स्तोत्रम् “इह” यज्ञे “शुधि”
मृणु “सस्वरं” गृह्य [“दुर्याः” (८) “स्वसराणि” (१०)—इति
(निघ० ३, ४) गृह्यनामसु पाठात्] “उपागहि” उपागच्छ ॥

“स्तोमवाहसः”—इति छन्दोगाः, “स्तोमवाहसाम्”†—
इति बहुचाः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मन्स्वासुशिप्रिन्हरिवस्तमौमहेत्वयाभूषन्ति वेधसः ।

२ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २
तव श्रवांस्तुपमान्युक्थयस्तुतेष्विन्द्रगिर्वणः ॥ २ ‡ ॥ १४

* ऋ० आ० ४, १, १, १० (१ भा० ६१० पृ०) ऋ० वे० ६, ७, ३, १ ।

† अतएव छन्दोबार्हिक व्याख्यासरे ‘अस्माकम्’—इति वज्रवचनात्
व्याख्यानम् । ‡ ऋ० वे० ६, ७, ३, १ ।

हे “सुशिप्रिन्” शोभनहनो ! “हरिवः” हरिनामकाख्यो-
 धेतः ! “गिर्वणः” गौर्भिर्वननीयेन्द्र ! “त्वया” त्वयि “विधसः”
 परिचारकाः “आ भूषन्ति” * आभवन्ति, “मत्स्व” सोमेन
 मादय आत्मानम् किञ्च “तम्” त्वा वयम् “इमहे” याचामहे ।
 किं वाच्यम् ? इत्यत्राह—“सूतेषु” सोमेषु अभिषुतेषु सक्तु
 “तव” “अवांसि” अन्नानि † “उपमानि” उपमानभूतानि,
 हे “उक्थ” प्रशस्व ‡ तव प्रसादात् सन्त्विति ॥

“सशिप्रिन्”-“सशिप्र”—इति पाठौ ॥ २ ॥ १४

॥ माधुच्छन्दमम् ॥ त्वामिदा । होयि । हियोन
 राईए । अपायिष्यन्वा । ज्ञायिन्भूर्णा २ ३ ४ याः । स
 इन्द्रस्तोमवाहसः । इहाश्रूधा । औहो ३ ४ वाहांयि ।
 उपास्वासा । औहो ३ ४ वाहा । रमागा २ ३ ४ ३ यि ॥ (१)
 उपस्वसा । हो । रमागहीईए । उपास्वसा । रामा
 गा २ ३ ४ हो । मश्रासुशिप्रिन्हरिवः । तमायिमाहा ।

* ‘स्त्राषां कुर्वन्ति’—इति वि० ।

† ‘अवांसि—अन्नानि पश्यामि वा’—इति वि० ।

‡ ‘उक्था—उक्थैः सम्प्रजनीये’—इति वि० ।

॥ ‘माधुच्छन्दसं नामाच्छावाकस्य’—इति वि० ।

^{१८ २} ^{१८ २} ^१ ^१ ^{३८ २} ^{१८ २}
 औहो३४वाहायि । त्वयाभूषा । औहो३४वाहा । ति
^{१८} ^१ ^{३४२४८८} ^२ ^{३४८ ५} ^५
 वेधार३सा३४३ ॥ (२) त्वयाभूषा । हो । तिवेधसा३३ ।
^{२ ३} ^{२८ २} ^२ ^५ ^{१२१८} ^२ ^{१८} ^२
 त्वयाभूषा । तिवेधार३४साः । तवश्रवाण्युपमा । नि
^१ ^२ ^{३२ २} ^{३८ २} ^१ ^२ ^{३८}
 युषथाया । औहो २३४वाहायि । सुतायिषूवा । औ
^२ ^{३८ २} ^१ ^२ ^१
 हो३४वाहायि । द्रगिर्वा२३णा ३४३ । ओ२३४५ई ।

डा (३) ॥ ४ * ॥ [१]

^१ ^{२ २१८ ८} ^१ ^१
 ॥ मानवोत्तरम् ॥ होवायि । त्वामिदाहो नरः । हो
^२ ^२ ^{७२ ८} ^{१७ ८}
 वायि । आपीयन्वज्जिन्भूर्णयः । साइन्द्रस्तो । मावा
^१ ^७ ^३ ^५ ^{२१} ^२ ^१
 जसा३१ः । इहार२२३४श्रुधायि । उपास्वा२३सा३ । रा२
^१ ^{५८ ८} ^३ ^५ ^१ ^{२१}
 मा२३४औहोवा । गा२३४हो ॥ (१) होवायि । उपस्व
^{१ १८ २} ^१ ^२ ^{२२}
 सरमागद्धि । होवायि । ऊपस्वसरमागद्धि । मात्स्वासु
^७ ^२ ^७ ^३ ^५ ^{२१}
 शि । प्रायिन्हरिवा३१ः । तमारयिमा२३४हायि । त्वया

भूरुषा३ । ता२यिवे२३४औहोवा । धा२३४ साः ॥ (२)

होवायि । त्वयाभूषन्तिवेधसः । होवायि । त्वायाभूष

न्तिवेधसः । तावश्रवा । साउपमा३१ । नियूरव्या२३४

या । सुतायिषूरश्वा३यि । द्रा२गा२३४औहोवा । वा३ ।

३४णाः (३) ॥ ८ * ॥ [२] १४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य तृतीयाध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः ॥ ४ ॥

पञ्चमखण्डः—

प्रथमतश्चे—प्रथमा ।

२३ २३ १२ ३ १ २ ३ १ २
यस्तेमदेवरेण्यस्तेनापवस्वान्धसा ।

३ १ २ ३ २
देवावीरघशंसद्वा ॥ १ ॥ ॥

* क० मा० १८२० २४० ८सा० ।

† 'उक्तं साध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि० ।

‡ 'तृतीयसवनमभिधीयते'—इति वि० ।

॥ क० मा० ५, २, ४, ४ (२भा० १४ ४०)=४० वे० ८, १, २१, ४ ।

हे सोम । “ते” तव “देवावीः” देवकामः “अघमंसहा”
राक्षसानां हन्ता “वरेण्यः” सर्वैर्वरणीयः “मदः” मदकरः “यः”
रसः विद्यते, “तेन” “अशसा” अदनीयेन “पवस्व” चर ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
जग्निर्वृत्रममित्रियं सस्त्रिर्वाजन्दिवेदिवे ।

१ २ ३ १ २
गोषातिरश्वसाऽमि ॥ २ * ॥

हे सोम ! त्वम् “अमित्रियं” अमित्रभवं † “वृत्र” शत्रुः
“जग्निः अमि” हन्ता भवसि । किञ्च “दिवे दिवे” प्रतिदिनं
“वाजं” ‡ सङ्ग्रह्यम् “सस्त्रिः” सम्भक्तोऽमि ¶ । अपिच
“गोषातिः” गवां सातिर्दातामि, “अश्वसाः” अश्वानां दाता
चासि ।

“गोषातिः”-“गोषाउ”-इति पाठौ ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ८, १, २१, ५ ।

† ‘अमित्रियम्—अमित्रकर्मकर्तारम्’—इति वि० ।

‡ ‘वाजमिति द्वितीयैकवचनम्, षष्ठ्यप्रकवचनस्य स्थाने दृष्टव्यम् ; वाजस्य
अश्वस्य’—इति वि० ।

¶ ‘सस्त्रिः—साधनस्वभावः’—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
सन्निहोअरुषोभुवःहृपस्थाभिर्नधेनुभिः ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
सीदञ्छे पुनोनयोनिमा ॥ ३ * ॥ १५ +

हे सोम ! त्वं “सूपस्थाभिः” शोभनोपस्थानाभिः “धेनुभिः” गोभिः [गोर्विकारैः पयोभिरित्यर्थः] “सन्निहो” सन्निहितः “श्येनः न” यथा श्येनः शीघ्रमागत्य स्थानमासीदति तद्वत् “योनि” स्वकीयं स्थानम् “आसीदन्”, “न” [—इति सम्प्रत्यर्थे] इदानीम् “अरुषः भुवः” आरोचमानो भव ॥

“भुवः”—“भवः”—इति वा पाठो ॥ ३ ॥ १५

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
अयम्पूषारयिर्भगस्सोमःपुनानोअर्षति ।

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
पतिर्विश्वस्यभूमनोव्यख्यद्रोदसीउभे ॥ १ ‡ ॥

“पूषा” पोषकः सर्वेषां “भगः” भजनीयः “रयिः” धनहतुः “अयं” सोमः “पुनानः” पवित्रे पूयमानः सन् “अर्षति” कलश-

• ऋ० वे० ८, १, २२, १ ।

+ ‘उक्ता गायत्री’—इति वि० ।

‡ ऋ० ऋ० ६, १, १, २ (९भा० १५१५०)=ऋ० वे० ७, ५, २, २ ।

मभिगच्छति । तथा “विश्वस्य” सर्वस्य “भूमनः” भूतजातस्य
 “पतिः” पालयिता “सोमः” “उभे रोदसी” व्यावापृच्छिष्यौ
 “व्यस्यत्” स्वतेजसा प्रकाशयति । अनेन लोकद्वयवर्तित्वं
 सूचितम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १ १ १ २ ३ २ ३ १ १ १ १ २
 समुप्रियाचनूषतगावोमदायघृष्ययः ।

१ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २
 सोमासःक्षपवतेपथःपवमानासइन्द्रवः ॥ २ * ॥

• “प्रियाः” प्रियतमाः “घृष्ययः” अत्यन्तदीप्ताः, [यद्वा ‘अहं
 प्रथमतः स्तौमि’, ‘अहं पुरस्तात् स्तौमि’—इति परस्परं स्तौ-
 मानाः] “गावः” स्तुति-लक्षणा वाचः † “मदाय” सोमस्य
 मदार्थं “समनूषत” संस्तुवन्ति ; “उ” प्रसिद्धौ ‡ [यद्वा
 गावो धेनवः सोमस्य मदाय शब्दायन्ते] । ततः “पवमानासः”
 पूयमानाः “इन्द्रवः” दीप्ताः “सोमासः” सोमाः पथः मार्गान्
 “क्षपवते” क्षरणार्थं कुर्वन्ति ॥ २ ॥

• अ० वे० ७, ५, २, २ ।

† ‘गावः’—••• जोसम्भवानि क्षीराणि उदकानि वा—इति वि० ।

‡ ‘उ’—इति पदप्रकरण —इति वि० । ५

अथ तृतीया ।

१ २२ २२ २२ २२ २२ २२ २२
यञ्जिष्ठस्तमाभरपवमानश्रवाय्यम् ।

१ २२ ३ २ २२ २ २२ २२ २२
यः पञ्च चर्षणौ रभिरयि येन वनामहे ॥ ३ * ॥ १६ † ।

“यञ्जिष्ठः” यञ्जितमः “यः” तृतीयो रसोऽस्ति तं
“श्रवाय्यं” श्रवणीयं रसम् “आभर” अस्मभ्यमाह्वर । किञ्च “यः”
रसः “पञ्च चर्षणोः” ‡ पञ्चजनान् निषादपञ्चमान् चतुरं-
वर्णान् “अभि तिष्ठति” । अपिच “येन” रसेन वयं “रभि”
धनं च “वनामहे” सञ्जयामहे ॥ [यद्वा येन त्वां रयिं याचामहे]
तमाभर ॥ ३ ॥ १६

५ ३२ ४ ५ १२
॥ गौरीवितम् § ॥ अयम् । पूषा ३ । रयिर्मगाः । सो
२ २ १ २ ४ ५ १२
मः पुनानो चर्षता २ रयि । पातिर्विश्वा २ २ ३ । स्वभूपम्
१ २ ४ ५ ४ ५ १२
माः । वायव्यद्रो ३ २ २ ३ । दसोवा । ऊ५ भो ६ द्वायि । (३)
॥ ८ ॥ [१]

* क० वे० ७, ५, १, ४ । † “य्योतिष्ठोमो ककुब्धिचौ” — इति वि० ।

‡ ‘पञ्च चर्षणोः’ — चर्षणयोर्मनुष्याः । चत्वारो मर्त्विजाः, पुञ्चमो यजमानः ।

॥ ‘रयि’ — धनं । येन वनामहे — येन सोमेन ऊतेन रयिं धनं लभामः । वनति
र्यस्यै कृत्यै तत्राप्ययं लाभार्थे द्रष्टव्यः — इति ति० ।

§ ‘महानौरीवितम्’ — इति च० पु० । ॥ क० गा० १२५० १५० ८५५० ।

॥ तृतीयंक्रीञ्चम् ॥ अयम्पूषा । हो । रयिर्भगा ६
 ए । सोमार्ः पुनार् । नञ्वा३४५ । षार्३४ती । पतिर्वि
 श्वस्यभूमनार्३४५ । विरय्या२३द्रो । दसीज२३भा३४
 ३यि ॥ (१) समुप्रियाः । हो । अनूषता ६ ए । गावो२
 मदार । यघा३४५ । घार्३४याः । सोमासः कृण्वतेप
 थाऽ१ । पवमार३ना । मइन्द्रा२३वा३४३ः ॥ (२) यओ
 जिष्ठाः । हो । तमाभरा ६ ए । पावा२मानार् । अवा
 ३४५ । यी२३४याम् । यः पञ्चर्षणीरभौऽ१ । रयिंयार्
 इयिना । वनामार३हा ३४ ३ यि । ओ२३४५ई । डा । (३)
 ॥ ८ * ॥ [२]

॥ गौरौवितम् ॥ अयम् । पूषा३ । रयिर्भगाः । सो
 मः पुनानो अर्षितार्३यि । पातिर्विश्वा३१२३ । स्यभूपूमनाः ।

वायव्यद्रो ३१ २३ । दसोवा । ऊ ५ भो ईहायि ॥ (१)

समु । प्रियाः । अनूषता । गावोमदायधुस्यारः ।

सोमांसःकाः ३१ २३ । एवताप्रियपथाः । पावमानाः ३१ २३ ।

सञ्जोवा । दाप्रवोईहायि ॥ (२) यञ्जो । जिष्टाः । तमा

भरा । पवमानश्रवायियारः ३१ २३ । याः पञ्चचा ३१ २३ ।

षणाप्रयिरभायि । रायिंयेनाः ३१ २३ । वनोवा । मा ५

होईहायि (३) ॥ ८ * ॥ [३]

॥ श्यावाश्वम् ॥ अयाः ३१ २३ । पूषा । रयिः । भागः ।

एहिया । सो । मः पुनानो । अ । षतारयि । ऐहि

याः २ । पतिर्विश्वास्याः ३१ २३ । मारः ३४ नाः । ऐह्यारयि ।

एहिया २ । वियव्यद्रोदाः ३१ २३ । ऊ ३४ ५ भोईहायि ॥ (१)

समू ३१ । प्रीत्याः । अनू । षात । एहिया । गा ।

^२ ^२ ^१ ^१ ^{१२} ^२ ^२ ^१
 वोमदाया । घृ । घ्या२ः । एहिया२ । सोमासःका

^१ ^४ ^५ ^{१२} ^{१२}
 र्णा३ता३यि । पा२३४थाः । ऐहा२यि । एहिया२ ।

^{१२} ^२ ^४ ^१ ^५ ^{३२}
 पवमानासाश्चा३यि । दा३४५वो३हायि ॥ (२) यंघो३

^२ ^४ ^{५२} ^१ ^४ ^५ ^१
 १ । जा३यिष्ठः । तमा । भा३र । एहिया । पा । व

^२ ^{१२} ^१ ^{१२} ^१ ^१
 मानश्चा । वा । यिया२म् । एहिया२ । यःपञ्चचार्षा३

^४ ^५ ^{२२} ^{१२}
 णी३ः । आ२३४भायि । ऐहा२यि । एहिया२ । रयिं

^{१२} ^२ ^४ ^१ ^५
 येनावा३ना३ । मा२३४५वो३हायि(३) ॥ १०* ॥ [४]

^{२१२२२} ^१
 ॥ आसिताद्यम् ॥ अयम्यूपारयायिः । भगाः । सो

^{२२} ^१ ^१ ^{१२}
 मःपुनानोचर्षा३तायि । पाता२यिश्चा२ । स्यभूमनाः ।

^१ ^{१२} ^१ ^५ ^४ ^५
 वाया२ख्याद्रो२ । दसोवा३ओ२३४वा । ऊ५भो३हा

^१ ^{२१२११} ^{२२} ^२
 यि ॥ (१) समुप्रियाअनू । षता । गावोमदायघृष्ठा२३

^१ ^१ ^{१२} ^१
 याः । सोमा२साःका२ । एवनेपथाः । पावा२माना

२। सञ्जीवाञ्चो२३४वा । दाप्रवोद्दहायि ॥२॥ यञ्चो
जिष्ठस्तमा । भरा । पवमानश्चाञ्चर३याम् । याःषा
२ञ्चाञ्च२ । षण्णोरभायि । रायी२र्यायिना२ । वनी
वाञ्चो२३४वा । माप्रवोद्दहायि(३) ॥ २० * ॥ [५]

॥ निषेधम्† ॥ अयम्यूषारा ३ यिर्भगाः । सोमाःपुना ।

मोअर्षिता२यि । इहा३ । पाता३यिर्वायिश्चा । हाञ्चो
२३४हा । स्यभूमा२३नाः । इहा ३ । वाया ३ ख्याट्ठा ।

हाञ्चो२३४हा । दसी३जप्रभा६पू६यि ॥१॥ समुप्रियाञ्चा

३नूषता । गावोमदा । यघृष्या२ः । इहा ३ । सो

मा३साःका । हाञ्चो२३४हा । एवतेपा२३थाः । इहा३ ।

पावा३माना । हाञ्चो २ ३ ४ हा । सञ्चा३यिन्दाप्रवा ६

पू६ः ॥२॥ यञ्चोजिष्ठस्ता३माभरां । पवमाना । अवा

१ १ २ १ २ ४ ५ २ २ ४ ५
 विया॒रम् । इ॒हा ३ । याःपा॒श्वा॒चा । हा॒हो॒र३४हा ।

१ २ १ २ १ २ ४ ५ २ ३
 षणी॒रा॒र३४भा॒यि । इ॒हा ३ । रायी॒श्या॒यिना । हा॒हो॒र३

३ ३ २ ४ २ १ १
 ४हा॒र३४ हा । वना ३ मा ५ हा ६ ५ ६ यि । हे २ ३

१.१
 ४ ५ (३) ॥ २ * ॥ [६]

४ ३ २ ४ २ ४ ५
 - ॥ य॒ज्ञाय॒ज्ञीयम् ॥ अ॒याऽ५५म् । षा॒रा॒श्रिर्भा॒गाः ।

१ २ १ २ २ १ १
 सोमः॒पुना । नो॒श्आ॒र्षा॒श्तायि । पता॒रि॒र्वि । श्व॒स्य

२ १ २ २ १ २ ३ २
 र३भू । ऊ॒म्नायि । मा॒नाः । वा॒य॒ख्य॒द्रोद॒सी २ उभा

१ २ १ २ २ २ २ २
 उ ॥ (१) भा॒यि॒साम् । उ॒प्रि॒या॒अ॒नू॒ष॒तगा॒वोम॒दा । या

१ २ २ १ २ १ २ १
 श॒घा॒र्षा॒श्याः । सोमा॒र॒सः । कृ॒ण्वार॒श्ता । ऊ॒म्नायि ।

२ २ १ २ २ ३ २ १ २ १ २
 पा॒श्याः । पा॒व॒मा॒नास॒आ॒रि॒न्दवा॒उ ॥ (२) वा॒याः । ओ

२ २ २ ३ २ १ १ १
 जिष्ठ॒स्त॒माभ॒र॒प॒व॒मा॒ना । आ॒श्वा॒आ॒श्याम् । यःपा॒र॒श्च ।

चर्चरश्ना । ऊन्मायि । आश्भायि । रायिंयेनवन्माश्
महाउ । वाश्४५(३) ॥ १३ * ॥ [७]

॥ यद्वाहिष्ठीयम् ॥ अयम्पूषारयिर्भगः । अयम्पूषोवा ।
रयिर्भगाः । सोमःपूरश्ना । नोअर्षतायि । पतिर्वारश्
यिश्वा । स्यभूमनाः । वियख्यारश्द्रो । दसीऊरश्भाश्
४३यि ॥(१) समुप्रियाअनूषत । समुप्रियोवा । अनूष
ता । गावोमारश्दा । यघृषयाः । सोमासारश्कां ।
एवतेपथाः । पवमारश्ना । सइन्दारश्वाश्४३ः ॥(२) य
ओजिष्ठस्तमाभर । यओजिष्ठोवा । तमाभरा । पवमां
रश्ना । अवायियाम् । यःपच्चारश्चा । षणीरभायि ।
रयिंयारश्यिना । वनामारश्दाश्४३यि । ओरश्४५ई ।

डा (३) ॥ १४ * ॥ [८]

२ १ २ २ १ १ २ २
॥ कौञ्चाद्यम् ॥ अयम्पूषीहो । रायिर्भगाः । सो

१ २ ४ १ १ २
मःपुना३ । नोआर्षाप्रताई ५ ईयि । पतिविश्वीहो ।

२ २ १ २ १ २ ४
स्थभूमनाः । वियख्यद्रो३ । दासी३जपूभाई ५ ईयि ॥ (१)

२ १ २ २ २ २ १ २ ४
समुप्रियौहो । आनूषता । गावोमदा३ । याघा३र्षा ५

२ २ १ २ २ २ १ २
बाई ५ ईः । सोमासःकौहो । एवातेपथाः । पवमाना३ ।

१ २ ४ २ २ १ २ २ २ २
साआर्यिन्दापूवाई ५ ईः ॥ (२) यत्रोजिष्ठौहो । तामाभ

२ २ १ २ ४ २ १ २
रा । पवमाना३ । आवा३आप्रयाई ५ ईम् । यःपञ्चचौ

२ २ २ २ २ १ २ ४
हो । षाणीरभायि । रयिंयेना३ । वाना३मा ५ हाई ५

ईयि (३) ॥ १७ * ॥ [८]

३ २ २ ४ ४ ४
॥ ऐडकौत्सम् ॥ अयञ्चौपूर३ । षारयिर्भगईया ।

१ २ २ २ २ १ १ २ १ २ १
सोमःपुनानोअर्षति । पातिर्विश्व । स्थभूमार३नाः । वा

२ २ १ २ २ १ २ १ २
या३हा । ख्याद्रो३हा । दसीजर३भा३इयि ॥ (१) स

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

मासः६। एवतेपारश्थाः। पावाश्चा। मानाश्चा।

सइन्दारश्वाश्च४३॥(२) यओहीजारश्चयि। छस्तमाभर

इया। पवमानश्रवायियम्। याःपञ्चच। षणीरा२३

भायि। रायीश्चायि। यायिनाश्चायि। वनामा२३

श्चाश्चयि। ओ२३४पुंई। डा (३)॥ ५ * ॥ [१०]

॥ मधुश्चुन्निधनम् ॥ अयम्पषारयिर्भगाश्च। सोमःपु

नाश्नोर्चर्षताश्चयि। चाश्चा। औश्चोश्वा। आयि

ही२। पतिर्विश्वाश्चाभूमनाश्च। चाश्चा। औश्चो

श्वा। आयिही२। वायश्चोश्च। चाश्चायि। औ

श्चोश्वा। आयिही२। दसी। ऊ२भा२३४ औश्चो

वा ॥(१) समुप्रियाअनूषताश्च। गावोमदाश्चाघृष्ययाश्च।

हाश्चा । औश्होश्वा । आयिहीर । सोमासः कृष्णवा ।

तिपथाः । हाश्चा । औश्होश्वा । आयिहीर । पा

वमानाः । हाश्चायि । औश्होश्वा । आयिहीर ।

सद् । दारवारश्च औश्होवा ॥ (२) यथोजिष्ठस्तमाभरा

श्च । पवमानाश्चावायियाश्च । हाश्चा । औश्होश्

वा । आयिहीर । यः पञ्चचाश्पर्णीरभाश्चि । हाश्

चा । औश्होश्वा । आयिहीर । रायियेनाश्च । हा

श्चायि । औश्होश्वा । आयिहीर । वना । मारहा

रश्च औश्होवा । मधुश्चुयताश्च ४५ः (३) ॥ १८ * ॥ [११]

॥ कषववृद्धत् ॥ औश्होश्चयम्पूषाश्च । रयायिर्भाश्गार

श्चः । हाहोयि । सोमः पुनानोऽर्षति । पतायिर्वाश्चि

श्वाश्च ४६ । होहोस्वभूमाश्नारश्च ४७ । हाहोयि । वियास्वा

१२०२३४ । हाहो । दसौ३ । ऊ२३४भायि । उऊवा

ईहाउ । वा ॥ (१) औहोसमुप्रिया३१ । अनूषा१ता२

३४ । हाहोयि । गावोमदायघृष्यः । सोमासा१ःकां२

३४ । हाहो । एवतायिपा१थार३४ः । हाहोयि । पवा

मा१नार३४ । हाहो । सआ३यि । दा२३४वाः । उ

ऊवाइहाउ । वा ॥ (२) औहोयओजिष्ठा३१ । तमाभा

१२०२३४ । हाहोयि । पावमानअवायियम् । यःपाञ्चा

१२०२३४ । हाहो । षणायिरा१भार३४यि । हाहोयि

१२०२३४ । हाहो । वना३ । मा२३४हायि ।

उऊवाईहाउ । वा (३) ॥ ८ * ॥ [१२] १६

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा ।

वृषामतीनाम्पवतेविचक्षणः

सोमोअन्हाम्प्रतरीतोषसान्दिवः ।

३ १ २ २ ४ ३ १ २ ३
प्राणासिन्धूनाङ्गलशा^१अचिक्रद

१ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २
दिन्द्रस्यहाद्याविशन्मनीषिभिः ॥ १ * ॥

अयं “सोमः” “पवते” अभिषूयते । कौटुशः सोमः ?
“मतौनां” मतयः स्तोतारः तेषां “वृषा” वर्षकः, “कामानां”
“विचक्षणः” विद्वष्टा, “अङ्गाम्” उषसां “दिवः” द्युलोकस्य
आदित्यस्य वा “प्रतरीता” प्रवर्द्धयिता किञ्च “सिन्धूनां” स्यन्द-
भानानाम् उदकानां “प्राणा” प्राणयिता चेष्टयिता [अनितेः
(अदा० प०) शानचि, “बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)”—
इति शन्विकरणस्य लुक्, सुपां सुलुगित्याकारः (७, १, ३६)]
“कलशान्” “अचिक्रदत्” शब्दं करोति प्रवेष्टुम् । किं कुर्वन् ?
“इन्द्रस्य” “हाद्दि” हृदयम् “आविशन्” प्रविशन् “मनीषिभिः”
मनसईषितृभिः स्तुतिभिः स्तुत इति शेषः । व्यवहित मपि
मनीषिभिरित्येतत् पवतइत्यनेन सम्बध्यते ॥

“अङ्गाम्”-“अङ्गः”—इति, “उषसाम्”-“उषसः”—इति,
“प्राणा”-“प्राणा”—इति, “अचिक्रदत्”-“अवीवशत्”—इति
च पाठाः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १ २ ३ २ ३ १
मनीषिभिः पवते पूर्यः कविः नृ-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
भिर्यतः परिकोशाः असिध्यदत् ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
त्रितस्य नाम जनयन्मधुक्षर-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
त्रिन्द्रस्य वायुः सख्याय वर्द्धयन् ॥ २ ॥

अयं सोमः “मनीषिभिः” मेधाविभिः अध्वर्यादिभिः “पवते” पूयते । यद्वा अयं मनीषिभिर्हाराभिः “पवते” क्षरति ! कौटशाऽयम् ? “पूर्यः” पुराणः “कविः” मेधावी “नृभिः” नेतृभिः अध्वर्यादिभिः “यतः” सन् “कोशान्” कलशान् प्राप्तुं “परि असिध्यदत्” परितः स्यन्दते स्रवति । “त्रितस्य” त्रिषु स्थानेषु लोकेषु विस्तृतस्य “इन्द्रस्य” यजमानस्य सम्बन्धि “नाम” नामकमुदकं “जनयन्” उत्पादयन् “मधु” मधुरं रसं “क्षरन्” क्षरति । किं कुर्वन् ? इन्द्रस्य “सख्याय” सखित्वाय “वायु” “वर्द्धयन्” प्रवृद्धं कुर्वन् ॥

“असिध्यदत्”-“अचिक्रदत्”—इति पाठौ, “युवां”-“वायोः”—इति च, “वर्द्धयन्”—कर्त्तवे—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३१ २ ३ २ ३ १ २

अयमपुनानउषसोअरोचय

३२ १ २ २

३ २

दय्सिन्धुभ्योअभवदुलोककृत् ।

३२७

३ १ २ २ २ ३ २ ३

अयन्त्रिःसप्तदुहानआशिरं

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २

सोमोहृदेपवतेचारुमत्सरः ॥ ३ * ॥ १७ †

“अयं” सोमः “पुनानः” पूयमानः “उषसः” “अरोचयत्” अदीपयत् । अयं “सिन्धुभ्यः” स्यन्दमानेभ्यः वसतीवरीभ्यः ‡ “अभवत्” समृद्धो भवति । “उ”—इति पूरणः । कौटुशोऽयम् ? “लोककृत्” लोकानां कर्त्ता [वर्षकृत्त्वाद्वेतिधारकत्वाच्चास्य लोककृत्त्वम्] । “अयं” सोमः “त्रिःसप्त” एकविंशतिं गाः ¶ ऋक्षुखेन “आशिरं”, “दुदुहानः” दुहानः [दोहस्य प्रयोजकत्वात् कर्त्तोपचारः] “मत्सरः” मदकरः “चारुं” रमणीयं “पवते” चरति । किमर्थम् ? “हृदे” हृदयाय हृदय-गमनाय ॥

“अरोचयत्”—“विरोचयत्”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १७

* ऋ० वे० ७, १, १६, २ ।

† ‘यामं साम’—इति वि०

‡ ‘समुद्रेभ्यो वा’—इत्यधिकं वि० ।

¶ ‘प्रतिसवनं सप्तसप्त गावः ००’—इति वि० ।

॥ यामम् ॥ आ२यि । इया । वृषामनायिना१म्य
वता२यि । वा३यिचक्षणः । सोमो३अ१मप्रत२रौतो२३ ।
षा३सान्दिवः । प्राणासिन्धूना१ङ्गलगा२२३ । आ३चि
क्रदत् । इन्द्रस्य३हार्दियाविशा२३न् । मना३यिषा५यिभा
ई५ईयिः ॥(१) मनी३पिभायिःपवते३पूर३ । वी३यःकवि ।
नु३भिर्यताःपरिकोशा२३ । आ३सिष्यदत् । त्रित३स्यना
मजनया२३न् । मा३धुक्षरन् । इन्द्रस्य३वायु२सखि३य२
३ । यवा३र्द्धा५या३पु३न् ॥(२) अय३म्युनानउषसो२३ ।
आ३रोचयत् । अय३मिन्धूभ्यो१अभवा२३त् । ऊ३रलो
ककृत् । अयन्ति३स्साप्तदु३दुहा२३ । ना३आंशिरम् । आ
२यि । इया । सोमो३हृदायिपवते३चा२३ । रुमा३त्सा
पू३रा३पु३ः(३) ॥ १० ॥ [१]

१ २ १ १ २ १ ० .
॥ ऐडयामम् ॥ वृषामाती२३ । नाम्पवातार३ यि ।

१ २ १ २ १ १ १
३३ । विचक्षण३ । सोमोआक्का२३म् । प्रतरायितार

२ २ २ १ २ १ १
३ । ए३ । उपसान्दिव३ । प्राणासायिन्धूर३ । नाङ्क

१ २ १ २ १ १
लाशा२३ । ए३ । अचिक्रददे३ । इन्द्रस्याद्वा २३ ।

१ २ १ २ २ १ १
दियावायिशार३न् । ए३ । मनौषिभिरे३४३ ॥ (१) मनौ

१ २ १ २ १ १ १
षायिभा२३यिः । पवतायिपू२३ । ए३ । विंयःकविरे३ ।

२ १ २ १ २ १ १
नृभिर्यातार३ः । परिकोशा२३ २३ । ए३ । असिष्यददे

२ १ २ १ २ १ १
३ । त्रितस्थाना२३ । मजनायार३न् । ए३ । मधुक्ष

२ १ २ १ २ १ १
रन्ते३ । इन्द्रस्यावा२३ । यु२सखीयार३ । ए३ । यव

२ १ २ १ २ १ १
ईयन्ने३४३ ॥ (२) अयम्पूना२३ । नउषासा२३ः । ए३ ।

१ २ २ १ २ १ १
अरोचयदे३ । अय२सायिन्धूर३ । भ्योअभावार्३ त् ।

२ २ २ १ २ १ १
ए३ । उलोककृदे३ । अयन्तायिःसा२३ । ऋदुदूद्वा२३ ।

२ २ १ १ १ १
हानाशि । र० सो० र० माः । ऊन्मायि । हा० र० हा० यि ।

१ २ २ १ २ १ १ १ १ १
पावतेचारुमारत्सराउ । वा० र० ४५ (३) ॥ १७* ॥ [३] १७

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायणस्य तृतीयस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

एवाहीति-षष्ठे खण्डे ॥—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

३ १ २ २ ३ १ ३ १ २ २ ३ २ ३ २
एवाह्यसिवीरयुरेवाशूरउतस्थिरः ।

३ २ २ २ ३ १ २
एवातेराध्यम्नः ॥ १ ॥

हे इन्द्र ! त्वं “वीरयुः” वीरान् युद्ध-कर्मणि समर्थान्
शत्रून् हन्तुं कामयमानः “एव असि” भवसि खलु । “हि” प्रसिद्धो
अतएव त्वं “शूरः” सामर्थ्यवान् “एव” भवसि । “उत”
अपिच “स्थिरः” सङ्ग्रामे धैर्यवान् भवसि, एकत्र स्थित्वैव शत्रून्
सम्प्रहरसीत्यर्थः । एवं सति “ते” तव “मनः” “राध्य”

* क० गा० १६प्र० १अ० १७सा० ।

† ‘यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोमसाम । एह्यसाकमुक्यम् । एवाह्यसि आसहीयवं
द्वितीयमुक्यम्’—इति वि० अनेति शेषः ।

‡ क० अ० १० ३, १, ४, १० (१भा० ४७५पृ०) नृ० वे० ६, ६, २०, १ ।

स्तुतिभिः आराधनीयम् “एव” । यतोऽनेन मनसा त्वं यच्चबधं
सङ्ग्रामे धैर्यादिकं करोषीति तव मन एव सर्वैः स्तुत्य-
मित्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एवारातिस्तुवीमघविश्वेभिर्द्वायिधातृभिः ।

१ २ ३ १ २
अधाचिदिन्द्रनस्सचा ॥ २* ॥

हे “तुविमघ !” [तुषिरिति बहु-नाम (निघ० २, १, १)] बहु-
धन इन्द्र ! “विश्वेभिः” सर्वैः “धातृभिः” कर्मधारकैः [यद्वा,
देवानां हविर्दानेन पोषयितृभिः सर्वैः यजमानैः] तव “रातिः”
गवाश्वादि-दानं “दायि” तैर्धार्यत एव [दधातेर्लुङि कर्मणि
रूपम्] । “चित्” एवार्थे । “अथ” अनन्तरमेव हे इन्द्र !
एवंविधस्त्वं “नः” अस्माकं यष्टृणामपि “सचा” वा धनादि-दा-
नेन कर्म-सहायो भव ॥

“इन्द्रनस्सचा”--“इन्द्रमेसचा”—इति पाठौ ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ६, ६, २०, ३ ।

†, ‡ ‘अधा चित्—इति पद पूरणः—इति वि० । सायणसते तु अघेत्यवयव
मथेत्यर्थे, “निघातस्य च (६, ३, १३६)”—इति दौर्घे भवति “अधा”—इति ।

§ ‘अथवा सचा सचा’—इत्यधिकं वि० ।

अथ तृतीया ।

२७ ४ १ ९ ३१२ २२
 मोषुब्रह्मेवतन्द्रयुर्भुवोवाजानाम्यते ।

१ १ ६ २ ३ १ २
 मत्स्वास्त्यस्यगोमतः ॥ ३ * ॥ १८

हे “वाजानाम्यते” अवाजानाम्यते ! बलानां वा, हे इन्द्र !
 “तन्द्रयुः” * निष्कारणं निवृत्तकर्मवत्त्वादानस्ययुक्तः “ब्रह्मेव”
 ब्राह्मण इव त्वं “मा उ षु भुवः” ‡ सुष्ठु मा भव, सर्वदास्मत्-कर्म-
 रतो भवेत्वाशासनम् ¶ । तदेवाह—“सुतस्य” अभिषुतस्य, ततः
 “गोमतः” गव्येन क्षीरेण दध्ना वा मिश्रणवतः सोमस्य पात्रेण
 “मत्स्व” माद्य दृष्टो भव ॥ ३ ॥ १८

५२२ २ ४ ५२ २२१
 ॥ उक्थामहीयवम् ॥ एवाहो३ असिवीरयूः । एवा
 २ १ २ १ २२२ १
 ११२२ः । उता२३स्थिराः । आयिवातेरा । धिया
 २ ५२२ २ ४ ५२ २ १
 २३मनाउ । वा३ ॥ (१) एवारा३तिस्तुवीमघा । विश्वा

* ऋ० वे० ६, ६, २०, ४ ।

† “उ सु”—इति पदपूर्णे । मा इति प्रतिषेधः, तन्द्रयुरित्याख्यातेन सम्बन्धितस्य ; मा तन्द्रयुः मालस्य कुट्—इति वि० ।

‡ “भुवः वाजानां पते”—भुवर्लोकस्य अश्वानां घनानां चाधिपते भुवर्गदृष्टस्य प्रदर्शनार्थं सर्वेषां लोकानां पते—इति वि० ।

¶ अथह ! अस्यामृषि ब्राह्मणानामालस्य-स्वभावो वर्धितः ।

यिभा१यिद्वा२ । यिधा२३ तृभायिः । आधाचिढायि ।
 २ १ २ १ २ १ २ १ २ १

द्रना२३ःसचाउ । वा३ ॥(२) मोषुब्रा३ह्मवतन्द्रयूः ।

भुवोवा१जा२ । ना२३म्यतायि । मात्स्वासुता । स्थगो

२ २ १ १ २ १ २ १ २ १
 २३मताउ । वा३ । स्तौषे२३४५(३) ॥ ११ * ॥ [१]

५ २ २ ४ ५ २ ४ ५ २ ४ ५
 ॥ सौभरम् ॥ एवा३हो३असिवीरयोवा । एवांशू२

१० १ २ ५ १ २ २ २
 राउता२३ । हो । स्था२३४यिराः । एवातेरा । धिया

५ २ १ २ ५ २ ५ २ ५ २ ५
 ३७७३यि । मा२ना२३४औहोवा ॥(१) एवा३रा ३ ति

५ २ ५ २ ५ २ ५ २ ५ २ ५
 स्तुवीमघोवा । विश्वेभा२यिद्वायिधा२३ । हो । तूर

५ २ ५ २ ५ २ ५ २ ५ २ ५
 ३४भायिः । अधाचिदि । द्रना३हा३यि । सा२चा२३४

५ २ ५ २ ५ २ ५ २ ५ २ ५
 औहोवा ॥(२) मोषू३ब्रा३ह्मवतन्द्रयोवा । भुवोवा२

१ १ २ ५ १ २ ५ १ २ ५ १ २
 जाना२३म् । हो । पा२३४तायि । मत्स्वासुत । स्थ

^{५ २} गो३हा३यि । ^{१ ४ ३} मार॑ता २ ३ ४ औ॒दीवा । ^{५२ २} ऊ २ ३ ४ ५

(३) ॥ २ * ॥ [२] १८

द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

^{२ ३ १ २} इन्द्रं विश्वाअवीवृधन्समुद्रव्यचसङ्गिरः । ^{३ १ २ ३ १ २}

^{३ १ २} रथीतम॑रथीनांवाजाना॑सत्यति॒म्यति॑म् ॥ १† ॥ ^{३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}

“विश्वाः” सर्वाः “गिरः” अस्मदीयाः स्तुतयः “इन्द्रम्” “अवी-
वृधन्” वर्द्धितवत्यः [वृधेर्षिचि चङि “उर्कृत् (७, ४, ७)”
—इत्यनुवृत्तौ “नित्यं छन्दसि (७, ४, ८)”—इति ऋकारस्य
ऋकार-विधानात् लघूपधगुणाभावः, निपातस्वरः (८, १ २८)]
कीदृशमिन्द्रम् ? “समुद्रव्यचसं” समुद्रवद् व्याप्तवन्तं, “रथीनां”
रथ-युक्तानां योद्धृणां मध्ये “रथीतमम्” अतिशयेन रथ-युक्तं,
“वाजानाम्” अन्नानां “पतिं” स्वामिनं, “सत्यति” सतां सन्मार्ग-
वर्त्तिनां पालकं [“पत्यावैश्वर्ये (६, २, १८)”—इति पूर्वपदप्रकृ-
तिस्वरत्वम्] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ १ ३ १ २
सख्येतद्वाजिनोमाभेमशवसस्पते ।

२ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २
त्वामभिप्रनोनुमोजेतारमपराजितम् ॥ २ * ॥

हे “शवसस्पते” † बलस्य पालकेन्द्र ! “ते” तव “सख्ये” अनुग्रहप्रयुक्ते सखित्वे वर्त्तमाना वयं “वाजिन” अश्ववन्तः भूत्वा “माभेम” शत्रुभ्यो भीतिं प्राप्ता मा भूम । अतः “त्वाम्” अभयहेतुम् “अभि प्र नोनुमः” सर्वतः प्रकर्षेण स्तुमः [ण स्तुतो (अदा०, प०), “णोनः (६, १, ६५)”—इति नत्वम्, यङ्लुक् (२, ४, ७४), प्रत्ययलक्षणेन (१, १, ६२), “सन्त्यङोः (६, १, ८)”—इति हिर्भाविः, “गुणो यङ्लुकोः (७, ४, ८२)”—इत्यभ्यासस्य गुणः, प्रत्ययलक्षणेन धातुसञ्ज्ञायां (३, १, ३२) लटोमस् (३, ४, ७८), अदादिवद्भावात् शपोलुक् (२, ४, ७२)] । कीदृशं त्वाम् ? “जितारं” युद्धेषु जयशीलं अपराजितं क्वापि पराजय-रहितम् ॥

“प्रनोनुमः”—“प्रणोनुमः”—इति पाठौ ॥ २ ॥

* ऋ० वे० १, १, २१, २ ।

† ‘अश्वस्य यशसोवाधिपते’—इति वि०

अथ तृतीया ।

१ १२ १२ ३ २ ३ १ १२ ३ १२

पूर्वीरिन्द्रस्यरातयोनविदस्यन्यतयः ।

१, १२ १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १

यदावाजस्यगोमतस्तोतृभ्योमच्छतेमघम् ॥ ३ * ॥ १८†

॥ इति द्वितीयस्थार्द्धः प्रपाठकः ॥

“इन्द्रस्य” सम्बन्धिन्यः “रातयः” धन-दानानि “पूर्वीः” अनादि-काल-सिद्धाः, अस्थेन्द्रस्य सर्वदा यष्टृभ्यो धनदानमेवं स्वभाव इत्यर्थः ; एवं सति इदानीन्तनोऽपि यजमानः “स्तोतृभ्यः” ऋत्विग्भ्यः “गोमतः” गो सहितस्य “वाजस्य” अश्वस्य पर्याप्तं “मघ” धनं “यदा” “मंहते” दक्षिणारूपेण ददाति, तदानीं “रातयः” बहु-धन-दान-पूर्वकाणीन्द्रस्यात्म-विषयाणि रक्षणानि “न वि दस्यन्ति” विशेषेण नोपचीयन्ते । [“यदा”-“यदि”—इति पाठौ । “मघ”, “रेक्णः”, “रिक्थं”—इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेषु धननामसु (निघ० २, १०) मघशब्दः पठितः । “दाति”—“दाशति”—इत्यादिषु दशसु दानकर्मसु “मंहते”—इति पठितम् (निघ० ३, २०, १०) । पूर्वीः—पुरुशब्दस्य “वोतो गुणवचनात् (४, १, ४४)”—इति ङीष्, आद्यस्योकारस्य दीर्घश्चान्दसः, जसि “दीर्घाञ्जसिच (६, १, १०५)”—इति निषेधं वाधित्वा “वा छन्दसि (६, १, १०६)”—इति पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्, ङीष्ः प्रत्ययस्वरणेणोदात्त-

त्वम् । मंहते—यपः पित्वादनुदात्तत्वम्, तिङश्च ल-सार्वधातुक-
स्वरेण “तिङ्तिङः (८, १, २८)”—इति निष्ठातो न भवति
“निपातैर्यद्यदिहन्त (८, १, ३०)”—इति निषेधात् ॥३॥ १८

॥ षाष्टादष्टाद्यम् ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् । ऐया
ह्यायि । समुद्राऽश्व्या २ । चसाङ्गाशिरार ३ः । ऐया
२३ ह्यायि । रथायिताश्मा २म् । रथायिन ३म् । ऐया
२३ ह्यायि । वाजाना १० सा २त् । पतायिम्पाशती २३म् ।
ऐयार ३४ ३यि ॥ (१) सख्ये त इन्द्रवाजिनः । ऐयाङ्गा
यि । माभायिमाश्या २ । वसास्याशता २३यि । ऐयार
३४ ३यि । तुवामाशभी २ । प्रनोनूश्मा २३ः । ऐया २ ३
ह्यायि । जेताराश्मा २ । पराजाशयिता २३म् । ऐयार
३४ ३यि ॥ (२) पूर्वो रिन्द्रस्य रातयः । ऐयाह्यायि । न
वायिदाशस्या २ । तियूताश्या २३ः । ऐया २ ३ ह्यायि ।
वदावाश्या २ । स्यगोमाशता २३ः । ऐया २ ३ ह्यायि ।

स्तोतृभ्योऽमा२ । चतायिमा१घा२३म् । ऐया२३३३३
 श्यि । औ२३४पूर्व । डा(३) ॥ १२ * ॥ [१]

॥ आष्ट्रादष्टोत्तरम् ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्नयादौ ।

हो३वा । समुद्रव्यचसम् । गायिरा२३ । ऐया २३३त् ।
 औ२३३होवा । रथायितम२३३ । थायिना२३३म् । ऐया
 २३३त् । औ२३३होवा । वाजाना२३३त्पतिम् । पातो २
 ३३म् । ऐया२३३त् । औ२३३होवा३३३ ॥ (१) सख्येतइन्द्र
 वाजिनऐयादौ । हो३वा माभेमशवसः । पाता२३
 यि । ऐया२३३त् । औ२३३होवा । त्वामभिप्रनो । नूमा
 २३३ । ऐया२३३त् । औ२३३होवा । जेतारमपरा । जा
 यितार३३त् । ऐया२३३ । औ२३३होवा३३३ ॥ (२) पूर्वैरि
 न्द्रस्यरातयऐयादौ । हो३वा । नविदस्यन्तियू । ता

१ १ १ १ १ १ १ १
यार३ः । ऐया२३त् । औ२३होवा । यदावाजस्यगो ।

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
मातार३ः । ऐया२३त् । औ२३होवा । स्तोतृभ्योम

१ १ १ १ १ १ १ १
हते । माघार३म् । ऐया२३त् । औ२३होवा३४३ ।

१
औ२३४पुई । डा(३) ॥ ११ # ॥ [२]

५ २ ४ ५ ४ ५ १ १ १
॥ कालेयम् ॥ इन्द्रवा३यिश्वा३वौवृधान् । समू

१ १ १ १ १ १ १ १
व्या । चसङ्गिरार३ः । रथा३यि । तार३४ । म

१ १ १ १ १ १ १ १
था३यिनाम् । वाजाना३सौ । वा३४३औ३४वा । पता

५ २ १ ४ ५ ४ ५ १ १ १
५ यिम्पतायिम् ॥ (१) सख्येता३इन्द्रवाजिनाः । माभा

१ १ १ १ १ १ १ १
यिमशा । वसस्पता२३यि । तुवा३म् । आ२३४ । भिं

५ २ १ १ १ १ १ १ १ १
प्रनो । नू३माः । जेतारमौ । वा३४३औ३४वा । परा

५ ५ २ ४ ५ ४ ५ १ १ १
५ जिताम् ॥ (२) पूर्वीरा३यिन्द्रस्यरातयाः । नवा३यिद

१ १ १ १ १ १ १ १
स्या । तियूतया२३ः । यदा३ । वा२३४ । जस्यगो ।

मांताः । स्तोतभ्योमौ । वा३४३ओ३४वा । चताश्चि

मघाम् । हो३४ । डा(३) ॥ ३ * ॥ [३]

॥ नार्मेधम् ॥ इन्द्र विश्वाअवीवृधा३ने । स । मू । द्र

व्या । चसाङ्गाश्चिराः । रथाश्चितार३४माम् । रथा

यिनाम् । औहोहो३४वा । वार३४जाहायि । ना३

सान्पाता । औहोहो३४वा । पार३४तीम् । एक्षिया

इहो ॥ (१) सख्येतन्द्रवाजिना३ण । मा । भायि । म ।

शा । वसास्या३तायि । तुवा३मार३४भौ । प्रनोनूमा ।

औहोहो३४वा । जार३४यितहायि । रमापारो । औ

होहो३४वा । जार३४यिताम् । एक्षिया इ द्वा ॥ (२)

पूर्वीरिन्द्रस्यरातया३ण । न । वायि । द । स्या । ति

यूता३याः । यदा३वार३४जा । स्यगोमाता । औहो

३५०६ख० २ख० १, २, ३] उत्तरार्द्धिकः ।

३७३

हो२३४वा । स्तो२३४तृहायि । भ्योमा२३हाता । ची

हो२३४वा । मा२३४घाम । एद्वियाईहा । हो२३४ ।

डा(३) ॥ ६ * ॥ [४] १८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य तृतीयस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः ॥ ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हाई निवारयन् ।

पुमर्थाद्यतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ३ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-

श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-

चार्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-

प्रकाशे उत्तराग्रन्ये तृतीयोऽध्यायः ॥ ६ ॥

* उ० मा० ११प्र० १ख० २सा० । † 'इति द्वितीयमहः'—इति वि० ।

‡ "अथ द्वितीयप्रपाठकस्याहः समाप्तः"—इत्येव मूल-पद-विवरणादि-सम्मतः

न तु "तृतीयो" नापि "अध्यायः"—इति ।

यस्य निश्चसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।

निर्भमे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्याय आरभ्यते ॥

तव,

प्रथम-खण्डे—

एते असृष्टमिति प्रथमतृचे—प्रथमा ।

३ १ २ २ १ २ ३ १ २ १ २ २ ३ १ २

एते असृष्टमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः ।

१ २ ३ १ २ २

विश्वान्यभिसौभगा ॥ १† ॥

“तिरः पवित्रं”‡ तिर्यग् गच्छन्तं दृष्टापवित्रं प्रति
“आशवः” शीघ्रगामिनः “एते” पवमाना “इन्दवः”, सोमाः
“विश्वानि” सर्वाणि “सौभगा” सौभगानि धनानि ¶ “अभि”
लक्ष्य “असृष्टम्” ऋत्विग्भिः सृज्यन्ते ॥ १ ॥

० ‘इदानीं तृतीयमह्यारभ्यते’—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७, १, १४, १ । ‡ ‘तिरः=अधः’—इति वि० ।

¶ ‘विश्वानि अभिसौभगा—विश्वानि सर्वाणि अभिसौभाग्यानि’—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
विघ्नन्तोदुरितापुरुसुगातोकायवाजिनः ।

१ २ ३ २ ३ १ २
त्मनाकृण्वन्तोऽर्चतः ॥ २* ॥

“वाजिनः” बलवन्तः† सोमाः “पुरु” बह्वनि “दुरिता” दुरितानि “वि घ्नन्तः” विशेषेण नाशयन्तः “तोकाय” अस्माकं पुत्रायः‡ “सुगा” अतिसुखरूपाणि धनानि॥ “अर्चतः” अश्वांसु “त्मना” आत्मना स्वयमेव “कृण्वन्तः” ददत इत्यर्थः । ऋत्विग्भिः सृज्यन्त इति पूर्वेण सम्बन्धः ॥

“त्मना”-“तना”इति—इति पाठौ, “अर्चतः”-“अर्चते”—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ ३ १ २ ३ २ ३ क २ २ ३ २
कृण्वन्तोवरिवोगवेभ्यर्षन्तिसुष्टुतिम् ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
इडामस्रभ्य्संयतम् ॥ ३ § ॥ १

* ऋ० वे० ७, १, २४, २ ।

† ‘वाजिनः’-‘अघ्नवन्तः’—इति वि० ।

‡, ॥ ‘सुगातोकाय’-‘मुखाय पुत्रपौत्राय’—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, २४, ३ ।

अथ द्वितीया ।

१९ १९११ २३१ स्म
आनस्सोमसहोजुवोरूपन्नवर्चसेभर ।

३. १३१३
सुष्वाणोदेववीतये ॥ २ * ॥

हे “सोम !” “देववीतये” देवानां पानाय देवानां कामय
वा ॥ “सुष्वाणः” अभिषुतो वा त्वं “सह.” शत्रुभिर्भवन-
समर्थं बलं “जुवः” [जु—इति गत्यर्थः ३] शत्रून् प्रति शीघ्र-
गमनं ॥ यद्वा सर्वतो गमनशीलं बलं । किञ्च [“न”—इति
चार्थे §] “वर्चसे” [वर्चदीप्तौ (भा०, आ०) दीप्त्यै सर्वत्र प्रका-
शनाय रूपञ्च “नः” अस्मभ्यम् “आ भर” आहर प्रयच्छ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

११ १ २ ३ ४ ५ ६ १ १
आनइन्दोशातग्विनङ्गवाम्पोषस्वश्वयम ।

२३१२ ३१२
वद्वाभगतिमूतये ॥ ३ ॥ २

• କ୍ର. ସଂ ୭, ୧, ୪, ୨ ।

† 'देववीतये ० ० ०—देवानां दानाय भक्षणाय वा'—इति वि०।

‡ निघण्टौ मतिकर्मसु पञ्चोत्तरशततमत्वेन पठितम् (१, १४) ।

१, ५ 'जुवः—रूपम् । न—न शब्द उपमायाँय रूपमिव'—इति वि० ।

॥ अ० वि० ७, २, ४, २ ।

हे “इन्दो” पत्निषु चरणशील ! दीपनशील ! वाहे सोम
 “शातग्विनं” * शतसहस्रसङ्ख्याकाभिः गीर्भिः युक्तं “गवां पोषं”
 गवादीनां पुष्टिवर्द्धनं. “स्वश्वं” शोभनाश्व-सङ्घ-सहितं “भगत्तिं”
 भगदत्तिं भजनीय-धन-दानञ्च † “ऊतये” रक्षणाय “नः”
 अस्माकम् “आवह” प्रापय । गवादीषु तेषां वृद्धिं प्रयच्छे-
 त्यर्थः ॥ ३ ॥ २

तन्त्वानृम्णानीति पञ्चर्चं तृतीयं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा ।

१ २ ३ ४ ५ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २

तन्त्वानृम्णानिबिभ्रन्त्सधस्थेषुमहोदिवः ।

१ २ ३ १ २

चारुसुकृत्ययेमहे ॥ १ ३ ॥

“महोदिवः” महतोद्युलोकस्य ॥ “सधस्थेषु” सहस्थानेषु
 स्थितं, “नृम्णानि” धनानि § “बिभ्रन्त” अस्मदर्थं धारयन्तं
 “चारु” कल्याणं ॥ हे सोम ! “तं” तादृशं पवमान-लक्षणं
 “त्वा” त्वां “सुकृत्यया” शोभन-क्रियया “इमहे” धनानि
 याचामहे *** ॥ १ ॥

* ‘शातग्विनं—शतसङ्ख्यातम्’—इति वि० ।

† ‘भगत्तिं—शोभमानप्रतिपत्तिम्’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, ५, १ ।

§ ‘महोदिवः—सकाशात’—इति वि० ।

§ ‘नृम्णानि—अज्ञानि वलानि वा’—इति वि० ।

॥ ‘चारु’—शोभनम्’—इति वि० ।

*** “इमहे”—इति याच्ञाकर्म्मसु निघण्टौ प्रथमं पदम् (३, १८) ।

अथ द्वितीया ।

१ २ एक १ २ ३ १ २ ३ १ २
संवृक्तधृष्णमुक्थ्यममहामहिब्रतममदम् ।

३ १ २ २ ३ १ २
शतम्पुरोरुक्षणिम् ॥ २* ॥

हे सोम ! “संवृक्तधृष्ण” संवृक्ताः सञ्चित्राः धृष्णवो धर्षण-
शीलाः शत्रवो येनासौ संवृक्तधृष्णः, तम् †, “उक्थ्य” उक्थ्याम् ।
प्रशस्यम्, ‡ “महामहिब्रतं” महौय-बहु कर्माणि, ¶ “मदं”
मदकरं “शतं” बह्वनि “पुरः” शत्रूणां पुराणि “रुक्षणि”
विनाशयन्तम् ; त्वां धनानाम् ईमहे इति § सम्बन्धः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अतस्त्वारयिरभ्ययद्राजान् सुकतोदिवः ।

३ १ २ ३ १ २
सुपर्णोऽव्यधीभरत् ॥ ३ ॥

० ऋ० वे० ७, १, ५, ९ ।

† ‘संवृक्तधृष्णम्’—अतिशयेन संवर्त्तकं, धृष्णं, धारणात्मकम्—इति वि० ।

‡ ‘उक्थ्यम्’—उक्थ्यानि स्तोत्राणि यत्र विद्यन्ते स उक्थ्यः, तम् उक्थ्यं णेम्—
इति वि० ।

¶ ‘महामहिब्रतं’—महेति महान् ब्रतमग्नं कर्म वा यव, स महिब्रतः, तं महि-
ब्रतम्—इति वि० । सदृशशब्दद्वयश्रुतेरतिमहत्त्वं गम्यत इति भावः ।

§ पूर्वार्चि श्रुतम् ।

॥ ऋ० वे० ७, १, ५, ३ । “रथिभिराजः”—इति च तत्र पाठः ।

हे “सुक्रतो” शोभनकर्मान् * पवमान सोम ! “रयिः”
 रयिम् धनमिति “अभि अयत्” † अभिगमयति “राजानं” ‡
 “त्वा” त्वाम् “अतः दिवः” अमुष्मात् द्युलोकात् “अव्यथी” व्यथा-
 रहितः “सुपर्शः” श्येनवत् ¶ “भरत्” आहरत् । तथाच
 श्रूयते—‘आदाय श्येनोऽभरत् सोमम् (ता० ब्रा०)’—इति ॥
 “अव्यथी”-“अव्यथिः”—इति पाठो ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

१ १ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
 अधाहिन्वानइन्द्रियञ्जयायोमहित्वमानशे ।

३ १ २ २
 अभिष्टिक्तदिचर्षणिः ॥ ४ § ॥

• “अधा” अथ “विचर्षणिः” कर्मणां विद्रष्टा ॥ “अभिष्टि-
 क्तत्” यजमानानाम् अभोष्ट-फलस्य कर्ता सोमः** “इन्द्रियं”
 स्वकीयं फलं †† “हिन्वानः” प्रेरयन् “ज्यायः” प्रशस्यतरं
 “महित्वं” महत्वम् “आनशे” प्राप्नोति‡‡ ॥ ४ ॥

• ‘सुक्रतो—सुक्रतु’ शोभनकर्मा—इति वि० ।

† ‘अयत्—आनयन्’—इति वि० ।

‡ ‘राजानं—सोमम्’—इति वि० ।

¶ ‘सुपर्शः—पक्षीभूत्वा’—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, ५, ४ ।

॥ ‘विचर्षणिः—विविधानां पुरुषाणां स्वामी’—इति वि० ।

** ‘अभिष्टिक्तत्—अभिष्टिः यजमानः स यः करोति स अभिष्टिक्तत्’—इति वि० ।

†† ‘इन्द्रियम्—इन्द्रस्य रूपं सोमम्’—इति वि० ।

‡‡ ‘आनशे—अशुभान्नो’—इति वि० ।

अथ पञ्चमी ।

१२१४१ २ १ २२ १ १ १
विश्वस्माद्वस्वर्द्धशेसाधारणरजस्तुरम् ।

१२ १२३ ११
गोपामृतस्यविभरत् ॥ ५ * ॥ ३

“रजस्तुरम्” † उदकस्य प्रेरकम् “ऋतस्य” यज्ञस्य
“गोपां” गोपयितारं‡ “विश्वस्मै” सर्वस्मै “स्वर्द्धशे” देवाय §
“साधारणम् इत्” समानम् § आवसन्तं सोमं “विः” पक्षी ||
श्वेनो “भरत्” स्वर्गादाहरत् ॥ ५ ॥ ३

अथ तृचात्मकं चतुर्थमृक्ते—

प्रथमा ।

३१२ ३१२ ४ १२ ३१२
इषेपवस्वधारयामृज्यमानोमनौषिभिः ।

१ २ ३ १ २२
इन्दोरुचाभिगाइहि ॥ १ * * ॥

० ऋ० वे० ७, १, ५, ५ । “विश्वस्माद्वस्वर्द्धशे” — इति ख० पु० पाठः । “विश्व-
स्माद्वस्वर्द्धशे” — इति मु० पाठः ।

† ‘रजस्तुरम्’ — रजः-समुत्तमम् — इति वि० ।

‡ गोपां — गतया ध्यानसमुत्तमम् — इति वि० ।

§ ‘स्वर्द्धशे’ — स्वः स्वर्गलोकस्य, ढशे दर्शनाय — इति वि० ।

§ ‘इत्’ — इति पदपूरणः — इति वि० ।

|| ‘विः’ — मच्छीयम् — इति वि० ।

● * ख० आ० १, १, २, २ (१ भा० ६३ पु०) = ऋ० वे० ७, १, २८, १ ।

हे “इन्द्रे” सोम ! “मनीषिभिः” ऋत्विग्भिः “सृज्यमानः”
 शोध्यमानः त्वम् ‘इषे’ अस्माकमन्नाय “धारया” “पवस्व” क्षर ।
 “तृचा” रोचमानेनान्धसा “गाः” पशून् “अभोहि” अभि-
 गच्छ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ १२ ३ २ ३ १ २
 पुनानोवरिवस्कृध्यूर्जञ्जनायगिर्वणः ।

१ २ २ २ ३ १ २
 हरेऽसृजानआशिरम् ॥ २ * ॥

हे “गिर्वणः” गोभिर्वननीय ! “हरे” हरितवर्णं सोम !
 “आशिरं” † क्षीरं प्रति “सृजानः” विसृज्यमानः “पुनानः”
 पूज्यमानः त्वं “जनाय” ‡ जनार्थं “वरिवः” ¶ धनम्
 “जर्जम्” § अन्नञ्च “कृधि” कुरु ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ २ २ १ २ २ १ २ ३ २
 पुनानोदेववीतयइन्द्रस्ययाहिनिष्कृतम् ।

३ २ २ १ २ ३ २
 द्युतानोवाजिभिर्दितः ॥ ३ ॥ ४

* ऋ० वे० ७, १, ३८, ४ ।

† ‘आशिरं—क्षीरं दधि वा’—इति वि० ।

‡ ‘जनाय—यजमानार्थम्’—इति वि० ।

¶ ‘वरिवः—वरिष्ठम्’—इति वि० ।

§ ‘जर्जम्—अन्नं यशी बलं वा’—इति वि० ।

॥ ऋ० वे० ७, १, ३८, ५ ।

हे सीम ! “वाजिभिः” हविर्लक्षणाग्रयुक्तैर्यजमानैः सह
 “सुतानः” दौष्यनानः “देववीतये” यज्ञार्थं “पुनानः” पूवमानः
 “हितः” हितकरः † त्वम् “इन्द्रस्य” “निष्कृतं” स्थानं “याहि”
 गच्छ ॥

“हितः”-“यतः”—इति पाठो ॥ ३ ॥ ४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य चतुर्थस्याध्यायस्य

प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

द्वितीय-खण्डे ॥—

प्रथमतश्चे—प्रथमा ।

३ २ ३ १ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
 अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतियुवा ।

१ २ ३ २ २

द्वयवाङ्जुक्तास्यः ॥ १ § ॥

* ‘वाजिभिः—वाजमन्त्रस्य पुरोडाशादि-लक्षणं, तद्येवामन्त्रि ते वाजिनः ऋत्वि
 ग्यजमानाः तैर्वाजिभिः ; अथवा वाजसनेद्यैः वाजिभिः, अध्वर्युभिः—इति वि० ।

† ‘हितः—निहितः स्थापित इत्यर्थः—इति वि० ।

‡ ‘बहिष्यमानमुक्तम्’—इति वि० ।

॥ ‘सप्तदशसौमिकं भेदमाह । इदानीमाख्यानि । आग्नेयम्—इति वि० ।

§ ऋ० वे० १, १, २२, ६ ।

“अग्निः” आहवनीयाख्यः तुच्छिन् प्रक्षिप्यमाणेन “अग्निना”
 निर्मज्जन-प्रसीतेन वा संह “समिध्यते” सम्यग् दीप्यते* ।
 ‘कौटुम्भोऽग्निः ? “कविः” मेधावी “मृहपतिः” यजमान-मृहस्य
 पालकः “युवा” नित्य-तरुणः “हव्यवाट्” हविषोवोढा [वहतेः
 “वहश्च (३, २, ६४)”—इति णिव-प्रत्ययः ; णित्त्वादुपधा-
 वृद्धिः (७, २, ११५) ‘गतिकारकोपपदात् कृत् (६, २, १३८)’—
 इत्युत्तर-पद-प्रकृति-स्वरत्वम्] “जुह्वास्यः” जुह्वरूपेण मुखेन
 युक्तः† [ह्यते अनयेति जुह्वः “हुवः झुवश्च (३०, २, ६१)”
 —इति क्षिप् ; तत्सन्धियोगाद् (३, २, १७८ वा०) दीर्घश्च ;
 झुवद्वावात् द्विर्भावः ; चुत्व-जश्त्वे ; प्रातिपदिक-स्वरेणात्तो-
 दात्तः (फि० १, १) ; जुह्वरास्यं यस्येति बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृति-
 स्वरत्वेन स एव शिष्यते (८, २, १) ; शेष-निपातः ; यणादेशे
 “उदात्तस्वरितयोर्णः स्वरितोऽनुदात्तस्य (८, २, ४)”—इत्या-
 कारः स्वरितः] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २८ ३१२ ३ ११ २१ २
 यस्त्वामग्ने हविष्यतिर्दूतन्देवसपर्य्यति ।

१ २ ३१२

तस्यसुप्राविताभव ॥ २ ॥

● अग्निनाग्निः समिध्यते—अग्नीनां देवेत्याहो न्याकरोति । तेन निर्मज्ज्याग्निना
 अग्निं समिध्यते सवनीयः—इति वि० ।

† ‘जुह्वास्यः’—जह्यते आस्ये अस्य जुह्वास्यः । अथ जुहोति क्रिया अस्य आस्ये
 क्रियते । अथवा जहनामा शुक्र आस्ये मृतो यस्य स जुह्वास्यः—इति वि० ।

‡ अ० वे० १, १, २३, २ ।

हे “अग्ने !” “देव ।” “यः” “हविष्मतिः” सद्यमानः
 “दूतं” “त्वाम्” “सपर्यति” * परिचरति । तस्य यजमानस्य
 “प्राविता” “भव स्या” भवश्यं रक्षको भव । [इयत इति
 हविः “अर्चि-शुचि (उ०, २, १०७)” — इत्यादिना इक्षिः, प्रत्यय-
 खरेष इकार उदात्तः (३, १, ३), हविषः पतिः हविष्मतिः,
 “नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्यस्य (८, ३, ४५)” — इति भत्वम्,
 “पत्यावैश्वर्ये (६, २, १८)” — इति पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम् ।
 सपर्यति — सपर-शब्दात् “कण्डादिभ्यो यक् (२, १, २०)” —
 इति यक्, धातुप्रकरणात् गुणप्रतिषेधाद्यर्थात् यकः किंत्वाच्च
 सपरशब्दस्य धातुत्वात्ततोविहितस्य यक आर्षधातुत्वे सति
 “अतोलोपः (६, ४, ४८)” — इति लोपः, “सनाद्यन्ता धातवः (३, १,
 ३२)” — इति धातुसञ्ज्ञायां तिप्, “कर्त्तरि शप् (३, १, ६८)”,
 तस्मिन् पूर्वस्य “अतोगुणे (६, १, ८६)” — इति परपूर्वत्वम्,
 यकः प्रत्यय-खरेणोदात्तत्वम् (३, १, ३), यपा सङ्घ एकादेशस्य
 “एकादेशउदात्त० (८, २, ५)” — इत्युदात्तत्वम्, “तिङ्तिङ्ः
 (८, २, २८)” — इति निघातो न भवति “यदृत्ताकित्वम् (८,
 १, ६६)” — इति प्रतिषेधात्] * २ ॥

अथ तृतीया ।

२ २ २ ३ १ १ २ १ २ ३ १ २
 योअग्निन्देववीतयेहविष्मात्प्राविवासति ।

१ १
 तस्यैपावकमृडय ॥ ३ १ ॥ ५

● “सपर्यति” — इति परिचरकर्मसङ्घ तृतीय नैघण्टुकम् (३, ५) ।

† ५० वे० १, १, २२, २ ।

“हविषान्” हविर्युक्तो “यः” यजमानः “देववीतये” देवानां हविर्ज्ञानहेतुयागार्थम् “अग्निम्” “आविवासति” अग्नेः समीपे विशेषेषागत्य परिचर्यां करोति * । हे “पावक” अग्ने ! “तस्मै”† “बृहय” तं यजमानं सुखय । [देववीतये—‘वी गति-प्रजन-काम्यजन-खादनेषु (अदा०, उभ०)’—इत्यस्मादश-नार्थात् क्तिन्, देवानां वीति र्यस्मिन् यागे स देववीतिः, “बहु-व्रीहो पूर्वपद-प्रकृतिसरत्वम्, “नब्विषयस्यानिसन्तस्य (फि०, २, ३)”—इति पर्युदासाद्वि-शब्दोदात्तः, मतुपः सर्वानुदात्त-त्वात् स एव शिष्यते । आविवासति—‘वा गति-गन्धनयोः (अदा० प०)’—अस्मादन्तर्भावित-ण्यर्थादागमयितुमिच्छतीत्यर्थं सन्, आह्वानेच्छा ; परिचर्यायां पर्यवस्यतीति विवासति-शब्दः परिचर्यार्थे निघण्टौ (३, ५, १०) पठितः, हिर्भावः, अभ्यासस्य ङ्लः (७, ४, ५८), “सन्धतः (७, ४, ७८)”—इति इत्वम्, “ञ्नित्यादिर्नित्यम् (६, १, १८७)”—इत्याद्युदात्तत्वम्, “तिङ् तिङ् (८, १, २८)”—इति निघातो न भवति “यदृत्ताच्चि-त्यम् (८, १, ६६)”—इति प्रतिषेधात्. “तिङि चोदात्तवती (८, १, ७१)”—इत्याङो “सहस्रपेत्यत्र (२, १, ४) सहेति योगविभागादाङ्स्तिङा सह समासे समासान्तोदात्तत्वे प्राप्ते (८, १, २२३) “परादिङ्ङन्त्सि बहुलम् (६, २, १८८)”—इत्युत्तर-पदाद्युदात्तत्वम् । तस्मै—“क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (२, ३, १३ वा०)”—इति सम्प्रदानत्वाच्चतुर्थी ॥ ३ ॥ पू

* ‘आविवासति—दीपयति’—इति वि० ।

† ‘तस्मै पावक—चतुर्थ्येवा द्वितीया-स्थाने भवति, तं पावकम्’—इति वि० ।

अथ द्वितीयद्वयेः—प्रथमा ।

३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
मित्रं कुवेपूतदक्षं वरुणश्च रिशादसम् ।

१ २ ३ २ ३ १ २
धियङ्मुताचीं साधन्ता ॥ १ १ ॥

अहमस्मिन् कर्मणि हविः-प्रदानाय “पूतदक्षं” ॥ पवित्र-
वलं “मित्रं” “कुवे” आह्वयामि [ह्वयते: “बहुलच्छन्दसि (२,
४, ७३)”--इति शपोलुकि सति “द्वः सम्प्रसारणम् (६, १,
३२)”--इत्यनुवृत्तौ “बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)”--इति
सम्प्रसारणे उवडादेशः, “तिङ्तिङः (८, १, २८)”--इति
निघातः] । तथा “रिशादसं” रिशानां हिंसकानाम् अदसम-
त्तारम् ॥ “वरुणश्च” कुवे । कीदृशी मित्रावरुणौ ? “मुताचीं” ॥
मुतमुदकमश्नति भूमिं प्रापयति या धी र्येन कर्मणा तां मुताचीं
“धियम्” “साधन्ता” साधयन्तौ ॥ [‘राध साध संसिद्धौ

* ‘मैत्रावरुणमाव्यम्’—इति वि० ।

† य० वे० १३, ५७ = ऋ० वे० १, १, ४, २ ।

‡ ‘पूतदक्षं’—पूतं मेध्यं, दक्षं शीघ्रम्—इति वि० ।

॥ रिशादसं—शयूणा हिंसकम्—इति वि० ।

॥ ‘मुताचीं’—‘मुतमुदकं तस्य प्रदानसमर्थम्’—इति वि० ।

॥ मयौघरक्षेवमिमां आचष्टे—‘द्वे मधुच्छन्दोदृष्टं मायवग्री आया लिङ्गोक्त-
देवत्या । मित्रं वरुणश्च कुवे आह्वयामि । कीदृशम् ? पूतदक्षम् पूतं पवित्रं
सदाचारं दक्षयति धन पुत्रादिभिर्वर्द्धयति पूतदक्षस्य दक्षकर्मणोरित्यस्याधिष्ठातात्
कर्मणः । रिशादसम् रिशानि हि संनि रिशा दुष्टाः तान् समनाहसति
नाह्नति रिशादसः तम् । रिशं हिंसायाम् दस उपपद्यते । द्वयोर्विशेषणे । कीदृशा

(दि०, प०) '—इत्यस्मादन्तर्भावितव्यर्थास्तटः शत्रादेशे (६, १, १६१), अ० बाधित्वा व्यत्ययेन (३, १, ८५) शप्, अदुपदेशत्वात् ऋपरि शब्द-प्रत्ययस्य ल-सार्वधातुकानुदात्तत्वम्, द्वितीयादिवचनस्य शपश्च “अनुदात्तो सुपिपतो (३, १, ४)” —इत्यनुदात्तत्वे, “धातोः (६, १, १६२)” —इति धातुस्वर एव शिष्यते, “सुपां सु-लुक्० (७, १, ३८)” —इत्यादिना विभक्तेराकारादेशः ॥१॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २

ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा ।

१ २ ३ १ २

ऋतुम्बृहन्तमाशाये ॥ २ * ॥

हे “मित्रावरुणौ !” [मित्रश्च वरुणश्चेति मित्रावरुणौ “देवता इन्द्रे च (६, ३, २६)” —इति पूर्वपदस्थानङादेशः, तादृशौ] युवां “ऋतु” प्रवर्त्तमानमिमं सोमयागम् “आशाये” आनशाये व्याप्नुवन्तौ [“इन्दसि लङ् लङ्-लिटः (३, ४, ६)” —इति वर्त्तमाने लिट्, नुङ्भावश्चान्दसः] । केन ? “ऋतेन” अवश्यत्वावितया सत्येन फलेन अस्मभ्यं फलं दातुमित्यर्थः । कीदृशौ युवाम् ? “ऋतावृधौ” [‘ऋतमित्युदक-नाम (निघ० १, १२, ६), सत्यं वा यज्ञं वा’ —इति यास्कः*] उदकादीना-

नुभौ ? धियं कर्म साधना साधयन्तौ । कीदृशौ धियम् ? घृताद्यौ घृतमच्यते पूयते श्वव सन् —इति ।

* ऋ० वे० १, १, ४, १ ।

† ‘ऋतमित्युदकनाम’ —इत्यंशस्तु द्वितीय-पञ्चविंशे, ‘सत्यं वा यज्ञं वा’ —इति तु चतुर्थोऽध्याये इति विवेकः ।

मन्यतमस्य वर्षयितारोः । अतएव 'जतसृग्ना' उदकादीन्
सृजन्ती । कीदृशं कृतम् ? "वृहन्तम्" अद्वैरुपाद्वैवाति-
प्रौढम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ १५ ४ १ २ ३ १ २
कवीनोमित्रावरुणातुविजाताउरुक्षया ।

१ १ ३ १ २
दक्षन्दधातेअपसम् ॥ ३ ॐ ॥ ६

"मित्रावरुणा" मित्रावरुणो एतौ देवौ "नः" अस्माकं
"दक्षं" बलम् "अपसं" ॥ कर्म च "दधाते" पोषयतः, कीदृशौ ?
"कवी" मेधाविनो, "तुवि-जाता" तुविजातौ बह्वनामुपकारक-
तया समुत्पन्नौ, "उरुक्षया" बहु निवासौ [मित्रावरुणौ—मित्रः
शब्दः प्रातिपदिक-स्वरेणान्तोदात्तः (फि० १, १), वरुण-शब्दो
नितस्वरेणान्तोदात्तः (६, १, १८७) । तुविजातौ—बह्वना-
मुपकारकतया तत्सम्बन्धित्वेन जाता विति षष्ठीसमासे समासा-
न्तोदात्तत्वम् (८, १, २२३), चतुर्थीसमासे हि "क्तेच (६, १,
४५)"—इति क्वचित् पूर्वपदप्रकृतिस्वरः स्यात् । उरुणां बह्वनां
क्षयौ उरुक्षयो, 'क्षि निवास-गत्योः (तु० प०)'—इति धातोः
क्षियन्त्यस्मिन्निति क्षय इत्यधिकरणे एव अच् प्रत्ययान्तस्य "चितः

* 'जताद्वैरौ—जतसृग्ना तदु वृहन्तः'—इति वि० ।

† 'अग्निष्टीमादिकम्'—इति वि० ।

‡ अ० वे० १, १, ४, ४ ।

॥ 'अपसं—अनम्'—इति वि० ।

(६, १, १६३)"—इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते "चयो निषावे (६, १, २०१)"—इत्याद्युदात्तत्वं विहितम्, समावे तु "समासस्य (८, १, २२३)"—इत्यन्तोदात्तत्वं बाधित्वा कदुत्तरप्रकृति-
स्वरेण (६, २, १३८) प्राप्तमुत्तरपदाद्युदात्तत्वम् यद्यपि
शाखादि-स्वरेणान्तोदात्तत्वेन बाध्यते तथापि "परादिश्चन्दसि
बहुलम् (६, १, १८८)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वं द्रष्टव्यम् ।
दक्षः—दक्षतेरुत्साहकर्मणो जित्वादाद्युदात्तः (६, १, १८७) ।
आप्यते फलमनेनेत्यपः कर्म, "आपः कर्माख्यायां ऋस्वी नुट् च
वा (उ० ४, १०८ दी० वृ०)"—इत्यत्रन्तस्य अपसम्पारे इत्यादौ
नित्वा (६, १, १८७) दाद्युदात्तस्यापस्-शब्दस्यात्र व्यत्ययेन
प्रत्ययाद्युदात्तत्वम् (३, १, ३)] ॥ ३ ॥ ६

अथ तृतीयतृचे*—प्रथमा ।

१ २ १ ३ १२ ३ १ २४
इन्द्रेणसंहिदक्षसेसञ्जग्मानोअविभ्युषा ।

३ १ २ ३ १ २
मन्दूसमानवर्चसा ॥ १ १ ॥

हे मरुद्गण ! त्वम् "इन्द्रेण" "सञ्जग्मानः" सङ्गच्छमानः
"संहिदक्षसे हि" सम्यग् दृश्येथाः खलु, अवश्यमस्माभिर्द्रष्टव्य-

* 'इन्द्रमाव्यम्'—इति वि० ।

† ऋ० वे० १, १, १२, २ ।

—इति कत्वम्, “आदेश-प्रत्यययोः (८, ३, ६८)”—इति सिपः
 पत्वम्, बहुल-ग्रहणात् सिपः परस्ताच्छवपि भवति, सिपा च्च-
 धानात् पश्चादेशो न भवति, शपः पिप्वादनुदात्तत्वम् (३, १,
 ४), उत्तरस्य ल-सार्वधातुकत्वादुदात्तत्वम् (६, १, १८६), धातु-
 स्वर एव शिष्यते (६, १, १६२), द्वि-शब्द-योगात् “तिङ्-
 तिङः (८, १, २८)”—इति निजातो न भवति “हि च (८,
 १, ३४)”—इति प्रतिषेधत् । सञ्ज्ञमानः—गमेः सम्पूर्वात्
 छन्दसि लुङ्लङ्लिटः (३, ४, ६)”—इति वर्त्तमाने लिट्,
 “समोगम्यृच्छि० (१, ३, २८)”—इत्यात्मनेपद-दिवाणात्
 लिटः कानजादेशः (३, २, १०६), द्विर्भावः (६, १, ८),
 ह्रस्वादि-शेषः (७, ४, ६०), अभ्युसस्य चुत्वम् (७, ४, ६१),
 “गमहन० (६, ४, ८८)”—इत्युपधा-लोपः, कानचश्चित्त्वो-
 दन्तोदात्तत्वम्, गति समासे (२, २, १८), कदुत्तरपदप्रकृति-
 स्वरत्वम् (६, २, १३८) । अविभ्युषा—“जि भौ भये (जु०,
 प०), पूर्ववक्षित् (३, ४, ६), “शेषात् कर्त्तरि० (१, ३, ७८)”—
 इति परस्मैपदम्, “कसुञ्च (३, २, १०७)”—इति लिटः
 कसुरादेशः, तस्य कित्वाद् गुणाभावः (१, १, ५), अभ्यासस्य
 ऋस्व-जश्त्वे (७, ४, ६८)—(८, ४, ५४) क्तादिनियमात्
 प्राप्तइट् (७, २, १३) “वस्त्रेकाजाहसाम् (७, २, ६७)”—
 इति नियमात् निवर्त्तते नञ्समासे तृतीयैकवचने भत्वाद्
 “वसोः सम्प्रसारणम् (६, १, १३१)”—इति वकारस्य उकारा-
 देशः, “सम्प्रसारणाच्च (६, १, १०८)”—इति पूर्वकृत्व-
 वाच्यत्वा “परनेकाच्च (६, ४, ८२)”—इति यणादेशः, अव्यय-

पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १६८), पूर्वण सह संहिताया
 ओकारश्च “एकः पदान्तादति (६, १, १०८)”—इति पर-
 कपत्वे प्राप्ते “प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे (६, १, ११५)”—इति
 प्रकृतिभावः । मन्द—‘मद सुञ्जि-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गतिषु’
 (आ०, आ०.), “इदितो नुम् धातो (७, १, ८५)”—इति
 नुमागमः, कुरित्यनुवृत्तौ “खर-ग्रङ्ग-पौयु-नीलङ्गु-सिगु (उ० १,
 ३६)”—इत्याविभक्तिक-निर्देशाहन्तेर्हिङ्गुरितिवहात्वन्तरादुषि
 कुरित्युक्तम्, प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः (३, १, ३), द्विवचने सो
 “प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (६, २, १०४), तृतीयैकवचने च “सुपां .
 सु लुक् (७, १, ३८)”—इत्यादिना पूर्वसवर्णदोषत्वम्, समानं
 वर्ज्यं ययोरिति वा यस्येति बहुव्रीहिः, द्विवचने “सुपां सु-लुक्
 (७, १, ३८)”—इत्याकारः, समान-पदस्य प्रातिपदिकान्तो-
 दात्तत्वम् (फि० १, १), बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृति-स्वरेण (८,
 २, १), तदेवावशिष्यते ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २२२ २३ ३१२२ १२३३
 आदहस्वधामनुपुनर्गर्भत्वमेरिरे ।

१२३ १२२ १२
 दधानानामयज्ञियम् ॥ २ * ॥

अहेत्यवधारणार्थः†] । “आत् अह” वर्णात्तीरिनन्तरमेव
 “स्वधामनु” इतः परं जनिष्यमाणमन्नमुदकं वा अनुलब्ध महतो

० ऋ० वे० १, १, ११, ४ ।

† “अह इति अ ह इति च विनिप्रस्थाया द्वौ पूर्वस सम्प्रयुज्यते । अयमचेदं करो
 त्वयिदं च करिष्येतीति”—इति निघ० १, ५ ।

देवाः “पुनः गर्भत्वम् आ ईरिरे” मेघ-मध्ये जातस्य गर्भाकारं प्रेरितवन्तः* [प्रतिसवस्वर मेवं कुर्वन्तीति दर्शयितुं पुनः-शब्दः प्रयुक्तः] । कीदृशा मरुतः ? “यन्निधं” यन्नाहं “नाम” “दधानाः” धारयन्तः । [समस्त गणेषु मरुतामीदृक् वातानाम्मीदृक् चेत्यादीनि यज्ञ-योग्यानि नामान्यन्यत्रात्रातानि । “यन्मः”—इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेष्वन्यनामसु “उक्” (१५), “रसः” (१६), “स्वधा” (१७)—इति पठितम्, (निघ० २, ७) “अस्यः”—इत्यादिष्वेकशत-सङ्ख्याकेषूदक-नामसु च “तेजः” (८६), “स्वधा” (८७), “अक्षरम्” (८८)—इति पठितम् (निघ० १, १२) । “आत्”—“अह”—निपातावाद्युदात्तौ (फि० ४, १२) । स्वधा—स्वं लोकं दधाति पुष्पातीति स्वधा, “आतोऽनुपसर्गेकः (३, २, ३), कृदुत्तरप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १६८) । अनु-पुनः-शब्दौ निपातावाद्युदात्तौ (फि० ४, १२) । गर्भस्य भावो गर्भत्वं प्रत्ययस्वरः (३, १, ३) । ईरिरे—अन्तर्भावितव्यर्थात् ‘इण् गतौ (अदा०, प०)’—इत्याद्यादनुदात्तेतः परस्य लिटो भस्य ईरेच्, चित्त्वादन्तोदात्तः (६, १, १६२), “सह सुपा (२, १, ४)”—इत्यत्र “सुपा” योगविभागादाङ्गा सह तिङ्गः “समासस्य (८, १, २.२३)”—इत्यन्तोदात्तत्वम्, “इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः (३, १, ३६)”—इत्याम् न भवति मन्त्रत्वात् † अह-शब्द-योगान्निष्ठाताभावः “तु-पश्य-

* ‘आदित्य-रश्मय उत्पद्यन्ते, सविता सद्य गच्छन्ति, नैः पुनरस्मिन्ने सविता रि गर्भत्वं याति’—इति वि० ।

† “कास्प्रत्ययादासमन्ते लिटि (१, १, १५)”—इति खन्नादिष्वं ‘असमन्ते’—इत्यनुवृत्तेरिति भावः ।

प्रसूताहेः पूजायात् (८, १, ३६)”—इति निषेधात् । दधानाः—
 ग्रामपक्षित्वाद्गोदात्तत्वे प्राप्ते (६, १, १६२) “अभ्यस्ताना-
 मादिः (६, १, १८६)”—इत्याद्युदात्तत्वत् । यन्नमर्हति यन्नि-
 यम्, “यन्नर्त्विग्भ्यां ष-खञो (३, १, ७१)”—इति ष-प्रत्ययः
 “आयज्ञेयीनीयियः फ-ठ-ख-क-घां प्रत्ययादीनाम् (७, १, २)”—
 इतीयादेयः प्रत्ययस्वरेण इकार उदात्तः (१, १, ३)] ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ २ ३ १ ५ २ १ २
 वीडु चिदारुजलभिर्गुहाचिदिन्द्रवक्त्रिभिः ।

१ २ ३ १ ३ १ २
 अविन्दउस्त्रियाअनु ॥ ३ * ॥ ७

अस्ति किञ्चिदुपाख्यानम्—‘पणिभिर्देवलोकाद् गावोऽपहृताः ।
 अन्यकारे प्रक्षिप्ताः ताद्येन्द्रो मरुद्भिः सहाजयत’—इति । एतच्च
 बह्वृचानुक्रमणिकायां सूचितम्—“पणिभिरसुरैर्निगूढा गा
 अन्वेष्टुं सरसादेत शुनीन्द्रेण प्रेषिता ता ऋग्भिः पणयोऽमित्री-
 यन्तः प्रोचुः”—इति । मन्वान्तरेऽपि दृष्टान्ततया सूचितम्—
 “निरुद्धा आपः पणिनेव गावः”—इति] तदेव उपाख्यानं मभि-
 प्रेत्योच्यते—ह “इन्द्र ।” “वीडु चित्”† दृढमपि दुर्गमस्थानम्
 “आरुजलभिः”‡ अभिमञ्जदभिः “वक्त्रिभिः” वोटृभिः अन्यत्र

* ऋ० वे० १, १, ११, ५ ।

† ‘चित्’—इति पदपूर्णा । वीडु अकारिणे स्थित—इति वि० ।

‡ ‘अमित्री’चे स्थिता अगच्छे।पयनि आरुजलव—इति वि० ।

॥ दृष्टान्तकैरिभिः—इति वि० ।

नेतुं समर्थः मरुद्भिः सहितस्त्वं “गुहा चित्” गुहायामपि
 स्थापिता “उस्त्रियाः” गाः “अन्विन्दः”^१ अन्विष्य लब्धवा-
 नसि । [“ओजः” (१), “पाजः” (२)—इत्यादिषष्टाविंशति-
 सङ्ख्याकेषु बल-नामसु “दक्षः” (१३) “बोलु” (१४) “ओलम्”
 (१५)—इति पठितम् । (८, ८) नव-सङ्ख्याकेषु गो-नामसु
 “अग्नग” (१), “उस्त्रा” (२), “उस्त्रिया” (३)—इति पठितम्
 निघ० (२, ११) । वोढु—प्रातिपदिक स्वरः (फि० १, १) ।
 चित्—आदिरुदात्तः । आरुजन्मभिः—‘रजो भङ्गे (तु० प०)
 इत्यस्मादौणादिकः कन्नुच् प्रत्ययः, कित्त्वाद् (१, १, ५)
 गुणाभावः, चित्त्वादन्तोदात्तत्वम् (६, १, १६) समासे कदुत्तर-
 पदप्रकृतिस्वरत्वञ्च (६, २, १६०) । गुहा—सप्तम्यां डादेशः
 (७, १, ३८), “ग्रामादीनाञ्च (फि०, २, १५)”—इत्याद्यु-
 दात्तः । वङ्गिभिः—“वहि-प्रि-य-यु-ग्ला-हा-त्वरिभ्योनिः (उ० ४,
 ५१)”—इति नि-प्रत्ययः, नित्त्वादाद्युदात्तः । अविन्दः—‘शेमुचा
 दीनाम् (७, १, १८)’—इति नुमागमः, लुङ्-लङ्-लृङ्-
 ल्वङ्-उदात्तः (६, ४, ७१) । वसन्तीति उस्त्रियाः वसोः कर्त्तरि
 यक् प्रत्ययः, षत्वाभावश्च बाहुलकाद्दहनीयः (३, १, ८५), उक्तं
 हि ‘यत्र पदार्थविशेष मुक्तं प्रत्ययतः प्रकृतेषु तद् ग्राह्यम् (३,
 १, ८५ भा०)’—इति, इकारः प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः (३, १
 ३) ॥ ३ ॥ ७

० ‘उस्त्रियाः—आदित्यारम्भयः—इति वि० ।

† ‘अविन्द-विदज्ञानं (अदा० प०)—इत्यस्येदं रूपम्—इति, ‘वोढु—आठुपूर्वञ्च’
 इति च वि० ।

अथ चतुर्थं लघु* प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ ० ३ १ २ ३ २ ३ २
ताडवेययोरिदमग्ने विश्वम्युराकृतम् ।

३ १ ३ १
इन्द्राग्नीनमर्द्धतः ॥ ११ ॥

“ता” तौ तादृशौ “इन्द्राग्नी” “हुवे” आह्वये । “ययोः” इन्द्राग्न्योः “पुरा” पूर्वस्मिन् काले “कृतं” “विश्व” सर्वम् “इदं” - पूर्वाख्येषु कीर्तितं वीर्यं “पग्ने” पन्यते ऋषिभिः स्तूयते ; - ता-विन्द्राग्नी हुवे इत्यन्ययः । तौ चेन्द्राग्नी न “मर्द्धतः” [मर्द्धतिः हिंसाकर्मा (निघ० २, १८, १४)] स्तोतृन् अहिंस्रः । अतोऽस्मान् आहुतौ रक्षतामिति भावः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
उग्राविघनिनामृधइन्द्राग्नीहवामहे ।

१ २ ३ १ २
तानोमृडातईदृशे ॥ २३ ॥

“उग्रा” उग्रौ उद्गूर्ण-बली अतएव “मृधः” शत्रून् “विघ-निता” विघ्नितौ विशेषेण हतवन्तौ “इन्द्राग्नी” “हवामहे” आह्वयामहे । तौ चेन्द्राग्नी “इदृशे” अस्मिन् सङ्ग्रामे “नः”

* ‘इन्द्राग्नसाध्यम्’—इति वि० ।

† ऋ० वे० ४, ८, १७, ४ ।

‡ ऋ० वे० ४, ८, १७, ५ ।

अस्मान् “मृडातः” सुखयताम् [यद्वा मृडातिः उपदंयाकर्मा ;
नोऽस्माकं मृडातः उपदंयां कुरुताम्] ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ १ १ २ १ १ २
हथोवृत्राण्यार्या हथोदासानिसत्पती ।

१ २ ८ ३ २ ३ १ २
हथोविश्वाअपद्विषः ॥ ३* ॥ ८

हे इन्द्राग्नी ! “आर्या” आर्यैः कर्मानुष्ठातृभिः कृतानि
“वृत्राणि” उपद्रवजातानि “हथः” हिंस्यः । तथा “सत्पती”
सतां पालयितारो सन्तौ “दासानि” दासाः कर्महीनाः*
शत्रवः, तैः कृतानि चोपद्रवजातानि हथः । अपि च “विश्वाः”
सर्वाः “द्विषः” द्वेष्ट्रीः शत्रुभूताः प्रजाः “अप हथः” विनाशयथः
अतोऽस्माकमध्येव मेव कुरुता मिति भावः ॥

“हथः”—“हनः”—इति पाठौ ॥ १ ॥ ८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य तृतीयस्याध्यायस्य

द्वितीयः खण्डः ‡ ॥ ४ ॥

* ऋ० वे० ४, ८, १८, १ ।

† ‘दासानि—यादादीनि रक्षः-पिशाचादीनि’—इति वि० ।

‡ ‘उक्तं प्रातः सवनम्’—इति वि० ।

अथ द्वितीयखण्डे*

प्रथमतः—प्रथमा ।

३ १ २२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

अभिसोमास आयवः पवन्ते मद्यमदम् ।

३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

समुद्रस्याधिविष्टपे मनौषिणो मत्सरा सोमदच्युतः ॥ १† ॥

“आयवः” गमन-शीलाः “सोमासः” सोमाः “मद्य” मद-
करं मदम् आत्मीयं रसम् “अभियवन्ते” अभितो निर्गमयन्ति ।
कुत्रेत्युच्यते “समुद्रस्य” अन्तरिक्षस्य “अधिविष्टपे” अधिकां
समुच्छ्रिते पवित्रे यदा समुद्रस्य यस्मात् समुद्रवन्ति रसान्तस्य
कलशस्य “अधि” उपरि “विष्टपे” स्थाने पवित्रे निर्गमयन्ति ।
कोट्टशाः ? “मनौषिणः” मनस ईशितारो “मत्सरासः” मदकराः
“मदच्युतः” मदस्त्राविणः ॥

“विष्टपे”-“विष्टपि”—इति पाठौ, “मदच्युतः”-“स्वर्विद्ः”

इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२ ३१ २२ ३ २ ३१ २ ३१ ३१ ३ २

तरत्समुद्रमवमानजर्म्माणाराजा देवच्युतम्बुद्धत् ।

१२ ३१ २२ ३१ २३ १२ ३ २० २२ २

अर्षामित्रस्य बहूणस्य धर्मण्यप्रहिन्वातच्युतवुद्धत् ॥ २‡ ॥

* ‘इदानीं माध्यन्दिनं सवनमच्यते । चतुर्थ्यन्ते—गायत्री वैष्टभाद्रीनि सामानि,
सांक्षां नामत आर्षेयमुक्तम्’—इति षि० ।

† ऋ० आ० ६, १, २, ८ (२भा० ८६पु०)=ऋ० वे० ७, ५, १४, ४ ।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १४, १ । “समुद्रियः”—इति च तत्र पाठः ।

॥ पौलमङ्गम् ॥ ^{१ १ १ १ १ १ १} अभिसोमांसआयवः । ^{१ १} औहोवा ।
^{१ १} एहिया । ^{१ १} हाउ । ^{१ १} पवन्नेमा ^{१ १} रदियन्मदम् । ^{१ १} समूद्रा १
^१ स्या २ । ^१ धायिविष्टपाशयि । ^{१ १ १} मानौषा २ ३ ४ यिणाः । ^१ मत्स्रा ।
^१ रासौवाओ २ ३ ४ वा । ^{१ १} हा ३ हायि । ^१ मदाप्रच्युताः ॥ (१) -
^{१ १ १ १ १ १} मत्स्रासोमदच्युतः । ^{१ १} औहोवा । ^{१ १} एहिया । ^{१ १} हाउ । म
^{१ १} त्स्रासो २ मदच्युतः । ^{१ १} तरात्सा १ म् २ । ^{१ १} द्राम्यवमा ३ । ना
^{१ १} जम्मा २ ३ ४ यिणा । ^{१ १} राजा । ^{१ १} दायिवौवाओ २ ३ ४ वा । हा
^१ ३ हायि । ^१ ज्ञताप्रम्बृहत् ॥ (२) ^{१ १ १ १ १ १ १ १} राजादेवच्युतम्बृहत् । औ
^१ होवा । ^{१ १} एहिया । ^{१ १ १} हाउ । ^{१ १} राजादेवा २ च्युतम्बृहत् । अ
^१ र्धमाशयिन्ना २ । ^{१ १} स्यावरुणा ३ । ^{१ १ १} स्याधम्मा २ ३ ४ णा । प्र
^{१ १} हायि । ^{१ १} न्वानौवाओ २ ३ ४ वा । ^{१ १} हा ३ हायि । ^१ च्युताप्रम्बृ
^१ हात् । ^१ होप्रइ । ^१ डा (३) ॥ १४ * ॥ [१]

१ १ ४२ ५२
॥ द्विष्टिकारं वामदेव्यम् ॥ अभिसोऽश्मास आयवाः ।

१ २ २ २ २ २ १
पाऽवन्ते मघमादसमुद्रस्याधिविष्टपाऽयिमनौहोः । ॐ

१ २ १ २ २ २ १
आः२ । वारश्चिणाः । मत्सरासोमदौहोः । ॐ आः२ ।

१ १ २ ४ ४ २ १ ४ ४ ५
ऽच्युता । औश्चोवा ॥ (१) मत्सरा २ ३ सोमदच्युता ॥

१ २ २ २ २ २ १
मात्सरासोमदच्युतन्तरत्समुद्रमवमाऽनौहोः । ॐ आः

२ १ २ २ २ २ १
२ । मारश्चिणा । राजादेवाऽकृतौहोः । ॐ आः२ ।

१ ४ ४ २ २ २ ४ ४
वृक्षात् । औश्चोवा ॥ (२) राजादा २ ३ यिवकृतम्बु

१ २ २ २ २ २ १
क्षात् । राऽजादेवकृतम्बुक्षादर्षामित्रस्यवरुणाऽस्यधौहोः ।

१ १ २ १ २ २ २ १
ॐ आः२ । मारश्चिणा । प्रहिन्वानाऽकृतौहोः । ॐ आः

१ ४ ४ ४
२ । वृक्षात् । औश्चोवा । चोपूई । डा(३) ॥ ७ * ॥ [३]

१ २ १ २ २
॥ गायत्र्यपार्श्वम् ॥ आभी । सोमास आश् उवारश् ।

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
यारश्चिणाः । पवन्ते मदियमादसमुद्राधिविष्टपेमनौषि

^१समुद्रमवमानाज^२र्मिणा^३२ । राजा^४३ । दारयिवा^५३३
^१४औ^२होवा । ए३ । ऋता^३रम्बृ^४हार३४५त् ॥ (२) राजा^५
^१दा^२रयिव^३ऋतवृ^४हात् । राजादेवः । ऋतावृ^५१ हा र^६त् ।
^१अर्षा^२३ । हो^३३ । हो^४३ वा । मित्रस्यवरुणस्याधर्माणा^५२ ।
^१प्रहा^२३रयि । न्वा^३रना^४२३४औ^५होवा । ए३ । ऋता^६रम्बृ^७हा
^१२३४५त् (३) ॥ १० * ॥ [६]

^१॥ हारायणम् ॥ अभिमोमौहो^२रयिम^३आयवाः । पा
^१वन्तेमद्यमदम् । समूद्रा^२स्या । धिविष्टपायि । मना
^१इहायि । षायिणा^२२ः । मत्सरासोमदोवा^३३औ^४र३४वा ।
^१च्यूपतो^२इहायि ॥ (१) मत्सरासोहो^३रयिमद^४च्युताः । मा
^१त्सरासोमद^२च्युतः । तरान्सा^३३मू । द्रपवमा । नऊ^४३
^१हा । मायिणा^२२ । राजादेव^३ऋतोवा^४३औ^५र३४वा । वृ^६

^५इन्द्रायि ॥^१(२) ^१राजादेवौहो^२रुचतं^३बृहात् । ^४राजादे
^१वचतं^२बृहात् । ^३अर्षामा^४यित्रा । ^५स्यवरुणा । ^६स्यधा^७
^८हा । ^९माणा^{१०}र । ^{११}प्रहिन्वानकृतोवा^{१२}त्रो^{१३}रुवा^{१४} । ^{१५}बृ^{१६}इन्द्रायि^{१७}

॥ अच्छिद्रम् ॥ अभिमोमा । सचा३१उवा२३ । या
 २३४वाः । पवन्तेमदियम्मादा२३४५म् । पवन्तेमा । दि
 या३१उवा२३ । मा२३४दाम् । समुद्रस्याधिविष्टपेमनी
 पिणा२३४५ः । समुद्रस्या । धिवि । द्या । पेमना३१उ
 वा२३यि । धी२३४णाः । मत्सरासोमदच्युता२३४५ः ।
 मत्सरासाः । मदा३१उवा२३ । च्यू२३४ताः ॥(१) मत्स
 रासाः । मदा३१उवा२३ । च्यू२३४ताः । मत्सरासो
 मदच्युता२३४५ः । मत्सरामाः । मदा३१उवा२३ । च्यू

^५ २३४ताः । ^{१ २ १ २२ २ १ ३ १ १ १ १ १} तरत्समुद्रम्यवमानजर्मिणा २३४५ । ^१ तरत्स

^१ मू । ^{२ १} द्रम्यव । ^५ मा । ^१ नज३आउवार३ । ^५ मोर३४णा ।

^{१ २ २ २ २ १ १ २} राजादेवकृतंबृहा३त् । ^{२ २ २ २} राजादेवाः । ^१ कृता३१उवार३ ।

^५ बृ२३४चात् । ^{२ २ २ २ १ २ १ ३} राजादेवकृतंबृहा३त् । ^{१ २ २ २} राजादेवाः । ^५ कृ

^५ ता३१उवार३ । ^५ बृ२३४चात् । ^५ राजादेवकृतंबृहा३त् ।

^{१ २ २ १ १} राजादेवाः । ^{१ २ २ १ १} कृता३१उवार३ । ^{१ २ २ १ १} बृहात् । ^{१ २ २ १ १} अर्षामित्रस्य

^{१ १ १ ३ १ १ १ १ २ २} वरुणस्यधर्मणा २३४५ । ^{१ २ २} अर्षामित्रा । ^१ स्यवरु । ^२ णा । ^२ स्य

^५ धा३१उवार३ । ^{१ २ २ १ १ १ २} मा २ ३४णा । ^५ प्रह्विन्वानकृतंबृहा३त् ।

^{१ २} प्रह्विन्वानाः । ^५ कृता३१उवार३ । ^५ बृ२३४चात्(३) ॥१२॥[८]

^{२ २ २ १ ५ १} ॥ रौरवम् ॥ ^{२ २ २ १ ५ १} अभिसोमासा३आया २३४वाः । ^१ पाव

^{२ २ ३ २ १ २} न्मेद्यमद्समुद्रस्याधिविष्टपेमनारयिषिणाः । ^{१ २} ओहा

^{१ १ २ २ २ १ २ २} ३उवा । ^{१ २ २ २} मत्सरासोमदा३३हायि । ^{१ २ २ २} ओहा३उवा । ^{१ २ २ २} च्यु

ता । औ ३ होवा ॥ (१) मन्सरासोमदच्यू २३४ताः ।

माऽन्सरासोमदच्युतस्तु रत्समुद्रमवमानजरमिणा । औ

हाउवा । राजादेवकृतार३७हायि । औहा ३ उवा ।

बृहात् । औ २ ३ होवा ॥ (२) राजादेवचारत्तैव २३४हा

त् । राजादेवकृतंबृहदर्षामित्रस्यवरुणस्यधा २३४हा ।

औहाउवा । प्रहिवानकृतार३७हायि । औहाउ

वा । बृहात् । औ २ ३ होवा । हो ५ ई । डा (३) ॥ १३ ॥ [८]

॥ मानवोत्तरम् ॥ होवायि । अभिसोमासचायवः ।

होवायि । पावन्ते मद्यमदम् । सामुद्रस्या । धायि ।

विष्टया ३ १यि । मनारयिषार३४यिणाः । मन्सारा २ ३

साः । मारदार३४ औ होवा । च्यू २३४ताः ॥ (१) होवा

यि । मन्सरासोमदच्युतः । होवायि । माऽन्सरासोम

दध्युतः । ^{१० २}जारत्समु । ^{१ ७ २}द्राम्यवमा३१ । ^७नजर^१र्मा^३र३क्षवि

^{१ ५}वा । ^{२२ १}राजादा३^९यिवा३ः । ^{१ ५ ३}अ^{५२ २}रर्त्ता २ ३ ४ औहोवा ।

^{३ ५}क-२३४^१द्वात् ॥ (२) ^{२ २ २२ १ १ १ १}होवायि । राजादेव^१क्वतम्बृहत् । हो

^{२ २}वायि । ^{७ २ १}राजादेव^{१ ७ ५}क्वतम्बृहत् । ^{१ ७ ५}आर्षामित्र । ^{१ ७ ५}स्यावरूणा

^७३१ । ^५स्थधार^{१ १}र्मा^१र३४^{१ ३}णा । ^{१ ३}प्रहायि^{१ ३}न्वार३ना३ः । ^{१ ३}आर्त्ता

^{५ २ २}२३४^{३ ५}औहोवा । ^{३ ५}बृ२३४^३द्वात् ३) ॥ १४ * ॥ [१०]

^{१ २ १ २}॥ ^{२ २}आनूपवा^{१ २}ध्यश्वम् ॥ ^{२ २}अभी^{१ २}अभी । ^{१ २}सोमासा३^{१ २}चाया

^{१ २ २}श्वा२ः । ^{१ ७}पावन्तेम । ^१दियाम्मा १ दा२म् । ^१सामू२

^१द्रास्या२ । ^{१ २ १ २}धिविष्ट^१पेमनीषार३यिणाः । ^{१ २ १}मत्सारा ३ सा

^{१ ४}३ः । ^२मार३दा३ । ^५चू३४पूतो^{१ १ १ २}ईहायि ॥ (१) ^{१ १ १ २}मत्सामत्सा ।

^{२ २}रासोमा३^{१ १}दा^१चू^१ता३ः । ^{१ २ २}तारा२त्सामू२ । ^{१ २ २}द्रपवमान

^{१ २}जम्मा३^२यिणा । ^{१ २ २}राजादा३^१यिवा३ः । ^{१ ४}आ २३ ता३म् ।

^{५ २} बृ०^{५ २} हार३४^{३ ४ २ २ ४ ५} औहोवा ॥ (२) ^{२ ० २} राजादेवचतम् । हा०^{२ ० २} हारयि ।

^१ बृ२३४ । ^५ हहृहोवा । ^{१ २} राजाहो२यि । ^{१ २} देवाहो२ । ^१ आ

^० तौवहारत् । ^{१ २ २} आर्षामित्र । ^१ स्यधाउवा३ । ^{१ ५} ऊ३४ पा ।

^१ मर्णा२ । ^१ प्राहा२यिन्वाना२ः । ^१ चतम् । ^१ बृ०^३ हार३४

^{५ २} औहोवा । ^२ ऊ३२३४पा(३) ॥ १६ ॥ [१२]

॥ अभीवर्त्तम् ॥ ^{५ ४ ०} अभा३यिसो३माऽ^{२ ४} सआयवोवा । ^{५ २ ४ ५} पा

^{१ २} वन्तेम । ^{१ २} दियाम्नाशदा३म् । ^१ सामुद्रस्या३१२३४ । ^१ धि

^{४ ५ २} विष्टपे । ^{२ १ २} मनायिषा१यिणा२ः । ^{१ २} म२पारा१सारः । ^{२ २} मदा

^१ ३ । ^{३ १ १ १ १} च्यू२३४५ । ^३ तार३४५ः(१) ॥ १६* ॥ [१३]

॥ कालेयम् ॥ ^{५ २ ४ २ ५ ४} मत्सरा३सीमदच्यूताः । ^{५ २ १ १ २ १} मत्सारासी ।

^{२ ३ २ १} मदच्यूता२३ः । ^{२ ३ २} तरत्समू३ । ^१ द्रा२३४म् । ^{२ ४ २ ५ २} पवमानऊ ।

१ २ १२२२२ ४
मनायिषा । राजादेवौ । वा३४३वा । ऋतापुभृहात् ।
५
चोपूई । डा(२) ॥ १७ * ॥ [१४]

५ २ ४५४२ ५ १ १२
॥ गौङ्गवम् ॥ अभिसोऽमासआयवाः । पावा२ । ते
३ २ ४ ५ २ १ २
मदिया३म् । मादाम् । समुद्रस्याधिविष्टां३३पा २यि ।
३ २ ४ ५ २ १ २ २ ४ ५
मनायिषायिणाः । समुद्रस्याधिविष्टये । मनायिषा
५ १ २२ २ २ २ १ ५
यिणाः । मात्सरा । सा । औ३हो । मदो२३४वा ।
४ ५ ५ २ ४२५४ ५ १
च्यूपूतो३हायि ॥ १) मत्सरा३सोमदच्युताः । मात्सा२ ।
१२२३ २ ४ ५ १ २ १ १ १ ३२
रासोमदा३ । च्यूताः । तरत्समुद्रम्यवा३३मा३ । नऊ
४ ५ १ २ १ २ १ २ ४ ५ १
३र्मायिणा । तरत्समुद्रम्यवमा । नऊ३र्मायिणा । रा
२२२ १ २ २ १ ५ ४ ५
जादे । वा । औ३हो । ऋतो२३४वा । बृ५हो३हा
५२२२ ४ ५२ ५ १ १२ ३
यि ॥ (२) राजादा३यिवक्तं३वृहात् । राजा २ । देवक
१ ४ ५ १२ २ १ २ १ १ २ २
ता३म् । बृहात् । अर्षामित्रस्यवहृ३३णा२ । सधा३

^{४ ५} ^{१ २ ३ ४ ५} ^{३ ४} ^{४ ५} ^१ ^{२ ३}
 मर्षा । अर्षामिचस्यवरुण । स्थधाऽर्माणा । प्राहिन्वा ।

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७
 ना । औश्हो । अतो२३४वा । वृपुक्षोद्हायि(३)॥१८॥[१५]

^१ ^२ ^३ ^४
 ॥ भारद्वाजम् ॥ अभिसोमा । सआया १ वाः २ ।

^१ ^{२ ३} ^४ ^५ ^६ ^{७ ८}
 पावन्ते मद्यमादम् । समूद्रा१स्था २ । धायिविष्टपे । म

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८
 नायिषाश्रियणा २ः । मत्सारा१सा २३ः । मा२दा २४ औ

^१ ^२ ^३ ^४
 होवा । च्यू२३४ताः(१) ॥ १५ ॥ [१६]

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८
 ॥ मैधातियम् ॥ अभिसोमोद्हायि । सआयावाः ।

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८
 पवन्ता २होश्रियि । माऔश्हो । दायाउवा । मादाउ

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८
 वा । समुद्रस्थाधिविष्टपाऔश्हो । मानाउवा । पा

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८
 यिणाउवा । मत्सरासाऔश्हो । मदा । औहो । वा

^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२}
 हो२३४वा । च्यूपुतोद्हायि॥(१) मत्सरासोद्हायि । म

^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८
 दाश्च्यूताः । मत्सरा २होश्रियि । साऔश्हो । मादा

उक्ता । चूता उवा । तरत्समुद्रम्पवमाचौ३हो । ना
 आउवा । मायिणाउवा । राजादेवाचौ३हो । ऋता ।
 औहो । वाहो२३४वा । बृ५हो६हायि ॥ (२) राजादेवो
 हायि । ऋता३म्बहात् । राजादा२हो१यि । वाचौ ३
 हा । आर्त्ताउवा । बृ५हाउवा । अर्षामित्रस्यवसन्ता
 औ३हो । म्याधाउवा । माणाउवा । प्रहिन्वानाचौ३
 हो । ऋता । औहो । वाहो२३४वा । ब५हो६हा
 यि (३) ॥ ६० ॥ [१७]

॥ उत्सेधम् ॥ अभिमोमासत्रायवः । पव । तेमा
 ३४औहोवा । दियम्मदारम् । हा३१उवा२३ । ऊ३४
 पा । समू३द्रस्था । औहोवाहायि । धायिविष्टपायि ।
 भनीषायिणाः । हा३१उवा२३ । ऊ३४पा । मत्सा३रा

* ऊ० गा० ८ प्र० ३५० ६५० ।

† "उत्सेध" — इति ५० पु० ।

* सः । औहोवायि । मदाश्चूताद्दृष्टः ॥ (१) मत्सरा

सोमदध्युतः । मत्स । रासाश्चौहोवा । मदच्युताः ।

२ः । द्वाश्चउवार३ । ऊ३४पा । तराश्चमु । औहो

वाहायि । द्रापवमा । नऊर्मायिणा । द्वाश्चउवार३ ।

ऊ३४पा । राजाश्चदेवः । औहोवाहायि । ऋताश्चू

द्वाद्दृष्टः ॥ (२) राजादेवः ऋतं बृहत् । राजा । देवा

श्च औहोवा । ऋतं बृहद्दृष्टः । द्वाश्चउवार३ । ऊ३४

पा । अर्षाश्चमित्रा । औहोवाहायि । स्थावरुणा । स्य

धर्माणा । द्वाश्चउवार३ । ऊ३४पा । प्रहाश्चयिन्वानः ।

औहोवाहायि । ऋताश्चूद्दृष्टः । औ २३

४ ५ (३) ॥ ३ * ॥ [१८]

॥ सदोविशीयम् ॥ अभिसोमास आयवओहाओहाश्

^१ ऋतम् । ^३ बृ ^{५८८} र्चा ^{२८१२११} २३४ औहोवा । ^{२८१२११} सदोविष्ठा २३

^{११} ४ पूः(३) ॥ १६ * ॥ [१८]

^{५ २ ५८४ ५ ११} ॥ जनित्राद्यम् ॥ अभिमोश्मासत्रायवाः । ऊवेहो

^{१ २ २ १ २} रयि । पवन्तेमदियाम्नाशदाश्म् । समुद्रस्थाधिविष्टपा

^{३ २ ३ ५ १ २ ३ २ २} रयि । मनारयिषारश्छयिणाः । मत्माश्होयि । रामा

^{१ २ ३ ५८८ ५ २ ४४} षहो । मद । च्यूताश्छौहोवा ॥ (१) मत्सरासो

^{५ ४ ५ २ १ १ २ २} मदच्यूताः । ऊवेहोरयि । मत्सरासोमदाच्यूताश्ः ।

^{१ ४ २ ३ ५ १ २ १} तरत्समुद्रमवमार । नजम्मारश्छयिणा । राजाश्होयि ।

^{२ २ १ २ १ ३ ५८४ ४८८} देवाश्हो । ऋतम् । बृ ^३ र्चा ^{५८४} २३४ औहोवा ॥ २) राजा

^{२ ४ ५ ४ ५ २ १ १ २ २ १} दाशयिवञ्चतंबृहात् । ऊवेहोरयि । राजादेवञ्चतांबृ

^{१ २ ३ २ ३ ५ १} श्हाश्त् । अर्षामित्रस्यवरुणाश् । स्यर्धाम्मारश्छणा । प्र

३२ १ २ ३ ४ ५ ६ ७
शुभमिच्छा । स्वावरु । णस्याधर्माणा । मोक्षदा । ओ

२ २ ३ ९ ३ २ ९ २ १ ५ ४
इहाइइइ४ । प्रहाइइयिन्वानाः । अतोइइइवा ।

५ अष्टादशायि(३) ॥ ५ * ॥ [२१]

॥ सन्तनिं ॥ अ० भौ० ॥ सोमामआ३१उवा २४ ।

५ १ २२१ १ १२ २१२२४
या२३४वाः । पवन्ते मदिद्यम्नादत्समुद्रस्याधि विष्टपेमनी

१३ ११११ १ २ १ २ २
षिणार३४५:। मत्साह्वाउ । रासीमदा३१उवा २ ३।

५ १ १२ २ १ २ २ १ २ १ २ १ २
च २३४ताः ॥ (१) मत्सरासोमदच्युतोमत्सरासोमदच्युत

१ २ १ २२ २ १ २११११ १२ २ १
स्तरत्समुद्रस्यवमानजर्मिणा२३४५ । राजाद्वाउ । दा

१ ५ १२२ १२१ १
यिवक्तृताश्चवाच । ब२३४चात् ॥ (२) राजादिवक्तृता

बृहद्राजादे वज्रतंबुहर्षामित्रस्यवरुणस्यधर्म्माणारक्ष४५ ।

प्रह्मायिद्वाउ । न्वानकृताऽ१उवा२३ । ब२३४द्वात्(३) ॥

॥ ७४ ॥ [२२]

१ १ ४ २ ० २ १ १ ४ २ २ १ ४
॥ आष्टादशोत्तरम् ॥ अभिसोमासत्रायवणेषादौ ।

१ २ १ २ २ १ २ १ २ २
चौहवा । पवन्तेमदियम् । मादा२३म् । ऐया२३त् ।

१ २ २ १ २ २ १ २ २ २ १ २
औ२३होवा । समुद्रस्याधिविष्टपेमनौ । पायिणा२३ः । ऐमा

१ २ २ १ २ २ १ २ २ २ १ २
२३त् । औ२३होवा । मत्सरासोमद । च्यूता २ ३ः ।

१ २ २ १ २ २ १ २ २ २ १ २
ऐया२३त् । औ२३होवा३४३ । ओ२३४पुई । डा ३) ॥

॥ २ * ॥ [२२]

१ २ २ २
॥ आभीश्वोत्तरम् ॥ अभिसोमासत्रायवण । ए । पव

१ १ ० २ ३ ५ २ २ १ २
न्तेमाहृदायम्मादम् । सा२३५म् । हा३हा । द्रस्याधि

१ २ २ ३ ५ २ २ १ २
विष्टपेमानीषिणाः । मा२३४त्सा । हा३हायि । रासो

१ १ ५ ४ ५ २ २ २
मदो२३४वा । च्यू५तो३हायि ॥ (१) मत्सरासोमदच्युत

२ २ १ ० २ ३ ५ २
ह । ए । मत्सरासो३मादच्यूतः । ता२३४रात् । हा३

२ १ २ २ २ २ ५ २
हायि । समुद्रम्यवमानाज१र्म्भिणा । रा२३४जा । हा

३ दायि । दायिवक्तोर३४वा । बृ५ हो ई हाधि ॥ (२)

राजादेवचतुर्तं बृहदे । ए । राजादेवाश्चात्तं बृहात् ।

अ२३४र्षा । हा ३ दायि । मित्रस्यवरुणस्याधर्म्मणा ।

प्रा२३४दायि । हा३हायि । न्वानक्तोर२३४वा । बृ५

होईहायि(३) ॥ ३ ॥ [२३]

॥ आष्कारनिधनम् ॥ अभिसोऽमासऽत्रायवाः । पा ।

वन्तेम । दियार३४म्मदाउ । वा३२ । समुद्रस्था । धि

विष्टपायि । मनोषार३४यिणाः । मार३त्सा । रासोम ।

द३२२३४पूताई५६ः ॥ (१) मत्सरा३सोमऽद३च्युताः । मात्सरा

सः । मदार३च्युताउ । वा २३ । तरत्समू । द्रम्यव

मा । नज३र्म्मार्३४यिणा । रा२३जा । देवच । तंबू

२३४पूहाई५६त् ॥ (२) राजादा३यिवक्तु३तंबूहात् । राजा

१२ १ २ १२ १ २ २
देवः । अतारश्चहात् । वाश्च । अर्षामित्रा । स्व
२ १ २ १ ५ १ २ १२ १ १
कृष्णा । अर्धमर्माश्चयि । प्राश्चहायि । न्वानक । तं

२ १ १ १ १
बृश्चहात् ५६त् । आश्चहात् ५७(३) ॥ २* ॥ [२४]—

१ २ २ ५
॥ मानवाद्यम् ॥ अभिसोमा । सञ्चायाश्चहात् ॥ १२ ॥

१ २ १ २ १ ० २
पावन्तेम । दियाभमाश्चहात् । सम् । ज । द्रष्टा ।

१ ० २ १ ३ ५ १ २ २ १
धायिविष्टपाश्चयि । मनार्थिषाश्चयिणाः । मत्सरासा

१ २ ५ २ ५ १
२३ः । मारदाश्चहात् । चूरश्चहात् ॥ (१) मत्स

२ ३ ५ २ ३ ५ १ २ २
रासाः । मदचूरश्चहात् । मदाचूरश्चहात् । मात्सरा

१ ३ १ २ १ ० ३
सः । मदाचश्चहात् । त । रत् । समु । द्राम्यवमा

२ ३ ५ १ २ २ २ १ १ २
३ । नजर्मर्माश्चयिणा । राजादेवाश्चहात् । आर्त्ता

५ २ २ ० ५ १ २ २
२३४श्चहात् । बृश्चहात् ॥ (२) राजादेवाः । अतं

२ ५ २ ३ ५ १ २ २ २ १ २
बृश्चहात् । अतांबृश्चहात् । राजादेवः । अतांब

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
१हा२त् । अ । षा । मित्र । स्य । वरुणा३ । स्वधा

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
२२र्मा२३४णा । प्रक्षिन्वाना२३ः । आ२र्त्ता२३४औ॒होवा ।

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
बृ२३४हात्(३) ॥ १० * ॥ [२५]

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
॥ महावैष्टम्भम् ॥ अभिसोमो॒हायि । स॒आयवोवा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
पावन्तेम । दियाम्ना॒॑दा२३म् । होवा३हायि समु

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
द्र॒स्याधिविष्टपे । मनायिषा १ यिणा२३ः । होवा३हा

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
यि । मत्सारा॒॑सा२३ः । होवा३हायि । मद । च्यूर

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
ता२३४औ॒होवा ॥ १) मत्सरा॑सोहायि । मद॒च्युतोवा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
मा॒त्सरा॑सः । मदा॒च्यु॒॑ता२३ः । होवा३हायि । तर

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
त्समुद्र॒म्यवमा । नऊ॒र्मा॒॑यिणा॒२३ । होवा३हायि ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
राजा॑दा॒यिवा॒२३ः । होवा३हायि । ऋतम् । बृ॒२हा॒२

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
३४औ॒होवा ॥ (२) राजा॑दे॒वोहायि । ऋतं॒होवा । रा

^{२ १२ १} जादेवः । ^{१ १} ऋतावृ^{१ २ १} १ चारुत् । ^{१ २ १} होवा^{१ २ १} ३ हायि । ^{१ २ १} अर्षामि
^{१ १ १ १} नस्यवदण । ^{१ १} स्यधाम्ना^{१ २ १} १ णा^{१ २ १} २३ । ^{१ २ १} होवा^{१ २ १} ३ हायि । ^{१ २ १} प्रह्ना
^१ यिन्वा^{१ २ १} १ णा^{१ २ १} २३ । ^{१ २ १} होवा^{१ २ १} ३ हायि । ^१ ऋतम् । ^{१ २ १} वृ^{१ २ १} २ चारुत्^{१ २ १} ३४
^{४२ २} औहोवा(३) ॥ १० * ॥ [२६] ८

अथ द्वितीयवृत्ते—प्रथमा ।

^{३ १ २२ ३१ २२}
 तिस्रोवाचैरयतिप्रवङ्गि

^{३ १ २ ३ १ २२ २ २}
 ऋतस्यधीतिम्ब्रह्मणोमनीषाम् ।

^{१ २ ३ १ २ ३ १ २ २}
 गावोयन्तिगोपतिमृच्छमानाः

^{१ २ ३ १ २ ३ २}
 सोमयन्तिमतयोवावशानाः ॥ ११ ॥

“वङ्गिः” वोढा यजमानः “तिस्रोवाचः” ऋग्वजुःसामा-
 ङ्गिकाः स्तुतीः प्रेरयति । तथा “ऋतस्य” यज्ञस्य “धीति”
 धारयित्रीं “ब्रह्मणः” परिहृदस्य सोमस्य “मनीषां” मनस
 ईशिचीं कल्याणीं वाचं प्रेरयति । किञ्च “गोपति” वृषभं यथा
 गावोऽभिगच्छन्ति तद्वत् गवां स्वामिनं सोमं “गावः”

“पृच्छमानाः” पृच्छन्त्यः सत्यः यन्ति स्व-पयसा मित्रयितुम्
अभिगच्छन्ति । तथा “वावशानाः” कामयमानाः “मत्तयः”
स्तोतारश्च “सोमं” “यन्ति” स्तोतुमभिगच्छन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ ३ १ २ ३ १ १ ३ २ ३
सोमङ्गावोधेनवोवावशानाः

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमंविप्रामतिभिः पृच्छमानाः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
सोमःसुतऋच्यतेपूयमानः

१ २ ३ २ ३ २ २ १ २
सोमेशर्कास्त्रिष्टुभःसन्नवन्ते ॥ २* ॥

“धेनवः” † प्रीणयित्तो “गावः” “सोमं” “वावशानाः”
कामयमाना भवन्ति, “विप्राः” मेधाविनः स्तोतारः ‡ “सोमं”
“मतिभिः” स्तुतिभिः § “पृच्छमानाः” पृच्छन्ती भवन्ति
“सुतः” अभिषुतः “सोमः” “पूयमानः” ऋत्विग्भिः “ऋच्यते”

● ऋ० वे० ७, ४, १०, ५ ।

† ‘आदित्यरश्मयो धेनवः’—इति वि० ।

‡ ‘विप्राः—ब्राह्मणा . . . अथवा विप्रा आदित्यरश्मयः’—इति वि० ।

§ ‘मतिभिः—ब्रह्माभिः’—इति वि० ।

‘चरति’ * । तथा “विष्टुभः” विष्टुभूपाः † “चकोः”
अस्माभिः क्रियमाणा एते मन्त्राः “सोमे” “सववन्ते” सङ्गच्छन्ते ॥

“सोमसमुत्तच्छत्यते पूयमानः”—इति छन्दोगाः, “सोमःसुतः
पूयते अज्यमानः”—इति बह्वचाः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३
एवानः सोमपरिषिच्यमान

१ २ ३ १ २ ३ २
आपवस्वपूयमानः स्वस्ति ।

२ ३ १ २ ३ १ २ २ २
इन्द्रमाविशवृहतामदेन

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
वर्धयावाचञ्जनयापुरन्धिम् ॥ ३ ३ ॥ १०

से “सोम !” “परिषिच्यमानः” परितः पात्रेषु सिच्य-
मानः पूयमानः त्वं “नः एवा” अस्माकमेव “स्वस्ति” वा
अविनाशम् आ पवस्व प्रापय । किञ्च “वृहता” महता “मदेन”
मदकर-रसेन अहम् “इन्द्रम्” “आविश” प्रविश । तथा
“वर्धया” “वाचं” स्तुति-लक्षणां § प्रसिद्धां कुरु । किञ्च

* ‘चरति’—‘चर’ गतौ । गच्छति—इति वि० ।

† ‘विष्टुपूयन्त्याः अथवा विष्टुभः तथैव विद्यां सोमयज्ञा’—इति वि० ।

‡ छ० वे० ७, ४, १८, १ । “रवेण”—इति च तत्र पाठः ।

¶ ‘स्वस्ति’—‘सोमं कुरु’—इति वि० ।

§ ‘वाचम्’—‘वृद्धयुः सामलक्षणम्’—इति वि० ।

“पुरन्धि” बहुविधं प्रज्ञानं * “जनया” † अस्मभ्यमुत्पादय ‡
वाक्कभेदादनिघातः ‡ ॥ ३ ॥ १०

॥ सङ्गोष्मम् ॥ ^१होयि । ^२हो । ^१हाइहोयि । ^{१ १२}तिष्ठो
^२वाचाः । ^{२ १}ईश्रय । ^{२ ४ ५}तिप्रवक्त्रीः । ^{२ १}ऋतस्यधायि । ^१तौश्र
^{१ २}म्ब्रह्म । ^{१ ३ ४ ५}षोमनीषाम् । ^{१२ १२}गावोयन्तायि । ^{१ १}गोश्रपतिम् ।
^{२ ३ ४ ५}पृच्छमानाः । ^{२२ १}सोमंयन्तायि । ^{२ १}मतयः । ^२वाश्र४३ । ^१वा
^{२ ४}श्र४३ । ^{२२ १ २}वाश्र५पुनाइपूइः ॥ (२) ^{१ १}सोमङ्गावो । ^{१ १}धेश्रनवः ।
^{१ २ ४ ५}वाक्शानाः । ^{२२ १}सोमंविप्राः । ^{२ १}मतिभिः । ^{२ ३ ४ ५}पृच्छमानाः ।
^{२२ १}सोमःसुताः । ^{२ १ २}ऋच्यते । ^{२ ३ ४ ५}पूयमानाः । ^{२२ १२}सोमेऽर्काः ।
^{१ १}त्रिष्टुभः । ^२साश्र४३म् । ^{२ ४}नाश्रवाऽपुताइपूइयि ॥ (२) ^{२२ १२}एवा

* ‘पुरन्धि’—पुष्टिम्—इति वि० ।

† ‘इह मन्त्रे एवेत्यादौ बहुत्र शब्दसं दीर्घत्वम् । तथाच—“एवा”—इत्यत्र
“निपातस्य च (६, ९, १३६)”—इति दीर्घः, “वर्द्धया”—“जनया”—इत्यनयोस्तु
“हाचोऽतिष्ठ ऊः (६, ९, १३५)”—इत्यस्य “तिष्ठः”—इति, योगविभागाद्दीर्घः ।

‡ “तिष्ठतिष्ठः (८, १, २८)”—इति प्राप्तो निघातः “अन्त्येकमपि साकाङ्
क्षम् (८, १, ३५)”—इति तदभाव इत्यर्थः ।

नःसो । मा३परि । विच्यमानाः । आपवस्वा । पूर्य
 मा । नःसुवस्ती । इन्द्रमावायि । शा३वृद्ध । तामदेना ।
 होयि । हो । हा३होयि । वर्द्धयावा । चा३ञ्जन ।
 या३४३ । पू३रा५धा६५६यिम(३) ॥ १७ * ॥ [१] १०

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य चतुर्थस्याध्यायस्य
 तृतीयः खण्डः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थखण्डे, ॐ प्रगाथरूपे—

प्रथमसूक्ते—प्रथमा ।

यद्यावइन्द्रतेशतं शतम्भूमौरुतस्युः ।

नत्वावज्जिन्तुसहस्रं सूर्या अनुनजातमष्टरोदसी ॥ १ § ॥

* उ० मा० १२० १५० १७५० । † 'उक्तो भाष्यन्दिन'—इति वि० ।

‡ 'इदानीं पृष्ठान्युच्यन्ते । रथन्तरं बृहत्, विरूपं वेंराज, शाकर, रैवतश्चेति
 बृहत् बृहत्, तस्य पृष्ठानि सधर्मकानि भवन्ति—इति वि० । 'रथघोषं, दुन्दुभ्याश्च-
 नन्, उपवाजनम्, उरोऽग्निमन्थनम्, आर्याघोषं, गवां घोषः इति पृष्ठधर्मो श्रद्धा-
 सहस्रं पृष्ठं बृहत् अथन्यदनि गौरीवित यावत्'—इति च वि० ।

॥ ५० ५० १, २, ४, ६ (१ मा० ५०२५०, =५० वे० ६, ५, ८, ४ ।

हे “इन्द्र !” “ते” तव प्रतिमानार्थं “यद्” यदि “द्यावः”
 अमुलोकाः “गतं” गत-सङ्ख्याकाः “स्युः” तथापि नाश्रुवन्ति ।
 “उत” अपिच “भूमौः” भूम्यः “ते” तव मूर्त्ति-प्रतिविम्बाय
 “गतं” स्युः तथापि “न” अश्रुवन्ति । हे “वज्रिन्” “त्वा”
 त्वाम् “सहस्रं” “सूर्याः” अगणिता अपि सूर्याः “न” “अश्रु”
 भवन्ति न प्रकाशयन्तीत्यर्थः । “न तत्र सूर्यो भाति (द० उप०)”
 —इति श्रुतेः । किं बहुना जातं पूर्वमुत्पन्नं किञ्चित् त्वामनु
 “नाष्ट” नाश्रुते तथा “रोदसो” द्यावापृथिव्यो नाश्रुवाते सर्व-
 भ्योऽतिरिच्यसे इत्यर्थः । “ज्यायान् पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षाद्
 दिवो ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः”—इति (द० उप०) श्रुतेः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १

२ १

२ २

२ १

२ २

२ १ २

आपप्राथमहिनावृष्णपावृषन्विश्राशविष्ठशवसा ।

२ १

२

२ १ २

२ १

२ २

२ १

२ २

२ १

२

अस्मात्त्रमघवङ्गोमतिव्रजेवज्रिञ्चित्राभिहृतिभिः॥२*॥११

हे “वृषन्” अभिमतवर्षकेन्द्र ! त्वम् “आ पप्राथ” आ पूर-
 यसि व्याप्नोषि । कानि ? “विश्रा” सर्वाणि “वृष्ण्या” वर्ष-
 काणि बलानि शत्रु-सम्बन्धीनि । केन साधनेन ? “महिना”
 महता “शवसा” बलेन स्वीयेन अथवा वृष्णेत्येतच्छब्दो विशेष-
 यम् । तथा सति अभिमतवर्षकेण महता बलेन अस्मदीयानि
 बलानि पूरयसीत्यर्थः । अथ तथाकृत्वा हे “शविष्ठ” बल-

वत्तम ! “बोमति” बहुभिः गोभिर्वृत्ते “व्रजे” गतु-सम्बन्धि-
निमित्ते सति “अस्मान्” “अव” रक्ष । हे “अववन्” धनवन् !
“वज्रिन्” वज्रयुक्तेन्द्र ! कैः साधनैः ? “चित्राभिः” नानाविधैः
“जतिभिः” रक्षणे रिति ॥ २ ॥

१ २ २ १ २ २ १ २
॥ मद्वावैष्टम्भम् ॥ यद्यावओद्वायि । द्रुतेऽशतोवा ।

१ १ २ १ २ १ २ १ २
शातम्भूमीः । उतासीश्यू२३ । होवा३हायि । नत्वा

२ १ २ १ २ २ १ २ १
वज्रिन्सहस्रम् । रियाआशू२३ । होवा३हायि । न

२ १ २ २ १ २ १ २ १
जाता१मा२३ । होवा३हा । एरो । दा२सी२३४ओहो

१ २ १ १ २ २ १ २ १ २ १
वा ॥ (१) नजातमोहा । एरोदसोवा । नाजातम ।

१ २ १ २ २ १ २ १ २ १
एरोदा१सा२३यि । होवा३हायि । आपप्राथमहिनावृ ।

१ २ १ २ २ १ २ १ २ १
षिण्यावा१र्षा२३न् । होवा३हायि । विश्वाशा१वा२३ ।

१ २ १ १ २ १ २ १ २ १
होवा३हा । एश । वा२सा२३४ओहोवा ॥ (२) विश्वा

१ १ २ १ २ १ २ १ २ १
शवोद्वायि । एशसोवा । वायिश्वाशवि । एशावा१सा

२३ । होवा ३ हायि । अस्मा^१चवमघवन्गो । मतायि^१
 ब्रा^१जार्^१यि । होवा^१हायि । वज्रायि^१श्चा^१यिवा २३ ।
 होवा^१हायि । भिह् । ता^१यिभा २ ३ ४ औहोवा^१ ॥

॥ १८ * ॥ [१] ११

अथ द्वितीयल्लेखः—प्रथमा ।

वय^{३१२}वृत्वासुतावन्त^{३१२३२३२३१०} आपो न वृक्तवर्हिषः ।

पवित्रस्य^{३१२} प्रस्रवणे^{३१२}षु वृत्रहन्परिस्तोतार^{३१२} आसते ॥ १३ ॥

हे “वृत्रहन्” इन्द्र ! “त्वा” त्वाम् “वयं व” वयं खलु “सुत-
 वन्तः” “आपः न” आप इव प्रवणमभिगच्छामः । “पवित्रस्य”
 सोमानां प्रस्रवणेषु “वृक्तवर्हिषः” तीर्णवर्हिषः स्तोतारश्च त्वां
 पर्युपासते ॥ १ ॥

● क० गा० २२ प्र० १ अ० १८ सू० ।

† ‘वामदेव्यं मैत्रावरुणं साम, वैष्टुभं ब्राह्मणाणां हि, रौरवमश्वावाकं साम’—
 इति ऋ० ।

‡ क० आ० ३, २, १, ८ (१ भा० ५४० प्र०) = ऋ० वे० ६, ३, ७, १ ।

अथ द्वितीया ।

१ १ ३ २७ ३ १ २ ३ २ १ १ १
 स्वरन्तित्वासुतेनरोवसोनिरेकउक्थिनः ।

३०१ ३ १ २ ३ २७ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
 कदासुतन्तृषाणओकआगमइन्द्रस्वद्दीववसगः ॥ २* ॥

हे “वसो” वासयितरिन्द्र । † “त्वा” त्वां “सुते” अभिषुक्ते
 सोमे “निरेके” निर्गमे ‡ “उक्थिनः” ॥ “नरः” नेतारः ।
 “स्वरन्ति” शब्दायन्ते § । अपिचेन्द्रः “सुतं” सोमं प्रति
 “तृषाणः” तृषण् “स्वद्दीव” स्वभूत-शब्दी इव ॥ “वसगः”
 वननीय-गमनो** तृषभः शब्दं कुर्वन् “कदा” “ओकः” स्थानम्
 “आगमत्” आगच्छेत् ॥ २ ॥

● ऋ० वे० ६, २, ७, २ । “गमदिन्द्र” —इति सु० पाठः सावय-
 स्यात्तच्च ।

† ‘वसो निरेके—हे वसो ! प्रशस्तधन !’—इति वि० ।

‡ ‘निरेके—दानवति यज्ञे । अथवा वसोनिरेक इत्येकं पदम्, तथा सा
 षष्ठी क्रियते—वसुनः वस्यस्य निरेके’—इति वि० ।

॥ ‘उक्थिनः—उक्थानि सामानि, ते तद्गन्तः’—इति वि० ।

§ ‘स्वरन्ति सामभिः’—इति वि० ।

॥ ‘स्वद्दीव इन्द्र । शोभन शब्द करोति, पक्षयोभूत्वा दृष्टिधारण’—
 इति वि० ।

** ‘वसगः—वननीयगमः’—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ २ २ २ २ ३ १ २
 कण्वेभिधष्णावाधृषद्वाजन्दर्षिसहस्रिणम् ।

३ १ २ ३ १ २ २ २
 पिशङ्गरूपमधवन्विचर्षणेमक्षूगोमन्तमीमहे ॥ ३ * ॥ १२

हे “धृष्णो” धर्षकेन्द्र । † “कण्वेभिः” कण्वान् मेधाविनः
 स्तोतृन् अनुशिष्य [विभक्ति-व्यत्यय (३, १, ८५)] “सहस्रिणं
 सहस्र-सङ्ख्याकं “वाजम्” “आदर्षि” प्रयच्छसि । हे “मधवन्”
 धनवन् ! “विचर्षणे” विद्रष्टरिन्द्र ! ‡ “धृषत्” धृष्टं “पिशङ्ग-
 रूपं” ¶ “गोमन्तम्” वाजं § “मक्षू” शीघ्रम् ॥ “ईमहे”
 याचामहे, त्वामिति शेषः ॥ ३ ॥ १२

२ १ २ १ २ २ १ १
 ॥ मद्वावैष्टभम् ॥ वयङ्मत्वोद्वायि । सुतावन्तोवा ।

१ २ १ १ २ १ २ २ १
 आपोनवृ । त्तवार्चायिषार३ः । होवा३हायि । पवि

* सू० वे० ६, ३, ७, ३ ।

† ‘धृष्णो—धारणशील ।’—इति वि० ।

‡ ‘विचर्षणे—विविधाचर्षणयः पुरुषाः यस्य स विचर्षणिः, अथवा विचक्ष्य
 द्रष्टा’—इति वि० ।

¶ ‘पिशङ्गरूपं—सुवर्णवर्णम्’—इति वि० ।

§ ‘गोमन्तं—गोचीरयुक्तम्’—इति वि० ।

॥ ‘मक्षु—मक्षशीयम्’—इति वि० । “निपातस्य च (६, ३, १११)”—
 इति दीर्घः ।

चस्यप्रसवणे । पुवान्नाश्हार३न् । होवा३हायि । परा
 यिस्तो१शत२३ । होवा३हा । रचा । सार२ता२३४औ
 होवा ॥(१) स्वरन्ति२होहायि । सुतेन२रोवा । वासो२नि
 रे । कज३था१यिना२३ः । होवा३हायि । कदा२सुत
 नृषा२णऔ । कआगा१मार२३ः । होवा३हायि । इन्द्र ।
 स्वा१ब्दी२३ । होवा३हा । वव । सार२गा२३४ । औ
 होवा ॥(२) कए२भिर्द्वो३हा । ण्वा२धृषोवा । वाज२न्द
 र्धि । सदा२सा१यिणा२३म् । होवा३हायि । पिश३ङ्ग
 रूप२मम३घवन् । विचा२र्षा१णा२३यि । होवा३हायि । मत्तू
 गो१मार२३ । होवा३हा । तमी । मार२हा२३४औहो
 वा । दी२र३४गाः(३) ॥ १८ * ॥ [१]

॥ अभिनिधनङ्गाण्वम् ॥ औहोहोहायि । आयिहो ।

^{१ २} ^३ ^४ ^{१ २} ^३ ^४ ^१ ^२
 वयाम् । धार३४त्वा । सूतावार३४न्ताः । आपोन्ना३४

^५ ^{१ २ १} ^{१ २ १} ^३ ^५ ^१
 ३४वृ । त्तावर्हिषाः । ऐहोयि । आर३४यिही । पा

^१ ^५ ^{१ २ ३} ^५ ^{१ २ १} ^{१ २ १}
 विअर३४स्या । प्रासावार३४णे । षूवृत्रहान् । ऐहोयि ।

^३ ^५ ^{१ ३} ^५ ^{३ २} ^४
 आर३४यिही । पारिस्तोर३४ता । रआ३साप्रता ६ ५ ६

^{१ २ १} ^२ ^१ ^२ ^१ ^२ ^१
 यि ॥ (१) औहोहोहायि । आयिही । स्वारा । तार

^५ ^{२ ३} ^५ ^{१ २ ३} ^५ ^{१ २}
 ३४यित्वा । सूतेनार३४राः । वासीनार३४यिरे । का

^१ ^{१ २ १} ^४ ^५ ^{२ ३}
 उक्थिनाः । ऐहोयि । आर३४यिही । कादाम् २३४

^५ ^{२ ३} ^५ ^{१ २ १} ^{१ २ १}
 ताम् । तार्षाणार३४ओ । काआगमाः । ऐहोयि ।

^३ ^५ ^२ ^३ ^५ ^{३ २} ^४
 आर३४यिही । आयिन्द्रास्वार३४ब्दी । ववार३साप्रगा

^{१ २ १} ^२ ^१ ^२ ^{१ २} ^३
 ६ ५ ६ ॥ (२) औहोहोहायि । आयिही । काण्वे । भार

^५ ^{१ २ ३} ^५ ^{१ ३} ^५ ^{१ २} ^{१ २}
 ३४यिर्द्धा । ण्णावाधार३४र्षात् । वाजन्दार३४षी । सा

^१ ^२ ^{१ २ १} ^३ ^५ ^१ ^३
 हस्तिणाम् । ऐहोयि । आर३४यिही । पायिग्रङ्गार३४

४३८ । पद्माघात३४वान् । वीचर्षणायि । ऐहोयि । आ

२३४यिही । मात्तूगो२३४मा । तमा३यिमापुद्गा ६ ५ ६

यि । आ२३४भौ(३) ॥ ८ * ॥ [२]

॥ अभीवर्त्तम् ॥ वया३ङ्गा३त्वासुतावन्तोवा । आपो ।

नवृ । क्तवार्त्तशियिषा२ः । पावित्रस्या३१२३४ । प्रप्तव

णो । पुवार्त्तशहा२न् । परायिस्तो १ ता २ । रआ ३ ।

सा२३४पु । ता२३४यि ॥ (१) स्वरा३न्ता३यित्वासुतेनरोवा ।

वासोनिरे । कजक्थाशयिना२ः । कादासुता३१२३४म् ।

त्रिषाणओ । कआगाशमा२ः । इन्द्रास्वा१ब्दी२ । ववा,

३ । सा३४पु । गा२३४पुः ॥ (२) कएवो३भा३यिधृष्णवा

धृषोवा । वाजन्दषि । सहास्वा१यिणा२म् । पायिग्रङ्ग

रु३१२३४ । पद्माघवन् । विचार्षा१णायि । मत्तूगो१

मा२ । तमा३यि । मा२३४५ । द्वा२३४५यि(३) ॥ ६* ॥ [३]

१२

अथ प्रगाथरूपे तृतीयसूक्ते †—प्रथमा ।

३२३ १ २ ३२ ३१२ ३२
तरणिरित्तिषासतिवाजम्पुनन्ध्यायुजा ।

१ ३१२ ३१२ ३२ ३ १ २२ ३ १ २
आवइन्द्रम्पुरुहृतन्नमेगिरानेमिन्तष्टेवसुद्रुवम् ॥ १ ‡ ॥

“तरणिरित्” युद्धादौ कर्मणि त्वरितएव पुमान् “पुनन्ध्या”
महत्या धिया “युजा” सहायभूतया “वाजम्” अत्र “सिषासति”
सम्भजते, “पुरुहृतं” बहुभिराहुतम् “इन्द्रम्” “गिरा” स्तुत्या
हे यजमानाः “वः” युष्मदर्थम् अहम् “आ नमे” आनतमभि-
मुखं कुर्वे । तत्र दृष्टान्तः—“नमि” चक्रम्य वलयम् “सुद्रुव”
श्रीभनदारु* “तष्टेव” यथा वर्द्धकिः दारु-नेमिमानमयते तद्वदि-
त्यर्थः ॥ १ ॥

* उ० मा० ८ प्र० १ अ० ६ सू० ।

† ‘तौरेवमच्छावाकं साम’—इति वि० ।

‡ व० आ० २, १, ५, ६ (१ भा० ४८३ पृ०) = य० वे० ३२, २१ = ऋ० वे०
५, २, २०, ५ ।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

नदुष्टुतिर्द्रविणोदेषुशस्यतेनस्नेधन्तरयिर्नशत् ।

० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

“द्रविणोदेषु” धनदातृषु पुरुषेषु “दुष्टुतिः” असमीचीना स्तुतिः “न शस्यते” नाभिधीयते । किञ्च “स्नेधन्तं” हिंसन्तं धनदातृविषय-स्तुत्यादि-कर्माण्यकुर्वन्तमित्यर्थः, एवञ्चूतं जनं “रयिः” धनं “न नशत्” न व्याप्नोति । तथा हे “मघवन्” धनवन्निन्द्र ! “पार्यं दिवि” सौख्यं दिवसे † “मावते” मत्त-दृशाय स्तोत्रे “देष्ण” दातव्यं “यत्” धनमस्ति तत् “तुभ्यं” त्वत्त्वः सकाशात् “सुशक्तिरित्” शोभन-स्तुतिकएव स्तोता लभत इति शेषः ॥

“नदुष्टुतिर्द्रविणोदेषुशस्यते” —इति छन्दोगाः, “नदुष्टुती मत्स्योर्विन्दतेवस” —इति बह्वचाः ॥ २ ॥ १३

॥ रौरवम् ॥ तरणिरित्साश्रयिषामा२३४ती । वाऽजम्पु

रन्ध्यायुजावइन्द्रम्पूरुहृतन्नमारयिगिरा । ओहाउवा ।

* ऋ० वे० ४, ८, २१, २ ।

† ‘पार्यं दिवि—पारणाये खुल्लोके’—इति वि० ।

^{१८}नेमिन्तष्टे^८वसू^२रश्वा^{१८}इ । नेमिन्तष्टे^८वसा^८रश्वा^२उवा^१इ । ओ
^१हा^२उवा । ^१द्रुवाम् । ^{४५}औरश्वा^{२८}वा ॥ (१) नेमिन्तष्टे^८वा
^१रश्वा^५इ । ^१नायिमिन्तष्टे^८वसू^८द्रुवन्^८दुष्टू^८तिर्द्रविणो^८
^१द्रुशार^{३२}स्यतायि । ^{२२}ओहा^२उवा । नस्ते^{१८}धन्ता^५रयार^५
^१यिर्हायि । ^{१९}ओहा^२उवा । नशात् । ^{४५}औरश्वा^५वा ॥ (२)
^{२८}नस्ते^१धन्त^५रारि^१र्नार^५श्वा^१इ ॥ (३) नास्ते^१धन्त^८रयिर्न^८शत्सु
^{३२}शक्तिरिन्म^{१२}घवन्तु^२भ्यम्मार^{१८}वतायि । ^{१८}ओहा^२उवा । ^{१८}देष्णं
^१यत्पारियार^२श्वायि । ^{१२}ओहा^२उवा । ^१दिवा । ^२और
^५श्वा । ^४हो^४पुई । डा (३) ॥ १८ * ॥ [१] १३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य चतुर्थस्याध्यायस्य

चतुर्थः खण्डः ॥ ४ ॥

* क० गा० २ प्र० १ अ० १८ सू० १ ।

† 'उक्तं माध्विन्दनं सवजम्'—इति वि० ।

अथ पञ्चमे खण्डे—

प्रथमद्वये—प्रथमा ।

३ १७ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तिस्त्रोवाचउदीरतेगावोमिमन्तिधेनवः ।

१ २ ३ १ २
हरिरेतिकनिक्रदत् ॥ ११ ॥

“तिस्त्रोवाचः” ऋगादिभेदेन “उदीरते” प्रोद्गायन्ति,
ऋत्विजः । “धेनवः” आशिरेण प्रोणयित्रो “गावः” “मिमन्ति”
शब्दायन्ति दोहायम्, “हरिः” हरितवर्षः सोमश्च “कनिक्रदत्”
शब्दं कुर्वन् “एति” गच्छति द्रोणकलशम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभिब्रह्मीरनूषतयङ्गीर्जतस्यमातरः ।

३ १ २ ३ १ २ २
मर्जयन्तीर्दिवःशिष्टुम् ॥ २४ ॥

“ब्रह्मीः” ब्राह्मण-प्रेरिताः ॥ “यङ्गीः” महत्यः [‘यङ्गः’—इति
महन्नाम (निघ० ३, ३, १३)] “ऋतस्य” यज्ञस्य “मातरः”

* ‘इदानीं’ तृतीयसवनमारभते—इति वि० । ‘पाठोच्चं साम’—इति वि० ।

† ऋ० षा० ५, २, ४, ५ (२ भा० १६) = ऋ० वे० ६, ८, १३, ४ ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, २९, ५ ।

१ ‘ब्रह्मीः’—ब्राह्मणा या याः ख्यन्ते ता ब्रह्मीः—इति वि० ।

निर्मात्राः स्तुतयः* “दिवः” द्युलोकात्† “शिशु”‡ शिशुस्थानीयं
सोमम्§ “मर्जयन्तीः” पावयन्तीः “अभ्यनूषत” स्तवन्ति [तृतीय-
स्थामितोदिवि सोमप्राप्तौदित्यादि श्रुतेः द्यु-शिशुत्व तस्य] ॥

“मर्जयन्तीः” “मर्मज्यन्ते”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

४ १ ४ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
रायःसमुद्राश्चतुरोऽस्रभ्यःसोमविश्वतः ।

१ २ ३ १ २
आपवस्वसहस्रिणः ॥ ३ ॥ १४

“रायः” धनस्य सम्बन्धिनस्य “चतुरः समुद्रान्” मणि-
मुक्तादि-धन-पूर्णानित्यर्थः । तादृशीन् समुद्रान् “अस्रभ्यम्”
अर्थाय हे “सोम । ” “विश्वतः” सर्वतः “आ पवस्व” । तथा
“सहस्रिणः” § अपरिमितान् कामान् आपवस्व प्रयस्व [चतुः-
समुद्रस्य धन-विशेष प्राप्ते तन्मध्यगत धन भूमि-स्वामित्वमन्तरेणा
सम्भवात् चतुस्समुद्र सहित-भूमण्डल स्वामित्वमेवाशास्ते यज-
मानः] ॥ ३ ॥ १४

* ‘मातर — धनव आदित्यश्च यो वा आपो वा — इति वि० ।

† ‘दिव — द्युलोकात् सकाशात् इति वि० ।

‡ ‘शिशु शसनीय सोमम् — इति वि० ।

§ अ० वे० ६ पृ २३, ६ ।

§ सहस्रिण — सहस्रमणिता — इति वि० ।

॥ पाष्ठौहम् ॥ तिस्त्रोवाचा२उदीरतायि । गावो
मिमन्तिधेनवः । हरिरा२३यितौ । कनौ२ । ऊवायि ।
हो३वा३ । कार२दा२३४औहोवा ॥ (१) अभिब्रुह्मा२यि
रनूषता । यक्कीर्त्तस्यमातरः । मर्ज्या२३न्तीः । दिवौ
२ । ऊवायि । हो३वा३ । शा२यिशा२३४औहोवा ॥ (२)
रायःसमू२द्रा२श्चतुराः । अस्मभ्य२सोमविश्वताः । आ
पवा२३खा । सद्यौ२ । ऊवायि । हो३वा । सार२यि
णा२३४औहोवा । हाऔवा । औवा२३४५ ॥ २०* ॥ [१]

॥ तुल्लकवैष्टम्भम् ॥ तिस्त्रोऽपवा । चा३उदीरतायि ।
गावोमिम । तिधायिता१वा२३ः । होवा३हायि । हंरा
यिरा१यितौ२३ । होवा३हायि । कनि । कार२दा२३४
औहोवा ॥ (१) अभाऽप्रयिन्न । ह्ला३यिरनूषता । याक्की

१ १ २ १ १ १ १
 चर्त । स्वमाताशरा२३ः । होवा३हायि । मर्ज्यावा१

१ १ २ १ १ १ १
 न्ती२३ः । होवा३हायि । दिवः । शार्थिश्वा२३४औ

१ ४ ३ ४ २ ३ ४ १
 होवा ॥ (२) रायाऽ५ःसम् । ऊ३द्रा७श्चतुराः । आस

१ २ १ २ १ २ २ १
 भ्र७मो । मंवायिश्वा१ता२३ः । होवा३हायि । आपा

१ १ २ १ १ ३ ४
 वा१स्वा२३ । होवा३हायि । सह । स्वार्यिणा२३४औ

१ ३ ४
 होवा । दी२३४शाः (३) ॥ १६ * ॥ [२]

१ २ २ १
 ॥ सा७हितम् ॥ तिस्रोवाचउत् । आ२र्यिरतायि ।

२ १ २ १ १
 गावो२ । मार३यिमा । तिधा३यिनावाः । चार३रौः ।

१ ३ ४ ४
 आ२र्यितायि । कना२३ । हाउवा३ । क्कार३४दात् ॥ (१)

१ १ २ १ १ ३
 अभिब्रह्मीर । नूर३पता । यक्का२यिः । आ२३र्त्ता ।

१ १ २ १ ३
 स्यमा२ताराः । मार३र्ज्या । या२न्तायिः । दिवार

१ ३ २ २ २ २
 ३ । हाउवा३ । शार३४यिष्टम् ॥ (२) रायःसमुद्रान् ।

१ १ १ २ १ १
 चारेतुराः । अस्मा२ । भ्या२३०सो । मवा२यिश्वा
 २ १ ० १
 ताः । आ२३पा । वा२खा । सहा२३ । हाउवा३ ।
 ५
 सी२३४णाः(३) ॥ ७ * ॥ [३]

१ २ २ १ १ १ १
 ॥ ऐडसैन्धुक्षितम् ॥ तिखोवाचो । हांयि । उदी,
 २ १ २ २ २ २ २ २
 रा२३तायि । गावोमिमन्तिधा२यिना३वाः । हरि२तो
 ५ १ २ २ १ ४
 २३४हायि । काना३यिहायि । क्रदात् । औ२३हो
 ५ १ २ १ २ १ २ १ २
 वा ॥(१) अभिब्रह्मो । हायि । अनूवा२३ता । यक्नी
 २ २ २ ४ ५ १ २
 र्जतस्यमा३ता३राः । मर्ज्यन्तो२३हायि । दायिवा३
 २ १ ४ ५ २ १ २ २ २
 हायि । शिष्टम् । औ२३होवा ॥(२) रायःसमो । हा
 २ १ २ १ २ २ २ २ २
 यि । द्रा०श्चतूर३राः । अस्मभ्य०सोमावा२यिश्वा३ताः ।
 २ २ ५ १ २ २ १ २ ४
 आपवखो२३हायि । साहा३हा । मिणा । औ३हो
 वा । हो५ई । डा(३) ॥ १८ * ॥ [४]

१ २ २ २ १ २ १ २ १
॥ गायत्रौशनम् ॥ तिस्रोवाचाः । उदीरा२३ता

१ २ २ १ २ १ २ १ २
यि । गावोमिम । तिधेना२३वाः । हरायिरा३यिता३

१ २ १ ५ ५ १
यि । काना२३यिहा३४३यि । क्रार३४दोईहायि ॥ (१) अ

२ १ २ १ २ २ १ २ २
भिब्रह्मायिः । अनूषा२३ता । याक्कीर्त्तत । स्थमाता

२ १ २ १ २ १ २ १
२३राः । मज्जाया३न्ती३ः । दायिवा२३हा३४३यि । शा

५ ५ १ २ २ १ २
२३४यिगोईहायि ॥ (२) रायःसमू । द्रा॒श्चतू२३राः ।

१ २ २ १ २ १ २ १
अस्मभ्य॒सो । मविश्वा२३ताः । आपावा३स्वा३ । साहा

२ १ ५ ५
२३हा३४३यि । म्ना२३४यिणाईहायि(३) ॥ १० * ॥ [५]

२ १ २ ५ २ २ २
॥ वैरूपम् ॥ तिस्रोवा२३४चाः । उदायिरा३ता३यि ।

१ २ ३ ५ १ २ १
गावोरमा२३४यिमा । तायिधे१नावा२ः । हरा२३यिः ।

२ २ ५ २ ० १ २ ३ १ १ १ १ २ १
एता३४औहोवा । कनिक्रदा२३४५त् ॥ (१) अभिब्रा२३

५ २ १ २ २ १ २ ५ १ २
४ह्योः । अनूषा३ता३ । यक्का१यिरा२३४र्त्ता । स्थामा

१ताराः२ । मज्जा२३ । यन्ता३४औहोवा । दिवःशि
 ३११११ २१ ५ १२ १ १ १ १
 शूर३४५म् ॥ (२) रायःसार३४म् । द्राश्वातू३राः । अ
 १ ५ १ ० १२ १
 क्षारभ्या२३४सो । माविश्वाताः२ । आपा२३ । वखा
 ५२४ २१ २ २ १ १ १ १
 ३४औहोवा । सच्चिन्मिणा२३४५ः (३) ॥ ११ * ॥ [६] १४ .

अथ द्वितीयलघुः—प्रथमा ।

३२ ३१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
 सुतासोमधुमत्तमाः सोमाइन्द्रायमन्दिनः ।

३१२ ३१ २ ३१२
 पवित्रवन्तो अक्षरन्देवा गच्छन्तु वोमदाः ॥ १ ‡ ॥

“मधुमत्तमाः” अनिशयेन माधुर्योपिता अतएव “मन्दिनः”
 मदकरा “सुतासः” अभिषुताः सोमाः “पवित्रवन्तः” पवित्रे
 वर्त्तमानाः सन्तः “इन्द्राय” इन्द्रार्थम् “अक्षरन्” पात्रेषु
 क्षरन्ति । अथ प्रत्यक्षकृतः—“व” युष्माकं “मदाः” मदहेतवः
 रसाः “देवान्” इन्द्रादीन् “गच्छन्तु” ॥ १ ॥

* क० गा० १० प्र० १ च० ११ सा० ।

† ‘तादृगी साम’—इति वि० ।

‡ क० आ० ६, २, १, २ (२ भा० १५५ पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, १, ४ ।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रुरिन्द्रायपवतइतिदेवासोअब्रुवन् ।

३ १ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वाचस्पतिर्मखस्यतेविश्वस्येशानओजसः ॥ २ * ॥

“इन्द्रः” सोमः “इन्द्राय” इन्द्रार्थं “पवते” कस्य चरति
“—इति” “देवासः” स्तुतिकारिणः स्तोतारः “अब्रुवन्”
वदन्ति; यदा स्तोतार एवं ब्रुवन्ति तदानीं “वाचः” स्तुतेः
“पतिः” पालयिता † यद्वा शब्दस्य स्वामी अत्यन्तं शब्दाय-
मान इत्यर्थः, तादृशः सोमः “मखस्यते” स्तुतिभिः पूजामिच्छति
[लालसायां सुगागामः] । कीदृशः ? “ओजसः” बलवतः
“विश्वस्य” सर्वस्य “ईशानः” प्रभुः ॥

“ओजसः”-“ओजसा”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २
सहस्रधारःपवतेसमुद्रोवाचमीह्वयः ।

२ ३ १ २ ३ १ १ २ ३ १
सोमस्पतीरयीणांसखेन्द्रस्यदिवेदिवे ॥ ३ ‡ ॥ १५

* ऋ० वे० ७, ५, १, ५ ।

† ‘वाचस्पति’—ऋग्यजुः सामलक्षणाभ्यो वाग्भ्यः पतिः—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १, १ ।

“संहस्तधारः” बहुविध धारोपेतः “सोमः” “पवते”
 क्षरति । कौटुम्भः ? “समुद्रः” समुद्रवन्ति “रसा” रस-स्थानीयः
 “वाचमीङ्गयः” [ईङ्गतेर्ण्यन्तस्य सुप्युपपदे खश् प्रत्ययः] स्तुतीनां
 प्रेरयिता * “रयीणां” धनानां “पतिः” प्रभुः [यदा “रयीणा”
 हविषोदातृणां यजमानानां † “पतिः” पालयिता] “दिवे-
 दिवे” प्रत्यहम् “इन्द्रस्य” “सखा” मित्रभूतः सोमः पवते ॥

“सोमस्यतिः”-“सोमःपतिः”—इति पाठो ॥ ३ ॥ १५ . . ,

॥ गौरीवितम् ॥ सुता । सोमा ३ । धुमन्तमाः ।

सोमाइन्द्रायमन्दिना २३ । पावित्रवा ३१२३ । तोआपूष्

रान् । दायिवान्गच्छा ३१२३ । तुवोवा । मापूदोद्वा

यि ॥ (१) इन्दुः । इन्द्रा ३ । यपवतायि । इतिदेवासो

अब्रुवार ३न् । वाचस्पता ३१२३यिः । मखापूस्पतायि ।

वायिश्चस्येशा ३१२३ । नओवा । जापूसो ई हायि ॥ (२)

सह । सुधा ३ । रःपवतायि । समुद्रोवाचमीङ्गयार ३ ।

* ‘वाचमीङ्गयः—शब्दं कुर्वन्त्य’ - इति वि० ।

† ‘सोमः पतिः केषाम् ? रयीणाम् चर-पुरोजशादि लक्षणां धनानाम्
 चक्षवा सर्वमखानाम्’—इति वि० । ‡ ‘महागौरीवितम्’—इति ख० पु० ।

सोमस्यता३१२३यिः । रया५यिणाम् । साखेन्द्रस्या३१२३ ।

दिवोवा । दा५यिवो६हायि(३) ॥ ३ * ॥ [१]

॥ ततन्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमा । धुमा ३ त्तमाः ।

सोमाइन्द्रा३यमा३ । ए३ । दिनआ । पवायित्रवा३न्तो

३ । ए३ । क्षरन्ना । दायिवान्गच्छा३न्तुवा३ः । ए३ ।

मदाआ ॥ (१) इन्दुरिन्द्रा । यपा३वतायिदेवा३सो ३ ।

ए३ । ब्रुवन्ना । वाचास्पता३यिर्मखा३ । ए३ । स्यत

आ । विश्वास्थेशा३नओ३ । ए३ । जसआ ॥ (२) सह

सधा । रःपा३वतायि । समुद्रोवा३चमा ३ यि । ए३ ।

खयआ । सोमास्यता३यिरया३यि । ए३ । णा ३ मा ।

सखेन्द्रस्या३दिवा३यि । ए३ । दिवआ(३) ॥ ४ * ॥ [२]

॥ आन्धीगवम् ॥ सुतासोमधुमा१त्तामाः । सोमाइ ।

^१ द्राया^२३मा । ^१ ऊमा^२१५२ । ^१ दिनः^२ पवित्रवन्तो^३ अक्षरा^४र
^१ ३४पून् । ^१ दायिवा^२३उवा । ^१ गा^२र^३च्छा । ^१ तू^२र^३३वो । ^१ मदा ।
^१ औ^२३होवा ॥ (१) ^१ इन्दुरिन्द्राय^२पा^३शवा^४तायि । ^१ इति^२दे । ^१ वा
^१ सो^२र^३३आ । ^१ ऊमा^२१५२ । ^१ ब्रुवन्वाच^२स्पतिर्म^३खस्यता^४२३४,
^१ प्रयि । ^१ वायिश्वा^२३उवा । ^१ स्या^२र^३यिशा । ^१ ना^२३३ओ । ^१ ज
^१ सा । ^१ औ^२३होवा ॥ (२) ^१ सहस्र^२धारः^३पा^४शवा^५तायि । ^१ समु
^१ द्रः । ^१ वाचा^२३मा । ^१ ऊमा^२१५२ । ^१ खयः^२सोमस्य^३तीर
^१ योणा^२१म् । ^१ साखा^२३उवा । ^१ द्रा^२र^३स्या । ^१ दा^२३३यिवे ।
^१ दिवा । ^१ औ^२३होवा । ^१ हो^२पुई । ^१ डा^२(३) ॥ २० * ॥ [१]

॥ स्वारत्वाष्ट्रीसाम ॥ ^१ सहस्र^२धा^३३हा । ^१ रः^२पवाता^३२

^१ यि । ^१ समुद्रो^२वा^३३हा । ^१ चमी^२ङ्गाया^३२ः । ^१ सोमस्य^२ता^३३यि

^१चायि । ^१रयायिणा^{१२}म् । ^{१२}सखेन्द्रस्या^२श्चायि । ^२दिवा^{२२}

^१हो^५२३४ । वा । ^४दापुयिवो^५द्दहायि(३) ॥ ८ ॥ [२]

॥ ^१स्वारत्वा^२ष्ट्री^२साम ॥ ^१सुता^२सोमा^२श्चा । ^{२२}धुमन्ता^१मा

^{१२}रः । ^१सोमा^२इन्द्रा^२श्चा । ^{२२}यमन्दायिना^१रः । ^१पवित्रवा^२श्चा ।

^२तो^{२२}अक्षारा^१रन् । ^{१२}देवान्गच्छा^२श्चा । ^{२२}तुवो^१श्चो^२र

^५३४ । वा । ^४मापुदो^५द्दहायि ॥ (१) ^१इन्दुरिन्द्रा^२श्चा । ^{२२}यप

^१वाता^१रयि । ^१इतिदेवा^२श्चा । ^{२२}सोअब्रूवा^१रन् । ^{१२}वाचस्य

^२ता^२यिर्चायि । ^{२२}मखस्याता^१रयि । ^१विश्वस्थेशा^२श्चा । ^२न

^२ओ^२श्चो^५२३४ । वा । ^४जापुसो^५द्दहायि ॥ (२) ^१सहस्रधा^२श्चा

^२हा । ^{२२}रःपवाता^१रयि । ^१समुद्रोवा^२श्चा । ^{२२}चमी^१ङ्गया^२रः ।

^{१२}सोमस्यता^२यिर्चायि । ^१रयायिणा^२म् । ^{१२}सखेन्द्रस्या^२श्चा

^{२२}यि । ^१दिवा^५श्चो^४२३४ । वा । ^५दापुयिवो^५द्दहाइ(३) ॥ ११ ॥ [३]

॥ दिग्भ्यस्त्वाष्ट्रीसाम ॥ सुता । सोमा३ । चा३

हा । धुमत्तामार३४ः । सोमाः । इन्द्रा३ । चा३हा ।

यमन्दायिना३४ः । पवि । त्रवा३ । हा३हा । तोअ

क्षारा३४न् । देवान् । गच्छा३ । चा३हा । तुवो३

क्षो३४ । वा । मा५दे६हायि ॥ (१) इन्दुः । इन्द्रा

३ । चा३हा । यपवाता३४यि । इति । देवा३ । हा

३हा । सोअब्रूवा३४न् । वाचः । पता३यिः । चा३

हायि । मखस्याता३४यि । विश्व । स्थेशा३ । चा३

हा । नओ३क्षो३४ । वा । जा५मो६हायि ॥ (२) स

ह । मूधा३ । चा३हा । रःपवाता३४यि । समु ।

द्रोवा३ । चा३हा । चमो६ह्याया३४ः । सोमः । पता

३यि । चा३हायि । रयायिणा३४म् । सखे । द्रस्या

३। चार्हायि। दिवाश्चो२३४। वा। दा५यिबो६

५
चायि(३) ॥ २ * ॥ [४]

१ १ २ २ १ २ २
॥ ऊर्द्धत्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमधुमत्तमाः । सोमा

१ २ २ ३ ५ २ १ १ २
२इन्द्रा१। यमा३४५। दी२३४नाः। पवित्रवन्तोअ

१ १ १ १ ३ २ २ १ २ १ २
क्षरा२३४न्। देवान्गच्छा। तुवोमा२३दा ३ ४ ३ः॥(१)

१ २ १ २ २ १ १ २ ३ २
इन्दुरिन्द्रायपवतायि। आयिता२यिदेवार। सोआ३४

३ ५ २ २ १ २ ३ १ १ १ १ ३
५। ब्रू२३४वान्। वाचस्पतिर्मखस्यता२३४५यि। वि

२ २ १ १ १ २ २ २ १ २ २ १
अस्येशा। नओजा२३सा३४३ः॥(२) सहस्रधारःपवता

१ २ ३ २ ३ ५ १ २ ५ १ २
यि। सामू२द्रोवा१। चमा३४५यि। खार३४याः। सो

२ १ ३ २ ३ ५ १ ३ २ २ १ २ १ २
मस्यतौरयीणाश्म। सखेन्द्रस्था। दिवेदा२३यिवा३४३

१
यि। ओ२३४५ई(३) ॥ २ † ॥ [७]

५ २ २ ४ ५ ४ ५ २ २ १ २ १
॥ साध्रम् ॥ सुतासो३साधुमत्तमाः । सोमाइन्द्रा१।

३ २ ३ ५ २ १ २ २ १ १ १ १ १ १
यमा३४५ । दी२३४नाः । पवित्रवन्तोअक्षरा२३४५न् ।

१ २ ३ ५ १ २ ३ ५ ४
दायिवाओ२३४५वा । गाक्काओ२३४वा । तुवो५मदाः ॥ (१)

५ २ ४ ५ ५ ५ २ १ २ २ १ ३ २ १
इन्दुरा३यिन्द्रायपवतायि । इनायिदेवार । सोआ३४५ ।

२ ५ २ २ १ २ ३ २ १ १ १ १ १ १
ब्रू२३४वान् । वाचस्पतिर्माखस्यतार३४५यि । वायिश्वा

३ ५ १ २ ३ ५ ४
ओ२३४वा । स्यायिषाओ२३४वा । नओ ५ जसाः ॥ (२)

५ २ ४ ५ ४ ५ २ १ २ २ १ ३ २
सहम्रा३धारःपवतायि । समुद्रोवार । चमा ३४ ५ यि ।

३ ५ १ २ १ २ २ २ २ २ २ ३
खार३४याः । सोमस्पतीरयिणा१म् । साखाओ २ ३ ४

५ १ २ ३ ५ ४ ४
वा । द्रास्याओ२३४वा । दिवे५दिवायि । हो ५ ई ।

डा (३) ॥ १२ * ॥ [८]

३ २ २ ४ ५ २ २
॥ श्यावाश्वम् ॥ सुता३१ । सो३माऽ । धुम । ता३

४ ५ १ २ २ २ १
म । एहिया । सो । माइन्द्राया । म । दिना२ः ।

१ २ १ २ ४ ५ १ २
एहिया२ । पवित्रवान्तो३आ३ । क्षार३४रान् । ऐहा

२यि । ए॒क्षिया॒ २ । दे॒वान्गा॒च्छान्नु॒वो॒३ । मा॒३४५दो॒३

५ १ २ २ ४ ५ २ ४२
ह्यायि ॥ (१) इ॒न्दु॒३१ः । आ॒३यि॒न्द्रा । य॒प । वा॒३ते ।

४ १ २ २ २ १ १२
ए॒क्षिया । आ॒यि । ति॒दे॒वा॒सो । अ । ब्रू॒वा॒२न् । ए

२ १ २ ४ ५ २२
क्षि॒या॒ २ । वा॒च॒स्प॒ता॒यि॒र्मा॒३खा॒३ । स्या॒२३४ता॒यि । ऐ

१२ १२ २ ४ २
क्षा॒२यि । ए॒क्षिया॒ २ । वि॒श्व॒स्ये॒शाना॒३ओ॒३ । जा॒३४५

५ ३१ २ ४५ ५ १ ४२
सो॒३हा॒यि ॥ (२) स॒हा॒३१ । सू॒३धा । रः॒पा । वा॒३ते ।

५ १ २ २ १२ १ १२
ए॒क्षिया । सा॒म् । उ॒द्रो॒वा॒चाम् । ई । ख॒या॒२ः । ए

२ १ २ ४ ५ १२
क्षि॒या॒ २ । सो॒म॒स्या॒ती॒३रा॒३ । या॒२३४यि॒णाम् । ऐ॒क्षा

१२ २१ २ ४ १
२यि । ए॒क्षिया॒ २ । स॒खे॒द्र॒स्या॒दा॒३यि॒व॒३ । दा॒३४५यि

५
वो॒३हा॒यि (३) ॥ १३ * ॥ [८]

२ १२ २२ १ २ १ २
॥ म॒हा॒वि॒ष्ट॒भम् ॥ सु॒ता॒सो॒मो॒क्षा॒यि । धु॒म॒त्त॒मो॒वा ।

१ २ २ २ १ २ १ २ १
सो॒मा॒इ॒न्द्रा । य॒मा॒न्दा॒१यि॒ना॒२३ः । हो॒वा॒३क्षा॒यि । प॒वि॒त्र

१ १ १ १ १ १ १ १
 व । तोआक्षाशरा३३न् । होवा३ हायि । देवान्गा १
 १ १ १ १ १ १ १ १
 च्छार३ । होवा३ हा । तुवः । मारदार३४ औहोवा ॥ (१)
 १ १ १ १ १ १ १ १
 इन्द्रुन्द्रोहा । यपवतोवा । आयितदेवा । सोचाग्र
 १ १ १ १ १ १ १ १
 शवा३३न् । होवा३ हायि । वाचस्पतिः । मखास्था१
 १ १ १ १ १ १ १ १
 तार३यि । होवा३ हायि । विश्वास्येश्वा३३ । होवा३
 १ १ १ १ १ १ १ १
 हा । नयो । जारसार३४ औहोवा ॥ (२) सृष्टस्रधोहा ।
 १ १ १ १ १ १ १ १
 रःपवतोवा । सामुद्रोवा । चमारिह्वा१यार३ः । हो
 १ १ १ १ १ १ १ १
 वा३ हायि । दिवे । दारयिवार३४ औहोवा । दीर३४
 ५
 शाः (३) ॥ ११* ॥ [१०] १५

अथ तृतीयवृत्तेः—प्रथमा ।

३ १ १ १ १ २
 पवित्रन्तेविततम्बुह्वाणस्पते

३ १ १ १ १ २ ३ १ २
 प्रमुर्गात्राणिपर्येषिबिभ्रतः ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

अतप्तनूर्जतदामोअश्रुते

३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ २

श्रुतासइदहन्तःसन्तदाशत ॥ १ * ॥

हे “ब्रह्मणस्पते” मन्त्रस्य स्वामिन् सोम ! “ते” “पवित्रं” शोधकं मङ्गं “विततं” सर्वत्र विस्तृतम् । सः “प्रभुः” प्रभवितृत्वं, “गात्राणि” पातुरङ्गानि “पर्येषि” परिगच्छसि “विश्वतः” सर्वतस्तव तत् पवित्रम् “अतप्तनूः” पयोव्रतादिना असन्तप्तगात्रः “आमः” अपरिपक्वः “न अश्रुते” न व्याप्नोति । “श्रुतासः इत्” “श्रुताएव” परिपक्वाएव “वहन्तः” यागं निर्वहन्तः “तत्” पवित्रम् “समाशत” व्याप्नुवन्ति ॥

“सन्तदाशत” — “तत्समाशत” — इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

तपोष्यवित्रं विततन्दिवस्यदे

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

चन्तोअस्यतन्तवोव्यस्थिरन् ।

१ २

२ १ २ ३ १ २

अवन्यस्यपवितारमाश्रवो

२ २ २ १

२ २

२ १ २

दिवःपृष्ठमधिरोहन्ति तेजसा ॥ २ * ॥

“तपोः” † शत्रूणां तापकस्य सामस्य “पवित्र” शोधक-
 मङ्गं “दिवस्पदे” व्युलोकस्योत्थिते स्थाने “विततं” विस्तृतम्
 [“तृतीयस्यामितो दिवि सोम आसीत्”—इति ब्राह्मणम्] ‡
 “अस्य” “तन्तवः” अंशवः † “अर्चन्तः” दीप्यमानाः “व्यस्थि-
 रन्” विविधं तिष्ठन्ति पृथिव्यां हविर्दाने वा “अस्य” सोमस्य
 “आश्रवः” शीघ्रगामिनः रसाः “पवितारं” पावयितारं यज-
 मानम् “अवन्ति” रक्षन्ति होमद्वारा पथाद्भुता “दिवः” व्युलो-
 कस्य “पृष्ठ” पृष्ठभागम् उन्नतदेशम् “तेजसा” स्वप्रकाशेन सार्द्धं
 “अधिरोहन्ति” आरोहणं कुर्वन्ति ॥

“अर्चन्तः”-“शोचन्तः”—इति पाठौ, “अधिरोहन्ति तेजसा”-
 “अधितिष्ठन्ति चेतसा”—इति पाठौ ॥ २ ॥

* सू० वे० ७, ३, ८, २ ।

† ‘हे तपोः’—इति वि० ।

‡ ‘अस्य दशापवितस्य तन्तवः’—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

१९ ३२९ १२ ३९
अरुरुचदुषसःपृश्निरग्रिय

३१ २ ३१९ ३२
उक्षामिमेतिभुवनेषुवाजयुः ।

१ १२ ११९
मायाविनोममिरेअस्यमायया

३१२ १२३ २३१ २
नृचक्षसःपितरोगर्भमादधुः ॥ ३ * ॥ १६

“उषसः” सम्बन्धि “पृश्निः” आदित्यः [“पृश्निरादित्यो भवति प्राश्रुत एनं वर्णः”—इति निरुक्तम् (२, १४)] “अग्रियः” मुख्यः सोऽयं “अरुरुचत्” रोचयति । स “उक्षा” जलस्य सेक्ता “भुवनेषु” भूतजातेषु “मिमेति” मिनोति उदकं प्रक्षिपतीत्यर्थः । “वाजयुः” † तेषामन्नमिच्छन् “माया-विनः” माया प्रज्ञा तदन्तः देवा “अस्य” सोमस्य “मायया” प्रज्ञया “ममिरे” निर्मितवन्तः, सोमस्यैकैकांशपानबला अग्न्या-दयः स्व-स्व-व्यापारेण जगत् सृजन्तीत्यर्थः । तथा “अस्य” मार्यया “नृचक्षसः” नृणां द्रष्टारः “पितरः” पालका देवाः अङ्गिरसः पितरो वा “गर्भम्” “आदधुः” धारयन्ति ओषधीषु च । अत्र सूर्यात्मकः सोमः स्तूयते । सूर्यरश्मिगुणमाधीन-

० ऋ० वे० ७, ३, ८, १ ।

† ‘वाजयुः’—वाजमन्नं तदित्युः अथवा वाजयुः वाजप्रदः अथवा वाजयुः वेगवान्—इति वि० ।

वर्धनाच्चन्द्रस्य अयमुषसः पृश्निः सविता अरुणचत् रोचते रोच
यति वासवं शिष्टं समानं तत्सम्बन्धिनः नृचक्षसः नृणां द्रष्टाः
पितरो जगद्रक्षका रश्मयो गर्भमादधुः वृष्टार्थम् ॥

“मिमेतिभुवनेषु”-“विभक्तिभुवनानि”—इति पाठौ ॥३॥ १६

१ २ १ २ १ २ २ १
॥ स्वारसाम ॥ पवौहोवा । नन्नेविततंवा । ह्याणस्या

१ २ २ २ १
ता२यि । प्रभुर्गात्राणिपरियायि । षिविश्वातां २ ३ः ।

१ २ ४ ५ २ ३ ४ २ ३ २ ३
आताश्नाता । नूर्जाता२३४दा । हो । मोआश्नू२३४

५ २ १ २ ४ ५ २ ३ ४
तायि । हो३यि । शात्ता३साईत् । वाहन्तो२३४ःमा ।

२ ३ २ ४ २ २ १ २ १
हो । तदा३शा५ताई५६ ॥१॥ तपौहोवा । पवित्रंविं

२ १ १ २
ताम् । दिवस्पादा२यि । अर्चन्तोअस्यतन्तवो । विय

१ १ २ ४ ५ २ २ २ ५
स्थायिरा२३न् । आवा३न्तीया । स्यापावौ २ ३ ४ ता ।

२ ३ २ ३ ५ २ १ २ ४ ५
हो । रमात्मा२३४वाः । हो३यि । दायिवा३ःपाष्ठांम् ।

२ ३ ५ २ ३ २ ४
आधोरो२३४हा । हो । तिता३यिजा५सा ६ ५ ६ ॥२॥

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २
अरौहोवा । रुचदुषसःपा । श्रिरग्राया३ः । उच्चाभि

मेतिभुवनायि । पुवाजायू२३ः । मायाश्वायिनी । मा
 मौरै२३४या । हो । स्यमाया२३४या । हो३यि । ना
 र्चाश्चासाः । पायितारो२३४गा । हो । भमाश्दाप्रधू

६५६ः(३) ॥ १ * ॥ [१]

॥ कावम् ॥ पवोवा । चन्तेविततं ब्रा । ह्यणस्या ।
 तारयि । प्रभुर्गात्राणिपरियायि । षिविश्वाता२ः ।
 अतप्तनूर्जतदा । मोअश्न तारयि । शान्तिर्हिसाईत् ।
 वदन्ताः सार३म् । तादाश्शापूता६५६ ॥ (१) तपोवा ।
 पवित्रं वितताम् । दिवस्पादा२यि । अर्चन्तोअस्यतन्त
 वो । वियस्थायिरा२न् । अवन्त्यस्यपविता । रमाशा
 वार३ः । दायिवा३ः पार्श्वाम् । अधिरोहा२३ तायि
 तारयिजापूसा६५६ ॥ (१) अरोवा । रुचदुषसः पा । श्रि

^१ रमायाः^२ । ^{१२} उच्चा^३मिमेतिभुवनायि । ^{२२} षुवाजाश्च^४रः ।
^{१२२} मायाविनोममिरे^२आ । ^{२२} स्यमायाया^१२३ । ^{१२} ना^४र्चाश्चासाः ।
^२ पितरोगा^१२३ । ^{१२} भामा^४इदा^४५५^४५६ः(३) ॥ ३ * ॥ [२] .
^{४२} ॥ यज्ञाय^४ज्ञीयम् ॥ ^४ पवा^२ऽ^४यिचम् । ^२ ता^४इयिवा^४इयिततं^४अ ।
^१ ह्याणस्पते^२प्रभुर्गा^२त्राणि । ^२ परियायि । ^२ षी^१श्वायिश्चा^२इताः ।
^१ अता^२रत्ततनूर्^२तदामो^२अश्रु । ^२ तेशा^२इर्त्ता । ^१ ऊम्मायि ।
^२ सा^२इत् । ^१ वाहन्तः^२मन्तदा^२रगता^२उ ॥ (१) ताता । ^{१२} पोष्य
^२ विचं^२विततन्दि^२वस्पदे^२र्चन्तो^२अस्यतन्तवो । ^२ वा^२श्यास्था^२इयि
^२ रान् । ^१ अवा^१रन्त्यस्य^२पवितारमा^२श । ^२ वोदा^२२३ यिवाः ।
^१ ऊम्मायि । ^२ पा^२इर्ष्टाम् । ^{१२} आधिरो^२हन्तिता^२इयिजसा^२उ ॥ (२)
^१ सा^२आ । ^{१२} रुरुचदुषसः^२पृश्निरग्रिय^२उच्चा^२मिमेतिभुवनायि ।
^२ षू^२श्वाजा^२इयः । ^{१२} माया^२इविनोममिरे^२अस्यमाय । ^२ याना^२२

^१शर्वा । ^१ऊम्मायि । ^१का३साः । ^१पायितरोगर्भमा^१२६धा

^११११
उ । वा३४पू(३) ॥ १ * ॥ [३] १६

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य चतुर्थस्याध्यायस्य ।

पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे ॥—

प्रथमसक्त प्रगाथे—

^१प्रम^१हिष्ठायगायत^१ऋतावृ^१बृहते^१शुक्लशोचिषे ।

^१उपस्तुतासो^१अग्नये ॥ १ ॥

हे “उपस्तुतासः” उपस्तोतारः । यूयं “मंहिष्ठाय” दातृ-
भाय “ऋतावृ” ऋतवते यज्ञवते वा “बृहते” महते
“शुक्लशोचिषे” दीप्ततेजसे “अग्नये” “प्र गायत” स्तोत्रं
पठत ॥ १ ॥

उ० मा० १५ प्र० १ अ० १ सा० ।

+ ‘यज्ञायज्ञीयम’ग्रहोम साम’—इति वि० ।

‡ ‘इदानीमुक्त्यानि भवन्ति’—इति वि० ।

¶ अ० आ० २ १, २, १ (१ मा० १०४ प०) = अ० वे० ६, ७, १४, १ ।

अथ द्वितीया ।

१ १ २ १ २ ३ २ ३ २ ४ १ २ २ १ २
आवत्सतेमघवावोरवद्यशःसमिद्धोद्युम्नयाहुतः ।

२ १ २ २ १ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
कुविन्नोअस्यसुमतिर्भवीयस्यच्छवाजेभिरागमत् ॥ २० ॥ १७

“मघवा” धनवान् “द्युम्नो” अन्नवान् यशस्वी वा । [तथाच
यास्कः—“द्युम्नं द्योतवे र्यशोवान्नं वा (५, ५)” —इति ।
“समिद्धः” सम्यग् दोषः “आहुतः” आभिमुख्येन हुतः अग्निः
“वोरवत्” पुत्रवत् “यशः” यशस्करम् अन्नम् “आवत्सन्ते” यज-
मानेभ्य आ प्रयच्छति तस्य “अस्य” अग्नेः “भवीयसी” अस्मासु
अतिशयेन भवितुं योग्या “सुमतिः” अनुग्रह-बुद्धिः “नः”
अस्मान् “अच्छ” प्रति “वाजेभिः” अन्नैः सह “कुवित्” बहु-
सलिलम् * [कुविदिति बहु-नाम (निघ० ३, १, १२)]
“आगमत्” आगच्छतु ॥

“भवीयसी”-“नवीयसी”—इति पाठो ॥ २ ॥ १७

५ २ ४ ५ २ ४
॥ प्रमृष्टिष्ठायम् ॥ प्रमृष्टाश्चिष्टायगायता । ५

१ १ २ ४ ५ १ १
तावो २ । वृहतेष्टुक्ताश्चो ३ । चार्चुष्टयिषायि । उपा

* अ० वे० ६, ७, १४, ४ ।

† ‘कुवित्—कदाचन’—इति वि० ।

^{१ २ १ २ ४ २ ५}
 औ३हो । स्तोतासो३आ३ । गा३४५यो ६ द्यायि ॥ (१)

^{५ १ ४ २ ५ १ २ १ २}
 उप३स्त्रतासोअग्रयायि । आव३साता२यि । मघवाना

^{२ ४ ५ २ १ २ १ १ २}
 यिरा३वा३त् । या२३३शाः । समाऔ३हो । धोद्यू३नी

^{४ २ ५ ५ १ ४ ५ २}
 ३या३ । ह३४५तो६द्यायि ॥ (२) समिद्वो३द्यू३नीयाऊताः ।

^{१ १ १ २ ४ ५}
 कुवायि३नो२ । अस्यसुमतातिर्भा३वी३ । या२३४सायि ।

^{२ १ २ २ १ १ १ ४ २ ५}
 अ३क्षाऔ३हो । वाजायि३भी३रा३ । गा३४५मो६द्यायि (३) ॥

॥ ५ * ॥ [१] १७

अथ द्वितीयतृचेः—प्रथमा ।

^{२ ३ १ २ १ १ २ ३ १ २ ३ २}
 तन्तेमदङ्गुणीमसिवृषणम्पृत्तुसासच्चिम् ।

^{३ १ २ १ १ २}
 उ३ल्लोक३ल्लुमद्रिवो३हरि३श्रियम् ॥ १ ॐ ॥

हे “अद्रिवः” वज्रवन् इन्द्र ! “ते” त्वदीयं तं “मदं” सोम-
 पान-जनितं हर्षं “गृणीमसि” गृणीमः प्रशंसामः [‘गृ शब्दे’

० ऊ० गा० १प्र० २अ० ५सा० ।

+ ‘हारिषर्ष’ साम—इति वि० ।

‡ अ० आ० ४, १, ५, ३ (१भा० ७८८ पृ०) = ऊ० वे० ६, १, १७, ४ ।

क्यादिः “प्रादीनां ऋत्विजः (७, ४, ८०)”, “इन्द्रतोमसि (७, १, ४६)” — इति ममद्गगमः] । कोट्यम् ? “वृषणं” वर्षितारं
 . कामानां “पुच्छु” पुतनासु सङ्ग्रामेषु “सासहि” शत्रूणाम् अभि-
 भवितारं “लोककृद्” लोकस्य स्थानस्य कर्तारं हरिश्चिबं
 “हरिभ्याम्” अस्त्राभ्यां “अययणीयं” सेव्यम् [“उ” शब्द एषः
 समुच्चये पादपूरणे वा] ॥

“पुच्छु”-“पृत्सु” — इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ ० ३ २ ३ १ २ ३ १ २
 येनज्योतींष्यायवेमनवेमनवेचविवेदिथ ।

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
 मन्दानोअस्यबर्हिषोविराजसि ॥ २ * ॥

हे इन्द्र ! “येन” आत्मीयेन मदेन “आयवे” और्वशे-
 याय † “मनवे” विवस्वतः पुत्राय च “ज्योतींषि” सूर्यादीनि
 वृत्तादिभिरावृतानि तद्वा रोणे “विवेदिथ” अलम्भय प्रक्षार्पित-
 वान् प्रकाशितवानसीत्यर्थः ; तेन मदेन “मन्दानः” मोदमान-
 स्त्वम् “अस्य बर्हिषः” वृद्धस्य यज्ञस्य “विराजसि” विशेषेण
 दीप्यसे [यद्वा अस्मेति तृतीयार्थे षष्ठी, अनेन बर्हिषा वृद्धेन
 मदेन वृत्तान् विराजसि विशेषेण दीप्यसे ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ १ ३ २ १ १२ २ १ २
तदद्याचित्तउक्थिनोनुष्टुवन्तिपूर्वथा ॥

१ १ २ १ २ २ १ २
वृषपत्नीरयोजयादिवेदिवे ॥ ३ * ॥ १८

हे इन्द्र ! “ते” त्वदीयं “तत्” प्रसिद्धं बलं “अद्याचित्”
“अद्यापि” “पूर्वथा” ॥ पूर्वस्मिन् काले इव “उक्थिनः”
शस्त्रिणः स्तोतारः “अनुष्टुवन्ति” क्रमेण प्रशंसन्ति । स त्वं
“वृषपत्नीः” वृषा वर्षन्तः पर्जन्याः पतिर्यासां तादृशीः “अपः”
“दिवेदिवे” प्रतिदिवसं “जय” § स्वायत्तं कुरु ॥ ३ ॥ १८

१ २ २ १ २ १ २
॥ द्वारिवर्णम् ॥ तन्तेमदा २ गृणीमसायि । चार्षणं
१ २ २ १ २ २ १ १ २
प । लुसासाश्चोश्म् । होवाश्हायि । उलोकाश्चुश् ।
१ २ २ १ २ ५ २ २ १
होवाश्हा । लुम । द्रायिवाश्चोश्वा । द्वरि

* ऋ० वे० ६, १, १८, १ ।

† “निपातस्य च (६, २, १२६)”—इति वि० ।

‡ ‘चित्—इति पदपूरण’—इति वि० ।

॥ ‘दिक्शब्देभ्यः (५, २, २७)’—इति था ।

§ मन्त्रे अयंति दीर्घान्तः, तत्र “इयचोऽतस्त्रिणः (६, २, १२५)”—इति दीर्घः ।

१ ११११ १२ २ २
 श्रियार३४५म् ॥ (१) येनज्योता रयि षिआपवायि । मा

२२ १ २ २ १ १ २ १ २
 नवेच । विवायिदी३था३ । होवा३हायि । मन्दानो ३

२ १ २ २ १ २ ४ २ २
 आ३ । होवा३हा । सयव । हारयिषा२३४औहोवा ।

२ २ १ १ १ १ १ २ १
 विराजसार ३ ४ ५ यि ॥ (२) तदद्याचा रयित्तंउविथनाः ।

२ २ २ १ २ २ १ २ २
 आनुष्टुव । तिपूर्वा३था३ । होवा३हायि । वृषापान्नी३ ।

१ २ १ १ २ ३ ४ २ २ २
 होवा ३ हायि । अपः । जारयार२३४औहोवा । दिवे

२ १ १ १ १
 दिवार२३४५यि(३) ॥ ६ * ॥ [१]

२ २ २ २ १ २ ३ ४ २
 तन्तेमदाऔहोहायि । गार्णायिमार२३४सायि । वृ

१ ४ १ २ २ २ ४ ४ ४ ४
 षाणार२३४हायि । पुत्तूमासहिमुलोका३४ । औहोवा ।

१ २ ४ २ २ ४ २ १ २ १ ० २
 इहार२३४हायि । उज्जवार२३४कृ । नुमद्रि । वोहरिआ

४ ४ ४ ४ १ ३ ४ २
 ३४ । औहोवा । इहार२३४हायि । औहो३१२३४ ।

४ २ ४ २ २ २ २ १ २
 याम् । एहिया६हा ॥ (१) येनज्योता । औहोहायि ।

^३ ^५ ^{२ १} ^५ ^{१ २}
 षीचाया२३४वायि । मनावार३४ईहायि । चविवेदिषम
^{२ १} ^{३ ४ ५} ^{१ २} ^५ ^{२ ३}
 न्दाना३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उज्जवार२३४
^५ ^{२ १ २} ^{१ ० २ १} ^{३ ४ ५} ^{१ २}
 आ । स्यवर्हि । षोविराजा३४ । औहोवा । इहा२३४
^५ ^{३ ४ २} ^{५ २} ^५
 हायि । औहो३१२३४ । सायि । । एहियाईहा ॥ (२)
^२ ^{२ २ २ १ २} ^३ ^५ ^{१ २}
 तदद्याचाऔहोहायि । ताउच्कार२३४ईनाः । अनूष्ट२३
^५ ^{१ २ २} ^{३ ४ ५} ^{१ २} ^५
 ४हा । वन्तिपूर्वथावृषपा३४ । औहोवा । इहा२३४हा
^{२ ३} ^५ ^{२ १ २ २} ^{१ ० २ २} ^{३ ४}
 यि । उज्जवार२३४नीः । अपोज । यादिवेदा३४ । औ
^{४ २ ५} ^{१ २} ^५ ^{३ ४ २} ^{५ २}
 होवा । इहा२३४हायि । औहो३१२३४ । वायि । ए
^५
 हियाईहा(३) ॥ १३ ॥ [२]

^{५ ४} ^२ ^{४ ५ २} ^{५ ५} ^१
 ॥ सौभरम् ॥ तन्ताश्रयिमाइदङ्गुणीमसोवा । वृषणं
^२ ^१ ^० ^१ ^३ ^५ ^१
 पृशुसासारहायिमुलो२३ । हो । कार३४कृ । लुमद्रि
^५ ^२ ^{१ २} ^{५ २} ^{५ ४}
 वः । हराश्रयिहाश्रयि । आरयार३४औहोवा ॥ (१) येना

२ ४ ५ ४ ५ १ २ २ १ ७
इज्योऽतीष्णित्रायवोवा । मनवेचविवेदा रयिथामन्दा

१ २ ५ १ ५ २
२३ । हो । नो२३४आ । स्यवर्हिषः । विरा३हा३यि ।

१ ३ ५ २ ५ ४ ३ ४ ५ ४ ५
जा२सा२३४औहोवा ॥२) तदा३द्या३चित्तउक्थिनोवा ।

१ २ १ ७ १ ३ ५ १
अनुष्टुवन्तिपूर्वा रथावृषार३ । हो । पार३४त्नीः । अ

२ २ ५ २ १ ३ ५ ७ १
पोजया । दिवे३हा३यि । दारयिवा२३४औहोवा । ऊ

१ १ १ १

२३४५(३) ॥ १८ ॥ १८

अथ तृतीयतृचे ।—प्रथमा ।

३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ ४
शुधीहवन्तिरश्वाइन्द्रयस्त्वामपर्यति ।

१ १ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
सुवीर्यस्यगौमतोरायस्पृद्धिमहा३मि ॥ १३ ॥

ह इन्द्र' यः “त्वा” त्वां “सपर्यति” । मपरशब्दः कण्ठादिः ॥
हविर्भि पश्चिचरति । तादृशस्य “तिरश्वाः”—एतन्नाम-
कस्य ऋषेर्मम “हव” स्तुतिभिस्त्वदिषयमाह्वानं “शुधि” शृणु ।

• उ० गा० १८ प्र० १ अ० १८ म० ।

† “तिरश्वा तृतीयमुक्थान—इति वि ।

‡ अ० आ० ४, २, १, ४ (७०७ प्र०) = अ० वे० ६, ६, १०, ५ ।

॥ अत “कण्ठादिभ्यो यक (१, १, २७)”—इति यकि रूपमिति भाव ।

श्रुत्वा च हे इन्द्र ! त्वं “सुवीर्यस्य” शोभन-वीर्योपेतस्य [यद्वा,
वीरेषु च भवं वीर्यं, सुपुत्रवतः] “गोमतः” गवादि-पशुमतः
“रायः” धनस्य दानेन अस्मान् “पूर्द्धिं” पूरय । एतत्त्वामर्थं
कृतइत्यत आह—त्वं “महान्” गुणाधिकः श्रेष्ठश्च “असि”
भवसि खलु ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

यस्तद्वन्द्वनवीयसौष्ठिरम्वन्द्वमजीजनत् ।

३ १२ ३१ २४ २ ४ १२३ १९
चिकित्स्मिनसन्धियम्प्रत्नामृतस्यपिषुषीम् ॥ २ * ॥

हे “इन्द्र !” “यः” यजमानः “नवोयसी” नवतरां च पुनःपुनः कियमाणतया “मन्द्रां” मदकरीं “गिरं” स्तुति-
सर्चनां वाचं “ते” त्वदर्थम् “अजीजनत्” उदपौपदत् अकार्षी-
दित्यर्थः । तस्मै “स्तोत्रे” त्वं “प्रत्नां” पुरातनीम् ः “ऋतस्य”
सत्यस्य सखन्धि [यद्वा तृतीयार्थे षष्ठी (३, ३, ६३)]
सत्येन “पिप्युषी” प्रवृद्धां [“सिलङ्गजोष (६, १, २८) ”—इति
प्रायतेः षौ-भावः] तादृशः “चिकित्वत् मनसं” [‘कित ज्ञाने’
कसौ रूपम्, आकारस्येकारश्चान्दसः] विकित्वांसि ज्ञानानि

* अष्ट. वे. ६, ६, २०, ६ ।

+ 'नवौचसीं—नवतरां ऋदुपदवर्णस्त्रोदाहरणयुक्ताम्'—इति वि० ।

‡ 'ऋग्यजुःसामलक्षणां'—इति वि० ।

॥ 'कृतस्य पियुषी—कृतो यज्ञः अथवा कृतमन्नम् अथवा कृतः प्रजापतिः अथवा कृतं सत्यं परं ब्रह्म, तस्य पियुषी योषणसमर्थाम्'—इति वि. ।

सर्वेषां हृदयानि वयेति अभयङ्गियमाणं यत्तव रक्षणं तत् सर्वेषां
हृदयं प्रज्ञापयतीति । ततः अतीन्द्रियार्थदर्शिकं “धिय”
ः त्वदीयं रक्षणाख्यं कर्म तस्मै कुरु ॥

“यस्तइन्द्र”-“इन्द्रयस्ते”—इति व्यत्ययेन पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

११ ३१८ २१२३ १ २ ३२
तमुष्टवामयङ्गिरइन्द्रमुक्थगानिवावृधुः ।

२१२ ३१ ३ १२
पुरुषस्यपौःस्यासिषासन्तोवनामहे ॥ ३ * ॥ १८

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः ॥

ऋषयः “तम्” परस्परमाहुतं पूर्वोक्तलक्षणम् “उ”—इत्यव-
धारणे तमेव “इन्द्रम्” “स्त्वामः” स्तुतिभिः स्तुमः “यम्”
इन्द्रं “गिरः” अस्माकं स्तुतयः “उक्थ्यानि” शस्त्राणि च
“वावृधुः” प्रावर्धयत् तं स्तुमः ; ततो वयम् “अस्य” इन्द्रस्य
“पुरुषि” बह्वनि “पौस्याणि” वीर्याणि “सिषासन्तः” [‘षथ
सम्भक्तौ’ सनीडभावपक्षे आत्वे कृते रूपं. “सनीतेरनः (८, १,
१०८)”—इति सांज्ञैतिकं षत्वम्] तानि वीर्याणि सम्भक्तुमिच्छन्तः
सन्तो “वनामहे” तमिन्द्रं स्तुतिभिः सम्भजामहे ॥ ३ ॥

५ २ १ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १
॥ तैरश्चम् ॥ शुधीहाश्वन्तिरश्चियाः । इन्द्रायस्त्वा ।

२ २ ० १ ५ २ ३ १ ४ ५ १
सपर्य्यता२३४यि । सुवी । रिया । स्या२३४गो । मा

१ २ २ ४
ता२ः । रायास्पू३र्द्धि३ । हा३हायि । महापु३चसी ॥ (१)

५ २ ४ ५ ४ ५ ० १ २ १ २ ३ २
यस्तश्चा३यिन्द्रनवीयसायिम् । गिराम्मन्द्राम् । अजी

२ १ ५ ३ २ ४ ५ १
जनार२३४त् । चिकि । त्विन्मा । नार२३४साम् । धाया

१ २ २ ४
२म् । प्रत्नामात्ता३ । हा३हा । सयपा३५यिष्पुषीम् ॥ (२)

५ २ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ २ २ १
तमुंष्टा३वामयङ्गिराः । इन्द्रामुक्था । निवावृधू२३४ः ।

५ २ ३ २ ४ ५ १ १ २
पुह । णिया । स्या२३४पौ । साया २ । सिषासान्ता३ः ।

२ २ ४ ४
हा३हायि । वनापुमहायि । द्योपू३ । डा३ ॥ ७ * ॥ [१]

१ २ २ २ १ २ ४
॥ वारवन्तीयम् ॥ शुधीहवाऔहोहायि । ताईरश्चार३

५ २ ४ १ ५ १ २ २ २
४याः । इन्द्रयस्त्वासपर्य्यतो२३४हायि । सुवीर्य्यस्यगो

मा३४ । औहोवा । इहार्३४हायि । उज्ज्वार३४ताः ।

रायस्पू । धायिमहा०आ३४ । औहोवा । इहार्३४

हायि । औहो३१२३४ । सायि । एहियाईहा ॥ (१) य

स्तइन्द्राऔहोहायि । नार्वाया२३४सायिम् । गिरम्

न्द्रामजीजानो२३४हायि । चिकित्विन्नममन्धा३४ । औ

होवा । इहार्३४हायि । उज्ज्वार३४याम् । प्रत्नाम् ।

तास्यपिप्यू३४ । औहोवा । इहार्३४हायि । औहो

३१२३४ । षीम् । एहियाईहा ॥ (२) तमुष्टवाऔहोहा

यि । मायङ्गा२३४यिराः । इन्द्रमुक्यानिवावाहो२ ३४

हायि । पुरुण्यस्यपौसा३४ । औहोवा । इहार्३४

३४हायि उज्ज्वार३४या । सिषासु । तोवनामा३४ । औ

होवा । इ॒चा॒र॒३४॒चा॒यि । औ॒हो॒३१२३४ । हा॒यि । ३४
 ह्या॒इहा । हो॒पुई । डा(३) ॥ १४ * ॥ [२] १८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य चतुर्थाध्यायस्य

षष्ठः खण्डः ॥ ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्ह निवारयन् ।

पुमर्थास्तुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्तक-

श्रीवीर-वृक्ष-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-

चार्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-

प्रकाशे उत्तराग्रन्ये चतुर्थोऽध्यायः ॥ ६ ॥

* क० गा० १२प्र० १ अ० १४ सू० १ ।

† 'तृतीयमहः समाप्तः' इति वि० ।

‡ द्वितीयस्य प्रपाठकः समाप्तः—इति वि० मूल-पदकारादि-संस्कृतस्येति-मन् ।

अस्य निश्चितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।

निर्भमे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थं-महेश्वरम् ॥ ५ ॥

॥ अथ पञ्चमाध्यायः आरभ्यते* ॥

तव,

प्रथमे खण्डे प्रतआश्विनीरिति† त्वं प्रथमं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा—

२३ १ २ ४ १०
प्रतआश्विनीःपवमानधेनवो

३ १ २ ३ १ २ ३ १ १
दिव्याअष्टग्रन्पयसाधरीमणि ।

१२ २२ १ १ २ ३
प्रान्तरिक्षान्स्थाविरीक्तेअष्टक्षत

१ २ ३ १ २ ४ १ २
येत्वामृजन्त्युषिषाणवेधेसः ॥ १ ‡ ॥

हे “पवमान” सोम ! “ते” तव “आश्विनोः” व्याप्ताः
[‘अशू व्याप्तौ (स्वा० आ०)’ तस्मादौणादिकां विनिः, नतोऽशू,
व्यत्ययेनाद्युदात्तः] “धेनवः” प्रोणयित्राः “दिव्याः” दिवि भवाः

● ‘अथ चतुर्थकादरारभ्यते द्वितीयखण्डः । प्रथमखण्डः प्रथमखण्डः ।
अथोत्तरखण्डं चिन्तयन्ति जगत्प्रतिपदः, जगत्तीक्ष्णानि विदुः, विदुः
मा प्रकाशः—इति वि० ।

† “एषा चतुर्थका प्रतिपत्”—इति वि० ।

‡ ख० वे० ७, २, ११, ४ ।

दिवः पतन्वो धाराः “पयसा” युक्ताः * “धरीमणि” धारके
 द्रोणकलशे† “प्र असृचन्” गच्छन्ति “ये” “वेधसः” विधातारः
 ऋत्विजः हे सोम ! “ऋषिषाण” ऋषिभिः शम्भक्तत्वात् “त्वा”
 त्वाम् “सृजन्ति” अभिषण्वन्ति, “ते” वेधसः “स्याविरौः”
 स्याविरा धारा‡ “अन्तरिक्षात्” सकाशात् “प्र असृक्षत” पात्रं
 प्रति सृजन्ति ॥

“धेनवे”—“धोजुवो”—इति पाठौ, “प्रान्तरिक्षात्स्यावि-
 रीस्तेअसृक्षत”—“प्रातर्ऋषयः स्याविरौरसृक्षत”—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ १ २ ३ १ २

उभयतःपवमानस्यरश्मयो

३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २

ध्रुवस्यसतःपरियन्तिकेतवः ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३

यदीपवित्रे अधिमृज्यतेहरिः

२ ३ १ २ २ ३ १ २

सत्तानियोनौकलशेषुसीदति ॥ २ ॥

“पवमानस्य” पूवमानस्य “ध्रुवस्य” स्वयमविचलितस्य
 “सतः” विद्यमानस्य सोमस्य “केतवः” प्रज्ञापका रश्मयः “उभ-
 यतः” इतश्चामुतश्च “परि यन्ति” परितो गच्छन्ति अभिषव-

* ‘पयसा—तृतीयैकवचनमिदं प्रथमावउवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् यथांघि’—इति
 वि० ।

† ‘धरीमणि—यज्ञ’—इति वि० ।

‡ ‘स्याविरौः स्थिराः स्थूला वा स्याविरौर्वा गावः रश्मयः’—इति वि० ।

समये एवं भवति । “यदि” यदा “पवित्रे” * दशापवित्रे
 “हरिः” हरितवर्णोऽयं सोमः “अधि मृज्यते” तदानीं “सप्ता”
 सदनशीलोऽयं “योनी”† योनिषु स्थानेषु “कलशेषु” द्रोणकल-
 शादिषु पात्रेषु “निषीदति” निषण्णो भवति ॥

“योनी”—“योना”—इति च पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ १ १
 विश्वाधामानि विश्वचक्षः ऋभ्वसः

३ १ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २
 प्रभोष्टसतः परियन्तिकेतवः ।

३ १ २ ३ १ २ ३
 व्यानशीपवसे सोमधर्मणा

२ ३ १ २ ३ १ २
 पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥ ३ ॥ १

हे “विश्वचक्षः” सर्वस्य द्रष्टा ! सोम ! “प्रभोः” परि-
 वृढस्य “सतः” “ते” तव “ऋभ्वसः” “[ऋभ्वा]—इति मह-
 त्नामना महान्तः “केतवः” रश्मयः “विश्वानि” विश्वानि सर्वाणि

* ‘पवित्रे’ अधि—सप्तव्येकवचनमिदं पञ्चम्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, पवित्रा-
 दधि—इति वि० ।

† ‘जितरां योनिर्नियोनिः’ अथवा नौचैः स्थिता पवित्रस्य योनिर्नियोनिः,
 तन्निन् नियोनौ—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ३, १९, ४ ।

॥ सायणमतेऽहं पदं निषण्णो महत्नामसु (३, १) पाठभेदेन पठ्यते । विवरण-
 कारणं ‘ऋभ्वसः—प्रभुत्वस्य’—इति व्याचष्टे ।

“धामानि” तेजः-स्थानानि देव-शरीराणि* “परियन्ति” परितो गच्छन्ति प्रकाशयन्तीत्यर्थः । हे “सोम !” “व्यानशी” व्यापन-शीलस्त्व “धर्मणा” धारकेण रसनिष्पन्नेन “पवसे” पूयसे । किञ्च “विश्वस्य भुवनस्य” “पतिः” स्वामी त्वं “राजसि” ईश्वरो भवसि† ॥

“प्रभोष्टेसतःपरियन्ति”-“प्रभोस्तेसतःपरियन्ति”—इति प्राठौ, “व्यानशी”-“व्यानशि”—इति, “धर्मणा”-“धर्मभिः”—इति च ॥ ३ ॥ १

॥ लौशाद्यम् ॥ प्रतच्चाश्वि । नीःपवमा२३ । ना३धे
नवः । दिव्याअष्ट । ग्रन्पयसा२३ । धा३रीमणि । प्रा
न्तरिक्षात् । स्थाविरीस्ते २३ । आ३ष्टक्षत । येत्वाम्
जा । ति३ष्टषिषा२३ । णवा३यिधा३सा३पु३ः ॥ (१) उभ
यतः । पवमाना२३ । स्था३रश्मयः । ध्रू३वस्यस । तः
परिया२३ । ती३केतवः । यदी३पवि । त्रे३अधिमा२३ ।

* ‘विन्वा धामानि—विश्वानि स्थानानि जन्मानि नामानि वा’—इति वि० ।

† ‘राजसि—दीप्यसे शोभसे वा’—इति वि० ।

४ २८ ३५ २ २८ ३ ५ १८ १
 न्याइतेहरिः । सत्तानियो । नौकलशार्हय । पुसाइ

३ २८ ३८ ५ १
 यिदापुताइपुईयि ॥ (२) विश्वाधामा । निविश्वचा २३ ।

४ १ ३ ५ ३ २८ ३८ ५ १ ४ २८ ३ ५
 शाइच्छभवसः । प्रभोष्टेस । तःपरियारइ । तीइकेनवः ।

३ २८ ३ ५ १ ८ ४ २ ५ ५ ३ १ ३ ५
 वियानशौ । पवसेसोइइ । माइधर्मणा । पतिर्विश्वा ।

१ २ ४
 सभुवनाइइ । स्यराइजापुसाइपुईयि (३) ॥ २ * ॥ [१].

अथ द्वितीयल्ले—प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ २ २ २ २ २ २
 पवमानोअजीजनद्विश्चिचन्नतन्यतुम् ।

१ २ ३ २ २ २
 ज्योतिर्विश्वानरं बृहत् ॥ १ * ॥

“पवमानः” पूयमानः सोमः “बृहत्” महत् “विश्वानरं”
 वैश्वानराख्यं “ज्योतिः” तेजः “दिवः” द्युलोकस्य “चिच”
 विचित्रं “तन्यतुं न” अग्रनिमिव “अजीजनत्” अजनयत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

११ ३१३ १ १ ३ ३ २
पवमानरसस्तवमदोराजन्नदुच्छुनः ।

२३ २
विवारमव्यमर्षति ॥ २ * ॥

हे “राजन्” दौष्यमान ! “पवमान” पूयमान ! सोम !
“तव” त्वदौयः “मदः” मदकरः “अदुच्छुनः”† रक्षोवर्जितः
“रसः” “अव्यम्” अविमयं “वारं”‡ वालं दशार्पवित्रम् “वि
अर्षति” अभिगच्छति ॥

∴ “पवमानरसस्तव”-“पवमानस्यतेरसः”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१२ ३२ ३ १ ३ १ २ ३ २
पवमानस्यतेरसोदक्षोविराजतिद्युमान् ।

१ ३ २ ३ २ २ ३ २
ज्योतिर्विश्वस्पर्द्धशे ॥ ३ ॥ २

हे सोम ! “पवमानस्य” “ते” त्वदौयः “रसः” “दक्षः” §
“द्युमान्” दौष्यमान् ॥ “विराजति” प्रकाशते** । न केवलं

* ऋ० वे० ७, १, २१, २ ।

† ‘दुच्छुनः’ दुष्टजनः, न दुच्छुनः अदुच्छुनः—इति वि० ।

‡ ‘विवारं’—वि-अकारिच्चे य, वारं=याक्मम्—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, २१ ३ ।

§ ‘दक्षः’ शौचगामी, अथवा दक्षरक्षणक्रियायाः कर्म—इति वि० ।

॥ ‘द्युमान्’ द्युलोकवान्—इति वि० ।

** ‘विविधं दौष्यते शोभते वा’—इति वि० ।

स्वयमेव प्रकाशते किन्तु “विश्वं” व्याप्तं * “स्वः” सर्वं “ज्योतिः”
तेजः “दृष्टे” द्रष्टुं करोतीति शेषः ॥

“पवमानस्य ते रसः” — “पवमानरसस्तव” — इति पाठौ ॥ ३ ॥ २

॥ संहितम् ॥ पवमानोऽत्र । जारयिजनात् । दि
वारः । चारयित्राम् । नतारन्यातम् । ज्योरशतीः ।
वारयिश्वा । नरारश्म । द्वाउवाश् । वरश्शहात् ॥ (१)
पवमानर । सारस्तवा । मदोर । रारश्जान् । अ
दूरच्छूनाः । वारश्शयिवा । रारमा । व्यमाश्श ।
द्वाउवाश् । पारश्शती ॥ (२) पवमानस्य । तारयिरसाः ।
दक्षोर । वारयिरा । जतारयिद्यूमान् । ज्योरश्श-
तीः । वारयिश्वाम् । सुवारश्श । द्वाउवाश् । दूरश्श
शे (३) ॥ १२ ॥ [१]

* ‘विश्वं’ सर्वम् — इति वि० ।

† ‘सर्गशे’ — सर्गलोकस्य गमनाय ; न केवलं सर्गलोकस्य, सर्वस्य जगतो दर्शना-
येत्यर्थः — इति वि० ।

॥ जराबोधीयम् ॥ ^{२ २ १ २} पवमानोवा । ^{१ २ १ १} आजीजनात् ।

^{२ २} दिवाश्चा^१रश्चि^२चाम् । नतन्यातूम् । ^२ ज्योतायि^१र्वा^२श्चि

^{४५}श्चा^५रश्ना । रम् । ^{३ २} बृहो^२श्च^१४५ई । डा ॥ (१) ^{२ २ १ २} पवमानोवा ।

^{१ २ १} रासस्तवा । ^{१ १} मदो^२रा^२श्चान् । ^१ अदु^१च्छूनाः । ^१ विवारा

^{४५}श्मा^५रश्च^{३ २}व्याम् । अ । ^{२ २ १} षतो^२श्च^१४५ई । डा ॥ (२) ^{२ २ १} पवमानो

^१ वा । ^{१ २ १ १} स्याते^{२ १}रसाः । ^२ दक्षो^१वा^१रश्चिरा । ^१ जति^१द्युमान् ।

^२ ज्योतायि^१र्वा^{४५}श्चि^५श्चा^{३ २}रश्च^{३ २}सूऽ । वः । ^{३ २} दृशो^{३ २}श्च^{३ २}४५ई ।

डा (३) ॥ ८ * ॥ [२]

॥ औपगवोत्तरम् ॥ ^{५ २ ४२ ५२} पवमानो^१ञ्जजीजनात् । दिवश्चि

^{२२} चन्नतन्यत्तम् । ^१ ज्योतौ^२ । ^१ क्षौ^२ । ^१ ऊवा^२श्चि ।

^१ वा^५श्चि^{२ १ २}श्चा । ^{५ १ ४ ५} नरम्बृ^{१ २}हात् ॥ (१) ^{१ २} पवमानो^{१ २}नरसस्तवा । ^{१ २} मदो

^२ राजन्^२दुच्छूनाः । ^१ विवौ^१ । ^१ क्षौ^१ । ^१ ऊवा^१श्चि । रा

३४मा । व्यमर्षातायि ॥ (२) पवमाश्नस्यतेरसाः । दक्षो

विराजतिद्युमान् । ज्योतीर । ह्यीर । ऊवा२३यि ।

वा३४यिश्चाम् । सुवर्दुशायि । ऐ । हा२५२३ । हिमा

३४चौहोवा । ए३ । उपा३१२३४५ (३) ॥ ८ ॥ [३] २

अथ प्रयहावइति षडृचं तृतीयं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा ।

प्रयद्गावोनभूर्णयस्त्वेषाअयासोअक्रतुः ।

१२३२३ ४१२
घ्नन्तःकृष्णामपत्वचम् ॥ १ ॥

“यत्” ये अभिषुताः सोमाः “गावः न” उदकानीव [तानि यथा तूर्णमधः पतन्ति तद्वत् ; गाव एव वीपमीयन्ते, ता यथा स्वं गोष्ठं प्रत्याशु गच्छन्ति तद्वत् ; अथवा गावः स्तुतिवचनाः यथा स्तुत्यं प्रति क्षिप्रं प्राप्नुवन्ति तद्वत्], “भूर्णयः” क्षिप्राः, “त्वेषाः” दौसाः “अयासः” अयाः गमनशीलाः, “कृष्ण” कृष्णवर्णम् “अपत्वचम्” अपकृष्टां त्वचं “घ्नन्तः” विनाशयन्तः, ईदृग्भूता ये सोमाः “प्र अक्रतुः” तां स्तुम इति शेषः ॥

“यत्”-“ये”—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १२ ३२ ३१ २३ क २२
सुवितस्त्ववनामहेति सेतुन्दुराय्यम् ।

३ २ ३१ २ ३२

साह्यामदस्युमव्रतम् ॥ २ * ॥

“सुवितस्य”† शोभनं प्राप्तस्य सोमस्य सम्बन्धिनम् “अति-
सेतुम्”‡ रक्षोविषयं बन्धनं “वनामहे”॥ सोमकर्तृकं रक्षसां
बन्धनं स्तुमदत्यर्थः । कीदृशम् ? “दुराय्यम्” दुष्प्रापणीयम् §
किञ्च “अव्रतम्” यज्ञादि-कर्म-रहितं “दस्यु”॥ यत्र “साह्याम”
अभिभवेम ॥

“दुराय्यं”-“दुराव्यं”, “साह्याम”-“साह्यांस”-इति पाठाः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ २ ३१ २ ३१ २ २ ३ १ २
ष्टएवेवृष्टेरिवस्वनः पवमानस्य शुश्रिणः ।

१ २ ३१ २ २ २

चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ३ * ॥

“शृणवे” श्रूयते । कः ? “स्वनः” । किमिव ? “वृष्टेः”

* ऋ० वे० ६, ८, ११, २ । “मनामहे”-इति च तत्र कचित् पाठः ।

† ‘सुवितस्य-अभिषुतस्य’-इति वि० ।

‡ ‘अतिसेतुं-मर्यादां त्यक्त्वा अतिशङ्खानतया’-इति वि० ।

॥ ‘वन्तिः स्तुतिकर्मा, स्तुतिं कुर्मः’-इति वि० ।

§ ‘दुराय्यं’-दुर्वार्थम्, अथवा दुराव्यं दुस्साध्यम्-इति वि० ।

॥ ‘व्रत-वर्जितम्’-इति वि० ।

** ऋ० वे० ६, ८, ११, ३ ।

वर्षणस्य स्वनइव [तस्य यथा महान् स्वनः श्रूयते तद्वत् प्रभूत-
रस-पात-समये श्रूयते] । कस्य स्वन इति ? तत्राह—“पव-
मानस्य” पूयमानस्य “शुष्णिगः” बलवतः तस्यैव “विद्युतः”
दीप्तयः* “दिवि” अन्तरिक्षे चरन्ति ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

१ २ ३ २३ ३ १ २ ३ १ २
आपवस्महीमिषङ्गोमदिन्दोहिरण्यवत् ।

अश्ववत्सोमंवीरवत् ॥ ४ ॥

हे “इन्दो !” “सोम !” अभिषुतः त्वं “महीम् इषम्” मह-
दन्नम् “आ पवस्व” ‡ । कीदृशम् अन्नम् ? “गोमद्” गोभि-
र्युक्तम्, “हिरण्यवत्” सुवर्णोपेतम्, “अश्ववत्” अश्वोपेतम्,
“वीरवत्” पुत्रयुक्तम् ॥

“अश्ववत्सोमवीरवत्”-“अश्ववद्वाजवत्सतः”—इति पाठो॥४॥

* ‘विद्युतः—विद्युत्संयुक्तस्य’—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, ८, ३१. ४ ।

‡ ‘आपवस्व महीमिषम्’—आभिषुत्येन पवस्व महीमिषम् महतीमिषं बृहिसन्नं
वा—इति वि० ।

अथ पञ्चमी ।

१२ ३ २ ३ १ २२
पवस्वविश्वचर्षणामहोरोदसीपृण ।

३ २ ३ ३ २ ३ १ २
उषाःसूर्योनरश्मिभिः ॥ ५ * ॥

हे “विश्वचर्षणे” विश्वस्य द्रष्टः सोम ! स त्वं “पवस्व”
चर रसम् । तथा कृत्वा तेन रसेन “महो”† “रोदसी”
द्यावापृथिव्यौ “आ पृण” आ पूरय । “उषाः” उषसः [एकदेश-
वाचिनोषः-शब्देनाहान्युपलक्ष्यन्ते तत्प्राधान्यात्] अहानि
“रश्मिभिः” “सूर्योन” सूर्यइव ॥

“पवस्वविश्वचर्षणे”-“पवस्वविश्वचर्षण”-इति पाठौ ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी ।

१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
परिःशर्मयन्त्याधारयासोमविश्वतः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
सरारसेवविष्टपम् ॥ ६ ‡ ॥ ३

हे सोम ! “नः” अस्मभ्यं “शर्मयन्त्या” सुखयन्त्या धारयाण
“विश्वतः” सर्वतः “परि सरा” परिसर परिचर । “रसेव”

* ऋ० वे० ६, ८, ३१, ५ ।

† ‘महो—महती’—इति वि० महतीइत्यर्थः ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ३१, ६ ।

¶ ‘शर्मयन्त्या—शर्म-सुखं, तदुभावयन्त्या धारया’—इति वि० ।

रखेनेव “विष्टपं” भूलोकं* [यदा रसा नदी स्थानं सा
प्रवणरूपमिव] ॥

“परिनः”-“परिणः”—इति पाठो ॥ ६ ॥ ३

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य पञ्चमाध्यायस्य

प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय खण्डे —

आशुरर्षेति षड्चं-प्रथमं सूक्तम्, तत्र प्रथमा ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २
आशुरर्षवृहन्मतेपरिप्रियेणधाम्ना ।

१ २ २ २ ३ २ १ २

यत्रदेवाइतिब्रवन् ॥ १ ॥ ॥

हे “वृहन्मते” ‡ महामते सोम ! “प्रियेण” देवानां
प्रियतमेन “धाम्ना” शरीरेण ¶ “धारया” “आशुः” शौघः सन्

* ‘विष्टपं स्वर्गं लोकम्,—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, ८, २८, १। “ब्रुवन्”—इति सु०पाठः, ऋग्वेदे च कश्चित् पाठः

‡ ‘वृहन्मते—वृष्टद्यूते’—इति वि० ।

¶ ‘परिप्रियेण—परि समन्तात् प्रियेण धाम्ना प्रियेण स्थानेन’—इति वि० ।

“पर्यव” परिगच्छ, “यत्” “देवाः” इन्द्रादयः वर्त्तन्ते—“इति”
“ब्रवन्” उच्चारयन्, तं देशं गच्छामीति ब्रुवन्नित्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १२ २२ ३ १ २ ३ २ १ २
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतञ्जनाययातयन्निषः ।

३ २ ३ १ २२
वृष्टिन्दिवःपरिस्त्रव ॥ २ * ॥

* “अनिष्कृतम्” असंस्कृतम् ॥ यजमानं स्थानं वा “परि-
ष्कृण्वन्” संस्कुर्वन् “जनाय” “इषः” अन्नानि “यातयन्”
निर्गमयन् “दिवः” अन्तरिक्षात् “वृष्टि” ॥ “परि स्त्रव” ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ २ ७ ३ १ २ २२ ३ १ ५ ७ २ १ २
अयस्योदिवस्परिरघुयामापवित्रया ।

१ २ ३ १ २२
सिन्धोरुहर्माव्यक्षरत् ॥ ३ § ॥

“सः” “अय” सोमः “पवित्रे आ” सिद्ध्यमानः [—इति

* ऋ० वे० ६, ८, २८, २ ।

† ‘अनिष्कृतम्’—आभिमुख्येन निष्कृतम्—इति वि० । इह स्वेतश्चिन्त्यमय
अर्थे आभिमुख्यं कृतो लभ्यतइति ।

‡ ‘यातयन्’—प्रापयन्—इति वि० ।

॥ सद्रित-मूले तु “वृष्टिम्”—इति पाठः ऋग्निदिपि तथा ।

§ ऋ० वे० ६, ८, २८, ३ ।

शेषः *] “सिन्धोः” जलस्य † “कर्मा” ‡ कर्मौ सङ्गते
“वि अक्षरन्” विविधं क्षरति । स इत्युक्तम्, कः ? इत्याह—
“यः” “दिवस्परि” व्युत्थोक्तस्योपरि “रघुयामा” लघुगमनः ॥
देवप्राप्तौ, सोयमिति सम्बन्धः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २
सुतएतिपवित्रआत्विषिन्दधानओजसा ।

३ १ २ ३ १ २
विचक्षाणोविरोचयन् ॥ ४ § ॥

“सुतः” अभिषुतः सन् “पवित्रे” दशापवित्रे [“आ”
—इत्यनर्थकः] “ओजसा” बलेन “शीघ्रम्” “एति” गच्छति ।
कौटुशः सन् ? “त्विषिं” दीप्तिं “दधानः” धारयन्, “विच-
क्षाणः” सर्वं पश्यन्, ॥ “विरोचयन्” दीपयंश्च ; किम् ? देवा-
निति शेषः ॥ ४ ॥

* ‘पवित्रे’—अधिकरण-सम्बन्धवा ; पवित्रे अधिकरणभूते । आ-इत्ययमुपसर्गः
अक्षरदित्याख्यातेन सम्बन्धयितव्यः ; आ अक्षरत्—इति वि० ।

† ‘सिन्धोः’—समुद्रस्य नदीनाम्नोदकस्य वा—इति वि० ।

‡ ‘कर्मयः सङ्गताः’—इति वि० । कर्मा इति तूर्णिशब्दस्य सुपां सुसुगिति
सुपो ङादेशे ङि-लोपे रूपम् ।

॥ ‘रघुशब्दो लघुवाची’—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ६, ८, ९६, ४ ।

॥ ‘विचक्षाणः’—विविधं पश्यमानः अथ वा विश्वं जगत् पश्यमानः—
इति वि० ।

अथ पञ्चमी ।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आविवासन्परावतोअथोअर्वावतःसुतः ।

३ २ ३ १ २
इन्द्रायसिच्यतेमधु ॥ ५ * ॥

“सुतः”. अभिषुतः सोमः “परावतः” [दूरनामैतत् १]
दूरस्थान् “अथो” ‡ अपिच “अर्वावतः” अन्तिकस्थांश्च ॥
देवज्ञं “आ विवासन्” रसेन परिरक्षणायेत्यर्थः । “इन्द्राय”
इन्द्रार्थम् “मधु” मधुसदृशः सोमः “सिच्यते” ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समीचीनाअनूषतहरिंहिन्वन्त्यद्रिभिः ।

३ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रायपीतये ॥ ६ § ॥ ४

“समीचीनाः” सम्यगञ्चिताः सङ्गताः स्तोतारः ॥ “अनू-
षत” स्तुवन्ति किञ्च सोमं “हरिं” हरितवर्णं “हिन्वन्ति”

* ऋ० वे० ६, ८, २८, ५ ।

† “परावतः”—इति निघण्टौ तृतीय-षड्विंशे दूरनामसु पञ्चमत्वेन पाठात् ।

‡ “अथ उ”—इति वि० ।

॥ अन्तिक-नामसु “अर्वाके”—इति पाठात् (निघ० २, १६, ८) ।

§ ऋ० वे० ६, ८, २८, ६ । “योनावृतस्यसोदत”—इति तत्र तृतीयः पादः ।

॥ ‘समीचीनाः—आसङ्गवर्तिनः’—इति वि० ।

प्रेरयन्ति गमयन्ति “अद्रिभिः” यावभिः । किमर्थं हिन्वन्ति ?
“इन्दु” सोमम् “इन्द्राय” इन्द्रस्य “पीतये” पानाय ॥ ६ ॥ ४

अथ वृत्तात्मके द्वितीयसूक्ते—प्रथमा ।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २
हिन्वन्तिसूरमुस्यः स्वसारोजामयस्पतिम् ।

३ १ २ १ २ ३ १ २
महामिन्दुमहोयुवः ॥ १ * ॥

“उस्यः” कर्मार्थं निवसन्त्यः सर्वत्र गन्त्वा इत्यर्थः,
“जामयः” एकस्याः पाणेः उत्पन्नत्वात् परस्परं बन्धुभूताः,
“स्वसारः” [अङ्गुलि-नामैतत् (निघ० २, ५, १३) । सुष्ठु
कर्मसु प्रेर्यन्ते ऋत्विग्भिरिति स्वसारः] अङ्गुलयः, “महो-
युवः” सोमाभिषवं कामयमानाः सन्तः “सूर” सुवीर्यं [सोमे
पीते वीर्यं भवतीति ; शोभनं वीर्यं कारणं वा, सर्वेषां कर्मणि
प्रेरकं वा, तादृशम्] “पतिम्” सर्वस्य स्थावर-जङ्गम-जातस्य
स्वामिनं, यस्माद् देवार्थमिज्यतेऽतएव “महाम्” देवेभ्यो दीय-
मानत्वेन महान्तं महनीयं वा “इन्दुम्” ग्रहेषु स्यन्दमानं सोमं
“हिन्वन्ति” प्रेरयन्ति [“हिवि प्रीति-गत्योः (स्वा० प०) ”—इति
धातोरेतद्वृत्तं स्वादि] † ॥ १ ॥

* ऋ० वे० ७, १, १, १ ।

† हिन्वन्ति सूरम् ऊस्यः = सेवयन्ति सूर्यम् आदित्यरश्मयः । स्वसारः जामयः
पतिम् = स्वसारः भगिन्यः जामयः आदित्यरश्मयः ; यथा परस्परं भगिन्यः एकस्यैव
भर्तुः अहमहमिकया सेवां कुर्वन्ति, तद्वदादित्य-रश्मयः अहमहमिकया आदित्यं सेव-
न्ति । एवं, महामिन्दुमहोयुवः = महिमानमिच्छन्त्यः सोमरश्मयः उदकाणि वा—
इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

१ ९ ३ १ ९ ३ १ ९ १ २ ३ २

पवमानरुचारुचादेवदेवेभ्यःसुतः ।

२ ३ ९ ३ १ २

विश्वावसून्याविश ॥ २ * ॥

हे “पवमान” दशापवित्रेण पूयमान ! [यदा पुनान शुद्ध !]
 सोम ! “रुचारुचा” [“रुच दीप्तौ (स्वा० आ०)] सर्वेण तेजसा
 हे “देव” दीप्यमान ! “देवेभ्यः” देवार्थं “सुतः” अभिषुतः
 त्वं “विश्वा” व्याप्तानि सर्वाणि बहूनि “वसूनि” धनानि “आ
 विश” अस्मात् प्रापय [यदा सर्वाणि “वसूनि” वामस्थानानि
 ग्रहादीनि† “आविश” समन्तात् प्रविश] ॥

“देवेभ्यस्सुतः”—“देवेभ्यस्परि”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ ९ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २

आपवमानसुष्टुतिंवृष्टिन्देवेभ्योदुवः ।

३ १ २ ३ १ २

दूषेपवस्वसंयतम ॥ ३ ‡ ॥ ५

हे “पवमान” पूयमान ! पुनान ! वा सोम ! “सुष्टुतिं” वा

* ऋ० वे० ७, २, १, २ ।

† ग्रह-वमसादीनि यज्ञौघपावाणीति यावत् ।

‡ ऋ० वे० ७, २, १, २ ।

॥ ‘सुष्टु तिं—शोभनां सुतिम् प्रापयमाणां’—इति वि०

शोभनस्तुति-युक्तां “वृष्टि” “देवेभ्यः” देवानां “दुवः”^{*}
[“सुपां सुलुक् (७, १, ३८) ”—इति चतुर्थ्या लुक्] दुवचे
परिचरणाय† “आ पवस्व” आ गमय त्वम् [यथा मदीयया
स्तुत्या वृष्टिर्भवति तथा कुर्वित्यर्थः] किञ्च अस्माकम् “इषे”
अन्वार्थञ्च “संयतं”‡ सम्यगस्मान् सङ्गच्छतीति वृष्टिं कुरु [यदा
“दुवः” परिचर्या मभिलष्य क्रियमाणां “सृष्टि” शोभन-स्तुति-
रूपां वृष्टिं बहुशः स्तुतिमित्यर्थः, एतां देवेभ्यः प्रापय] ॥ ३ ॥ पू

॥ विशोविशीयम् ॥ ^{२ २ २}हिन्वाङ्गम् । ^१ताडयिम् । ^१राड

^{१ २ २}मूखाड्याः । ^{१ २ २}खसारः । ^१जामारड्याः । ^२ऊम्मायि । ^१पा

^२इताडयिम् । ^१मारड्याः । ^{२ ५}हाड्यायि । ^१ओ । ^{३ २ २}ऊवायि । ^१ई

^५रड्यान्टम् । ^१ऊम्मायि । ^{२ २}माड्यौड । ^१यूड्याः । ^{४ २}एडि ।

^५याड्या ॥ (१) ^{२ २ २}पवाङ्गमाड्या । ^२रुड्या । ^{१ २ २}रुड्या । ^{१ २ २}देवदे ।

^१वायिभारड्याः । ^२ऊम्मायि । ^१सूडा ३ । ^{२ २}वारड्यायि

* ‘दुवः—दूरात् घृणोकात्’—इति वि० ।

† ‘दुवस्तुति’—इति परिचरण-कर्मसु पञ्चमं वैषष्ट्यकम् (१, ५) ।

‡ ‘संयतं—सम्यङ् नियतम्’—इति वि० ।

२ ५ १ ३ २ २ ५ १ २
 आहायि । ओ । ऊवायि । वार३४सू । ऊम्मा । नी

२ १ ५ २ २ २ २ २
 ३या३ । वार३४यिशा । एहियाईहा ॥ (२) आपाहम् ।

२ १ २ २ १ १ २ १ २
 वा३मा । ना३सूष्टू३तीम् । वृष्टिन्दे । वायिभार३थाः ।

१ २ २ १ २ ५ १ ३ २
 ऊम्मायि । दू३वा३ः । आ२३४यिषेहायि । ओ । ऊवा

३ ५ १ २ २ १
 यि । पार३४वा । ऊम्मा । स्वा३सा३म् । या २ ३ ४

५ ५ ४
 ताम् । एहियाईहा । हो५ई । डा (३) ॥ १० * ॥ [१]

२ २ २ १ २
 ॥ ऐडाना३मङ्गारम् ॥ औहोयिऊवा३होयि । हि

४ २ २ ५ २ २ २ ४ २ ३ ५ ३
 न्वन्तिसू३रा३मुच्यः । स्वसारोजा३मा३यस्पतिम् । म

२ २ ५ २ २ २ १ २ २
 हामा२३४यिन्दूम् । महीयुवः । इडा२३ ॥ (१) पवमा

४ ३ २ ५ २ ४ ४ ३ ३ ५ २ २ २ ५
 ना३रू३चारुचा । देवदे३वे३भ्यः सुतः । विश्वावा२३४सू ।

२ २ २ १ २ २ ४ २ ३ ५
 नियाविश । इडा२३ ॥ (२) आपवमा३ना३सूष्टुतिम् ।

२ ४ २ २ ५ २ २ २ १ ४ २ २
 वृष्टिन्दे३वे३भ्योदुवः । औहोयिऊवा३होयि । इषायि

३ ५ १ १ २ १ २ ५ ४
पा२३४वा । स्वसंयतम् । इडारश्भा३ । एहीडा । हो

५ई । डा(३) ॥ १० * ॥ [२]५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
द्वितीय खण्डः † ॥ २ ॥

अथ तृतीयखण्डे, ‡ प्रथमतश्चे—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
जनस्यगोपाञ्जनिष्टजागृवि

३ १ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
रग्निःसुदक्षःसुवितायनव्यमे ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
घृतप्रतीकोवृहतादिविस्पृशा

३ १ २ ३ २ ३ १ २
द्युमद्विभातिभरतेभ्यःशुचिः ॥ १ ॥

“जनस्य” § “गोपा” गोपयिता रक्षिता, “जागृविः”

* ऊ० मा० १८प्र० २ख० १०सा० ।

† ‘उक्तम् बहिष्यवमानमेकविंशत्सौमिकम्’—इति वि० ।

‡ ‘इदानीमाज्यानि वक्तव्यानि’—इति वि० ।

॥ ५० वे० ४, १, ३, १=५० वे० १५, २७ ।

§ ‘जनस्य—यजमानस्य’—इति वि० ।

जागरणशीलः सदा प्रबुद्धः, “सुदक्षः” सुबलः सर्वैः साधनीय-
बलः, सः “अग्निः” “नव्यसे” नवतराय “सुविताय”
लोकानां कल्याणाय “अजनिष्ट” जातः । ततः “ष्टत-प्रतीकः”
ष्टतेन प्रज्वलिताङ्गः, बृहता” महता “दिविस्पृशा” द्युलोकं
प्राप्नुवता तेजसा युक्तः, “शुचिः” शुद्धः, एवंविधोऽग्निः “भर-
तेभ्यः” ऋत्विग्भ्यः तत्तदर्थं[†] “द्युमत्” दौमिमत् यथा भवति
तथा “भाति”[‡] प्रकाशते ॥ १ ॥

* “सुविताय—यजमानजनाय अभिषवकर्तृणे—इति वि० ।

† ‘भरताः मनुष्याः ऋत्विजो गृह्यन्ते, तेभ्यः’—इति वि० । “भरताः”—इति
ऋत्विङ्नामसु प्रथमं नैघण्टुकम् (३, १८) ।

‡ नात्र वि-शब्दो व्याख्यातः साधनेन, विवरणकारकत्वाद्—‘वि=विविधम्’—इति ।

॥ अथ महीधरव्याख्या यथा—“योऽग्निर्भरतेभ्यः ऋत्विग्भ्यः सकाशादजनिष्ट
जातः तैर्न्यथितलाभेभ्यो जात इत्युच्यते । भरता इति ऋत्विङ्नामसु पठितम् ।
किमर्थं जातः । नव्यसे नवीयसे नवतराय सुविताय सूताय प्रसूताय कर्मणे यागाय
सूतरिडागम आर्षः अभिनवं नवीयसस्यै ईलोप आर्षः । सोऽग्निर्दिविस्पृशा द्युलोक-
स्पर्शना बृहता आलासमूहेन य सत्कान्तमस्यथा तथा विभाति विविधं दीप्यते ।
कीदृशोऽग्निः ? जनस्य यजमानस्य गोपाः । गोपायति रक्षतीति गोपाः क्षिप्
लोपीयोर्वलि यलोपः । जागृविः जागरणशीलः कर्मणि सावधानः । सुदक्षः
शोभनो दक्ष उत्साहो यस्य अतिक्रमलो वा । ष्टतप्रतीकः ष्टतं प्रतीके मन्त्रे यस्य ।
शुचिः शुद्धः बह्विज इवोपि भक्षयन्नपि उच्छिष्टो न स्यात् शोधकी वा ॥”—इति ।

अथ द्वितीया ।

१ १ १ १ १ ३ १ २ ३ १ २
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहाहित

१ २ ३ १ २ २ २
मन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सजायसे मथ्यमानः सहो मह

२ २ १ २ ३ १ २
त्वामाहुः सहसस्युत्रमङ्गिरः ॥ २ * ॥

हे “अग्ने !” “अङ्गिरसः”†—एतन्नामका ऋषयः “गुहा” गुहायां “हितं” निहितं निगूढं “वनेवने” वृक्षे “शिश्रियाणम्” आश्रितम् “त्वाम्” “मन्वविन्दन्”‡ अलभन्त । “महत्” महता “सहः” सहसा बलेन युक्तः “सः” त्वं “मथ्यमानः” “जायसे” हे “अङ्गिरः”¶ अङ्गिरसां प्रकृतिभूत ! त्वां “सहस-स्युत्रम्” आहुः§ ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ४, १, ३, ६ = य० वे० १५, २८ ।

† ‘अङ्गिरां रसभूताः’—इति वि० ।

‡ ‘मन्वविन्दन्—विदज्ञाने, विदज्ञाने, विदज्ञानायाम्’—इति वि० ।

¶ ‘अङ्गिरा जाठरोऽग्निः’—इति वि० ।

§ अथ महोषस्याख्या यथा—‘हे अग्ने ! अङ्गिरसः अङ्गिरोर्वशीकृत्वा ऋषयस्त्वा मन्वविन्दन् लोभिते अन्विष्य प्राप्नुवित्यर्थः । किमभूत् त्वां ? गुहा गुहायां निगूढे प्रदेशे हितं स्थितमप्यसु प्रविष्टमित्यर्थः । अग्निर्देवेभ्य उदक्तामत्योऽप आविशदित्यादि अन्ते । सुपां सुसुगिति गुहाशब्दात्सप्तमीलोपः । हे अग्ने ! पुनर्महं त्वां वनेवने शिश्रिया नामावनस्थतिषु वित्तमङ्गिरसोऽन्वविन्दन् । नित्यवोपस्योरिति वनेष्वदस्य

अथ तृतीया ।

३१ २ ३ १ २ ३ १ ३ १ २

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहित

३ १ २ १ २ ३ १ २ २

मग्निन्नरस्त्रिषधस्थे समिन्धते ।

१ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३

इन्द्रेण देवैः सरथं सर्वर्हिष

२ ३ १ २ २ ३ १ २ २ ३ १ २

सौदन्निहोता यजथाय सुक्रतुः ॥ ३ * ॥ ई

“नरः” कर्मणां नेतारः ऋत्विजः “यज्ञस्य” यागस्य “केतुं”
प्रज्ञापकं “पुरोहितं” यजमानैः पुरस्कृतम् “इन्द्रेण” “देवैः”
“सरथं” देवानां तेषां मान्यत्वात् समान-रथम् “अग्निं” “त्रिष-
धस्थे”† त्रिस्थाने विहारप्रदेशे “प्रथमं” “समिन्धते” सम्यग्
दीपयन्ति । ततः “सुक्रतुः” शीघ्र-कर्मा “होता” देवाना-
माह्वता “सः” अग्निः “वर्हिषि” बहिर्युक्ते तस्मिन् स्थाने

द्विलम् । अयतेः शानचि वज्रलं वन्दसोति शपः स्रुः द्विलं च । यं त्वाभङ्गिरसो
ऽस्त्रभक्त स त्वं जायसेऽधुनाप्यरणिभ्य उत्पद्यसे । कीदृशः ? महत्पुङ्खः महता वज्रना
सहसा बलेन मय्यमानः । महत्पुङ्खः-शब्दाभ्यां तृतीयालोपः । मय्यमानो जायस
इत्यर्थः । हे अङ्गिरः अग्ने ! अतएव सहसो बलस्य पुत्रं त्वामाहुः बहन्ति मुनयः
बलेन सन्मानाज्जायमानत्वाद्बलपुत्रं वदन्तीत्यर्थः ॥ ”—इति ।

* ऋ० वे० ४, १, २, २ ।

† ‘त्रिषधस्थे’—सधस्थं स्थानमनुच्यते । तृभिः स्थानैः समिन्धते—गार्हपत्य-
दक्षिणामग्न्याहवनीय-प्रभृतिभिः स्थानैः समिन्धते—इति वि० ।

“यजथाय” यज्ञाय * “निषीदन्” न्यसीदत् प्रतिष्ठितो भवदिति
यावत् ॥

“समिन्धते”—“समोधिरे”—इति पाठो ॥ ३ ॥ ६

॥ कावम् ॥ ^{२ १}जनोवा । ^{२ २}स्यगोपाञ्जनायि । ^{२ २ १}ष्टजागृ
^१वारयिः । ^{१ १}अग्निःसुदत्तःसुविता । ^१यनव्यासारयि । ^१घृ
^{२ २}तप्रतीकोष्ठहता । ^{१ १}दिविस्पृशार३ । ^{१ २ ४ ५ १}द्य्माश्वायिभा । ^१ति
^१भरातार३यि । ^{१ २ ४}भायाःःशृष्ट्वाद्वाद्वायिः ॥(१) ^{१ १}तुवोवा ।
^२अग्ने अङ्गिरसो । ^{१ २ १}गद्वाहायिता२म् । ^१अन्वविन्दज्जिश्चि
^{२ २ १}णाम् । ^{१ २ २}वनेवाना२यि । ^२सजायसेमथ्यमानाः । ^{-१}स
^{२ १}होमाचार३त् । ^{१ २ ४ ५}त्ववाश्माहः । ^{१ १}सहसास्यूर३त् । ^{१ २}चामा
^४श्गायिराद्वाद्वायिः ॥(२) ^{२ १}यज्ञोवा । ^२स्यकेतुम्प्रथमाम् ।
^{२ २ १}पुरोहायिता२म् । ^{२ २ १}पुरोहायिता२म् । ^१अग्निन्नरस्त्रिष
^{१ १}धस्थायि । ^{१ २ २ २}समिन्धाता२यि । ^{१ २ २ २}इन्द्रेणदेवैःसरथाम् ।

२ १ १ २ ४५ ५ २२ १
सबर्हीयिषारश्मि । सायिदाश्नायिचो । तायजाथा२३ ।

१ २ ४
यासूस्क्रा५तू६५६ः(३) ॥ १५ * ॥ [१] ६

अथ द्वितीयवृत्तः—

प्रथमा ।

३ १ २ ३ १ २ २ २
अयंवाग्मित्रावरुणासुतःसोमऋतावृधा ।

२ ७ १ १ २ ३ १ ०
ममेदिहश्रुतं हवम् ॥ १ † ॥

हे “ऋतावृधा” ऋतस्य सत्यस्य यज्ञस्य वा वर्धकोण !
“मित्रावरुणा” हे मित्रावरुणौ ! “वां” युवाभ्याम् “अयं”
“सोमः” “सुतः” अभिषुतः । यस्मादेवं तस्मात् “इह” अस्मिन्
यज्ञे “ममेत्” मदीयमेव § “हवम्” आह्वानं “श्रुतं”
श्रुतम् ॥ १ ॥

* ऊ० गा० १८ प्र० १ अ० १५ सू० १ ।

† ‘मैत्रावरुणमाव्यम्’—इति वि० ।

‡ ऊ० वे० १, ८, ७, ४ ।

ण॥ ‘ऋतावृधा’—ऋतो यज्ञः, तेन वर्धयितारौ अथवा ऋतमग्नं तेन वर्धते ऋतावृधौ
—इति वि० । निघण्टौ तु ऋतमिति यज्ञनामसु (१, १९), घननामसु (२, १०),
उदकनामसु (१, १२), सत्यनामसु (३, १०) च दृश्यते परं मत्वज्ञनामसु ।

§ ‘मम इत्—इत्—इति पद-प्रत्ययः । इह मदीये यज्ञे’—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

१ १ २ २ २ . ३ १ २ २ २ २
राजानावनभिद्रुहाध्रुवे सदस्युत्तमे ।

३ १ २
सहस्रस्थूणा आशाते ॥ २ * ॥

“राजानो” ईश्वरो दीप्यमानो वा “अनभिद्रुहा” †
अनभिद्रुहोऽप्येव यो मित्रावरुणो “ध्रुवे” स्थिरे “उत्तमे” उत्कृष्टे
“सहस्रस्थूणे”‡ “सदसि”॥ स्थाने “आशाते” उपविशतः
[तावागच्छतामिति शेषः] ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ २ १ १ २ १ २ . ३ १ २ २ २ २ १ २
तासम्राजाघृतासुती आदित्यादानुनस्पती ।

१ २ २ १ २
सचेते अनवङ्गरम् ॥ ३ § ॥ ७

“सम्राजा” सम्राजौ आज्ञयैव सर्वेषां शास्तारौ, “घृतासुती”
घृतासौ ॥ [“तद्दामह्रित्वं घृतास्रावस्तु”—इति मन्त्रान्तरात्,] :

* सू० वे० २, ८, ७, ५ । “आशाते”—इति तत्र पाठः ।

† ‘अद्रोहकर्तारौ’—इति वि० ।

‡ ‘सहस्रस्थूणे’—स्थूणाणां सहस्रं यस्मिन्—इत्यादि वि० ।

॥ ‘सदो नाममण्डपे’ इति यावत् ।

§ सू० वे० २, ८, ८, १ ।

। ‘घृतासुतो’—घृतेन आसुतिः * * * शरीरहृदिययोर्भवति * *—इति वि० ।

“आदित्या” अदिनेः पुत्रो, “दानुमस्यती” ‘दानुमः’ चमस्य
 देवस्य वा ‘पती’ स्वामिनो,* “ता” तो मित्रावरुणौ “अन-
 वहरम्” अकुटिलं यजमानं† “सचेते” इविर्भक्षणार्थं
 वेदेते ॥ ३ ॥ ७

अथ तृतीयं लक्ष्यम्—प्रथमा ।

१ १ ३ २ ३ १ २ १ १ २ २ २
 इन्द्रोदधीचो अस्थिभिर्वृचाण्यप्रतिष्कृतः ।

३ १ २ ३ १ २ २ २
 जघाननवतीर्नव ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

[अथ शाटायनिन इतिहासमाचक्षते—“आध्वर्यवस्य दधीचो
 जीवतो दर्शनेन असुराः परावभूवुः । अथ तस्मिन् स्वर्गते सति
 असुरैः पूर्णा पृथिव्यभवत् । अथेन्द्रस्त्रैरसुरैः सह योद्धुमशक्तुवं-
 स्तस्मिन्स्वर्गं गत इति श्रुत्वा । अथ पप्रच्छ तच्च-
 त्याम्—‘नेह किमस्य किञ्चित् परिशिष्टमङ्गमस्ति ?’—इति ;
 तस्मा अवोचन्—‘अस्त्ये तदाश्वं शीर्षं, येन शिरसा अग्निभ्यां
 मधुविद्यां प्राव्रवोत्, तत्तु न विद्यः यत्राभवत्’—इति । पुनः-

* ‘दानुमस्यती’—दान-कर्तृण यजमानाय—इति वि० ।

† ‘अनवरम्’—अक्षम्—इति वि० ।

‡ ‘रेन्मसायम्’—इति वि० । ॥ “अवतीर्नवा”—इति क० पु० पाठः ।

§ अ० आ० १, १, ४, ५ (१ भा० १८८ व०) = अ० वे० १, ८, ७, १ ।

रिन्दोऽप्रवोत्—‘तदन्विच्छत’—इति । तद्वाग्नेमिषुस्यार्थं वा-
वत्वमुविच्य जहुः । शयणावह वै नाम कुक्ष्येनस्य जघनार्धं सरः
स्यन्दते । तस्य शिरसोऽस्थिभिरिन्दोऽसुरान् जघान” —इति ॥

“अप्रतिष्कृतः” परैरप्रतिशब्दितः प्रतिकूल-शब्द-रहितः इन्द्रः
आयर्वणस्य “दधौचः—एतत्तर्ज्यकस्य ऋषेः “अस्यभिः”
पाण्ड्य-शिरः-सम्बन्धिभिरस्थिभिः “नवतीर्नव” नवसङ्ख्याका
नवतीः दशोत्तरा अष्टशतसङ्ख्याकाः (८१०) [तथाहि—
लोकत्रयवर्त्तिनी देवान् जतु मादावासुरी माया त्रिधा सम्म-
त्यते ; त्रिविधा सा अतीतानागतवर्त्तमान-काल भेदेन तत्काल-
वर्त्तिनी जेतुं पुनरपि प्रत्येकं त्रिगुणिता भवति—एवं नव
सम्पद्यते ; पुनरपि उक्षाद्यादि-शक्ति-त्रय-रूपेण त्रैगुण्ये सति
सप्तविंशतिः सम्पद्यते ; पुनः सात्विकादि-गुणत्रयभेदेन त्रैगुण्ये
सति एकोत्तरा अशीतिः सम्पद्यते ;—एवं चतुर्भिस्त्रिकैर्गुणि-
ताया मायाया दशसु दिक्षु प्रत्येकमवस्थाने सति नवनवतयः
सम्पद्यन्ते । एवंविधमायारूपाणि] “हन्त्राणि” आवरकाण्यसुर-
जातानि “जघान” हतवान्] दधौचः—दधि अक्षतीति दध्यङ्,
अक्षतेः ऋत्विगित्यादिना (३, २, ५८) क्तिन्, अनिदिता-
निति (६, ४, २४) न-लापः, षष्ठ्यकवचने “अचः (६, ४
१३८)”—इत्यकारलोपे चाविति (६, ३, १३८) दीर्घत्वम्,
उदात्तनिवृत्तिस्वरेण विभक्त्युदात्तत्व-विधानेन तथाभ्यते ।

अस्त्रिभिः—“इन्द्रस्यपि दृश्यते (७, १, ७६)” —इति चन-
जादावपि अस्त्रि-शब्दस्यानङ्गादेशः मचोदात्तः] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३१ २२ २२ ३ १ २ ३ १ २

इच्छन्नश्चस्ययच्छिरःपर्वतेष्वपश्रितम् ।

१ २ ३ १ २
तद्विदच्छ्रयणावति ॥ २ * ॥

“पर्वतेषु” पर्ववत्सु गिरिषु अपश्रितम् अप गत्य स्थितम्
“अश्रय” अश्र-सम्बन्धिनो दधोचः “यत्” “शिरः” “इच्छन्”
इन्द्रो वर्तते, “श्रयणावति” एतत्सञ्ज्ञके सरसि† “तत्” शिरः
“विदत्” अज्ञासीत् । ‘ज्ञात्वा, तदाहृत्य, तदीयैः अस्त्रिभिः
वृक्षाणि जघान’—इति पूर्वस्यामृचि सम्बन्धः ॥ इच्छन्—इषु
इच्छायां तुदादित्वाच्छप्रत्ययः । विदत्—वेत्तेर्लुङि व्यत्ययेन
चुरङ्गादेशः । श्रयणावति—श्रयणा नामानो देशास्तेषामदूर-
भवः सरः श्रयणावत् ; मध्वादिषु श्रयणाशब्दस्य पाठात्
“मध्वादिभ्यश्च (४, २, ८६)”—इति चातुरर्थिकी मतुप्,
“सञ्ज्ञायाम् (८, २, ११)”—इति मतुपो वत्वम्, मतो
बहुचोऽनजिरादीनाम् (६, ३, ११८)”—इति दीर्घः ॥ २ ॥

* ऋ० वे० १, ८, ७, ४ ।

† ‘श्रयणावति—यश्चे कर्तव्यति’—इति वि० ।

“अत्राहगोरमन्वत”—इति (२, ६,) । “अत्राह गोः समम-
 सतादित्यरश्मयः स्वनामापौच्यमपगतमपचितमपिहितमन्तर्हितं
 वा (४, २५)”—इति ॥ अमन्वत—“मनु अवबोधने (त०,
 आ०) । अपौच्यम्—अपपूर्वाच्चिनाते निर्पातनाद् यत्, अतएवा-
 भिमतरूपसिद्धिः ; यद्वा अपिपूर्वाद्दधतेः “ऋत्विग् (३, २,
 ५८)”—इत्यादिना किन्, “अनिदिताम् (६, ४, २४)”—
 इति न-लोपः, अपिगते निर्गते भवमपौच्यम् “भवे छन्दसि
 (४, ४, ११०)”—इति यत्, “अचः (६, ४, १३८)”—इत्य-
 कारलोपे “चो (६, ३, १३८)”—इति दीर्घत्वम् ; “अपौच्यो
 प्रकाशः”—इति भट्टभास्करमित्रः । इत्या—इदम्-शब्दाच्च “या
 हेतो च छन्दसि (५, ३, २६)”—इति प्रकारवचने या-
 प्रत्ययः ; यदि तत्रेदं-शब्दो नानुवर्तते तदानौम् “इदमस्वसुः
 (५, ३, २४)”—इति यमुः प्रत्ययः ; “अव्ययादाप्-सुपः (२,
 ४, ८२)”—इति सुब्लुकं बाधित्वा “सुपां सु-लुक् (७, १,
 ३८)”—इत्यादिना डादेशः । चन्द्रमसः—चन्द्रमाह्लादनं
 मिमीते निर्मिमीते—इति चन्द्रमाः “चन्द्रेमोष्ठित् (७०, ४,
 २२७)”—इत्यसि-प्रत्ययः ; दासीभारादिषु पठितत्वात् पूर्व-
 पदप्रकृतिस्वरत्वम् ; पूर्वपदञ्च “स्फायितञ्च (, ,)”—इत्या-
 दिना रक्-प्रत्ययान्तत्वादन्तोदात्तम् ॥ ३ ॥ ८

शृणुतम् । श्रुत्वा च “गिरः” तदीयाः स्तुतीः “वनतं” सम्भ-
जतम् । तथा “ईशाना” ईश्वरो युवां “धियः” अनुष्ठितानि
कर्माणि “पिप्यत” तैस्तैः फलैः पूरयताम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
मापापत्वायनोनरेन्द्राग्नीमाभिश्नस्तये ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
मानोरीरधतन्निदे ॥ ३ * ॥ ८

हे “नरा” नेतारो ! इन्द्राग्नी ! “नः” अस्मान् “पापत्वाय”†
हीनभावाय “मा रीरधतम्”‡ मा वशं नयतम्, तथा
“अभिश्नस्तये” शत्रुभिः कृतायाभिश्नसनाय मा रीरधतम्, तथा
“निदे”¶ निन्दकाय मा रीरधतं मा वशीकुरुतम् ॥ ३ ॥ ८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रयणस्य पञ्चमस्याध्यायस्य

तृतीयः खण्डः § ॥ ३ ॥

* सू० वे० ५, ६, १०, ३ ।

† ‘पापत्वाय—पापवृद्धे’—इति वि० ।

‡ ‘मा रीरधतम्—वृद्धिंसायाञ् ; मा वंशिताम्’—इति वि० ।

¶ ‘निदे—नितरां दीयते यस्मिन् असौ निदे’—इति वि० ।

§ ‘सक्तं प्रातः-सवमम्’—इति वि० ।

अथ चतुर्थखण्डः * प्रथमद्वयं—

प्रथमा ।

१२ ३१२ ४१२ ३१२

पवस्वदत्तसाधनोदेवेभ्यः पीतये† हरे ।

३१२ ३१२ १२

मरुद्गोवायवेमदः ॥ १ ॐ ॥

हे “हरे” हरितवर्ण ! पापहर्त्ता वां सोम ! “दत्तसाधनः”
दत्तो बलं तस्य साधनो “मदः” मदकरश्च त्वं “पवस्व” हर ।
किमर्थम् ? “देवेभ्यः” इन्द्रादिभ्यः “पीतये” पानाय, तथा
“मरुद्गाः” “वायवे” च पीतये पवस्व ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२३१२ ४१२ ३२३ ३१२ ३२

सन्देवैः शोभते वृषाकविर्योनावधिप्रियः ।

१२ ३१२

पवमानोऽदाभ्यः ॥ २ ॥

“अयं” सोमः “सं शोभते” “देवैः” सह । कौटुशः सोमः ?
“वृषा” वर्षकः, “कविः” क्रान्तदर्शी, “योनी” स्थाने स्त्रीये
“अधि” अधिष्ठितः § “प्रियः” प्रियोभूतः सर्वेषां [यद्वा प्रीणयिता]

* ‘इदानीं साध्यन्दिनसवनमुच्यते’—इति वि० ।

† ‘देवेभ्यः पीतये’—इति क० पु० पाठः ।

‡ अ० आ० ४, २, ४, ८ (२ भा० २४ प्र०) = अ० वे० ६, ८, १५, १ ।

॥ अ० वे० ६, ८, १५, २ । “पवमानोऽदाभ्यः”—इति खण्डे “इतद्वादेवसौमसः”

—इति अ०-पाठः ।

§ ‘योनी’ अधि—सप्तम्यैकवचनमिदं द्वितीयैकवचने द्रष्टव्यम् । ‘योनिम्’ अधि—
—इति वि० ।

“पवमानः” चरन् “अदाभ्यः” केनाप्यहिंसितश्च भवति अतएव
सोमः सं शोभते ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१२ ३२ ३२ १३ ३१ २
पवमानधियाहितोऽभियोनिङ्गनिक्रदत् ।

१२ ३१ २२
धर्मणावायुमारुहः ॥ ३ * ॥ १०

हे “पवमान” सोम ! “धिया” कर्मणा अस्मद्गोपारेण
अङ्गुल्या वा † “हितः” धृतः सन् “निक्रदत्” शब्दं कुर्वन्
“योनि” स्थानं “द्रोणकलश” च “अभि आरुहः” अभिमुख्येन
आरोहणं कुरु प्रविशेत्यर्थः । तदेवाह—“धर्मणा” कर्मणा
“वायु” वायुसम्बन्धिपात्रमित्यर्थः, तदारुहः प्रविश ॥

“आरुहः” “आविश”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १०

१ २१ १२१२
॥ निधनकामम् ॥ पवस्वदारुत्तसाधनाः । देवेभ्यः

२ २ २१ २ ० २२ २
पीतयेहरायि । मरुद्भ्योवा । पवारुक्षयि । द्वाद्योयि ।

१२ १ १ १
मदाः । होयि । २ । मदः । होयि । २ । मदः । होयि ।

* अ० वे० ६, ८, १५, २ ।

† ‘धिया वृद्धा’—इति वि० ।

याः । पा॒र॒वा । मा॒र॒नाः । अ॒दौ॒र॒हो । वा॒हा॒३४३

यि । भा॒र॒३४यो॒द्वा॒यि ॥ (२) प॒वा॒३४ । मा॒न॒धिया॒हि॒

तः । ओ॒द्वा । अ॒भियो॒नि॒क॒निका॒र॒दात् । धा॒र॒र्मा ।

प्रा॒र॒वा । यु॒मौ॒र॒हो । वा॒हा॒३४३यि । रु॒र॒३४ओ॒द्वा

यि (३) ॥ ८ * ॥ [२]

॥ त्वा॒ष्ट्री॒साम ॥ प॒व॒स्व॒दा । क्ष॒सा॒र॒धाना॒रः । दा

यि॒वे॒भ्यः॒पो । त॒या॒यि॒हा॒श॒रा॒र॒यि । म॒रु॒द्भ्यो॒र॒वा । य॒वे

म॒दा॒३१उ॒वा॒र॒३ ॥ (१) स॒न्दे॒वैः॒शो । भ॒ता॒र॒यि॒वा॒र्षा॒रः ।

का॒वि॒र्यो॒नौ । अ॒धा॒यि॒प्रा॒श्या॒रः । प॒व॒मा॒र॒नाः । अ॒दा

भि॒या॒३१उ॒वा॒र॒३ ॥ (२) प॒व॒मा॒ना । धि॒या॒र॒हा॒यि॒ता॒रः ।

अ॒भि॒यो॒नि॒म् । क॒ना॒यि॒क्रा॒श॒दा॒र॒त् । ध॒र्म॒णा॒र॒३ वा ।

यु॒मा॒रु॒हा॒३१उ॒वा॒र॒३ । वृ॒धे॒३ (३) ॥ १ † ॥ [३] १०

अथ प्रगाथरूपे द्वितीयसूक्ते—

प्रथमा ।

२१ १ १ ३२ २ ३१ १
तवाङ्गो सोमरारणसख्यइन्दोदिवेदिवे ।

पुष्पणिबभ्रोनिचरन्तिमामवपरिधीर्प्रतिताड्यद्दि ॥ ५ ॥

हे “इन्द्रो” स्यन्दमान-मोम ! “तव” “सख्ये” सखि-कर्मणि.
“ग्रहं” “दिवेदिवे” भ्रुवहं “रारण” रमे [रणेर्लिटि उत्तमे
णलि रूपम्] । हे “बभ्रा” बभ्रुवर्ण-सोम “पुरुणि” बह्वनि
रक्षांसि “मां” तव सख्ये स्थितं “नि अव चरन्ति” नीचीनं
चरन्ति बाधन्ते । ये मां बाधन्ते तान् “परिधीन्” “अति इहि”
अतीत्य गच्छ जहोति यावत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१३१ २८३११ ३११ ३१२४११
तवाहन्नक्तमुतसोमतेदिवादुहानोबभ्रजधनि ।

ॐ १ १ २ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २
घृणातपन्तमति सूर्यपरः शकुनाइवपन्निम ॥ २ ॥ ११

हे “बभ्रो” बभ्रुवर्ण-सोम ! “उत” अपिच “नक्तम” “उत”
अपिच “दिवा” अहोरात्रयोः “सख्याय” सख्यार्थं ऋ “तव”

* इ० आ० ६, १, २, ६ (२भा० ८१४०) = ऋ० व० ७, ५, १५, ४ ।

† କ୍ର. ସଂ. ୭, ୫, ୧୫. ୫ ।

‡ सञ्जायति कम्पेदीयपाठमवलम्ब्यैवं ब्राह्मणतः सानवेदीय-पाठस्य
“दृष्टानः”—इति ।

“उधनि” समीपे * “अह” रमे—इति शेषः । “ते” वयं
 “हृणा” दीत्या “तपन्त” ज्वलन्तं “परः” परस्मान्स्थितं “सूर्य”
 तदात्मकं त्वाम् † “अति पस्मिन्” तत्र स्थितं त्वां प्राप्तुमतिपतेम् ।
 कथमिव ? शकुनादिव यथा सुपर्णादयः पक्षिणः सूर्यमति-
 नाच्छन्ति तद्वत् ‡ [पत्लगतो, अस्माच्छान्दसो छिटि “तनि-
 पत्येच्छान्दसि (६, ४, ८८)”—इत्युपधालोपः ॥

“दुहानः”—“सख्याय”—इति पाठो ॥ २ ॥ ११

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 ॥ आष्टाद०ष्टोत्तरम् ॥ तवाह०सोमरारण्येयादौ ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 हो३वा । सख्यइन्दोदिवे । दायिवे २३ । ऐया२३त् ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 औ२३होवा । पुरुषिबभ्रोनिचरन्तिमाम् । आवा२३ ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 ऐया२३त् । औ२३होवा । परिधी०रतितान् । आयि

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 वार३यि । ऐया२३त् । औ२३होवा३४३ ॥ (१) परिधी०

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 रतितान् इहिऐयादौ । हो३वा । परिधी०रतितान् ।

* ‘उधनि—इशापविनात् द्रोणकलशे’—इति वि० ।

† ‘परःसूर्यम्—सूर्यादपि परतः’—इति वि० ।

‡ ‘रतमुक्तं भवति—सखी वयं स्थिताः पुरुषि वज्रनामकुक्षानि वा सुपर्णादयः, एवं सुपर्णादयः पक्षिणः’—इति वि० ।

१ १५ १ २ १ २ १ २ १
 आधिहा२३३। ऐया२३त्। औ२३होवा। तवाहज
 २ १ २ २ १ १ २ १ २ १
 तमुतसोमते। दायिवा२३। ऐया२३त्। औ२३हो
 १ २ १ २ १ २ १ २ १
 वा। दुहानोबभज। धानी२३। ऐया२३त्। औ२३
 २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 होवा३४३ ॥ (२) दुहानोबभजधनिऐयादौ। हो३वा।
 २ १ २ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 दुहानोबभज। धानी२३। ऐया२३त्। औ२३होवा।
 १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 घृणातपन्तमतिहरियम्। पारा२३ः। ऐया२३त्। औ
 २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 २३होवा। शकुनाइवप। ताबिमा२३। ऐया२३त्।
 १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
 औ२३होवा३४३। ओ२३४५ई। डा ॥ ८ * ॥ [१]

२ २ २ २
 ॥ आभौश्वोत्तरम् ॥ तवाह५सोमरारण२। २। स
 २ १ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
 ख्यइन्दो३दायिवेशदिवायि। पू२३४५। हा३हा। वि
 २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
 बभोनिचरन्तायिमाश्रवा। पा२३४री। सा३हायि।
 १ २ १ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
 धायि५रतितो२३४वा। आप्रयिहो३हायि ॥ (१) परिधौ५

रतिता^२इ^२दि^२ए । ए । परिधी^२रा^२स्ता^२यिता^२इ^२दा^२वि ।

ता^२२३४वा । हा^२इ^२दा^२यि । अ^२द^२न^२क्त^२मु^२त^२सो^२मा^२ते^२दि^२वा ।

दू^२२३४हा । हा^२इ^२दा^२यि । नो^२ब^२भ्र^२ओ^२२३४वा । धा^२प्र^२नो^२ई

हा^२यि ॥ (२) दु^२हा^२नो^२ब^२भ्र^२ऊ^२ध^२नि^२ए । ए । दु^२हा^२नो^२बा^२इ^२धा^२ऊ^२

ध^२ना^२यि । घा^२२३४र्णा । हा^२इ^२दा^२ । त^२प^२न्त^२म^२ति^२सू^२रा^२य

म्या^२रः । शा^२२३४क । हा^२इ^२दा^२यि । ना^२यि^२व^२पो^२२३४वा ।

प्ता^२प्र^२यि^२मो^२इ^२दा^२यि (३) ॥ १० * ॥ [२]

॥ स्वः^२पृ^२ष्ठ^२म्^२ ॥ तवा^२इ^२दा^२सो^२इ^२४ । औ^२हो^२प्र^२म^२रा^२रणा ।

स^२ख्या^२इ^२न्दी^२इ^२४ । औ^२हो^२प्र^२दि^२वे^२दि^२वा^२यि । पु^२रु^२र^२णि^२बा^२इ^२

इ^२औ^२हो^२प्र^२भ्री^२नि^२च^२रा । ओ । ता^२र^२यि^२मा^२र^२इ^२औ^२हो^२वा । आ

र^२इ^२४वा । ऊ^२र^२इ^२४पा । ऊ^२र^२इ^२४पा । परिधी^२रा^२इ^२४ ।

ता^२र^२यि^२ता^२इ^२इ^२औ^२हो^२वा । ई^२र^२इ^२इ^२ही ॥ (१) परा^२र^२यि^२धी^२ए

रा३४। औद्योपतिताऽइद्यायि। परारयिधीऽरा३४।

औद्योपतिताऽइद्यायि। तवारदन्ना३४। औद्योपत्तमु

तसो। ओ। मारता२३४ औद्योवा। दौर३४वा। ज

२३४पा। जर३४पा। दुद्धानोवार३४। भारजर३४औ

द्योवा। धार३४नी ॥ (२) दुद्धारनोवा३४। औद्योपभ

जधनायि। दुद्धारनोवा३४। औद्योपभजधनायि। घृ

णारतपा३४। औद्योपुन्तमतिसू। ओ। रारया२३४

औद्योवा। पा२३४राः। जर३४पा। जर३४पा। शकु

नाआ२३यि। वा२पा२३४ औद्योवा। मी२३४।

मा(३) ॥ ११ * ॥ [३]

॥ अभीवर्त्तम् ॥ परारयिधारयिऽराऽतिताऽइद्योवा।

परिधीऽर। तिताऽआशयिहा२यि। तावाहन्ना३१२३४।

१ ४ ५ ६ १ १ २ १ २ ३ २
 क्तमुतसो । मतायिदाश्विवार । दुहानोश्वार । अज

१ १ १ १ १
 ३ । धार३४५ । नार३४यि२ ॥ १८ * ॥ [४]

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 ॥ उत्सेधम् ॥ तवाह्सोमरारण । सख्ये । इन्द्रा

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 ३४ औहोवा । दिवेदिवाऽरयि । द्वा३१उवार३ । ऊ३

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 ४ पा । पुह ३ णिवा । औहोवाहायि । भोनिचरा ।

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 तिमामाव । द्वा३१उवार३ । ऊ३४पा । परा३यिधो

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 र । औहोवाहायि । तिता३१आपुयिद्वा६५ईयि ॥ (२)

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 परिधी१रतिता१इहि । परि । धी१रा ३ ४ औहोवा ।

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 तिता१इद्वाऽरयि । द्वा३१उवार३ । ऊ३४पा । तवा३

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 द्वा । औहोवाहायि । क्तमुतसो । मतेदायिवा ।

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 द्वा३१उवार३ । ऊ३४पा । दुहा३नोव । औहोवाहायि ।

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 अऊ३धापुना६५ईयि ॥ (२) दुहानावभऊधनि । दुहा ।

१२२ १२४ ४२५ ११२ १
नोवा३४औहोवा । भ्रजधनाऽरयि । द्वा३१उवार३ । ज

५ ११ ४ ५२ ५ १ १ १
३४पा । घृणारतपा । औहोवाहायि । तामतिसू ।

१ ११ १ ५ १२ ४२
रिबंपार । द्वा३१उवार३ । ज३४पा । शकू३नाभ ।

५२ ४ ५ ३१ ४ ३,१-१२१
औहोवाहायि । वपा३प्रा५यिमा६पुर्द । ज२३४पु(३)-॥

॥ १० * ॥ [५]

५ १ ४ ५ ५२ ५ १
॥ जनिवाद्यम् ॥ परिधा३यि५रातिता५दहायि । ऊ

१ १ १ १ १२ १
वेहो२रयि । परिधी५रतिता५आ३यिहा२रयि । तवाहन्न

११ १ ५ ११ १ १
क्तमुतसोर । मतायिदा२३४यिवा । दुहा३होयि । नो

१ १ ११२ १ ५२२ ११ ११
वा३हो । भ्रज । धारना२३४औहोवा । जनिवा२३

११
२३४पुम्(२) ॥ १४ † ॥ [६]

१ १२१ १२ १२११ १
॥ समन्तम् ॥ तवाह५सोमरारणा । सख्यइन्दोऽदि

१२ १२ २ १ १ १
वेदिवायि । पुरुषा२३यिवा । भोनिचर । तिमामा

^१वा । ^{३२ १}औहो३४^{३२ २}वाहायि । ^१प । ^१राखिधा३३^१वि३३^१रा३ ।
^{१ २}होवा३हायि । ^{१२}तिता३^१आ३^१यिहा३४^१३यि ॥ (१) ^१परिधी३^{१२} ।
^{२ १२}रतिता३^{२ १}इहायि । ^२परिधी३^{२ १२}रा३^२तिता३^२इहायि । ^२तवा
^{२ १}ह्वा३^१त्रा । ^{१ २ ३}क्तामुतसो । ^१मतायिदायिवा । ^{३२ २}औहो३४
^{३२ १}वाहायि । ^१दु । ^२हानो३३^{१ २}वा३ । ^{१ २}होवा३हा । ^{१२}भ्रजधा
^{१ २}३३^{१ २}३४३यि ॥ (२) ^{१ २ १२ १२ १ १}दुहानोवभ्रजधनायि । ^{२ २}दुहानोवा३
^{१ १२}भ्रजधनायि । ^२घृणाना३^१पा । ^{१ २ २}तामतिह । ^१रियाम्ना
^{१ २}रा । ^{३२ १}औहो३४^{३२ २}वाहायि । ^१श । ^२कूना३३^१आ३यि । ^१हो
^{१ २}वा३हायि । ^१वपप्ता३३^१यिमा३४३ । ^१ओ३३४५ई । ^१ओ३३
^१४५ई । ^१डा(३) ॥ १ * ॥ [७]

^{३ १}॥ यौधाजयम् ॥ ^१तवा३१ । ^{४५}हा३^५सो । ^१म । ^१रा
^५रा३३४णा । ^{१ २}साख्या३यि । ^१इन्दो३ । ^{३ २}दिवा३४५यि ।

^३दी२३४वे । ^५पुरुषिवा । ^{२१ २१}भो । ^{२२}निचरार । ^१तिमा३४पुम् ।
^३आ२३४वा । ^५परा२यि । ^१धायि२रार । ^{२२}तिता२३४पु ।
^३ई२३४ही ॥ (१) ^५परा३१यि । ^{२१}धा३यि२र । ^१ति । ^४ती२
^३आ२३४यिचायि । ^५पारी३ । ^{१ २}धी२रार । ^{२ ३}तिता२३४पु ।
^३ई२३४ही । ^५तवाच्चन्ना । ^{२१ २१}क्तम् । ^१उतसो२ । ^{३ ४}मता३४
^३पुयि । ^५दी२३४वा । ^२दुहा२ । ^{२२}नोबार । ^{१ २}भज३४पु ।
^३धार३४नी ॥ (२) ^५दुवा३१ । ^{२ २}नो३ब । ^{२ ४}भो । ^{५ २}जधार३४
^५नायि । ^{१ २}दूहा३ । ^{२ २}नोबार । ^{२ ३}भज३४पु । ^३धार३४नी ।
^{२ १ २ १}घृणातपा । ^२तम् । ^१अतिसूर । ^{२ २}रिया३४पुम् । ^३पार३
^५४राः । ^१शकू२ । ^१नाआरयि । ^{२ २}वपा३४पु । ^३प्री२३४
^५मा(३) ॥ २ * ॥ [C]

५ २ १ ४ २ ५ ४ २ ५ १
 ॥ पौरुषन्मनम् ॥ तवाच्चा३२सोमरारणा । साख्य

इन्द्रो । दिवायिदाश्रयिवाश्रयि । दायिवाश्रयिपूषि

व । ओ । निचराश्र । निचराश्र । तायिमामाश्रयवा ।

पारिधीरा । तायिताश्रयारश्रयिहायि । तिताश्रय

हायि ॥ (१) परिधाश्रयिरातिताश्रयिहायि । पारिधीरा

रातिताश्रयाश्रयिहाश्रयि । आयिहाश्रयि । तावाह्व ।

क्ताम् । उतसोश्र । उतसोश्र । मातायिदारश्रयिवा ।

दूहानोवा । भ्रजधाश्रयनायि । भ्रजधनायि ॥ (२)

दूहानोश्रवभ्रजधनायि । दूहानोव । भ्रजधाश्रयनाश्रयि ।

धानाश्रयि । घाणातिप । ताम । अतिसूश्र । अतिसू

श्र । रायम्यारश्रयराः । शाकुनाश्रयि । वापन्नाश्रयि

मा । वपाश्रयिमा । होश्रयि । डाश्रयि ॥ १५ * ॥ [८]

॥ द्वैगतम् ॥ तवाचाश्रयसीमरारणा । साख्यइन्द्रो ।

दिवायिदा^१यिवार^२यि । पु^३रु^४३ । चौ^५श्चो^६श्वा । णि^७व

भो^८नि^९चर^{१०}न्तायिमा^{११}मवा^{१२}२ । परा^{१३}३यि । धा^{१४}यि^{१५}एरा^{१६}२

३४^{१७}औ^{१८}होवा । ए३ । ति^{१९}ता^{२०}ए^{२१}इ^{२२}हा^{२३}३४^{२४}यि ॥ (१) म^{२५}रि

धा^{२६}यि^{२७}एरा^{२८}ति^{२९}ता^{३०}ए^{३१}इ^{३२}हा^{३३}यि । पा^{३४}रि^{३५}धी^{३६}एरा । ति^{३७}ता^{३८}ए^{३९}आ^{४०} :

१यि^{४१}दा^{४२}र^{४३}यि । तवा^{४४}३ । चौ^{४५}श्चो^{४६}श्वा । अ^{४७}द^{४८}न^{४९}क्त^{५०}मु^{५१}त^{५२}सो

मा^{५३}ते^{५४}दिवा^{५५}२ । दु^{५६}हा^{५७}२३ । नो^{५८}र^{५९}वा^{६०}३४^{६१}औ^{६२}होवा । ए३ ।

अ^{६३}ज^{६४}२^{६५}ध^{६६}ना^{६७}२३४^{६८}यि ॥ (२) दु^{६९}हानो^{७०}३^{७१}व^{७२}भ^{७३}ज^{७४}ध^{७५}ना^{७६}यि । दू

हानो^{७७}व । भ^{७८}ज^{७९}धा^{८०}१^{८१}ना^{८२}र^{८३}यि । घृ^{८४}णा^{८५}३ । चौ^{८६}श्चो^{८७}श्वा ।

त^{८८}प^{८९}न्त^{९०}म^{९१}ति^{९२}सू^{९३}रा^{९४}य^{९५}म्या^{९६}रा^{९७}२ । श^{९८}कू^{९९}२३ । ना^{१००}२^{१०१}आ^{१०२}२३४^{१०३}औ

होवा । ए३ । व^{१०४}पा^{१०५}२^{१०६}प्रि^{१०७}मा^{१०८}२३४^{१०९}पु^{११०}३ ॥ १६ * ॥ [१०]

॥ गौ^{१११}व^{११२}म् ॥ तवा^{११३}हा^{११४}३^{११५}मो^{११६}म^{११७}रा^{११८}रा^{११९}णा । सा^{१२०}ख्या^{१२१}२

यि । इ^{१२२}न्दो^{१२३}दि^{१२४}वे^{१२५}३ । दा^{१२६}यि^{१२७}वा^{१२८}यि । पु^{१२९}रु^{१३०}णि^{१३१}व^{१३२}भो^{१३३}नि^{१३४}चा^{१३५}३

रा२। तिमाश्मावा। पुह्णिबभ्रोनिचर। तिमाश्मा

वा। पारिधौन्। आ। औश्हो। तितोर३४वा।

आध्रयिहोईहायि ॥ (१) परिधाश्रयि० रातिता० इहायि।

पारी२। धी० रतिता३०। आयिहायि। तवाहन्न

क्तमुता२३सोर। मताश्रयिदायिवा। तवाहन्नक्तमुतसो।

मताश्रयिदायिवा। दूहानः। वा। औश्हो। भ्रओ

२३४वा। धाध्रनोईहायि ॥ (२) दुहानो३वभ्रजधनायि।

दूहा२। नोवभ्रज३। धानायि। घृणातपन्तमता२३

यिस्र२। रिया३पाराः। घृणातपन्तिसू। रिया३पाराः।

शाकुनाः। आ। औश्हो। वपो२३४वा। प्राध्रयिमो

ईहायि, ३) ॥ १७ ॥ [११]

३ ४ २ ४ ५ २
॥ दिनिधनमायास्यम् ॥ तवाहसोमरारण । ३३ ।

२ ४ १ २ १ २ २
औश्चोपुवाऽऽ । साख्याइयि । इन्दो२ । दिवा३४५यि ।

२ १ १ १ १ १ २ २ १
दा३यिवा२३४५यि । पूरुणिवा । भोनिचरा । तांयि

२ १ २ ४ ५ २ १ २ १
मा३आ । औश्चो३ । आ२३४वा । पराऔ३चो ।

१ २ १ १ १ १ १
धायि२रार । तिता३४५ । आ३यिहा२३४५यि ॥(१)

४ ४ ४ ४ ४ ४ २ २ ४ १ ४
परिधी२रतिता३इदि । ए३ । औश्चोपुवाऽऽ । पारी

१ २ २ २ २ १ १ १ १ १
३ । धी२रार । तिना३४५ । आ३यिहा२३४५यि ।

१ २ २ २ २ २ २ १ २ ४
तावाहन्ना । तामुतसो । माता३आ । औश्चो३ ।

५ २ २ २ २ १ २ २
दी२३४वा । दुहाऔश्चो । नोवा२ । अज३४५ ।

२ १ १ १ १ १ ४ २ ३ ४ ४ २ २
धा३ना२३४५यि ॥(२) दुहानोबभ्रजधनि । ए३ । औश्

४ २ २ २ २ २ २ २ २
होपुवाऽऽ । दूहा३ । नोवा२ । अज२३४५यि । धा

२ २ २ २ २ २ २ ४
र्णातपा । तामतिमू । राया३आ । औश्चो३ । पा

२३४राः । शकू^५अ^{११}इ^१हो^१ । ना^१आ^१र^१यि^१ । वपा^{३१}३४५ । मा^१

११११
इयिमार३४५(३) ॥ १८* ॥ [१२]

॥ पुश्नि ॥ तवाहार२३॥ सोमरारणहाउ । सख्यइन्ते ॥

दिवेदिवे । पुहणाश्विवार३ । होवार३हा । भोनचर । नि

१ २ १ १ २ १ १
मामाश्वार३ । होवा३हायि । परायिधा१यि३रा३ ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
 होवाश्चायि । तायिताश्चि । इडारश्भाश्च । ओ

੨੩੪੫੬ । ਭਾ(੧) ॥ ੧੭ ॥ [੧੬]

॥ अर्कपुष्पाद्यम् ॥ तवा^{११११}ह^{१२}सोम^२रारण । ऊ^१वेर३ ।

२१ १२ १४ २२ १ २१२ २२ १ १
सख्यद्वन्दोदिवेदिवे । ऊवे२३ । पुष्पाणबभ्रोनिचरन्ति

मासव । ऊवे२३ । परिधीरतिताइहि । ऊवे२३ ॥(१)

१ २ १२ २ १२ २ १ १ २ १२ १ १२ २ १ १२ २
दुहानोबभ्रजधनि । ऊवेर३ ॥ (२) । दुहानोबभ्रजधनि ।

१ २ २ १२ २ १२ २ १ २ २ १२ २ १ २ २ १२ २
ऊवेर३ । दुहानोबभ्रजधनि । ऊवेर३ । घृणातपन्तमति ।

१ २ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
सूर्यम्परः । ऊवेर३ । शकुनाइवपन्तिम । ऊवेर३ ।

१ २ २ १ २ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १ २
ऊवेर३ । होवाइहा३ । हा३४ । औहोवा । पक्षिः ।

२ २ १ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
देवानां२म् । परमेवियो२मा२३४५म् (३) ॥ १४ * ॥ [१४]

१ २ २ १ २ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
॥ बार्हदुक्थ्यम् ॥ तवाहो२सोम । रा२रणा । सख्य

२ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
इन्दोदिवेदार२यिवा२यि । पूरु२णायिवा२ । भोनिचरा

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
२ । तिमा२मवा । परिधा२यि२रा । तिता२आ२यि

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
हा३४३यि ॥ (१) परिधी२रति । ता२इहा२यि । परि

२ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
धी२रतिता२आ२यिहा२यि । तावा२हा२ना२ । त्तामु

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
तासो२ । मतेदिवा । दुहानो२श्वा । भ्रजधार२ना

२ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
३४३यि ॥ (२) दुहानोबभ्रो । ऊ२धनायि । दुहानोब

भृजधा २३ नायि । घाणां शतापा २ । तामतायिसू २ ।

रियम्पराः । शकुना २३ आयि । वपन्ता २३ यिमा ३४ ३ । औ

२३४५६ । डा(३) ॥ १५ * ॥ [१५]

॥ माण्डवम् ॥ तवाच् सोमराराणा । सख्यइन्दो

दिवेदिवे । पुरुणा शयिवा २ । भ्रोनिचर । तिमामाशवा

२ । परिधार २३ यिर्वा । नितान् । आरयिहार ३४ औ

होवा ॥ (१) परिधीरतिता ३ आयिचायि । परिधीरति

ताइच्चि । तवाच्चा १३ २ । क्तामुतसो । मतायिदा

शयिवा २ । दुहानो २३ बा । भृज । धारना २३ ४ औहो

वा ॥ (२) दुहानो बभृजधानायि । दुहानो बभृजधनि ।

घृणाता १ पा २ । तामतिसू । रियाम्पा १ रा २ । शकुना

२ १ ३ ५२ २ १ २ १ २
 २३ आयि । वप । भारयिमार३४ औहोवा । विदावसू

१ १ १ १
 २३४५ (३) ॥ १६ * ॥ [१६] ११

अथ तृतीय-दृचे—

प्रथमा ।

३ १ २ ३ ० ७ ३ १ ३ १ २
 पुनानां अक्रमीदभिविश्वामृधोविचर्षणिः ।

२ २ ३ १ २ ३ १ २
 शुभान्तिविप्रन्धीतिभिः ॥ १ * ॥

“पुनानः” पूयमानः “विचर्षणिः” विद्रष्टा सोमः “विश्वा”
 सर्वान् “मृधः” हिसकान् शत्रून् “अभि अक्रमीत्” अतिक्रान्त-
 वान्, तं “विप्र” मेधाविनं “धीतिभिः” कर्मभिरभिषवादिभिः
 स्तुतिभिर्वा “शुभान्ति” दीपयन्ति अलङ्कुर्वन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २२ १ १ ० ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
 आयोनिमरूणोरुहद्रमदिन्द्रोवृषासुतम ।

३ १ २ २
 ध्रुवेसदसिसीदतु ॥ २ ‡ ॥

अयम् “अरुणः” अरुणवर्णः सोमः “योनिं” स्थानं द्रोण-
 कलशम् “आरुहत्” आरोहति, ततो “वृषा” कामानां वर्षकः

० क० गा० २० प्र० १ ख० १६ सा० ।

† क० आ० ६, १, १, २ (२ भा० ४४ पृ०) = ऋ० वे० ६, ८, ३०, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १०, २ ।

“इन्द्रः” “सुतम्” अभिषुतं सोमं “गमद्” मच्छति, नित्वा “भुवे
सदसि” स्थिरे स्थाने द्युलोकाख्ये “सोदति” * निवसति ॥

“इन्द्रोवृषासुतम्”-“इन्द्रं वृषासुतः”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ १ ३ २ ३ १ २ ३ १ १ २ १ १
नूनोरयिम्नाहामिन्दोस्मभ्यं सोमविश्वतः ।

१ १ २ १ २
आपवस्वसहस्रिणम् ॥ ३ ॥ १२

हे “साम !” अभिषुतस्त्वं हे “इन्द्रा !” “नः” अस्माभ्यम्
“तु” क्षिप्रं “महा” महान्तं “सहस्रिणम्” † असङ्कयातं “रयिं”
धनं “विश्वतः” “आ पदस्व” सर्वतः परितस्त्व ॥ ३ ॥ १२

३ २ १ २
॥ सत्रासाक्षीयम् ॥ पुना ३ ४ । नोअक्रमीदभि ।

५ ५ १ २ १ १
ओद्वा । विश्वानृधोविचर्षारणायिः । प्रदूरभा । ता

२ १ ५ १ २ ३ २ १ ५
३३यिवौ । प्रन्धौ३हो । वाद्वा३४३यि । तार३४यिमोद्

५ ३ २ १ २ ५ ५ १
क्षायि ॥ (१) आयो३४ । निमरुणोरुहत् । ओद्वा । गम

१ २ १ १ १ १ ५
दिन्द्रोवृषासू२ताम् । ध्रु२वे । सार३दा । सिसौ ३

* “सोदति”—इति ऋग्वेदीय पाठः, मूलपाठसु “सोदतु”—इति ।

† ऋ० वे० ६, ८, १०, १ ।

‡ ‘सहस्रिणं सहस्रसंज्ञितम्’—इति वि० ।

१२ १ १२ २ १ ५ १२ २
हो । वाहा३४३यि । दा२३४तो६हायि ॥ (२) नूनो३४ ।

३४ । रयिन्माहामिन्द । ओ६वा । अस्मभ्य० सोमविश्वा

१ १ २ १ ५ १२ १ १२ १
२ताः । आ२रपा । वा२३स्वा । सहौ३हो । वा३हा३

१ ५ ५
४३यि । स्वा२३४यिणो६हायि (३) ॥ १२ * ॥ [१]

१ ०२ ३ २ ५ १
॥ यामम् ॥ पुनानोआ२ । क्रमौदा२३४भौ । वि

२ ३ २ १ ५ १
श्वामृधोर । विचर्षा२३४णायिः । प्रुभ्रतिवार३यि । प्र

१ ४ १२ ० ३ २ ३
न्धा३यितापुयिभा६५६यिः ॥ (१) आयोनिमा२ । रुणोरु

५ १ २ २ ३ ५ १२
२३४हात् । गमदिन्द्रोर । वृषासूर३४ताम् । ध्रुवेस

२ ४ १२ ०
दा२३ । सिसा३यिदापुता६५६उ ॥ (२) नूनोरया३यि

२ २ ३ ५ १ ३ २ ३
म् । महामा२३४यिन्दो । अस्मभ्य० सो२ । मविश्वा२३

५ १२ २ ४
४ ताः । आपवस्वा २ ३ । सहा ३ स्वा ५ यि णा ६ ५

६ म् (३) ॥ ११ ॥ [२]

४ र ३२ ४ २२ ४ ५ ३२ २ ४
॥ यामोत्तरम् ॥ पुनानोऽक्रमीदभि । ओहा३ओ

५ ३ ४२ २ ३ ४ ५ ३२ २ ४ ५ २ १
हा । विश्वामृधोविचर्षणिः । ओहा३ओहा । शुभ्र

२ ३ २ ४ ३२ ४२
तान्३यिवि । प्रन्वा३यितापुयिभा३पु३यिः ॥ (१) आयो

३ ४ ३२ ४ ५ ३२ २ ४ ५ ३ ४ ३ ४२ ३२ ४ ५
निमरुणोरुद्धत् । ओहा३ओहा । गमदिद्रोवृषासुतम् ।

३२ २ ४ ५ २ १२ २ ३ २ ४
ओहा३ओहा । ध्रुवेसार३दे । मिसा३यिदापुता३पु

३२ ४२ ४ ४ ३२ ४ ५ ३२ २ ४ ५ ३
ईउ ॥ (२) नूनोरयिमहामिन्द । ओहा३ओहा । अस्म

२ ४ ४ ५ ३२ २ ४ ५ ३२ १ २
भ्य३सोमविश्वतः । ओहा३ओहा । आपावा २ ३ स्व ।

३ १ ४
सहा३स्त्रापुयिणा३पु३दम् ३) ॥ १२ * ॥ [३]

२२ २ १ २ ३
॥ गौराङ्गिरसस्य साम ॥ आहायिह्र३वार३यि । ऊव

२ २ २ ४ २२ ३ ५ ४ २ २ ३ ५
ए । पुनानोऽक्रमीदभि । विश्वामृधोविचर्षणिः ।

२ ३ २ ४ ३२ २
शुभ्रतिवि । प्रन्वा३यितापुयिभा३पु३यिः ॥ (१) आयो

४ २२ ३ ५ २ ४ ३२ ३ ५ २ २
निमा३रुणोरुद्धत् । गमदिन्द्रो३वा३र्षासुतम् । ध्रुवे

सद । ^{२ २ ४}सिसाश्चिदापुताइइउ ॥३॥ ^{२ २ ४}नूनोरयाश्चिमाइ
^{२ २ ४ ५ २ ४ २ २ ४}हामिन्दो । ^{२ २ ४}असम्यसोइमाश्चिश्चतः । ^{२ २ ४}ओहोयि । ^{२ २ ४}इ
^{२ २ ४}श्वाश्चि । ^{२ २ ४}ऊवण । ^{२ २ ४}आपवस्व । ^{२ २ ४}सहाश्चापुयिणाइ ५
 ई म्(३) ॥ १३ * ॥ [४] १२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायणस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
 चतुर्थं खण्डः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डेऽः प्रथमल्लेखः—

प्रथमा ।

^{२ २ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २}
 पिवा सोममिन्द्रमन्दतुत्वायन्ते सुषावह्यश्वाद्रिः ।

^{२ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २}
 सोतुर्वाङ्गभ्यास्सुयतो नार्वा ॥ १ ॥

हे “इन्द्र !” “सोमं” “पिब”, स सोमः “त्वा” त्वाम्
 “मन्दतु” मादयतु, हे “ह्यश्वा” हरिसज्जकाश्च वन् ! इन्द्र !

* ऊ० ग।० १३३० २० १३३० ।

‘उक्तो माध्वन्विजः पवमानः’—इति वि० ।

‡ ‘इदानीं पृष्ठान्युक्ते विराजं पृष्ठं भवति । अस्माग्निमन्त्रम् ॥’—इति वि० ।

गू ५० अ।० ५, १, १, ८ (१ अ।० ८१४ ५०) = ० ५, ४, ५, १ ।

“ते” त्वदर्थं “सोतुः” अभिषवकर्तुः “बाहुभ्याम्” “अर्वा”
रश्मिभ्यामश्वद्वयं “सुयतः” सुष्ठु परिगृहीतः “अद्रिः” आवा
“यं” सोमं “सुषाय” अभिषवं करोषि, स मन्दत्विति पूर्वेण
सम्बन्धः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ १ २ १ १ २ ३ १ २
यस्तेमदोयुज्यश्चारुरस्तियेनवृत्राणिह्र्यश्चक्षुःसि ।

१२ २२

सत्वामिन्द्रप्रभूवसोममत्तु ॥ २ * ॥

हे “ह्र्यश्च !” “इन्द्र !” “ते” तव “युज्यः” योग्यः “चारुः”
समीचीनः “मदः” मदकरः “यः” सोमः “अस्ति” विद्यते
“येन” च पीतेन सोमेन “वृत्राणि” आवरकादीनि राक्षसा-
दीनि “हंसि”, हे “प्रभूवसो” प्रभूतधन इन्द्र ! “त्वा” त्वां
“सः” सोमः “मदतु” मादयतु ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ ३ २ ३ १ १ २ १ २ ३
बोधासुमेमघवन्वाचमेमांयान्तेवसिष्ठोअर्चतिप्रशस्तिम् ।

३ १२ २२ ३ १ २

इमाब्रह्मसधमादेजुषस्व ॥ ३ † ॥ १३

हे “मघवन्” इन्द्र ! “ते” तव “प्रशस्तिं” स्तुतिरूपां “यां”
वाचं “वसिष्ठः” नामर्षिः “अर्चति” वहति, “इमां” वसिष्ठस्व

सम्बन्धिनीं वाचं “सु आ बोध” सुष्ठु अभिवृध्यस्व किञ्च “इमा”
इमानि “ब्रह्मा” ब्रह्माणि हवोरूपाण्यन्तानि * “सधमादे”
यन्ने “जुषस्व” सेवस्व ॥ ३ ॥ १३

॥ दैर्घतमसम् ॥ ^१हाउपिवा । ^१सोममिन्द्र । ^१भा ।
^२दत्तुवा । ^१यन्तेसुषावहरिया । ^२आशद्रीः । ^२आद्रीः ।
^२सोतुर्बाह्म्याम् । ^२सुयताः । ^१सुयताः । ^१नार्वारः ।
^५अौहोवा ॥ (१) ^१हाउयास्तायि । ^१मादोयुजियः । ^१चा ।
^१रस्तायि । ^१रस्तायि । ^१येनवृत्राणिहर्ष्यश्वा । ^१हां ।
^१सायि । ^१हासायि । ^१सत्वामिन्द्रा । ^१प्रभूवसाः ।
^१उ । ^१भूवसाः । ^१ममारत्तूरः ४ औहोवा ॥ (२) ^१हाउवो
^१धा । ^१सूमेमघवन् । ^१वा । ^१चमेमाः । ^१चमेमाम् ।
^१यान्तेवसिष्ठअर्चतिप्रा । ^१शा १ स्ता २ यिम । ^१शास्ता

^{१२}रयिम । ^२इमाब्रह्मा । ^{२ १}सधमादायि । ^{१ २ १}धमादायिः ।

^१जुषार^१स्वार^१३४ ^{५२२}अहोवा(३) ॥ १ * ॥ [१]

^{१२}॥ मरायम् ॥ ^२हाउहाउहाउ । ^१पायिवा । ^{२ १}सोमाम् ।

^२इन्द्र । ^२मन्दतुवा । ^२त्वा । ^{१ १}त्वान्तायि । ^१सुषा ।

^२वह्यश्वाद्रिः । ^२द्रिः । ^{१ १}द्रिः । ^{२ १}सोढः । ^{२२}बाह् । ^{२२}भ्याः

^{२ २}सुवतो नार्वा । ^२र्वा । ^{१ २}र्वा ॥ (१) ^१यास्तायि । ^२मदो । ^२यु

^२जियश्चारुस्ति । ^२स्ति । ^{१ २}स्ति । ^१यायिना । ^१वृत्रा । ^१णि

^२ह्यश्चहसि । ^{१ २}सि । ^१सि । ^२सात्वाम् । ^{२२}इन्द्रा । ^{२२}भूप

^२वसोममत्तु । ^{१ २}तु तु ॥ (२) ^१बोधा । ^{२ १}सुमायि । ^{२ १}मघवन् ।

^{२ २}वाचमेमाम् । ^२माम् । ^२माम् । ^{१ २}यान्तायि । ^१वसायि ।

^{२ २}ष्ठोश्चतिप्रशस्तिम् । ^१स्तिम् । ^१स्तिम् । ^१अयिमा । ^१ब्र

^१ह्मा । ^{२ १}सधमा । ^{२२}देजुषस्व । ^{२२}स्व । ^{२२}स्व(३) ॥ १ * ॥ [२] १३

त्यर्थः । किञ्च “क्रत्वा” ईदृशमिन्द्रम् “आमुरौम्” यत्तूणाभाभि-
मुख्येन मारयितारम् “उग्रम्” उद्गूर्णबलम् अतएव “ओजिष्ठम्”
ओजस्वितमं “तरसं” प्रहृष्टं “तरस्विनं” सङ्ग्रामे यत्तु बधार्थं
वेगवन्तं बलवन्तं वा एवम्भूतमिन्द्रं धनार्थं स्तुवन्ति ॥

‘क्रत्वधरेस्येमनि’-‘क्रत्वावरिष्ठंवरे’—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १ ३ १ ३ ३ १ २ २ २ १
नेमिन्नमन्तिचक्षसामेषंविप्राअभिस्वरे ।

२ १ २ ३ २ ३ २ १ २ २ ३ १ २ २
सुदीतयोवोअद्रुहोपिकर्णतरस्विनःसमृक्कभिः ॥ २ * ॥

“नेमिम्” [अरान् यथा नेमिर्व्याप्नोति तर्हिहिन्द्रं सर्वं
व्याप्नुते तादृशं] नमनशीलमिन्द्रं “चक्षसा” दर्शनमात्रेणैव
“विप्राः” मेधाविनः ‡ “अभिस्वरे” ¶ अभिस्वरेण गोताय
स्तोत्राय इन्द्रविषयं स्तोत्रं कर्तुमित्यर्थः “नमन्ति” नमस्कुर्वन्ति ।
कीदृशम् ? “मेघम्” इन्द्रो मेघाभूत्वा मेधातिथिं स्वर्गमनयत्
तस्मात् मेधातिथेर्मेघभूतमिति यावत् । इदानीं यजमानः
स्तोतृनाह—अपिच हे स्तोतारः ! “सुदीतयः” शोभनदीप्तयः

* ऋ० वे० ६, १, २८, १ ।

† ‘चक्षुषा दृष्टस्वरेण’—इति वि० ।

‡ ‘विप्राः ब्राह्मणाः’—इति वि० ।

¶ ‘अभिस्वरे—अभिस्वरौ यजमानान् अभिस्वरे यज्ञे’—इति वि० ।

“अद्भुतः” कस्याप्यद्भोग्धारः “वः” यूयं [छान्दसो वसादेशः]
 “तरस्विनः” कर्मसु स्तात्रेषु वा त्वरायुक्ताः सुन्तः इन्द्रस्य “कर्णे”
 ओत्र-समीपे “ऋक्भिः” अर्चनयुक्तैर्मन्त्रैः * [यद्वा ऋचो बह्व्यो-
 येषु सन्ति तैः स्तोत्रादिभिः] संस्तुतः इन्द्रा यथा युष्मदीयानि
 स्तोत्रादीनि शृणोति तथा सम्यगभिष्टुतेत्यर्थः ॥

“अभिस्वरे”-“अभिस्वरा”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ० २ ३ १ २ ० १ २
 समुरेभासोऽस्वरन्निन्द्रसोमस्यपीतये ।

१२ ० १ ० ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ ० ३ १ २
 स्वःपतिर्यद्विधेधृतव्रतोह्योजसासमूतिभिः ॥ ३ ॥ १४

‘रेभासः’ [रेभ्य शब्दे (स्वा० आ०) शब्दधितारः
 स्तोतारः [यद्वा, “रेभासः” कश्यप-पुत्रा रेभाः एतन्नामका
] “इन्द्रम् उ” इन्द्रमेव “समस्वरन्” † सम्यगशब्दयन्
 न् । किमर्थम् ? “सोमस्य पीतये” सोमपानाय “यद्”
 पतिः” स्वर्गस्य पालयिता धनस्य स्वामी वा इन्द्रः
 “वृधे” यजमानादिवर्धनाय भवति, तदा “धृतव्रतः” धृत-कर्मन्द्रः

* ‘ऋक्भिः—ऋग्यजुःसामभिः’—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, १, ३८, १ । “यदोम्”—इति च ऋ०-पाठः ।

‡ ‘समस्वरन्—सामभिर्गोपयन्ति’—इति वि० ।

रायिभा । सोअस्वरान् । इन्द्र० सोम । स्वपीतायो२३

४चायि । सो॒होयि । वो॒होयि । पतार॑यि॒र्या॒२३४दी ।

वृ॒धो॒ह्यायि । धृत॑व्रा॒२३४ताः । ह्यि॒जो॒२३४सा । हो॒

यि । समू॒३४ । तिभिः । ओ॒द्वा । ओ॒यि॒दी २ ३ ४ ।

वा (३) ॥ १३ * ॥ [१] १४

अथ प्रगाथरूपे तृतीयसूक्ते ।

प्रथमा ।

यो॒रा॒जा॒च॒र्ष॒णी॒नां॒या॒ता॒र॒थे॒भि॒र॒धि॒गुः ।

वि॒श्व॒ासा॒न्त॒रु॒ता॒पु॒तना॒नाञ्जे॒य॒ष्ठं॒योवृ॒त्र॒हा॒गृ॒णे ॥ १ † ॥

“यः” इन्द्रः “चर्षणीनां” मनुष्याणां “राजा” स्वामी,
“रथेभिः” रथैः “याता” आगन्ता च, “अधिगुः” अष्टतगमनो
ऽन्यैः, “विश्वामां” “पुतनानां” सेनानां “तरुता” तारकः,
“यः” च “वृत्रहा” वृत्रं हतवान्, “ज्येष्ठ” गुणैर्ज्यायांसं
तं महाभागमिन्द्रं “गृणे” स्तौमि ॥ १ ॥

* ज० गा० १३ प्र० २ सू० १ सू० १० ।

† ‘भरद्वाजस्य पृश्नायावाकं साम’—इति वि० ।

‡ ज० आ० ३, १, ४, १ (१ भा० ५६३ ४०) = ज० वे० ६, ५, ८, १ ।

अथ द्वितीया ।

१ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रन्तं शुभ्रपुरुहन्मन्त्रवसेयस्य द्विताविधर्त्तरि ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २
हस्तेन वज्रः प्रतिधायि दर्शतो महान् देवो न सूर्यः ॥ २ * ॥ १५

हे “पुरुहन्मन्” ऋषे ! त्वं “तम्” “इन्द्र” “शुभ्र” ॐ
हविःप्रदानादिना अलङ्कुरु । किमर्थम् ? “अवसे” रक्ष-
णाय च । एवमात्मा स्वात्मानं सम्बोध्य ब्रवीति—“यस्य”
तव “विधर्त्तरि” विधारके इन्द्रे “द्विता” § द्वित्वम् अस्ति,
—औग्यमनौग्यम् [तव शत्रून् हन्तुमयत्नं, तदनुग्रहाय अनुग्रह-
श्चेति द्वैतमस्ति]; तत्रौग्यं दर्शयति—“दर्शतः” दर्शनीयः
“महान्” प्रभूतः “वज्रः” “देवो न सूर्यः” द्योतमानः सूर्य इव
स्थितः, “हस्तेन” करेण “प्रति धायि” प्रतिनिहतो भवति ॥

* ऋ० वे० ६, ५, ८, २ ।

† पुरुहन्मन्—पुरुहन्मा नामऋषिः अस्य तृचस्य सञ्ज्ञानं परोक्षत्वं ब्रवीति
—इति वि० ।

‡ ‘शुभ्र’—शुभ्रं बलवत्तमम्—इति वि० ।

§ ‘स्तु’ इति वाक्यशेषः—इति वि० ।

§ ‘चितः, द्वितः, एकतः—इति ऋषयः ; तेषां मध्ये द्विताः’—इति वि० ।

॥ ‘हस्तेन वज्रः प्रतिधायि—हस्तेन गृहीत्वा वज्रः प्रति धेत् पाने सर्व-
प्राणिनां पीथं रसं शोणितादि पिबन्ने’—इति वि० ।

“हस्तेन”-“हस्ताय”-इति पाठौ, “महान्देव”-“महोदेवः”
—इति च ॥ २ ॥ १५

॥ पुंश्चि ॥ योराजारश्चर्षणीनां ह्यहाउ । यातारये
भिरध्रिगः । विश्वासाश्नाश्च । होवाश्हायि । रुता ।
पुतानाश्नाश्चम् । होवाश्हायि । ज्येष्ठांयोश्वाश्च ।
होवाश्हा । त्राहागृणे । इडाश्च ॥ (१) ज्येष्ठांयोश्च
त्रहागृणेहाउ । ज्येष्ठांयोश्च त्राहागृणे । इन्द्रान्ताश्च
श्च । होवाश्हा । भपुरुह । नन्नावाश्माश्चयि । हो
वाश्हायि । यस्यादाशयितारश्च । होवाश्हायि । वायि
धर्त्तरि । इडाश्च ॥ (२) यस्यदीर्घताविधर्त्तरिहाउ ।
यस्यद्विताविधर्त्तरि । हस्तायिनाश्वाश्च । होवाश्हा ।
जःप्रतिधा । यिदार्शाश्नाश्च । होवाश्हायि । महा

^१ न्दाश्विवारः । ^{१ २ २} द्योवाश्चायि । ^{१ २ २} नासूरियः । ^१ इडा २ ३

^१ भावः । ^१ ओरश्चपई । डा(३) ॥ १४ * ॥ [१]

^{५ ४ ४ २ ४ ५ ४ ४ ५} ॥ अभीवर्त्तम् । ^{१ २ २} योराश्जाश्चर्षणीनोवा । यातार

^{१ २} ये । ^{१ २ २} भिराध्वाश्विगूरः । ^{५ ४ ४ ५} वायिश्वासाश्चरश्चम् । तरुता ।

^{१ २ २} पुतानाश्नारम् । ^{२ १ २} ज्येष्ठांयोश्वार । ^{३ २} च्छाश्च । ^१ गारश्च

^{५ १ १ १} ५ । ^{५ ४ ४ २ ४ ५ ४ ५} णारश्च ४ ५ यि ॥ (१) ज्येष्ठाश्चोश्चवृत्रहागुणोवा ।

^१ ज्ययिष्ठयोव । ^{५ ४} च्छाश्गाशर्णायि । ^{१ २} आयिन्द्रन्तश्चूश्च

^{३ ४ ५} २३४ । ^{२ १ २} भपुरुश्च । ^{१ २} न्मन्नावाश्सारयि । यस्याद्वाशयिता

^{३ २} २ । ^१ विधाश्च । ^{३ १ १ १ १} तारश्च ४ ५ । ^{५ ४ २} रारश्चयि ॥ (२) यस्याश्चाश्वि

^{४ ५ ४ ५} ताविधर्त्तरोवा । ^{१ २ २} यास्यद्विता । ^{१ २} विधात्ताश्चरयि । द्वा

^{२ २} स्तेनवाश्चरश्च ४ । ^{५ ४ ५ ४} अःप्रतिधा । ^{२ १ २} यिन्दार्शाश्चरः । ^१ महा

२ ३२ १ ५११११
 न्दाशिवारः । नसू३ । रा२३४५ । या२३४५ः (३)

॥ ७ * ॥ [२]

५११ ० ४ ५ ४ ५ ११
 ॥ जनित्रायम ॥ योराजाश्चर्षणायिनाम । ऊवे

१११ १ १ १ १ १ १
 हो२यि । यातारथेभिराधाशियिगू२ः । विश्वासान्तरू

३ २ ३ ५ १११ १ १ २ २
 ता२ । पृताना२३४नाम् । ज्येष्ठा३०होयि । योवा३

१ २ २ १ १ १ ३ ५ १ १
 ०होयि । योवा३हो । च्छा । गार्णा २ ३ ४ औहो

५ १ २ ४ ५ ४ ५ ११
 वा ॥ (१) ज्येष्ठयो ३ वृत्रहागृणायि । ऊवेहो२यि ।

११ १ १ १ १
 ज्येष्ठयोवृत्रहागा १ र्णा२यि । इन्द्रन्त० शुम्भपुरुहार ।

३ १ ३ ५ १ २ १ १ १
 ग्मन्नावा२३४सायि । यस्या ३ होयि । दिता ३ होयि ।

२ १ १ ५ १ १ ५ २ ४ १ ५ ४ ५
 विध । तार२रा२३४औहोवा ॥ (२) यस्यहो३ताविधर्त्तरा

२ १ १ १ १ १ १ १
 यि । ऊवेहो२यि । यस्यद्विताविधार्त्ता१रा२यि । हस्ते

३ २ ३ ५ १ २ १
 नवजःप्रतिधार । यिदा३र्शा२३४ताः । मद्वा३होयि ।

१२ १ ११२ १ ५२२ १ ११
 देवाश्चो । नस् । रा२या२३४ औचोवा ॥ (३) जनिचार

११

४५म् ॥ १३ * ॥ [३] १५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायण्यस्य पञ्चमस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे ‡, प्रथमतश्चेत्—

प्रथमा ।

११ ३२ ३ २ ३ १ २२ ३क २२ ३२
 परिप्रियादिवः कविर्वयाँसिनप्तयोर्हितः ।

३ १ २ ३ १ २
 स्वानैर्यातिकविक्रतुः ॥ १ § ॥

“कविः” मेधावी “कविक्रतुः” क्रान्त-प्रज्ञः क्रान्त-कर्मा
 “नप्तयो” अधिषवणफलकयोः “हितः” निहितः सोमः “दिवः”
 द्युलोकस्य “परि प्रिया” अति प्रियाणि “वयाँसि” यावणः ॥

“स्वानैः”-“सुवानः”—इति पाठौ ॥ १ ॥

* क० गा० १८ प्र० २ अ० १ सू० १ । † ‘उक्तं साध्यन्दिनं सवनम्’—इति वि० ।

‡ ‘इदानीमाभवंमुच्यते’—इति वि० । § ‘और्णायवं साम’—इति वि० ।

§ इ० आ० ५, २, ४, १० (२ भा० २८) = ऋ० वे० ६, ७, २२, १ ।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
ससूनुर्मातराशुचिर्जातो जाते अरोचयत् ।

३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
महान्महीच्छतावधा ॥ २ * ॥

“जातः” उत्पन्नः “शुचिः” † विशुद्धः महान् हविरुत्तमः
“सः” सोमाख्यः “सुनुः” पुत्रः “मही” महती “च्छतावधा” ‡
यज्ञस्य वर्द्धयित्रो “जाते” विश्वस्य जनयित्रो “मातरा”
आत्मनो मातरो द्यावापृथिव्यौ “अरोचयत्” रोचयति
दीपयति ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
प्रप्रक्षयायपन्यसेजनाय जुष्टो अद्रुहः ।

२३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
वीत्यर्षपनिष्टये ॥ ३ ॥ १६

हे सोम ! “प्र प्र” अत्यन्तं “क्षयाय” तव निवास-भूताय-
“अद्रुहः” अद्रुहे अद्रुग्धे “पन्यसे” स्तात्रे “जनाय” मनुष्याय

* ऋ० वे० ६, ७, ३२, २ । † ‘शुचिः दीप्तः’—इति वि० ।

‡ ‘क्षतावधा—क्षतो यज्ञः तेन वर्द्धतः क्षतावधौ अथवा क्षासन्नं तेन वर्द्धते’—
इति वि० । ॥ ऋ० वे० ६, ७, ३२, २ ।

“वोति” वीत्यै भक्षणाय “जुष्टः” पर्याप्तः त्वं “पनिष्ठये” * स्तुतये
“अर्घ” अङ्गं प्रति गच्छ ॥

“अद्रुहः”-“अद्रुहे”—इति पाठौ, “पनिष्ठये”-“चनि-
ष्ठया”—इति च ॥ ३ ॥ १६

॥ और्णायवोत्तरम् ॥ परिप्रिया रदिवः कवायिः । व
या र होश्वा ण सिनप्रयो वोर्हिताः । खानैर्या र श्नी । ऊ
वा । होवा । होवा । ऊवा रयि । ईश्या । कविक
तो र । यार ३४ औ होवा ॥ (१) समनुमार् रतरा णुचायिः ।
जाता र होश्वा जाते अरो वोचयात् । महान्मा र श्नी । ऊ
वा । होवा । २ । ऊवा रयि । ईश्या । ऋता वृधो र ।
यार ३४ औ होवा ॥ (२) प्रप्रक्षया रयपन्यमायि । जना र हो
श्वा यजुष्टो वो अद्रुहाः । वीतिया र श्नी । ऊवा । होवा ।

२। ऊवा॒रयि॑ । ई॒श्या॑ । प॒निष्टयो॑र । या॒र३४औ॑हो

वा । ई॒श्या॒३४५॒म्(३) ॥ १५ * ॥ [१]

॥ औ॒र्णाय॑वाद्यम् ॥ प॒रिप्रि॑यादि॒वःका॒वीः । व॒यां॑
सि॒न॒प्र॒योर्दि॑ताः । स्वा॒नैर्या॑र॒शती॑ । आ॒या॒र । इ॒या

रई॒श्या । क॒वि॒क्रतो॑र । या॒र३४औ॑होवा ॥ (१) स॒सु॒नु

र्मा॒तरा॑शू॒चीः । जा॒तोजा॑ते अ॒रोच॑यात् । म॒हान्मा २ ३

हो । आ॒या॒र । इ॒या रई॒श्या । अ॒तावृ॑धो॒र । या॒र

३४औ॑होवा ॥ (२) प्र॒प्र॒क्षया॑य॒पन्या॑सायि । ज॒नाय॑जुष्टो

अ॒द्र॒हाः । वी॒ति॒या॒र॒र्षा । आ॒या॒र । इ॒या रई॒श्या ।

प॒निष्टयो॑र । या॒र३४औ॑होवा । ई॒र३४५॒(३) ॥ ८ * ॥ [२]

॥ वृ॒ह॒द्भार॑दाजम् ॥ प॒रिप्रि॑या । दि॒वःका॒वायिः ।

व॒यां॑सा॒र॒शयि॑ना । प्रि॒योर्दि॑ताः । स्वा॒नैर्या॑र॒शता॑यि ।

आ । औ३होवा । काविक्रतुः । इडार३ ॥ (१) ससूनु

र्मा । तराशुचासिः । जातोजार३ते । अरोचयात् ।

मथान्मार३ही । आ । औ३होवा । आर्त्तावुध । इडार

३ ॥ (२) प्रप्रशया । यपन्यसायि । जनाया३रजू । ह्यो

अद्भुदाः । वीतिया३रर्षा । आ । औ३होवा । पानि

ह्ये । इडार३भा३ध३ । ओ३३४५ई । डा(३) ॥ १० * ॥ [३]

॥ गौषूक्तम् ॥ परिप्रियादिवौ । ह्यौहोवाचासि ।

कवायिः । वयात्सिनप्रियौ३ । ऊवायि । ऊवा३यि ।

हायिता३ः । खानैर्यातिकवौ३ । ऊवायि । ऊवा३

सि । क्रात्वर३ः । हो३रवार३४ औ३होवा । अग्निराऊता

२३४५ः (१) ॥ ११ * ॥ [४]

॥ ईनिधनम्नागीयवम् ॥ परिप्रियादिवः कवा३यिरे ।

क्षमः” अतिशयेन दीप्तिमान् “त्वं हि” त्वमेव “अङ्ग” क्षिप्रं
 “घोषयन्” शब्दयन् शब्दं कुर्वन् “जनिमानि” देवसम्बन्धीनि
 जन्मान्यभिलक्ष्य “अमृतत्वाय” अमरणाय आगच्छेति शेषः ॥

“दैव्य”-“दैव्या”—इति पाठौ, “घोषयन्”-“घोषः”—इति
 च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२० १९ ३१२ ३ २३ ३१२ ३२
 येनानवम्बादध्यङपोर्नु*तेयेनाविप्रासआपिरे ।

३१२ ३ २ ५ १२३ १९५ २३ २३ १ २
 देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणोयेन अवाप्स्याशत ॥ २१ ॥ १७

“नवम्बा”‡ नवनीय-गतिः यद्वा नवभिर्मासैः सत्रस्थानु-
 ष्ठानात् “दध्यङ्”—एतन्नामकः अङ्गिराः “येन” सोमेन पणि-
 भिरपहृतानां “हारम्” “अपोर्णुते” अपच्छादयति विवृतम-
 कार्षीत् “विप्रासः” तत् मुख्याः सर्वे मेधाविनोऽङ्गिरसः “येन”
 च सोमेन “आपिरे” तैरपहृता गाः आप्नुवन् किञ्च “देवानाम्”
 इन्द्रादीनां “सुम्ने” सुखे यज्ञेन सञ्जाते सति “चारुणः” कल्या-
 णस्य “अमृतस्य” उदकस्य सम्बन्धीनि “अवाप्सि” अन्नानि

* “र्णु”—इति क० पु० पाठः । † ऋ० वे० ७, ५, १७, २ ।

‡ ‘नवम्बा’—नवा गावो यस्य असौ नवम्बा—इति वि० ।

“येन” च सोमेन यजमानाः “आशत” व्याप्नुवत् अलभन्त ; स
त्वं देवानाममरणायागच्छेति पूर्वेण सम्बन्धः ॥

“नवग्वा”-“नवग्वो”—इति पाठौ, “आशत”-“आनशुः”
—इति च ॥ २ ॥ १७

॥ बृहत्कम् ॥ तुवँही । अङ्गदैवा२ ३ या । पाक्.
मानजनिमानि । द्यूमत्तामा२ः । अमार्त्ता३त्वा३ । य
घोवा । पापयोईहायि ॥ (१) अमृता । त्वायघोषा२३
यान् । यायिनानववाद्ध्यङ् । आपो१णूता२यि । येना
वा३यिप्रा३ । सओवा । पापयिरोईहायि ॥ (२) येनवी ।
प्रासआपा२३यिरायि । दायिवाना३सुम्ने अमृत । स्या
चा१रूणा२ः । येनाआ३वा । सियोवा । शापुतोईहा
यि (३) ॥ १६ * ॥ [१]

॥ स्वारसीम् ॥ त्वं ह्यङ्गदैवाश्या । पवमानज
 निमानिद्युमा । ऊम् । तार३४माः । आमा ३ उवा ।
 तात्वा । यद्यो२३४वा । षाप्रयो ६ द्वायि ॥ (१) अमृत
 त्वायघोषाश्यान् । येनानवग्वादध्यङ्ङपो । ऊम् । णू
 २३४तायि । यायिना३उवा । विप्रा । सओ२३४वा ।
 पाप्रयिरो ६ द्वायि ॥ (२) येनविप्रासआपाशयिरायि । दे
 वानांसुम्ने अमृतस्यचा । ऊम् । रु२३४णाः । यायिना
 ३उवा । अवा । सियो२३४वा । शाप्रनो ६ द्वायि (३) ॥ १६ ॥ [२]

॥ शाङ्कुम् ॥ तुवंहिया । ए२ । गदा । विया ।
 पवमानजनिमानिमानिद्युमत्तार३माः । आमारत्तात्वा
 २३ । यद्यो२३४वा । षाप्रयो ६ द्वायि ॥ (१) अमृतत्वा ।
 ए२ । यघो । षयान् । येनानवग्वादध्यङ्ङपोरू२३तायि ।

आविना रेवायिप्रा२३ । सञ्चो२३४वा । पापुयिरो ई हा
 यि ॥ (२) येनविप्रा । ए२ । सञ्चा । पिरायि । देवा
 नात्सुन्ने अमृतस्यचारु२३णाः । यायिना रेञ्चावार२३ । सि
 योर३४वा । शापूतोईहायि(३) ॥ १८ * ॥ [३]

॥ सन्नासाक्षीयम् ॥ तुवा३४म् । द्वियङ्गदैविय । ओ
 द्वा । पवमः नजनिमानिद्यमन्ता रेमाः । आ रेमा । ता
 र३त्वा । यद्यौ३४हो । वाहा३४३यि । पार३४ यो ई हा
 यि ॥ (१) अमा३४ । तात्वायघोषयन् । ओद्वा । येना
 नवम्वादध्यङ्कुपोर्णू रेतायि । या रेयिना । वार३यिप्रा ।
 सञ्चो३४हो । वाहा३४३यि । पार३४यिरोईहायि ॥ (२)
 येना३४ । विप्रासञ्चापिरे । ओद्वा । देवानात्सुन्ने

अमृतस्य चारु रणाः । यारयिना । आरश्वा । सियौः

हो । वाचा ३४ ३यि । शा २३४ तो ६ हायि (३) ॥ १२ * ॥ [४] १७

अथ तृतीयल्लेखः—प्रथमा ।

सोमः पुनान ऊर्मिणा व्यंवारं विधावति ।

अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ १ ‡ ॥

“पुनानः” पूयमानः “सोमः” “ऊर्मिणा” स्वीयया धारया “अव्यम्” अवेः सम्बन्धिनं “वालं” पवित्रं “वि धावति” विविधं गच्छति । कौटुशः सोमः ? “पवमानः” पूतः “वाचः” स्तोत्रस्य “अग्रे” “कनिक्रदत्” पुनः पुनः शब्दं कुर्वन् विधावति ॥

“अव्यम्”-“अव्ये”—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

धीभिर्मृजन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तमत्यविम् ।

अभिन्निपृष्ठम्मतयः समस्वरन् ॥ २ ¶ ॥

“वाजिनं” बलवन्तं वा “नवनीये” वसतीवर्षाख्ये उदके

* ऊ० गा० १८ प्र० १ अ० १२ सू० १ । † ‘आतोषादीयं सामं’—इति वि० ।

‡ ऊ० ऋ० ६, २, २, ७ (२ भा० २१४ पृ०) = ऋ० वे० ५, ५, १०, ५ ।

¶ ऋ० वे० ५, ५, ११, १

“क्रीडन्त” सङ्ग्रीडमानम् “अत्यविम्” [अविशब्देन तद्ग्रीमकृतं पवित्रमभिधीयते] अतिक्रान्त-पवित्रं सोमस् ऋत्विजः “धीभिः” स्तुतिभिः * “मृजन्ति” शोधयन्ति [यद्वा, धीभिः—वर्णलोप-स्थान्दसः, धीतिभिः अङ्गुलीभिः मृजन्ति] किञ्च “त्रिपृष्ठं” [त्रीणि पवित्राणि द्रोणकलशाधवनीयपूतमृदात्मकानि पात्राणि स्पृशतीति त्रीणि सवनानि वा स्पृशतीति स तथोक्तः, तम्] सोमं “मतयः” स्तुतयः “अभि समस्वरन्” अभितः संस्तु-वन्तीति ॥

“मृजन्ति”—“हिन्वन्ति”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४
असर्जि कलशा अभिसौढांस्सप्रिनेवाजयुः ।

३ १ २ ३ ४ ५
पुनानोवाचञ्चनयन्नसिध्यदत् ॥ ३१ ॥ १८

“वाजयुः” यजमानानामन्नमिच्छन् “सौढान्” सेक्ता ः स सोमः “कलशान्” “अभि” लक्ष्य, कलशेषु “असर्जि” असृज्यत । तत्र दृष्टान्तः—“सप्रिर्न” यथा सर्पणशीलोऽश्वः ॥ सङ्ग्रामे सृज्यते तद्वत् । ततः “पुनानः” पूयमानः सोमं

* ‘धीभिः वृद्धिभिः’—इति वि० । + ऋ० वे० ५, ५, ११, २ ।

‡ ‘सौढान् बलवान्’—इति वि० ।

॥ ‘सप्रिर्न’—सप्रिणोऽभिधीयते—इति वि० । “सप्रिः”—इति निषण्णावस्थ-नामसु पञ्चमं पदम् (१, १४,) ।

“वाचं” मन्त्रं “जनयन्” उत्पादयन् “असिषदत्” पात्रेषु
स्यन्दते ॥

“मोढान्”--“मिल्हा”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १८

॥ आतीषादीयम् ॥ सोमः पुना । हो । नजर्मिणा

ईष । अव्यंवारं विधाश्वतो । अग्रे वा २३४५ । चा २

३४५ः । पवमा २३नाः । कारना २३४ औहोवा । क्रद

दे २३४५ ॥ (१) धीभिर्मजा । हो । तिवाजिनाईमे ।

वने क्रीडन्तमाश्वत्थायाम् । अभित्रा २३४५यि । पार

३४५ । घृन्मता २३याः । सारमा २३४ औहोवा । स्वर

ने २३४५ ॥ (२) असर्जिका । हो । लशा अमौईष ।

मोढान्सप्रिर्नवाश्वजायूः । पुनानो २३४५ वा २३४५ । च

अना २३याः । आरसा २ ३ ४ औहोवा । व्यददे २ ३

११

४५ (३) ॥ १७ * ॥ [१]

॥ शुचानम् ॥ सोमः पुना । नजर्मिणा । अयवा
 रा२म् । विधावतायि । अयेवाचा२ः । पव । मार२
 ना२३४ औहोवा । कनिकददे३ ॥ (१) धौभिर्मृजा । ति
 वाजिनाम् । वनेक्रायिडा२ । तमत्यवायिम् । अभि
 त्रायिपा२ । छम् । ता२या२३४ औहोवा । समस्वरचे
 ३ ॥ (२) असर्जिका । लशा२ अभायि । मीढान्त्माप्ता२
 यिः । नवाजयूः । पुनानोवा२ । चञ्च । ना२या २३
 ४ औहोवा । असिष्यददे३ उपा२३४५ (३) ॥ ८ * ॥ [२]
 ॥ शुध्यम् ॥ सोमः पुना २नः । जर्मिणोवा । अयं
 वाराम् । विधावतायि । अयेवाचः पवमानः क । ना२
 इयि । क्रदाउवा । अधिया२ ॥ (१) धौभिर्मृजा २न्ति ।
 वाजिनोवा । वनेक्रीडा । तमत्यवायिम् । अभिचिपृष्ठ

^{२ १ २ १} मृतयःसम् । ^२ आ२३ । ^{१२} खराउवा । ^{१२} अधिया२ ॥ (२)

^१ असर्जिका२ल । ^२ शा^१अभोवा । ^{२ १ १ १ १} मौठात्सप्रायिः । न

^{२ २ २ १} वाज्यूः । ^{२ २ १ २ २} पुनानोवाचञ्चनयन्न । ^{२ १ २ १} सा २ ३यि । ^२ ध्याउ

^{१ २} वा । ^१ अधिया२ । ^१ ए२३हिया३३३ । ^१ ओ २ ३ ४ ५ ई ।

डा (३) ॥ ४ * ॥ [३]

॥ क्रोशम् ॥ ^{२ २ १} सोमाः । ^२ पुनानानजर्म्भि । ^{२ २} णा । ^१ हो

^१ ई२ । ^{२ २ २ १} हो । ^२ वाहोयि । ^२ अव्यंकारंविधावतायि । ^{२ १} अग्रा

^२ यिवाश्चार३ः । ^{२ १ २} पाश्वामा३नाः । ^१ क्ना२३यिक्तादा३३३

^{२ २ १} त् ॥ (१) ^२ धीभीः । ^२ मृजन्तिवाजि । ^२ नम् । ^१ होई२ ।

^१ हो । ^{२ २ १} वाहोयि । ^{२ २} वनेक्रीडन्तमत्यायिम् । ^{२ १} अभायिन्ना२

^२ यिपा२३ । ^{१ १ १ १} ए३म्माता३याः । ^१ समार३खरा३३३न् ॥ (२)

^{२ १} असा । ^२ जिकलशा^१अ । ^२ मि । ^१ होई२ । ^{२ २} हो । ^{२ २} वा

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 होयि । मौद्वात्सप्रिर्नवाजयूः । पुनानोश्वार३ । चा३
 ज्ञानाश्यान् । असार३यिष्यदा३४३त् । ओ२३४५ई ।

डा (३) ॥ ११ * ॥ [४] १८

अथ चतुर्थद्वे—प्रथमा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 सोमःपवतेजनिनामतौना

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 जनितादिवोजनितापृथिव्याः ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 जनिताग्नेर्जनितासूर्यस्य

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 जनितेन्द्रस्यजनितीतविष्णोः ॥ १ ॥

“सोमः” अभिषूयमाणः “पवते” पात्रे प क्षरति । कौटुम्भः ?
 “मतौना” बुद्धीनां [यद्वा, मननीयानां] “जनिता” जनयिता,
 [“जनिता मन्त्रे (६, ४, ५३) ”—इति निपातनाखिलोपः]
 किञ्च “दिवः” द्युलोकस्य “जनिता” प्रादुर्भाषयिता, तथा

• क० गा० १५प्र० २अ० ११सा० ।

† ‘वात्सप्र’ साम सोमस्यायं कृतिः—इति वि० ।

‡ क० आ० ६, १, ४, ५ (१ भा० ११७४०) = ऋ० वे० ७, ४, ६, ५ ।

“पृथिव्याः” “जनिता”, “अग्नेः” “जनिता” प्रकाशयिता,
 “सूर्यस्य” सर्वस्य प्रेरकस्यादित्यस्य “जनिता”, “इन्द्रस्य”
 “जनिता” तेन मदस्य जनयिता “उत” अपि च “विष्णोः”
 व्यापकस्य “जनिता” जनयिता;—एतत्सर्वं सोमेऽभि धूयमाणे
 भवतीति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ २ ३ १ १ ३ १ २ २
 ब्रह्मादेवानाम्यदवीःकवीना*

३ १ २ ३ २ ३ १ २
 मृषिर्विप्राणाम्महिषोमृगाणाम् ।

३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
 श्येनोगृधाणां स्वधितिर्वनानां†

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
 सोमःपदिनस्येत्येतिरेभन् ॥ २ † ॥

“सोमः” एवरूपो भवति—“देवानां” स्तोत्रकारिणा
 मृत्विजां “ब्रह्मा” ब्रह्माख्यत्विक्स्थानीयो भवति [यद्वा, “देवानां”
 द्योतमानानामिन्द्रादीनां “ब्रह्मा” राजा भवति] तथा “कवीनां”
 कान्त-प्रज्ञानां “पदवीः” [स्वलन्ति पदानि साधुत्वेन यो योजयति
 स पदवीः, वी गत्यादिषु (अदा०, उभ०)—इत्येतस्मात् क्षिपि

रूपम्], तथा “विप्राणां” मेधाविनां मध्ये “ऋषिः” भवति
[यः परोक्षं पश्यति स ऋषिः “ऋषिर्दर्शनात् (निरु० २,
१-१)”—इति,] “मृगाणां” “महिषो” भवति महिषाख्यो
बलवान् राजा भवति तथा “मृगानां” पक्षिविशेषाणां “श्वेनः”
शंसनीयः पक्षिराजो भवति, “वनानां” [वनतिर्हि साकर्मा]
हिंसकानां छेदकानां मध्ये “स्वधितिः”—एतन्नामकच्छेदको-
ऽसि । एवमप्रभावः सोमः “रेभन्” शब्दायमानः सन् “पवि-
त्रम्” ऊर्णास्तुकेन कृतम् “अत्येति” अतिगच्छति * ॥ २ ॥

“अवाह याकः—“ब्रह्मादेवानामित्येष हि ब्रह्मा भवति देवानां देवनकर्माणा-
मादित्यरश्मौनां पदवीः कवीनामित्येष हि पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानानां मादित्य-
रश्मौनां ऋषिर्विप्राणामित्येष हि ऋषिणो भवति विप्राणां व्यापनकर्माणामादित्य-
रश्मौनां महिषो मृगाणामित्येष हि महान् भवति मृगाणां मार्गकर्मणामादित्य-
रश्मौनां श्वेनो मृगानामिति श्वेन आदित्यो भवति श्वायतेर्मतिकर्मणो मृग आदित्यो
भवति मृग्यते आनकर्माणो यत् एतस्मिंस्तिष्ठति स्वधितिर्वनानामित्येष हि स्वयं कर्मा-
णादित्यो यत् वनानां वननकर्माणां मादित्यरश्मौनां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् इत्येष हि
पवित्ररश्मौनामत्येति सूयमान एव एवैतत्सर्वमनुभवेत्ययि देवतमयाऽध्यात् ब्रह्मा देवा-
नामत्ययमपि ब्रह्मा भवति देवानां देवनकर्माणां मादित्याणां पदवीः कवीनामित्ययमपि
पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानानां मादित्याणां ऋषिर्विप्राणामित्ययमपि ऋषिणो भवति विप्राणां
व्यापनकर्माणां मादित्याणां महिषो मृगाणामित्ययमपि महान् भवति मृगाणां मार्गक-
कर्माणां मादित्याणां श्वेनो मृगानामिति श्वेन आत्मा भवति श्वायतेर्ज्ञान-कर्माणो
मृगानां मादित्याणां मृग्यतेर्ज्ञान-कर्माणो यत् एतस्मिंस्तिष्ठति स्वधितिर्वनानामित्ययमपि
स्वयं कर्माणां यत् वनानां वननकर्माणां मादित्याणां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् इत्यय-
मपि पवित्रमिति मादित्याणां सूयमानोऽयमेवैतत्सर्वमनुभवत्यात्मगतिं साचष्टे ॥ ”—इति
निरु० प० २, १९ ।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
 प्रावीविपदाचज्मिन्नसिन्धु

८ ९ १० ११ १२ १३ १४
 गिरस्तोमान्पवमानोमनीषाः ।

१५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
 अन्तःपश्यन्वृजनेमावराण्या

२३ २४ २५ २६ २७
 तिष्ठतिवृषभोगोषुजानन् ॥ ३ ॥ १८

“पवमानः” सोमः “मनीषाः” मनसईशिता हृदयङ्गमान्
 “प्रावीविपत्” प्रकर्षेण विपर्ययति † प्रेरयति “सिन्धुर्न” स्यन्द-
 मान-नदीव “वाचः” शब्दस्य “ज्मिन्न” सङ्घं यथा प्रेरयति
 तद्वत् । किञ्च “वृषभः” कामानामुदकानां वा वर्षकः सोमः
 “अन्तः” अन्तर्हितं वृक्षजातं ‡ “पश्यन्” “अवराण्य” दूर्बलैः
 वारयितुमशक्यानि “इमा वृजना” ¶ इमानि बलानि “आ
 तिष्ठति” आसीदति । किं कुर्वन् ० “गोषु जानन्” § गोषु
 जयाय जानानः सन् परवलानि प्रविशति ॥

“स्तोमान्”-“स्तोमः”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १८

० ऋ० वे० ७, ४, ७, २ । † ‘वेपयति’—इति वि० ।

‡ ‘अन्तः हृदये’—इति वि० ।

¶ ‘वृजना वृजनानि बिद्राणि शरीरावस्थितानि’—इति वि० ।

§ ‘गोषु जानन्’—गोशब्देन रश्मयः ता एव नाड्यो गृह्यन्ते ; वृषभो वर्षिता ;
 गोषु अप्सु नाड्यो जानन्—इति वि० ।

२२ २

॥ महावात्सप्रम् ॥ छाउहाउछाउ । ओ । होहो

१ २ १ २ १ २ १
व । ओ । होहोवा । सोमःपवा । तेऽजनि । ताऽ

२ २ २ २ २ २ २
मतीनाम् । मतीनाम् । मतीनाम् । जनितादावि ।

१ १ १ २ २ २ १
वोऽजनि । ताऽपृथिव्याः । पृथिव्याः । पृथिव्याः । ज-

१ २ २ १ २ २ २
निताग्रायिः । जनिता । सूऽरियस्या । रियस्या । २ ।

१ २ २ १ २ २ २
जनितेद्रा । स्याऽजनि । तोऽतविष्णोः । तविष्णोः । २ ।

१ २ २ २ २ २ २
ब्रह्मादेवा । नाम्यद । वीःकवीनाम् । कवीनाम् ।

२ २ १ २ २ २ २
कवीनाम् । ऋषिर्विवा । णाम्महि । षोऽमृगाणाम् ।

२ २ २ २ २ २ २
मृगाणाम् । २ । श्येनोष्ट्रधा । णास्वधि । तिर्वना

२ २ २ २ २ २ २
नाम् । वनानाम् । २ । सोमःपवायि । चाऽमति । एऽ

२ २ २ २ २ २ २
तिरेभन् । तिरेभन् । २ । प्रावीविपात् । वाऽचक ।

२ २ २ २ २ २ २
मिन्नसिधुः । नसिन्धुः । नसिन्धः । गिरःस्तोमान् ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

आ३४३यि । ती३रा५यिभाई५६न् ॥ (२) प्रावीविपात् ।
वा ३ चऊ । मिन्नसिधूः । गिरस्तोमान् । पवमा ।
नोमनीषाः । अन्तःपश्यान् । वृजने । मावराणी ।
उजनत् । आतिष्टतायि । वृषभः । गो ३४ ३ ।

जा५नाई५६न् (३) ॥ १ * ॥ [२]

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ सोमाऽ५ःप । वा३तारयिजनि
ता । मन्तीनाञ्जनितादिवोजनायि । ता३पार्था ३ यि
व्याः । जना३यिताग्नेर्जनि । तासूर३री । ऊम्मायि ।
या३स्या । जानितेन्द्रस्यजनिता३विष्णाउ ॥ (१) ष्णो
ब्रा । ह्लादेवानांपदवीःकवीनामृषिर्विप्राणाम्महायि । षो
३मार्मा३णाम् । श्येनो३रृग्राणा३स्वधिविवीनाना३र३
सो । ऊम्मायि । मा३ःपा । वायिचमत्येता ३ यिरेभा

१ १ १२ २ २ २ २
भान्ग्रा । वीविपद्वाचज्जग्मिं जसिन्धुर्गिरस्तोमान्यवमा ।

२ १ २ २ १ १ २ २ २
नोश्मानाश्चिषाः । अन्ता२ःपश्यन्वृजनेमाव । राणा

२ १ २ २ १ २ २
२३चा । ऊम्मायि । ताश्चिष्टा । तायिवृषभोगोषू२

३२ १ १ १ १
जानाउ । वा३४५(३) ॥ १० * ॥ [३]

१२ २ १ २ २ २
॥ श्यावाश्वम् ॥ सोमःपवा । तेजनितामता२यि

१ १ २ २ २ १
नाउया२ । जनितादिवोजनिताष्टथा२यिव्याउवा२३४ ।

३ २ ३ २ १ २ २ २ १ १ २ २ १
जना३४यिताग्नेः । जनितासूरियास्या२ । जानितेन्द्रा ।

२ १ ४ ५ ४ ५ १ २ २
स्याजनिता२३ । तोवा । वा५यिष्णोद्द्वायि ॥ (१) ब्रह्मा

२ १ २ २ १ २ १ २ २
दवा । नाम्यदवीःकवा२यिनाउवा२ । ऋषिर्विप्राणां

२ १ ३ २ ३ २ १ २
महिषोमृगा२णाउवा २ ३ ४ । श्येनो३४गृध्रा । णा२स्व

२ १ १ २ २ २ २ १
धितिर्वनाना२म् । सोमःपवायि । त्रामतिया २ ३ यि ।

४ ५ ४ ५ १ २ २ १ २ २ १
तोवा । रा५यिभोद्द्वायि ॥ (२) प्रावीविपात् । वाच

१ १ १ १ १ १ १ १
जग्मिन्सार्थिन्धाउवा २ । गिरसस्तीमान्यवमानीमना

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
र्यिषाउवा २३४ । अन्ता ३४ः पश्यान् । वृजनेमावराणा ।

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
र्यि । आतिष्ठतायि । वार्षभोगो २३ । पोवा । जाम्

५
नोद्दायि (३) ॥ १६ * ॥ [४] १८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य पञ्चमस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः ॥ ६ ॥

अथ तत्तत्रयात्मके सप्तमे खण्डेऽऽ,

प्रथमतश्चेत्—प्रथमा ।

३ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
अग्निं वोवृधन्तमध्वराणाम्पुरुतमम् । *

२ ३ २ १ १ १ १ १
अच्छानम् स ह्रस्वते ॥ १९ ॥

* क० मा० २३प्र० १५० १६सा० ।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निहोमीयं साम'—इति वि० ।

‡ 'इदानीमुक्त्यानि'—इति वि० ।

§ 'सौरभं ब्रह्मसाम वसिष्ठस्य प्रियतम मन्वावाकसाम'—इति वि० ।

§ मा० आ० १, १, २, १ (मा० १२७३०) = मा० वे० ७, ७, १०, ३ ।

“अध्वराणाम्” अहिंस्थानां बलिनां “नप्ते” बन्धुं “सहस्रते”
बलवन्तं [विभक्तिव्यत्ययः (३, १, ८५)] “वृधन्तं” ज्वालाभि-
वर्द्धमानं “पुरुतमम्” अतिशयेन बहुमग्निं हे ऋत्विजः ! “वः”
यूयम् “अच्छ” अभिगच्छत । उपसर्गश्रुतेर्यौग्यक्रियाध्याहारः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

अयं यथान आमुवत्त्वष्टारूपेव तच्छा ।

३ २ ३ ३ १ २

अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥ २ * ॥

“अयम्” अग्निः “नः” अस्मान् “तच्छा” विकर्त्तव्यानि
“रूपेव त्वष्टा” रूपाणि वर्द्धकिरिव “यथा” येन प्रकारेण “आ
भुवत्” आ भवति प्राप्नोति, तथैनमग्निमभिगच्छतेत्यर्थः । किञ्च
वयम् “अस्य” अग्नेः “क्रत्वा” † प्रज्ञानेन युक्ताः “यशस्वतः”
यशस्वन्तो ‡ भवामेति शेषः ॥ २ ॥

*

अथ तृतीया ।

३ १ ३ २ ३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २

अयं विश्वा अभिश्चि यो गिर्दे वेषु पत्यते ।

२ ३ ३ १ २

आवाजैरूपनोगमत् ॥ ३ ॥ २०

० ऋ० वे० ७, ७, १०, १ ।

† ‘क्रत्वा’—तृतीयेषा षष्ठी-स्थाने द्रष्टव्या क्रतोः—इति वि० ।

‡ ‘यशस्वतो यशसा सम्यशस्य’—इति वि० ।

॥ ऋ० वे० ७, ७, १०, ४ ।

मनुष्याणां “विष्वाः” सर्वाः “अग्निः” सम्पदः * “देवेषु”
देवानां मध्ये यः “अयम् अग्निः”† “अभिगच्छति, सः अग्निः
“नः” अस्मानपि “वाजैः” अग्नैः “उपागमत्” उपागच्छतु॥३॥२० ।

२ २ १ २ १
॥ स्वारसैन्धुक्षितम् ॥ अग्निवोवृधान्ताम् । आंध्वे

१ २ २ १ २ १ १
राणाम् । पुरुतामौ । होवाश्चायि । आक्शा र्नाम्ने २३ ।

२ १ ५ ४ ५ २ २ २ २ २
सहोर्३४वा । स्वाप्तोर्द्वायि॥(१) अयं यथानाभूवात् ।

१ २ २ २ १ २ २ १ १
त्वाष्टारूपे । वताक्षायौ । होवाश्चायि । आस्या र्नाम्ना

२ १ ५ ४ ५ २
त्वार३ । यशोर्३४वा । स्वाप्तोर्द्वायि॥(२) अयं वि

२ १ २ २ २ १ २ २ २
श्वाअभिश्चायाः । अग्निर्द्वावे । पुपात्यातौ । होवाश्चा

१ १ २ १ ५ ४ ५
यि । आवा र्जायिरू२३ । पनोर्३४वा । गाप्तोर्द्वा

यि (३)॥ २० ३ ॥ [१]

* ‘अभिअग्निः—अभिअग्निमालम्बनं सर्वाणामलम्बनानि’—इति वि० ।

† ‘अग्निः देवेषु भवति यदा अरणिभ्यां पत्यते । पत्यत इति शब्दस्य प्रयोगो न दोषः’—इति वि० ।

‡ ऊ० गा० १ प्र० २ अ० २० सा० ।

॥ सत्रासाह्यम् ॥ अग्रा ३४ यिम् । वोवृधन्तम् ।

ओइवा । अध्वराणाम्पुरुता रमाम् । आरच्छा । ना

रश्मि । सद्योश्चो । वाचा ३४ इयि । स्वार ३४ तोइहा

यि ॥ (१) अया ३४ म् । यथानआभुवत् । ओइवा ।

त्वष्टारूपेवतत्ता रया । आरस्या । क्रारत्वा । यशौश्

श्चो । वाचा ३४ इयि । स्वार ३४ तोइहायि ॥ (२) अया

३४ म् । विश्वाअभिअियः । ओइवा । अग्निर्देवेषुपत्या

रतायि । आरवा । जारइयिह । पनौ ३ चो । वा

चा ३४ इयि । गार ३४ मोइहायि (३) ॥ ११ * ॥ [२] २०

हे “इन्द्र !” “यद्” यस्मात् त्वं “हरौ”—एतत्सङ्गावशो*
 “यच्छ्वे” रथे योजयसि, तस्मात् “त्वत्” त्वत्तोऽन्यः कश्चित्
 “रथीतरः” अतिशयेन रथवान् “नकिः” नास्ति [अन्धे-
 षामीदृग्गन्धयुक्तरथाभावात्] “त्वा” त्वाम् “अनु” लक्ष्य “मज्मना”
 [बलनामैतत् (निघ० २, ८, २३)] बलेन सदृशोऽपि “न
 किः” न ह्यस्ति “स्वश्वः” शोभनाश्वो “न किः आनशे” न प्राप
 [इन्द्रश्च बलाश्वयोरसाधारणत्वात् इन्द्रसदृशो बलवान् अश्व-
 वान्] लोके कश्चिदपि नास्त्येत्यर्थः [न किद्वत्—“युष्मत्तत्तत्तु
 चन्तः पादम् (८, ३, ११३)”—इति षत्वम् । रथीतरः—
 अतिशयेन रथी ; तरपि “ईद्रथिनः”—इति ईकारान्तादेशः ।
 यच्छ्वे—यमेव्यत्ययेनात्मनेपदम् । स्वश्वः—बहुव्रीहावाद्युदात्तं
 हसौत्युत्तर-पदाद्युदात्तञ्च । आनशे—“अश्रोतेष (७, ४, ७२)”
 —इति अभ्यासादुत्तरस्य गुट् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
 इन्द्राय नूनमर्चतो वथानि च ब्रवीत न ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
 सुता अमत्सुरिन्द्वोज्येष्ठं जमस्य ता सहः ॥ ३ १ ॥ २१

* “हरौ इन्द्रस्य”—इति नैषध. कम् १, १५, १ ।

† अ० वे० १, ६, ४, ५ ।

हे ऋत्विजः ! “इन्द्राय” * “नूनं” क्षिप्रम्† “अर्चत” पूजनं कुरुत । एतदेव स्पष्टीक्रियते—“उक्त्यानि” अप्रगीत-मन्त्र-साध्यानि शस्त्राणि स्तोत्राणि च “ब्रवीतन” ब्रूत । “सुताः” अभिषुताः “इन्द्रवः” सोमाः त्वाम् “अमन्त्रु” आगत मिन्द्रं मत्तं कुर्वन्तु, अनन्तरं “ज्येष्ठ” प्रशस्यतमं “सहः” सहस्त्रिनं ब्रह्मवन्ताम् तमिन्द्रं नमस्यत नमस्कुरुत [ब्रवीतन—ब्रवीते लोटि “तप्तनप्तनघनाञ्च (७,१,४५)” —इति तनवादेशः । अमन्त्रु—मन्त्री हर्षे (भा०, प्रा०) छान्दसः प्रार्थनायां लुङ्, आगमानुशासनस्या-नित्यत्वादिङ्भावः । नमस्यत—“नमोवरिवचिचङ् (३,१,१८)” —इति क्यच् । सहः—“युगकारेकाररेफाञ्च वक्तव्याः—इति मत्वर्थीयस्य लुक् ॥ ३ ॥ २१

॥ वसिष्ठप्रियम् ॥ इममी२३ । द्रसुतम्विव । ज्येष्ठा
म् । अमा३र्त्तायम्मादा२म् । शुक्तास्यत्वा३ । भियार
क्षा२३४रान् । धाराओ२३४वा । आर्त्ताओ२३४वा ।
स्वसा५दनायि ॥ १) नकिष्टू२३ । वद्रथीतरः । चारो ।
यदी३न्द्रायच्छासा२यि । नकायिष्टूवा३ । नुमा२जमा२३४

* ‘इन्द्रायेति चतुर्थी’ द्वितीयार्धे द्रष्टव्या, इन्द्रम्—इति वि० ।

† ‘नूनं क्षिप्रतम्’—इति वि० ।

ना । नाकाओ२३४वा । सूवाओ२३४वा । श्वआधुनशा
 यि ॥ (२) इन्द्राया२३ । नूनमच्च । तोक्था । निचा३ब्रवी१
 ताना२ । सुताअमा३ । तुरी२न्दा२३४वाः । ज्यायि
 ष्ठाओ२३४वा । नामाओ२३४वा । स्यता५सहाः । हो
 धई । डा(३) ॥ १ * ॥ [१]

॥ आसिताद्यम् ॥ इममिन्द्रसुताम् । पिवा । ज्येष्ठम
 मर्त्तियम्मा२३दाम् । शूक्रा२स्यात्वा२ । भियत्तरान् ।
 धारा२अर्त्ता२ । स्यमोवा३ओ२३४वा । दा५नो६हा
 यि ॥ (२) नकिष्ठाद्रथायि । तरो । हरीयदिद्रयच्छा२३सा
 यि । नाका२यिष्टूवा२ । नुमज्मना । नाका२यिसूवा
 २ । श्वओवा३ओ२३४वा । ना५शो६हायि ॥ इन्द्रा
 यनूनमा । चता । उक्थानिचब्रवीता२३ना । सूता२

आमा^१२ । त्सरिन्दवा^१ः । ज्यायिष्ठा^१रन्नामा^१२ । स्यतो^१

वा^१ओ^१२३४वा^५ । सापु^४हो^५द्वायि^५(३) ॥ १० * ॥ [२]

॥ गौरीवितम् ॥ इमम् । इन्द्रा^१३ । सुतम्यिवा^४ ।

ज्येष्ठममर्त्तियन्मादा^१३म् । शूकस्यत्वा^१३१२३ । भियापु^४षं ।

रान् । धारा^१कृता^१३१२३ । स्यसोवा^४ । दा^५पुनो^५द्वायि^५ ॥ (१)

नाकिः^५ । तुवा^४३त् । रथीतराः^४ । हरीयदिन्द्रय^१कसा

३३यि । नाकिष्टुवा^१३१२३ । नुमा^४पुज्मना । नाकि^१सुवां ।

३१२३ । श्वओवा^४ । ना^५पुशो^५द्वायि^५ ॥ (२) इन्द्रा^५ । यनू^१३ ।

नमर्चता^४ । उक्थानिब्रवीतना^१३ । सूता^१अमा^१३१२३ ।

त्सुरी^४पुदवाः^१ । ज्यायिष्ठन्मा^१३१२३ । स्यतोवा^४ । सा^५पु

हो^५द्वायि^५(३) ॥ ३ † ॥ [३] २१

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
इन्द्रजुषस्वप्रवहायाहिशूरहरिह ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
पिबासुतस्यमतिर्नमधोश्चकानश्चारुर्मदाय ॥ १ ॥

यानि मया हवींषि दत्तानि तानि “प्र वह” “आ याहि”
आगच्छ “शूर” वीर्यवन् ! उपसर्गाक्षराणि—“हरिह” [अथवा
हरितवर्णा हया यस्य स हरिहयः, तस्य सम्बोधनं क्रियते—हे
हरिह ! छान्दसो यकारलापः] “पिबा”† “सुतस्य” सोमस्य उप-
सर्गाक्षराणि—“मतिर्नमधोश्चकानः”, “चारुः” शोभनः “मदाय”
भक्षय ॥ १ ॥

• ‘इदानीं’ चतुर्थेऽहनि षोडशी भवति । तस्य षोडशिनः महान् विचारः
इन्द्रजुषस्व समभवता मित्यारभ्य महान् विचारो निदःनकृतेत्युक्तः चतुर्भिर्अ-
क्षराणि कृता भवन्ति । तनुपसृत्य प्रवहादौनि उपसर्गाक्षराणि निरूप्यन्ते । तथा
सति आदिवयासां पादानां त्रीणि त्रीणि उपसर्गाक्षराणि पादानेषु भवन्ति—
इति वि० रवच—

प्रथमर्चि—“प्रवह”, “हरिह”, “मतिर्न”—इति नव,

द्वितीयर्चि—“मध्व”, “दिवोन” “स्वर्ज” इति नव,

तृतीयर्चि—“मिथोन”, “यतिर्न”, “भृगुर्न”—इति नव,

किञ्च प्रथमर्चि चतुर्थपदादौ च “मधोश्चकान”—इति सप्त, तदित्यं सङ्गलनवा
चतुर्भिर्अदुपसर्गाक्षराणि सम्यगन्ते । अथ च “स्वर्ज”, “मधोश्”—इत्युभयत्र
विमानस्य द्वाक्षरत्वेन पदस्य षड्विचारेण सम्पादितम् ॥

† “द्वयोऽक्षरिणः (१, २, १२५)” —इति दौर्घः ।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इन्द्रजठरन्नव्यन्नपुण्यस्वमधोर्दिवोन ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

अस्यसुतस्यखाऽऽर्जोपत्वामदास्सुवाचोअस्युः ॥ २ ॥

हे “इन्द्र !” “जठरम्” उदरं “नव्यं न” नवतरं. “पुण्यस्व” पूरयस्व “मधोः” मधुरस्य “दिवो न” “अस्य” सोमस्य “सुतस्य” अभिषुतस्य “स्वर्ग” स्वर्गस्येव “उप त्वा” उप समोपे त्वाम् “मदाः” “सुवाचः” शोभनवाचः “अस्युः” स्थितवन्तः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इन्द्रस्तुराषाणिमन्त्रेनजघानवृत्रयतिर्न ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

विभेदबलम्भृगुर्नससाहेशन्नून्मदेसोमस्य ॥ ३ ॥ २२

“इन्द्रः “तुराषाट्” [तुरि सीदति यः सः तुराषाट्] “मित्रो न” मित्र इव “जघान” “वृत्र” शत्रु “यतिर्न”—उपसर्गा-
चराणि “विभेद” भिन्दस्व “बल” बलीनाम दानवस्तं बलं
“भृगुर्न” त्रीणि त्रीणि पदान्तेषु उपसर्गाचराणि भवन्ति
“ससाह” सहितवान् “शत्रून्” “मदे” भक्षणे कृते सोमस्य
तथाच निविदापदे विहृतस्य षोडशिनः । अस्य मदे जरित
इत्यारभ्य बह्विनि वीर्ययुक्तानि कर्माणि* ॥ ३ ॥ २२

* एतत्तृचस्य व्याख्यानं विवरणकृतकृतानुक्तमेवेति ज्ञानधोर्विशेषः ।

॥ गौरीवितम् ॥ इन्द्र । जुषा३ । स्वप्रवहा । आ

याद्विष्टरहरिच्चार३ । पायिबासुता३१२३ । स्थमतिर्ना

प्रमधोः । चाकानश्वा३१२३ । रुर्मीवा । दाप्रयोद्वा

यि ॥ (१) इन्द्र । जठा३ । रन्नव्यन्ना । पुणस्वमधोर्हि

वीन्ना२३ । आस्यसुता३१२३ । स्थस्वर्नाप्रउपा । त्वाम

दाःसू३१२३ । वाचोवा । आप्रस्योद्वायि ॥ (२) इन्द्रः ।

तुरा३ । पाणिमन्त्रोना । जघानवृत्रयतिर्ना३३ । बायि

भेदवा३१२३ । लम्भृगुर्नाप्रससा । जेश्वन्मा३१२३ । दे

सोवा । माप्रस्योद्वायि(३) ॥ २ ॥ [१] २२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य पञ्चमस्याध्यायस्य

सप्तमः खण्डः ॥ ७ ॥

* “गौरीवितम्”—इति ख० पु० पाठः ।

† अ० गा० ३ प्र० १ अ० २ सू० ।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।

पुमर्थास्तुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ५ ॥

॥ इति तृतीयस्याह्वः-प्रपाठकः ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-

श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-

चार्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-

प्रकाशे उत्तराग्र्ये पञ्चमोऽध्यायः ॥

यस्य निष्कसितं वेदा यो वेदेभ्योऽस्त्रिंशं जगत् ।

निर्भमे तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ ३ ॥

॥ अथ षष्ठोऽध्याय आरभ्यते* ॥

तत्र,

गोवित्पवस्वेति प्रथमे खण्डे —

प्रथमा ।

१ १ १ ३ १ १ ३ १
गोवित्पवस्वसुविद्विरण्यवि

१ ३ १ १ १ १ १ ३ १ १ १
द्रे तोधाइन्दोभुवनेष्वर्पितः ।

२ ३ १ २ १ २ ३
त्वसुवीरोअसिसोमविश्ववित्त-

३ १ १ १ २ १ १ २ २
न्वानरउपगिरिमआसते ॥ १ १ ॥

हे “इन्दो” सोम ! त्वं “पवस्व” शरः । कौटुशस्व ?
“गोवित्” ॥ गवां लब्धः, “वसुवित्” § धनस्य लब्धः, “द्विरण्य-

* ‘इदानीं षष्ठमध्यायने’—इति वि० ।

† ऋ० ६० ७, ३, १८, ४ ।

‡ ‘पवस्व पूवस्व’—इति वि० ।

‘गोवित्’—गावो यस्य विद्यन्ते स गोवित्—इति वि० ।

§ ‘वसुवित्’—वसु धनं तेन तद्वात्—इति वि० ।

वित्' * हिरण्यस्य सम्भक्तः, "रेतोधाः" रेतोऽदकं तस्य धातो-
 वधीनां यद्वा रेतः प्रजनन-सामर्थ्यं तस्य धारयिता "भुवनेषु"
 उदकेषु "अर्पितः" ; भो सोम ! कौटुम्बस्त्वं ? "सुवीरीऽसि"†
 शोभनवीर्योऽसि भवसीति, "विश्ववित्" सर्वस्य वेत्तासि ।
 यस्मादेवं तस्मात् तादृशं "त्वा" त्वाम् "इमे" "नरः"‡ नेतारः
 "गिरा" स्तुत्या "उपासते"॥ ॥

"नरः"-विप्राः—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २
 त्वन्नृचक्ष्णाअसिसोमविश्वतः

१ २ ३ १ २ २ २
 पवमानवृषभताविधावसि ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
 सनःपवस्ववसुमद्विरण्यवद्वयत्

२ ३ १ २ ३ १ २
 स्यामभुवनेषुजौवसे ॥ २ § ॥

* 'हिरण्यवित्--हिरण्यविशिष्टं वसु'—इति वि० ।

† 'सुवीरः--शोभनवीरः'—इति वि० ।

‡ 'नरः--अलिङ्गः'—इति वि० ।

॥ 'उपासते--उप समीपे स्थित्वा आसते, समीपे उपविश्य गिरा स्तुतिं कृत्वा वा
 वाचा इमे आसते कृतिं कुर्वाणाः'—इति वि० ।

§ अ० वे० ७, १, १८, ४, ।

ओ “सोम !” त्वं “विश्वतः” सर्वतः सर्वेषु “भुवनेषु”^{*}
 “मृचक्षा”[†] असि” नृणां द्रष्टा भवसि । हे “पवमान” पुमान्
 सोम ! “वृषभ” अपां वर्षक ! “वाः” अपः “वि धावसि” विविधं
 गच्छसि, स त्वं “नः”[‡] अस्माकं “पवस्व” क्षर किञ्च “वसुमत्”
 बहुभिर्वसुभिर्वासकैर्गवादि-द्रव्यैर्युक्तं, तथा “हिरण्यवत्” बहुभिः
 हिरण्यैर्युक्तं धनं । वयञ्च वसुभिर्हिरण्यैश्च युक्ताः “भुवनेषु”
 लोकेषु “जीवसे” जीवितुं प्रभवः “स्याम” भवेम ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ २ ३ १२ २२ ३ १ ९
 ईशानइमाभुवनानिईयस

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २
 योजानइन्दोर्हरितःसुपर्णः ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३
 तास्तेक्षरन्तुमधुमद्घृतमय

१ २ ३ १ २ ३ १ २
 स्तवव्रतेसोमतिष्ठन्तुकृष्टयः ॥ ३ ण ॥ १

हे “इन्दो” सोम ! “ईशानः” सर्वस्य स्वामी त्वम् “इमा”
 इमानि “भुवनानि”[§] भूतजातानि “ईयसे” गच्छसि [ईङ्

* ‘भुवनेषु—भुवनानि चतुर्द्दश’—इति वि० ।

† ‘मृचक्षाः—नृणां चक्षुभूतः’—इति वि० ।

‡ ‘नः—अस्माभ्यम्’—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, ३, १९, २ ।

§ ‘भुवनानि—चतुर्द्दश’—इति वि० ।

गतौ (दि० आ०), “दिवादिभ्यः श्यन् (३,१,६८)” — इति श्यन्] । किङ्कुर्वन् ? “हरितः” हरितवर्णाः “सुपण्यः” सुपत-
नास्त्राश्वा रथे “युजानः” योजयन्, “ताः” सुपण्यः “ते” तव सम्ब-
न्धिभ्यः “मधुमत्” माधुर्वोपेतं “ष्टत” दीप्तं “पयः” उदकं “चरन्तु” ।
हे सोम ! तव “व्रते” कर्मणि तिष्ठन्तु “कष्टयः” * मनुष्याः सर्वे ॥
“ईयसे” — “वीयसे” — इति पाठौ ॥ ३ ॥ १.

॥ द्विरभ्यस्तं लौशोत्तरम ॥ गोवित्यवस्ववसुविद्विर ।

एयवायित् । एयवार३४५यित् । रेतो३१२३४ । धा३न्दो
भुवनेष्व । पिताः पिताः । तुवा३१२३४म् । सुवीरोअसि
सोमवि । श्रवायिक्चूर्वायित् । तन्त्वा३१२३४ । नरउप
गिरे । म३आ३सा५ता६५६यि ॥ (१) त्वन्नृचक्षाअसिसो
मवि । श्रवाः । श्रवार३४५ः । पवा३१२३४ । मानवृष
भताविधा । वसायिवसायि । सना३१२३४ः । पवस्वव
सुमद्विर । एयवाण्यवात् । वया३१२३४म् । स्यामभुवने ।
पुजा३यिवा५सा६५६यि ॥ (२) ईशानइमाभुवनानिई ।

* “कष्टयः—कवयः पण्डिताः मेधाविनः” — इति वि० ।

^{३ ३} यसायि । ^{३ १ १ १ १} यसा२३४५यि । ^{३ २} युजा३१२३४ । ^{२ २} नइन्दोहरितः

^{१ २ १ २} सुप । ^{३ २ २} णियाणियाः । ^२ तास्ता२१२३४यि । ^२ क्षरन्तु धु

^{१ २ १ २} मङ्गुतम् । ^{३ २} पयाःपयाः । ^{२ २ २} तवा३१२३४ । ^{२ २ २} व्रतेसोमतिष्ठ ।

^{३ २} तुका३र्ष्टा५या६पु६ः(३) ॥ ० * ॥ [१]

^{३ २ १ २ १ १ १} ॥ श्येनम् ॥ ^२ गोवित्पवस्ववसुवायित् । ^२ क्षार३यिरा ।

^{१ २ २} ख्याविद्रेतो३आउवा२३ । ^{३ २ ३ २} धाइया । ^{२ १ २} दोभुवन्धेषुवार्पायि

^२ ताः । ^{१ २ २} त्व५सौ३हो । ^{१ २ २} वायिरोअसा३१उवा२३ । ^{२ २ २} सोम

^२ णा । ^{१ २ २} विश्ववित्तन्वाना१रा२ः । ^{१ २ २} उयौ३हो । ^{१ २ २} गायिरेम

^२ आ३१उवा२३ । ^{२ २ २} ए३ । ^{१ २ १ २ २} सतआ३२ ॥ (१) ^{२ २ १ २ २} त्वन्नृचक्षाअसि

^{१ २} सो । ^{१ २} मा२३वायि । ^{१ २} श्वातःपवा३१उवा२३ । ^{१ २ २ २} मानणा ।

^{१ २ २} वृषभताविधावासायि । ^{१ २ २} सनौ३हो । ^{१ २ २} पावस्ववा३१उवा

^{२ २ २} २३ । ^१ सुमदा । ^२ क्षिरण्यवदया५स्या१मा२ः । ^{१ २ २} भवौ३हो ।

^{१ २} नाबिषुजा^१३१उवा^२३ । ^{२ २२२} ए३ । ^{२२२१११२} वसन्त्या^३३२ ॥ (२) ईशानइमा
^{२१} भुवना । ^१ ना^२३ई । ^{१ २२} यासेयुजा^३३१उवा^४३३ । ^{२२३२} नाइया ।
^{२ १} दोहरितः^१ सुपार्णायाः । ^{१२ ५ ५} तास्तौ^२३हो । ^{१ २} चारन्तुमा^३३१उवा
^{२ ३ २} २३ । ^१ धूमदा । ^२ घृतम्यस्तवा^३ब्रा३ता^४२यि । ^{१२ ५ ३} सोमौ^५३हो ।
^{१ २} तायिष्ठन्तु^१का^२३१उवा^३३३ । ^{२ २ २} ए३ । ^{१ २ २} दृयन्त्या^३३२(३) ॥ १८॥ [२३]१

अथ द्वितीयद्वये—

प्रथमा ।

^{१ २} पवमानस्य^१ विश्ववित्प्रते^{२ २ ३ १ २} सर्गा^३ च सृजत ।

^{१ २} सूर्यस्येव^{२ २ २ १ २} नरश्मयः ॥ १ १ ॥

“हे “विश्ववित्” विश्वस्य द्रष्टः सोम ! “पवमानस्य” चरतः
 “ते” तव “सर्गाः” सृजमाना धाराः “सूर्यस्येव रश्मयः”
 सूर्यस्य किरणा इव प्रकाशमानाः “न”—इति सम्प्रत्यर्थे ।
 इदानीं “प्रासृजत” प्रासृज्यन्त ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ ३ १ ३ १ ३ ३ १ ३ १ ३
केतुङ्कुण्वन्दिवस्परिविश्वारूपाभ्यर्षसि ।

३ १ ३
समुद्रःसोमपिन्वसे ॥ २ * ॥

हे “सोम !” “समुद्रः”† समुद्रं द्रवन्ति यस्माद्रसाः स समुद्रः
स त्वं “केतु”‡ प्रज्ञानं “कुण्वन्” कुर्वन् अस्माकं “विश्वारूपा”
विश्वानि रूपाणि “दिवः”§ अन्तरिक्षात् “अभ्यर्षसि”§ अभि
प्लवसे “पिन्वसे” नानाविधानि च धनानि अस्मभ्यं प्रयच्छसि ॥२॥

अथ तृतीया ।

३ १ ३ ३ ३ ३ ३ १ ३ ३ १ ३
जज्ञानोवाचमिथ्यसिपवमानविधर्मणि ।

१ १ ३ १ ३ ३ ३
क्रन्दन्देवोनमूर्यः ॥ ३ ॥ २

हे “पवमान” सोम ! “देवः न सूर्यः” द्योतमानः सूर्य इव
“जज्ञानः” प्रादुर्भूतस्त्वं “विधर्मणि” विधारके** दशापवित्रे
“क्रन्दन्” ध्वनन् “वाचम्” शब्दम् “इथसि” प्रेरयसि ॥

* ऋ० वे० ७, १, ३७, ३ ।

† ‘समुद्रः—समुद्रभूतस्त्वम्’—इति वि० ।

‡ ‘केतुर्ध्वजः तम्’—इति वि० ।

§ ‘दिवस्परि—सुलोकस्थोपरि’—इति वि० ।

§ ‘अभ्यर्षसि—आभिमुख्येन रक्षसि’—इति वि० ।

॥ ऋ० वे० ७, १, ३७, ४ ।

** ‘विधर्मणि—विविधे कर्मणि’—इति वि० ।

“जज्ञानः”-“हिन्वानः” —इति पाठौ, “क्रन्दन्” “अक्रान्” —
इति च ॥ ३ ॥ २

प्रसोमासइति सप्तर्चं तृतीयं सुक्तम् ;

तत्र, प्रथमा ।

१२ २२ १ १ २ ३ १ २
प्रसोमासोअधन्विषुःपवमानासइन्द्रवः ।

१ २ ३ १ २
श्रीणानाअप्सुवृञ्जते ॥ १ * ॥

“पवमानासः” पूयमानाः “इन्द्रवः” दीप्ताः “सोसासः”
सोमाः “प्राधन्विषुः” [धन्वति गतिकर्मा (निघ० २, १४, ६४)]
प्रगच्छन्ति किञ्च “श्रीणानाः”† गोभिः श्रयमाणाः “अप्सु”
वसतीवरीषुः‡ “वृजन्ते” गच्छन्ति [व्रज व्रजौ गतौ (म्या०, प०)]
सम्पृच्छा भवन्तीत्यर्थः ॥

“वृजन्ते”-“मृजन्त” —इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
अभिगावोअधन्विषुरापोनप्रवतायतीः ।

३ १ २ २ २
पुनानाइन्द्रमाशत ॥ २ ॥ ॥

* ऋ० वे० ६, ८, १४, १ ।

† ‘श्रीणानाः’—श्रीणं मिश्रणं, मिश्रायमाणाः—इति वि० ।

‡ ‘अप्सु’—सप्तम्या वज्रवचनमिदं तृतीया-वज्रवचनस्य स्थाने दृष्टव्यम्,

अङ्गिः—इति वि० ।

॥ ऋ० वे० ६, ८, १४, २ ।

“गावः” गमनशीलाः* “इन्द्रः” सोमाः “अभि अध-
 न्विषुः” दद्यापवित्रमभिगच्छन्ति । किमिव ? “प्रवता” प्रवण-
 वता देशेन “यतीः” गच्छन्त्यः “आपः नः” आपद्भवः†, पश्चात्
 “पुनाना” “इन्द्र” प्रणीयितुम् आश्रित व्याप्नुवन् ॥२॥

अथ तृतीया ।

१ २

३ १ २

२ २ ३ १ १

प्रपवमानधन्वसिसोमेन्द्रायमादनः ।

१

२ ३ १ २

२ २

नृभिर्यतोविनीयसे ॥ ३३ ॥

हे “पवमान” सोम ! “उन्द्राय” इन्द्रस्य “मादनः” मादयिता
 त्वं “प्रधन्वसि” प्रगच्छसि पवित्रम् । तदेवाह—“नृभिः” नेष्टभि
 ऋत्विग्भिः “यतः” गृहीतः‡ “विनीयसे”§ हविर्दानात्॥ ॥

“मादनः—“पातवे”—इति पाठौ ॥३॥

* ‘गावः—आदित्यरश्मयः उदकानि सोमरसा गावश्च’—इति वि० ।

† ‘आपोन—न-शब्द उपमाधीयः आपद्भव “प्रवता यतीः” यथा प्रवणेन आपो
 गच्छन्ति तद्वत् सोमेन अभिषूयमाणेन गावो धन-धान्य-देवताश्च प्रवणा भवन्ति,
 अत उक्तं पुनाना इन्द्रमाश्रित’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १४, २ ।

§ ‘यतः—नियतः संयत इति यावत्, अथवा यम् बन्धने ऋत्विग्भिर्बद्धः सोमवह-
 नेन’—इति वि० ।

§ ‘विनीयसे—विविधं नीयसे’—इति वि० ।

॥ ‘अथवा पवमान प्रधन्वसि पात’ प्रतोन्द्रपानाय तदर्थं हविर्दानात् विनीयसे’
 —इति ऋग्भेदेर्लक्षणा व्याख्या ।

अथ चतुर्थी ।

१३ १४१४ १२ १२२ २१ २
इन्दोयदद्रिभिःसुतःपवित्रमपरिदीयसे ।

१ १ १ २ २ १ २
अरमिन्द्रस्यधान्ने ॥ ४ * ॥

हे “इन्दो” त्वं “यद्” यदा “अद्रिभिः” यावभिः “सुतः” अभिषुतः “पवित्र” दशापवित्रं† “परिदीयसे” परिगच्छसौ-
त्यर्थः । तदा “इन्द्रस्य” “धान्ने” स्थानाय धारकायोदराय वा
“अरं” पर्याप्तेऽभि ॥

“परिदीयसे”--“परिधावसि”—इति पाठौ ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्व॑सोमन॒मादनःपवस्व॑चर्षणीधृतिः ।

१ २ १ २ ३ १ २
सस्त्रिर्योअनुमाद्यः ॥ ५ ‡ ॥

* हे “सोम !” “नृमादनः नृणां मादयिता “चर्षणीधृतिः”
चर्षणीभिः ऋत्विग्भिः प्रजाभिः धृतस्त्वं “पवस्व” । “यः” त्वं
“सस्त्रिः” शुद्धः “अनुमाद्यः” स्तुत्यः॥ स पवस्वेति समन्वयः ॥
“चर्षणीधृतिः”—“चर्षणीमहे”—इति पाठौ ॥ ५ ॥

* ऋ० वे० ६, ८, १४, ४ ।

† ‘पवित्रं’ परिदीयसे—द्वितीयैकवचनमिदं षष्ठ्यैकवचनस्य स्तोमे द्रष्टव्यम्
पवित्रस्योपरि दीयसे—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १४, ५ ।

॥ ‘अनुमाद्यः’—यस्य प्रज्ञात् देवता माद्यन्ती स अनुमाद्यः—इति वि० ।

अथ षष्ठी ।

१ १ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्ववृत्रहन्तमउवथेभिरनुमाद्यः ।

१ २ ३ १ २ १ २
शुचिःपावकोअद्भुतः ॥ ६* ॥

हे सोम! “वृत्रहन्तमः” शत्रूणामतिशयेन हन्ता त्वं “पवस्व”
‘क्षर । कौटुशस्वम्? “उक्थेभिः” शस्त्रैः “अनुमाद्यः” स्तुत्यः
“शुचिः” शुद्धः† “पावकः” अन्यस्य शोधकः‡ “अद्भुतः”
महान्गा, एवं महानुभावः पवस्व ॥

“वृत्रहन्तमः”—“वृत्रहन्तमः”—इति पाठौ ॥ ६ ॥

अथ सप्तमी ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २
शुचिःपावकउच्यतेसोमःसुतःसमधुमान् ।

३ १ २ ३ २
देवावीरघशंसृष्टा ॥ ७ § ॥ ३

“सुतः” अभिषुतः “मधुमान्” माधुर्योपेतः “सः” सोमः “शुचिः”
स्वयं शुद्धः “पावकः” शोधकश्च उच्यते तथा “देवावीः” देवाना-

* ऋ० वे० ६, ८, १४, ६ ।

† ‘शुचिः’—‘दोषः’—इति वि० ।

‡ ‘पावकः’—‘पावन स्त्रमायः’—इति वि० ।

§ ‘अद्भुतः’—‘अपूर्वः नान्यो द्वितीयः’—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ६, ८, १४, ७ ।

इअ०१ख०१ख०१] उत्तरार्धिकाः १ ५६७

मविता तर्पयिता* “अधसंसृष्टा” अधं पापं शंसतीत्यधशंसा
असुरास्तेषां हन्तेति चोच्यते ॥

“सुतःसमधुमान्”—“सुतस्यमध्वः”—इति पाठौ ॥ ७ ॥ ३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य षष्ठ्याध्यायस्य

प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय-खण्डे—

प्रकविरिति सप्तर्चं प्रथमं सूक्तम्;

तत्र, प्रथमा ।

११ ११११ १२३ १ १

प्रकविर्देववीतयेव्यावारेभिरव्यत ।

३ १ २२ ३१२ २२

साङ्गान्विश्वाअभिस्पृधः ॥ १ ॥

“कविः” मेधावी सोमः “देववीतये” देवानां पानाय “अव्या
वारेभिः” अविसम्बन्धिभिः वालैः दशापवित्रेण “अव्यत” अव्यते
प्राप्यते, “साङ्गान्” शत्रूणां साटाः३ सोमः “विश्वाः स्पृधः”
सर्वान् सङ्गमान् हिंसकान् वा अभिभवतीति शेषः ॥

“अव्यावारेभिरव्यत”—“अव्योवारेभिरर्षति”—इति पाठौ ॥ १ ॥

* ‘देवावीः—देवानां मध्वसूतः’—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, ८, १०, २१ ।

‡ ‘साङ्गान्—साधन-समाधेयः’—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

१२ १२ ३ २ ३ २४ ३ १ २ ३ १ २

सहस्रिवाजरितृभ्यवाजङ्गोमन्तमिन्वति ।

१ २ ३ १ २

पवमानःसहस्रिणम् ॥ २ * ॥

“स हि वां” स खलु “पवमानः” सोमः “जरितृभ्यः” स्तोत्रभ्यः
 “गोमन्तं” “बहुभिर्गोभिर्युक्तं” “सहस्रिणं” सहस्र-सङ्ख्याकां
 “वाजम्” अन्नम् “आ” आभिमुख्येन “इन्वति” व्याप्नोति प्रय-
 च्छेतीत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ २ १ २ ३ १ २ ३ २ २ १ २ २ २

परिविश्वानिचेतसामृज्यसेपवसेमती ।

१ २ ३ १ २

सनःसोमःअवोविदः ॥ ३ † ॥

हे “सोम !” त्वं “चेतसा” स्वीयेनास्मदनुकूलेन चित्तेन
 “विश्वानि” सर्वाणि धनानि “मती” मत्वा अस्मत्स्तुत्या
 “मृज्यसे” दशापवित्रेण शोध्यसे । ततः “पवसे” रसं चरसि ।

* ऋ० वे० ६, ८, १०, १ ।

† ‘सहस्रिणं—सहस्र-प्रोपण-समर्थम्’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १०, १ ।

एवम्भूतः “सः” त्वं “नः” अस्मभ्य “अवः” अन्नं* “विदः”†
देहीति शेषः ॥

“मृष्यसे”-मृष्यसे—इति पाठो ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

३१ २२ ३१ १ २२ ३ १ २ २

अभ्यर्षं बृहद्यशोमघवज्ञोध्रुवर्णयिम् ।

१ २ ३ २ ३ १ २

इषं स्तोत्रभ्यः आभर ॥ ४ ॥

हे “सोम !” त्वं “बृहद यशः” महती कीर्तिम् “अभ्यर्ष” अभि-
गमय, “मघवज्ञः” हविषज्ञः ॥ अस्मभ्यं “ध्रुवं” § रयिं “धर्म”
च अभ्यर्ष । किञ्च “इषम्” अन्नं ॥ “स्तोत्रभ्यः” अस्मभ्यम्**
“आभर” आहर ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी ।

१ ३२ ० १२ २२ २१ २

त्वराजेवसुव्रतोगिरः सोमाविवेशिथ ।

३ १ २

पुनानोवक्त्रे अद्भुत ॥ ५ ॥

* ‘अन्नः—अन्नं यशो वा’—इति वि० ।

† ‘विदः—विद ज्ञाने, विदुल्लसामे, विद सप्तायाम् । अन्नलाभकरः’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १०, ४ ।

॥ ‘मघवज्ञो यजमानेभ्यः’—इति वि० ।

§ ‘ध्रुवं स्थिरं’—इति वि० ।

॥ ‘इषम् अन्नं दृष्टिं वा’—इति वि० ।

०* ‘स्तोत्रभ्यः अन्नभ्यः’—इति वि० ।

†† ऋ० वे० ६, ८, १०, ५ ।

हे “वक्त्रे” यज्ञादेर्वोढः ! “अहुतः” * “सोमः” “सुवतः” सुकर्मा
“पुनानः” त्वं “राजा इव” “गिरः” अस्मदीयाः “स्तुतीः” आवि-
वेशिथ” आविशसि ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी ।

१२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सर्वान्हरणसुदुष्टरोमृज्यमानोगभस्त्योः ।

१ २ ३ १ २
सोमश्चमूषुसीदति ॥ ६ ॥

“स्तः” सोमः “वक्त्रिः” यज्ञादेर्वोढा “असु” अन्तरिक्षे वर्त्तमानः
“दुष्टरः” दुःखेन अन्यैस्तरणौघः “मृज्यमानः” शोध्यमानः
“गभस्त्योः” हस्तयोः‡ एवम्भूतः सन् “चमूषु” पात्रेषु
“सीदति” ॥ ६ ॥

अथ सप्तमी ।

३ २ ३ १ २ २ २ ३ २ ३ १ २
क्रौडुर्मखोनमृह्युःपवित्रसोमगच्छसि ।

१ २ ३ १ ३ १ २
दधन्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ७ § ॥ ४

* ‘अहुतमभूतपूर्व’—इति वि० ।

† अ० वे० ६, ८, १०, ६ ।

‡ ‘गभस्त्योः’—अङ्गुस्त्योः—इति वि० ।

॥ ‘चमूषु सीदति’—भक्षणीयेषु तिष्ठति—इति वि० ।

§ अ० वे० ६, ८, १०, ७ ।

हे “सोम !” “क्नीडु क्रीडन-शीलस्त्वं” “मंहयुः” * [मंहति-
दानकर्मा (निघ० १, २०, १०) दानेच्छुः “मखी न” दानमिव
“पवित्र” “गच्छसि” । किं कुर्वन् ? “स्तोत्रे” स्तुतिकर्त्रे
“सुवीर्य” शोभन-वीर्यं “दधत्” प्रयच्छन् ॥ ७ ॥ ४

अथ यवंयवमिति चतुर्त्तुवं द्वितीयं सूक्तं ;

तत्र, प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

यवंयवन्नोअन्धसापुष्टमुष्टमरिस्त्व ।

१ २ ३ १ २

विश्वाचसोमसौभगा ॥ १ ॥

हे “सोम” । त्व “नः” अस्मभ्यम् “पुष्टं पुष्टम्” ‡ अत्यन्तं
बहुलं “यवंयवं” § पुनः पुनर्द्युतं रसम् “अन्धसा” अन्नरूपया
धारया “परिस्त्व” चर [तत्र प्रार्थयितुस्तृणयात्यन्तं पीडितत्वाम्
“आबाधे च (८, १, १०)”—इति द्वितीयः । आबाधनमाबाधः
पीडा प्रयाक्तृधर्मा नाभिधेयधर्म इत्युक्तम्] । अपिच “विश्वा”
विश्वानि “सौभगा” § सौभगानि धनानि परिस्त्व अस्मभ्यं
प्रयच्छेत्यर्थः ॥ १ ॥

* ‘महयु — पूजयुः अथवा महयुः पूजाकारः—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७ १, १२, १ ।

‡ ‘परिस्त्वसान्या पृष्टि’ अन्धसान्यादिना वशेषिको पृष्टि र्यज्ञनिष्पा-
दिका—इति वि० ।

§ ‘यव—अन्धसे मूयानर्थं प्रतीयते । यवं आन्धविज्ञं चरपुरोडाशंभ्यो चेतु-
भूतम्’—इति वि०

§ “सुवीर्यसूक्तम् (७, १, ३६)”—इत्यादि रूपम् ।

अथ चतुर्थी ।

१ १ १ ३ १८ १२२२ १ १ ३ १ २
सोजिनातिनजीयतेहन्तिशत्रूमभीत्य ।

१२

सपवस्वसहस्रजित् ॥ ४ * ॥ ५

हे “सहस्रजित्” असङ्ख्यात-शत्रूणां जेतः ! † सोम ! “यः” भवान् “जिनाति” शत्रून् जयति स्वयं शत्रुभिः “न जीयते” । प्रकाशान्तरेण तदेवाह—“शत्रुमभीत्य” स्वयमेव शत्रुमागत्य “हन्ति” किन्तु तेन न हन्यते इति शेषः । एवञ्चूतः स त्वं धारुणा चर ॥ ४ * ॥ ५

अथ द्वात्मके तृतीयसूक्ते—

प्रथमा ।

१ १ १ २ २ १८ २८ २ २ २
यास्ते धारामधुश्च्युतोल्लस्यमिन्दजतये ।

१ १ २ २ २ १ २

ताभिः पवित्रमासदः ॥ १ ‡ ॥

भो “इन्दो” सोम ! “ते” तव “मधुश्च्युतः” मधुर-रसस्य च्योतयित्वा : “याः” “धाराः” “जतये” रक्षणाय “असदः” दृढ्यन्ते “ताभिः” धाराभिः त्वं “पवित्रम्” ¶ “आसदः” आसीद् ॥ १ ॥

* ऋ० वे० ७, १, १२, ४ ।

† ‘स पवस्व सहस्रजित् सहस्राणां जेता’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, २४, २ ।

¶ ‘पवित्र’—इशावसिषम्—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २
सोऽश्वेन्द्रायपीतयेतिरोवाराण्यव्यया ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २
सीदन्नृतस्ययोनिमा ॥ २ * ॥

हे सोम ! “सः” अभिषुतः त्वम् “अव्यया” अविमयानि
“वाराणि” वालानि “तिरः” तिरस्कुर्वन् “ऋतस्य” यज्ञस्य
“योनिं” कारणभूतं दशापवित्रम् “आसीदन्” आभिमुख्येन
उपविशन् “इन्द्राय” इन्द्रस्य “पीतये” पानाय “अश्वं” चर ॥

“ऋतस्ययोनिमासीदन्”-“योमावनेषु”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वत्सोमपरिस्रवस्वाद्विष्टोऽङ्गिरोभ्यः ।

३ २ १ १ २ २ २
वरिवोविद्वत्स्ययः ॥ ३ † ॥ ६

हे “सोम !” “स्वाद्विष्टः” स्वादुतमः “वरिवोवित्”‡ अस्त्र-
दभिसहितस्य धनस्य लभकश्च त्वम् “अङ्गिरोभ्यः” अङ्गिरसा-

* ऋ० वे० ७, १, २५, २ ।

† ऋ० वे० ७, १, २५, ४ ।

‡ ‘वरिवोवित्—वरिव=वरिष्ठः, वित्=लभः’—इति वि० ।

मर्षाव* “घृतं”दीप्तं† “पयः” क्षीरवत् सारभूतं रसं “परिस्त्रव”
परिस्तर ॥

“त्वंसोम”-“त्वमिन्दो” —इति पाठौ ॥ ३ ॥ ६ ॥

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराश्विनस्य षष्ठस्याध्यायस्य
द्वितीयः खण्डः ॥ २ ॥

अथ तृतीय-खण्डे—

प्रथम-तृचे, प्रथमा ।

१३ १९ २० २१ २२ २३
तवश्रियोवर्षस्येवविद्युतो

१४ २ २१ २ २१ २
मे श्विकित्रउषसामिवेतयः ।

१५ २५ २ १ २ २ १ २ २
यदोषधीरभिष्टष्टोवनानिच

११ २१ २३ १५ १५ २ २
परिस्त्रयश्चिनुषेअन्नमासनि ॥ १ ॥ ५॥

“अग्नेः” अङ्गनादि-गुण-युक्तस्य “तव” “श्रियः” रश्मि-
लक्षणा विभूतयः “चिकित्रे” प्रज्ञायन्ते । तत्र दृष्टान्तः—“वर्षस्येव”

* “अङ्गिरोभ्यः”—अङ्गिरो नाम देवास्तेभ्योऽर्थे—इति वि० ।

† “घृतमाव्यम्”—इति ऋग्वेदौघयाख्या ।

‡ “उक्तं” वक्ष्यमाणं । त्रिणवं सौमिकञ्च तम् । पञ्चमसचः—इति वि० ।

¶ ‘इदानीमाव्यनि; आग्नेयस्यसमाव्यम्’—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ८, ४, २०, ५ ।

॥ ५ ॥ “वर्षस्येव” —इति स-वकारः नूयते ।

“इमितः” प्रेषितश्च सन् “अवा” अत्रानि अदनीयानि
वनस्पत्यादीनि स्थावराणि “वेविषत्” व्याप्नुवन् “वितिष्ठसे”
इतस्ततो गच्छति; तदानीम् “अजरस्य” जरा-रहितस्य
“धंसतः” दहतः “ते” तव “शर्धांसि”† तेजांसि “यथा” “रथः”
रथिनः तद्वत् “आ पृथक्” पृथगायन्त गच्छन्ति ॥

“अजरस्य”-“अजराणि”—इति पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ २ १ १ २ १ १
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनम्

१ १ २ १ २ १ १ २
मग्निं होतारं परिभूतरम्यतिम् ।

१ २ १ २ १ १ २ ७
त्वामर्भस्य हविषः समानमिच्छामि

३ १ १ ३ १
महोवृणते नान्यन्वत् ॥ ३४ ॥ ७

“मेधाकारं” प्रज्ञायाः कर्तारं “विदथस्य” यज्ञस्य “प्रसा-
धनम्” प्रकर्षण साधकं “होतारं” देवानामाह्वितारं “परिभू-
तरम्” अतिशयेन शत्रूणां अभिभवितारं “मति” मन्तारं “यं”
“त्वाम्” “अग्निम्” वयस्य त्वजः वृणीमहे—इति शेषः ।
हे अग्नि ! “त्वामित्” त्वामेव “अर्भस्य” अल्पस्यास्य “हविषः”

* ‘इमितः—इषु इच्छावान्, इच्छासंयुक्तः’—इति वि० ।

† ‘शर्धांसि—वसानि’—इति वि० ।

पुरोडाशादिकस्य भक्षणार्थमिति शेषः । “समानमित्” सहैव ऋत्विजः “वृणते” प्रार्थयन्ते “महः” महतः सोमात्मकस्य हविषः भक्षणार्थं त्वामिव वृणते “त्वत्” त्वत्तः “अन्यम्” अतिरिक्तं देवं “न” वृणते ॥

“परिभूतरं”-“परिभूतमम्”—इति छन्दोगबह्वचानां पाठौ, “त्वामर्भस्य हविषः”-“तमिदमर्भस्य हविषि”—इति, “इत्वा अहो”-“तमि अहो”—इति च ॥ ३ ॥ ७

अथ द्वितीय-तृचे—प्रथमा ।

३ १ २ ३ १२ १२ ३ १२

पुरु रूणाचिध्यस्य वोनूनं वां वरुण ।

१ २ १ २ ३ १

मित्रव॑सिवा॑सुमतिम् ॥ १ * ॥

हे मित्रावरुणौ ! “वां” युवयोः “पुरु रूणा” [प्रथमार्थे तृतीया (३, १, ८५)† पुरोरपि बहु उरु बहुतरम् अथवा पुरु च तदुरु च पुरु] अत्यन्तं बहुतरमित्यर्थः, तादृक् “अवः” रक्षणं “नूनं” निश्चयेन “अस्ति हि” [हि प्रसिद्धौ; चिदिति पूरणः] हे “वरुण !” हे “मित्र !” “वां” युवयोः “सुमतिम्” अनुग्रह-बुद्धिम् “वसि”‡ सम्भजेयम् ॥ १ ॥

* ऋ० वे० ४, ४, ८, १ ।

† “अव सोः सुपांसुगुत्वाकारः”—इति ऋ०-भाष्या ।

‡ ‘वसि—वासवसि’—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तावात्सम्यग्द्रुक्काणेषमश्यामधामच ।

३ १ २
वयंवाग्मित्रास्याम ॥ २* ॥

हे “अद्रुहाणा” हे अद्रोन्धारौ ! “ता” तौ प्रसिद्धौ “वां” युवां सम्यक् स्तुमइति शेषः । स्तोतारः “वयम्” “इषम्” अने-
“धाम च” आधारम् “अश्याम” प्राप्नुयाम । हे “मित्रा,” मित्रावरुणौ ! “वां” स्तोतारौ वयं “स्याम” भवेम समृद्धा इति शेषः, युवाभ्यां स्वभूता वा स्याम ॥

“धामच”-“धायसे”—इति पाठौ, “मित्रा”-“रुद्रा”—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पातन्नोमित्रापायुभिरुतत्रायेथात्सुत्रात्रा ।

३ २ ३ १ २ ३ १ २
साद्यामदस्यन्तनूभिः ॥ ३† ॥ ८

हे “मित्रा” मित्रावरुणौ देवौ ! युवां “नः” अस्मान् “पायुभिः” रक्षणैः “पातं” रक्षतम् । “उत” अपिच “सुत्रात्रा” शोभनेन

* ऋ० वं० ४, ४, ८, ९ ।

† ऋ० वं० ४, ४, ८, ९ ।

त्राणेन “त्रायेथां” पालयेथाम् [इष्टप्राप्तगनिष्ट-परिहार-भेदेन भेदः—स्त्रोत्रादिवैकल्याच्छत्रोर्वा त्रायेथाम् अभिमत-प्रापणेन रक्षत-मित्यर्थः] । वयञ्च “तनूभिः” * पुत्रादिभिः संहिताः स्त्रीयै-
रङ्गैर्वा “दस्यून्” शत्रून् “सह्याम्” अभिभवेम ॥

“मित्रा”-“रुद्रा”—इति पाठौ, “त्रायेथां”-“त्रायेताम्”
—इति, “सह्याम्”-“तुर्याम्”—इति च ॥ ३ ॥ ८

अथ तृतीय-तृचे †—

प्रथमा ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २
उत्तिष्ठन्नोजसासहपीत्वाशिप्रे अवेपथः ।

१ १ ३ १ ३ २
सोममिन्द्रचमूसुतम् ॥ १ ‡ ॥

हे “रुद्र !” त्वं “पीत्वा” “ओजसा” बलेन “सह” “उत्तिष्ठन्” †
“शिप्रे” हनू “अवेपथः” अकम्पयः मदावेशादिति भावः । किं
पीत्वा ? “चमू” चम्बोरधिषवण-फलकयोः “सुतम्” अभिषुतम्
“सोमम्” ॥

“पीत्वा”-“पीत्वी”—इति पाठौ ॥ १ ॥

* ‘तनूभिः’—त्रिभिः युष्मभिः शरीरैरभिष्टुतैरिति वाक्यशेषः—इति वि० ।

† ‘ऐन्द्रसाध्यम्’—इति वि० ।

‡ य० वे० ८, ३८ = ऋ० वे० ६, ४, २८, ४ ।

॥ ‘उत्तिष्ठन्’—ओजसा सह वीर्येण उत्थानं कुरु । सोमं पिब । पीत्वा शिप्रे
जगन्नासिके च सप्तः सन् अवेपथः—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

अनुत्वारोदसीउभेस्पर्द्धमानमददेताम् ।

१ २ १ २ ३ १ २

इन्द्रयद्दस्युहाभवः ॥ २* ॥

हे “स्पर्द्धमान” शत्रुभिः सह स्पर्द्धाङ्गुर्वाण इद्र ! “त्वा” त्वाम्
“अनु” लक्ष्य “उभे रोदसी” उभे अपि व्यावापृथिव्यौ “मदेतां”
हृथेताम् “यद्” यदा “दस्युहा भवः” शत्रूणां हन्ता भवसि, तदा
मदेतामिति सम्बन्धः ॥

“स्पर्द्धमानमदेतां”—“लक्ष्यमाणमक्षपेताम्”—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

वाचमष्टापदीमच्चन्नवस्रक्तिमृतावृधम् ।

१ २ १ २ ३ १ २

इन्द्रात्परितन्वममे ॥ ३† ॥ ८

“अष्टापदीम्” अष्टाभिर्दिग्भिर्विदिग्भिश्चाष्टापदीं,‡ “नवस्रक्तिम्”
उपरिस्थितेनादित्येन नवस्रक्तिम् आसु दिक्षु व्याप्तामि-

* ऋ० वे० ६, ५, १८, ५ ।

† ऋ० वे० ६, ५, २८, ३ ।

‡ ‘अष्टापदीम्—चत्वारो वेदाः आद्याणि च अष्टापदानि’—इति वि०

त्यर्थः*, “ऋतावधम्” यज्ञस्य वृद्धिं कुर्वन्ती,† “वाचं” स्तुति-
मयीं, परिपूर्णात्‍‡ “तन्वं तनूं न्यूनां सतीम् ॥ “अहम्”
“परि ममे” न्यूनयत्तां करोमीत्यर्थः§ । कार्त्स्न्येन स्वरूपं स्तुत्या
विषयीकर्तुं भगवत्वादितिभावः ॥

“ऋतावधम्”—“ऋतास्पृशम्”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ८

अथ चतुर्थ-वृत्ते ॥—

प्रथमा ।

१२ १२ १२ १२ १२
इन्द्राग्नीयुवामिमेऽभिस्तोमा अनूपत ।

१२ ३२
पिवत् शम्भुवासुतम् ॥ १** ॥

हे “इन्द्राग्नी !” “युवाम्” “इमे” “स्तोमाः” स्तोतारः††
“अभ्यनूपत” अभिष्टुवन्ति । हे “शम्भुवा” सुखस्य भावयितारा
विन्द्राग्नी “सुतम्” अभिष्टुतम् अस्मादीयं सोमं “पिवतम्” ॥ १ ॥

● ‘नवसक्ति’—नव सक्तयः कोणाः ताः नविष्यवमानाः ऋचो नव अथवा
नवसक्तिं चिह्नत्सौमिकम्—इति वि० ।

† ‘ऋतावधम्’—ऋतो यज्ञः अथवा ऋत मन्त्रं तं वर्धयतीति ऋतावधम्—इति वि० ।

‡ ‘इन्द्रान् परि—उपरि’—इति वि० ।

¶ ‘तनु’—शरीरम्—इति वि० ।

§ ‘ममे—मिनोति’—इति वि० ।

॥ ‘ऐन्द्राग्नमाष्यम्’—इति वि० ।

** ऋ० वे० ४, ८, २४, ९ ।

†† ‘स्तोमास्त्रिष्टुप्’—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

यावाऽसन्तिपुरुस्पृहो नियतो दाशुषे नरा ।

१ २ ३ २ ३ १ २

इन्द्राग्नीताभिरागतम् ॥ २ * ॥

हे “नरा” नेतारौ ! “इन्द्राग्नी !” “वां” युवयोः स्वभूताः
 “पुरुस्पृहा” पुरुभिर्बहुभिः स्पृहणीयाः† “दाशुषे” हवींषि-
 दत्तवते यजमानार्थम् उत्पन्नाः “नियतः” अश्वाः “सन्ति”‡ हे
 इन्द्राग्नी ! “ताभिः” “नियुक्तिः” सह “आगतम्” आग-
 च्छतम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २

ताभिरागच्छतन्नरोपेदऽसवनं सुतम् ।

१ २ ३ १ २

इन्द्राग्नीसोमपीतये ॥ ३ ॥ १०

हे “नरा” नेताराविन्द्राग्नी ! [सूर्यतेऽभिसूर्यतइति सवनः
 सोमः] “इदं सवनम्”§ इमं सोमं “सुतम्” अभिषुतम् “उप”

* ऋ० वे० ४, ८, २४, ३ ।

† ‘पुरुस्पृहा—पुरुस्पृहो बहुभिः स्पृहणीयौ’—इति वि० ।

‡ ‘सन्ति—बहुवचनमिदं द्विवचनस्य स्थाने दृष्टव्यम्, सतः’—इति वि० ।

॥ ऋ० वे० ४, ८, २४, ४ ।

§ ‘इदं प्रातःसवनं सुतं सोमम्’—इति वि० ।

प्रति* [यद्वा, इदं प्रातःसवनम् उप अस्मिन् सवने सुतमभिषुतं
मोमं प्रति] “ताभिः” नियुङ्घिः† आगच्छतम् । किमर्थम् ?
“सामपीतये” अस्य सोमस्य पानार्थम् ॥ ३ ॥ १०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरायन्यस्य षष्ठस्याध्यायस्य

तृतीयः खण्डः‡ ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ-खण्डे ¶, प्रथम-तृचे—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २
अर्षा सोमद्युमत्तमोभिद्रोणानिरोरुवत् ।

१ ३ १ ३ १ ३ २
सीदन्योनौवनेष्ठा ॥ १ § ॥

हे “सोम” पवमान ! “द्युमत्तमः” अतिशयेन दीप्तिमान्
“वनेषु” अरण्येषु मध्ये॥ “योनौ” स्वकारण-भूते पर्वतादि-

* ‘उप—समीपे’—इति वि० ।

† ‘ताभिः—तृतीया-वज्रवचनमिदं, कौलिङ्ग’ इत्यथेन तैः पाञ्चजैः’—इति वि० ।
“नियुतो वायोः”—इति च निघ० १, १५, १० ।

‡ ‘उक्तं प्रातःसवनम्’—इति वि० ।

¶ ‘इदानीं माध्यन्दिनं सवनं मभिषीयते’—इति वि० ।

§ ऋ० षा० ६, १, २, ७ (२भा० ६२ प्र०) = ऋ० वे० ७, १, ४, ४ ।

॥ ‘वपु—उदकेषु’—इति वि० ।

व्यपिने एतन्नामकाय देवाय च,—एतेभ्यः सर्वेभ्यः सोमा
आगच्छन्त्वित्यर्थः ॥

“सोमा अर्षन्तु”-“सोमो अर्षति”—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ६ १ १ ३ १ १ ३ १ २ १ १ २
इषन्तोकायनोदधदस्मभ्य सोमविश्वतः ।

१ २ ३ १ २
आपवस्वसहस्रिणम् ॥ ३* ॥ ११

हे “सोम !” त्वं “नः” अस्माकं “तोकाय” † पुत्राय
“इषम्” अन्नं “दधद्” विदधत् प्रयच्छन् “सहस्रिणं” सहस्र-
सङ्ख्याकं धनं “विश्वतः” सर्वतः “अस्मभ्य” च “आपवस्व” आ-
प्रापयं अस्मभ्यं पुत्राय च अन्न-धनादिकं प्रयच्छेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ११

१ २ २ १ २ १ २ २
॥ शाकलम् ॥ अर्षासोमा रद्युमत्तमाः । अभिद्रोणा

२ १ २ २ १ १ २ १ १
निरोरु रश्वात् । सायिदा रन् । योनौवना २ ३ यि ।

१ २ ५ १ २ २ १
ऊम् । षू३४५वोद्हाधि ॥ (१) अस्मा इन्द्रा रयवायवायि ।

२ २ १ २ १ २ १
वरुणाय मरुद्भारश्याः । सोमारः । आर्षन्तु वा २ ३ यि ।

१ २ ५ १ २ २ १
 ऊम् । णा ३ ४ ५ वोद्वायि ॥ (२) इषन्तोका रयनोद
 २ १ २ १ १ २ १
 धात् । अस्मभ्यः सोमविश्वार३ताः । आपा २ । वास्व
 २ १ १ २ ५
 सहार३ । ऊम् । स्वा३४५यिणोद्वायि (३) ॥ ३* ॥ [१]

२ २ २ १ २ २ १ २
 ॥ वार्शम् ॥ अर्षासोमा । द्युमात्ता३माः । अभि

२ १ ० ३ ५ १ २ २
 द्रो । णा । निरोरुह२३४वात् । सायिदन्यानाः ३ ।
 ५ २ १ २ १ ३ ५ २ १ २
 ई३या । वने । पूरवार२३४औहोवा ॥ (१) अस्माइन्द्र ।

१ २ २ १ २ २ १ ० ३ १
 यवाया३वायि । वरुणा । या । मरु२ङ्गार३४याः । सो

२ १ १ ३ ५ २ २
 माअर्षा३ । ई३या । तुवि । णारवार२३४औहोवा ॥ (२)

२ २ १ २ २ १ ०
 इषन्तोका । यनोदा३धात् । अस्मभ्यम् । सो । मवा

३ ५ १ २ ५ २ १
 १यिश्वार२३४ताः । आपवस्वा३ । ई३या । सह । स्वा

३ ५ २ ५ ५
 रयिणार२३४औहोवा । ऊ३२३४पा (३) ॥ ४† ॥ [२]

१ २ १ २
 ॥ सन्तनि ॥ अर्षाहाउ । सोमद्युमा ३ १ उवा २ ३ ।

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० ३सा० ।

† ऊ० गा० ३प्र० १अ० ४सा० ।

^५ ता२३४माः । ^१ अभिद्रो^२णानिरो^२त्वा^१२३४पूत् । ^२ सीदाम्हा^१

^१ उ । ^२ योनौवना३१उवा२३यि । ^५ पू२३४वा ॥ (१) ^{११२} अस्मा

^२ इन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भियार३४५ः । ^{१२} सीमाच्चाउ । ^२

^१ आर्षन्तुवा३१उवा२३यि । ^५ ष्णार३४वे ॥ (२) ^१ इषन्तोका^{१२१२}

^{१२१} यनोदधदस्मभ्य^१ सोमविश्वता२३४पूः । ^{१२} आपाच्चाउ । ^१ वा

^२ स्वसच्चा३१उवा२३ । ^५ सी२३४णाम् (३) ॥ १३* ॥ [३]

^१ ॥ शाक्करवर्णम् ॥ ^२ आयिषाम् । ^२ तोकायनोदधात् । ^{२१२}

^१ अस्मभ्यम् । ^२ सोमवा२३यि । ^{१२} श्वता३१उवा२३ । ^२ ऊ ३४

^५ पा । ^{१२१} आपवा२३खा । ^३ सच्चस्त्रिणा३माउवा२३ । ^१ ऊ३२

^५ ३४पा (३) ॥ १८ ॥ [४]

^२ ॥ जराबोधीयोत्तरम् ॥ ^२ इषन्तोकोवा । ^{१२२१} यानोदधात् । ^{२१} अस्मा

भ्या२३५सो । मविश्वाताः । आपाषाश्वा२३सा । च ।

खिणो२४५ई । डा(३) ॥ १५* ॥ [५]

॥ मार्गीयवम् ॥ अप्सोहोवा । आयिन्द्रारं । य

वाया२३४वायि । वरुणाय । मरुद्वा१या२ः । सोमाः ।

चा । औ३होयि । आ२३४र्षा । त२वा२३४औहोवं ।

ए३ । ष्वा२३४५यि(२) ॥ २१ ॥ [६] ११

अथ प्रमाथरूपे द्वितीयसूक्ते—

प्रथमा ।

सोमउष्माणःसोतृभिरधिष्णुभिरवीनाम् ।

अश्वयैवहरितायातिधारयामन्द्रयायातिधारया ॥ १३ ॥

● ख० मा० ११ प्र० १ अ० १५ सा० ।

† ख० मा० १८ प्र० २ अ० २ सा० ।

‡ ख० मा० ६, १, २, ५ (२ भा० पृष्ठ०) = ख० मा० ०, ५, १३, ६ ।

“सोढभिः” अभिषृण्विभिः ऋत्विग्भिः “स्नानः” * अभिषूय-
माणः “सोमः” “अवीनां” “सुभिः” † [“मांसृतसूनामुपसख्या-
नम् (६, १, ६३) ”—इति सानु-शब्दस्य सु-भावः] समुच्छितै-
र्वलैः पवित्रैः “अधि याति” अधिकं गच्छति । “उ”—इति
प्रसिद्धौ । “अश्वया इव” वडवया इव “हरिता” हरित-वर्णया
धारया “याति” “मन्द्रया” मदकारिण्या द्रोणकलशमधि-
गच्छति ॥

“उष्वाणः”-उषवाणः—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ २३ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २
अनूपे गोमान् गोभिरक्षा सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।

६ २३ ३ १ २ २ १ २ २
समुद्रन्नमंवरणान्यग्मन्मन्दोमदायतोशते ॥ २३ ॥ १२

“गोमान्” गोयुक्तः सोमः “अनूपे” निम्ने देशे कलशे
“गोभिः” गोर्विकारैः क्षीरादिभिः § सह “अक्षाः” क्षरन्ति ।

* ऋचि तु “व्याणः”—इति मूर्द्धण्य-षकार-णकारोपेतः श्रूयते । तत्र “पूर्व-
पदात् (८, ३, १०६)”—इति षत्वम् सुतर्कात् णत्वञ्च ।

† “सुभिः”—इति मूर्द्धण्यपाठौ ऋचि, “पूर्वपदात् (८, ३, १०६)”—इति च
तत्र दीर्घः ।

‡ ‘अनूपे—उच्चैः प्रदेशे’—इति वि० ।

§ ‘गोभिः—उदक-मज्जातैः गोभिर्वा’—इति वि० ।

तदेवोच्यते—“सः” सोमः आत्मनोमिश्रणार्थं “दुग्धाभिः गोभिः” सह “अक्षाः” चरति [चरतेर्लुङि रूपम्] । किञ्च “समुद्रं न” यथा समुद्रमुदकानि गच्छन्ति तद्वत् “संवरणानि” सम्भजनीयानि रसरूपाणि अन्नानि* द्रोणकलशम् “अग्नन्” गच्छन्ति [गमेर्लुङि च्लेर्लुङि रूपम्] किञ्च “मन्दी” मदकरः सोमः “मदाय” मदार्थं “तोशते”† हन्यते अमिष्यते [तोशति बंधकर्मा (निघ० २, १८, २८)] ॥ २ ॥ १२

॥ मानवोत्तरम् ॥ ^१होवायि । ^२सोमउष्माणः^{१ २ १ १ २ १}सोत्वभिः ।
^१होवायि । ^{२ २}आधिष्णुभिरवीनाम् । ^{१ २ २}आश्वयेव । ^{१ ७ २}क्षरिता
^२या३१ । ^७तिधा^{१ ३}रार^४३४या । ^{१ १}मन्द्राया^२३४या३ । ^१तार
^३यिधार^{४ २ २}३४औहोवा । ^२रार^५३४या । ^१होवायि । ^{२ १ २ २}मन्द्रया
^{१ २ २ २}यातिधारया । ^१होवायि । ^{२ २ २ २}मन्द्रयायातिधारया । आ
^{७ २ २ २}नूपे । ^{१ ७ २ २}गोमान्गो३१ । ^३भार^५यिरार^{२ २ १}३४क्षाः । ^{२ २ १}सोमोदूर३
^२ग्धा३ । ^{१ १}भार^३यिरार^{४ २ २}३४औहोवा । ^३आ^५२३४क्षाः ॥ (२)

* ‘संवरणानि—उदकानि’—इति वि० ।

† ‘तोशते—तुशि आप्रौ आपयति’—इति वि० ।

^१ होवायि । ^{२ २ २ १ २} सोमोदुग्धाभिरक्षाः । ^{१ २} होवायि । ^२ सोमोदु
^२ ग्धाभिरक्षाः । ^२ सामुद्रन्न । ^{७ १} सावरणा३१ । ^{१ ७ १} नियार^१आ२३
^५ गमान् । ^{१ १} मन्दायिमार३दा३ । ^{१ ३} यास्तो२३४ औहोवा ।
^१ आ२३४ते(३) ॥ ५॥ [१]

^{१ २ १ २} ॥ आनूपन्ध्यश्वम् ॥ ^२ सोमाःसोमाः । ^{१ २} उध्वाणा३ःसोतृ
^{१ २} शभो२ः । ^{१ २} आधिष्णुभिः । ^१ आवाशयिना२म् । ^१ आश्व
^१ रयेवा२ । ^{१ २ २ २ १ २} हरितायातिधारा२३या । ^{१ २ २} मन्द्राया३या३ ।
^१ तार३इधा३ । ^५ रा३४५योईहायि ॥ (१) ^{१ २ १ २} मन्द्रामन्द्रा । ^२ या
^२ यातीइधारा१या२ । ^{१ २ २} मान्द्रयाया । ^{१ २} तिधारा१या२ ।
^१ आनू२पेगो२ । ^{१ २ २ २ १} माङ्गोभिरा२इक्षाः । ^{१ २ १ २} सोमोदूहग्धा३ ।
^१ भार३यि३ । ^{४ २} राआ२३४५क्षोईहायि ॥ (२) ^{१ २ २} सोमाःसोमाः ।
^{२ ५} दुग्धा३भायिरा१क्षा२ः । ^{१ १ २ २} सोमोदुग्धा । ^{१ २} भायिरा१क्षा

इअ०४ख०२सू०१,२,३] उत्तराच्चिकः ।

६२३

रः । सामू२द्रान्नारः । संवरणानियार३म्मान् । मन्दा
ग्रिमा३दा३ । यार३तो३ । शा ३ ४ ५ तो ई चायि(३) ।
॥ ६* ॥ [२]

॥ वा॒म्रम् ॥ सोमउ॒घ्राणः॑ सो । चा३हा३यि । त॒र
३४ । भिस्तृ॒भोवा । अ॒धाहो॒रयि । ष्णुभा॒यिर्हो॒रः ।
अ॒वा॒शयि॒ना॒रम् । आ॒श्वथे॒व । च॒रायि॒ताया । ति॒धा
उ॒वा३ । ऊ॒र३३४पा । र॒या॒र । मा॒न्द्रा॒रया॒या॒र ।
ति॒धा । रा॒र॒या॒र३४ औ॒होवा ॥ (१) म॒न्द्रया॒याति॒धा ।
चा३हा३यि । रा॒र३४ । या॒रयो॒वा । मा॒न्द्राहो॒रयि ।
या॒याहो॒र । ता॒यि॒धा॒श॒राया॒र । आ॒नू॒पे॒गो । मा॒न्गो ।
भि॒राउ॒वा३ । ऊ॒र३४पा । अ॒श्वा॒रः । सोमो॒रदू॒ग्धा॒रभि
रा॒र । चा॒र३४ औ॒होवा ॥ (२) सोमो॒दुग्धा॒भिरा । चा३

^२हा३यि । ^१आ२३४ । ^२क्षाः^५क्षोवा । ^{१२}सोमोहो२यि ।

^१दुग्धाक्षो२ । ^१भायिरा१क्षाः२ । ^१सामुद्रन् । ^१संवारा

^१णा । ^{३९}नियाउवा३ । ^२ऊ३४पा । ^१अग्मा२न् । ^१मान्दी

^१श्मादा२ । ^{१२}यतो । ^१शारता२३४औक्षोवा । ^{५२}ऊ३२३४

^५पा(३) ॥ ७* ॥ [३]

॥ अग्नेस्त्रिणिधनम् ॥ ^{१२}सोमउय्वा । ^१णः^५सोतृ२३४भीः ।

^{२१}अधायिष्णु ^२भिरा३१उवार३ । ^५वी२३४नाम् । ^२आश्वाये२

^५३४वा । ^{२१२२१}हरितायातिधा३१उवार३ । ^५रा२३४या । ^२मा

^१न्द्राया२३४या । ^५तिधा३१उवार३ । ^२रा२३४या ॥ (१)

^२मन्द्रयाया । ^१तायिधारा२३४या । ^५मन्द्रयायातिधा३१उ

^५वार३ । ^२रा२३४या । ^१आनूपे२३४गो । ^१माङ्गोभिरा३१

^५उवार३ । ^२आ२३४क्षाः । ^५सोमोदू२३४ग्धा । ^२भिरा३१

उवार३ । आ२३४क्षाः ॥ (२) सोमोदुग्धा । भायिरा२

इक्षाः । सोमोदुग्धाभिरा३१उवार३ । आ२३४क्षाः ।

सामूद्रा२३४न्ना । संवरणानिया३१उवार३ । आ २ ३४

गमान् । मान्दीमा२३४दा । यतो३आउवार३ । शां

२३४ते (३) ॥ ८* ॥ [४]

॥ अभीवर्त्तः ॥ मन्द्रा३या३याऽतिधारयोवा । मान्द्र

याया । तिधारा१या२ । आनूपेगो३१२३४ । मान्गो ।

भायिरा१क्षा२ः । सोमोदूग्धा१ । भिरा३ । आ२३४

५ । आ२३४५ः (२) ॥ ३† ॥ [५]

॥ कालेयम् ॥ सोमोदूग्धाभिरक्षाः । सोमोदुग्धा ।

भिरक्षा२३ः । समुद्रन्ना३ । सार३४म् । वरणानि ।

* क० गा० ३ प्र० १ ख० ८ सा० ।

† क० गा० ८ प्र० २ ख० ३ सा० ।

‡ “महाकालेयम्”—इति ख० पृ० पाठः

^१ आ^२श^१मा^१न् । म^१न्दा^१यि^१म^१दौ । वा^२३४३ओ^२३४वा । यतो^५

श^४तायि । हो^४५ई । डा(२) ॥ ४* ॥ [६]

॥ मान^२वा^२द्यम् ॥ म^२न्द्र^२या^२या । ति^२धा^५रा^५२३४या ।

तायि^३धा^५रा^२ २३४या । मा^५न्द्र^१या^२या । ति^१धा^२रा^२श^२या २ ।

अ । नू । पे । गो^{१२}मा^{२२}न्गो^१३ । भा^१र^२यि^१रा^२२३४क्षाः । सो^{१२}मो^{२२}

दु^१ग्धा^२२३ । भा^१र^२यि^५रा^२२३४ओ^५हो^५वा । आ^२२३४क्षाः(२) ।

॥ १३† ॥ [७]

॥ आ^२ग्ने^२स्त्रि^२णि^२धनम् ॥ अ^२नू^२पे^२गो । मा^२न्गो^२भा^२यि^२रा

२३४क्षाः । सो^५मो^{१२}दु^२ग्धा^२भि^२रा^२३१उ^२वा^२२३ । आ^२२३४क्षाः ।

सा^२मू^५द्रा^२२३४न्ना । सं^२व^२र^२णा^२नि^२या^२३१उ^२वा^२२३ । आ^२ २ ३ ४

ग्मा^५न् । मा^२न्दी^२मा^२३३४दा । यतो^२३आ^२उ^२वा^२२३ । श्रा^२

३४ते(२) ॥ ३‡ ॥ [८]

* क० गा० ८प्र० २ अ० ४ सा० ।

† क० गा० ८प्र० २ अ० १३ सा० ।

‡ क० गा० १८प्र० २ अ० ३ सा० ।

॥ वैष्णवाद्यम् ॥ सोमउष्वा । णः सो रतृभायिः । तृ
 मिः । अधिष्णुभिरा र्वीनाम् । वीनाम् । अश्वयेवह
 रितायातिधा ररया । रया । मन्द्रयायातिधा ररया रर ।
 रा र । या र ३४ । औहोवा ॥ (१) मन्द्रयाया । तिधा र
 रया । रया । मन्द्रयायातिधा ररया । रया । अनूपे
 गोमान्गोभिरा ररत्ताः । ताः । सोमोदुग्धाभिरा ररत्ता रर ।
 आ र । क्षा र ३४ । औहोवा । सोमोदुग्धा । मि
 रा रत्ताः । ताः । सोमोदुग्धाभिरा ररत्ता रर । आ र ।
 क्षा र ३४ । औहोवा ॥ (२) सोमोदुग्धा । भिरा ररत्ताः ।
 क्षाः । सोमोदुग्धाभिरा ररत्ताः । ताः । समुद्रन्नसवर
 णानियो गमान् । गगन् । मन्दौमदायतो रशता ररयि ।
 शार । तार ४३ । औहोवा । ऊ र र ३४ पा (३) ॥ १८ ॥ ८१

॥ वैष्णवोक्तम् ॥ ^{१२ १} सोमः । ^{२ १} सोमाः । ^२ उष्वाणः ^२ सोतृ
^१ भिः । ^{१ २} अधाधिष्णूश्भायिः । ^{१ २} आत्मीश्चो । ^१ वायिना
^१ म् । ^२ अश्वयेवहरितायातिधा ^{२ २ २} राश्या । ^{१ २ १} मन्द्रात्मीश्चो ।
^{१ २ १ १} यायातिधोश्शवा । ^{५ ४ ५} राधयोईहायि(१) ॥ २०* ॥ [१०]

॥ यौक्तसुचम् ॥ ^{१२ १} सोमउष्वाणः ^{२ १} सो । ^१ तृभायिः । ^{१ १} अ-
^{१ १} धिष्णुभिरवाश्शयिनाम् । ^१ आश्वार । ^{१ २} येवहरितायाति
^{१ २} धाराश्श्या । ^२ मान्दार् । ^{१ २ १ १} यायातिधोश्शवा । ^{५ ३} राश्श
^५ य ॥ (१) ^{२ १ २ २ २} मन्द्रयायातिधा । ^१ रया । ^{२ २ २ १ २} मन्द्रयायातिधारा
^१ श्या । ^{१ २ २ २ २} आनू । ^{२ १} पोगोमान्गोभिराश्शक्षाः । ^२ सोमा
^१ रः । ^{१ १ १} दूग्धाभिरोश्शवा । ^{५ ३ ५} आश्शक्षाः ॥ (२) ^{१ २ २} सोमोदु
^{१ २ १ १} ग्धाभिरा । ^{२ २} क्षाः । ^{२ १ १} सोमोदुग्धाभिराश्शक्षाः । ^१ सामू ।
^१ द्रन्नसंवरणानियाश्शगमान् । ^१ मान्दी । ^{१ २ १ १} मादायतोश्श
^{५ ३ ५} वा । ^{१ १} शाश्शते(३) ॥ ११ ॥ [११] १२

अथ तृतीय-दृष्टे—

प्रथमा ।

१२ ३२ ३ २४ ३ १४ २४ ११ १
यत्सोमचित्रमुक्थग्रन्धिव्यम्यार्थिवं वसु ।

१२ ३ १४ १५
तन्नः पुनान्नाभर ॥ १* ॥

हे “सोम !” “यत्” “चित्र” चायनीयम् “उक्थ्यम्” ।
स्तुत्यं “दिव्यं” दिवि भवं “पार्थिवं” पृथिवी-सम्बन्धं यत्
“वसु” धनमस्ति “तत्” “नः” अस्मभ्यम् “पुनानः” पूयमानः
सन “आभर” आहर ॥ १. ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वृषा पुनान आयूष्पिस्तनयन्नधिबर्हिषि ।

२ २ २७ १ १ १
हरिः सन्योनिमासदः ॥ २३ ॥

हे सोम ! “आयं षि” यजमानादीनामृत्विजां जीवितकालान् .
 “पुनानः” शुद्धान् कुर्वन् “वृषा” कामानां वर्षकस्त्वं “स्तनयन्” .
 शब्दं कुर्वन् “अधि बर्हिषि” [अधीति सप्तम्यर्थानुवादी]
 आस्तीर्णे दर्भे “हरिः सन्” हरितवर्णः सन् “योनिं” स्वकीयं
 स्थानमण् “आसदः” आसीद ॥

* अ० वे० ६, ८, ९, ११ ।

† 'पक्ष्य'—नामरूपम्—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, ८, ९, १ ।

॥ 'योनिं—द्रोणकलशम्'—इति वि० ।

“आयूषि”-“आयुःषु”—इति पाठौ, “आसदः”-“आस-
दत्”—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

^{३ १ २} युव॑^{१ २} हि॒स्थः^{३ १ २} स्वः^{३ १ २} पती॑ इन्द्रश्च सोमगोपती ।

^{३ १ २} ई॒शाना॑ पि॒प्यत॑ न्धियः ॥ ३* ॥ १३

हे “सोम !” त्वम् “इन्द्रश्च” युवं हि” युवां खलु “स्वःपती”
सर्वस्य स्वामिनौ “स्थः” भवथः । तथा “गोपती” गवां पालकौ
“ईशाना” ईश्वरौ सन्तौ “धियः” अस्मदीयानि कर्माणि
“पिप्यतम्” प्याययत ॥

“युवं हिस्थः स्वःपती”-“युवं हिस्थः स्पर्पती”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १३

^{१ २} ॥ शै॒शवम् ॥ यत्सोम॑ चित्रमु॒क्थायाम् । दि॒व्यम्यार्थि॑

^{१ २} वं॒वसू । तन्नः॑ पू॒र३४॒ना । न॒आ३भा॑ पू॒रा६५६ ॥ (१) वृषा

^{१ २} पु॒नान॑ आयू॒षी । स्तन॑ यन्नधि॒र्वा॒र्चिषायि॑ । च॒रिः सा२३

^४ ४न्यो । नि॒मा३सा॑ पू॒दा६५६ः ॥ (२) युव॑ हि॒स्थः सुवः॑ पा

० ऋ० वे० ६, ८, ९, २ ।

† ‘गोपती—गवां पती, उदकानामादित्यश्वीनां वा’—इति वि० ।

‡ ‘धियः—बुद्धयः’—इति वि० ।

॥ ‘पिप्यतं—पालयतम्’—इति वि० ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

ती । इन्द्रश्चसोमगोपतायि । ईशाना२३४पी । प्यता

४
इन्धाप्रयाईपु६ः(३) ॥ ८५ ॥ [१] १३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य षष्ठस्याध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डेऽर्चः प्रथम-तृचे—

प्रथमा ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इन्द्रोमदायवावृधेशवसेवृत्रहानुभिः ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

तमिन्मृदत्स्वाजिषूतिमर्भेह्वामर्भे

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

सवाजिषुप्रनोविषत् ॥ ११ ॥

* क० गा० ३ प्र० १ सू० १ सा० ।

† 'उक्ती माध्यान्दिनः प्रथमानः'—इति वि० ।

अतोऽनन्तरं विवरणलता इहैव शक्तीः प्रसृत्य ता एव व्याख्याताः । तथाहि—
'इदानीं' दृष्टानि भवन्ति, तत्र पञ्चमेऽर्चनि शक्त्यर्थः दृष्टं भवति ता उच्यन्ते ; —इन्द्रो-
देवत-ब्राह्मणानि परिभाषासिद्धानि "विदा सधवन्" सर्वज्ञः लं सधवन्—इत्यादि ।
प्रवक्ष्येति श्रुत्ये उत्तराग्रन्योपपन्नं सप्तानाम्पञ्चार्चिकः न तु ग्रन्थान्तरच्छन्दोपार्चिकपरिशिष्ट-
भूतः, परमेतदतीव चित्रं मूलपुस्तकदर्शनेन तथाहि व्याख्याता ।

‡ 'वार्ध्वाङ्गिरं ब्रह्मसाम'—इति वि० ।

¶ क० गा० ५, १, ३, ३ (१ भा० ८३६ प्र०) = क० वे० १, ६, १, १ ।

“वृत्रहा” वृत्रस्यावरकस्य वृष्टि-निरोधकस्य मेघस्यासुरस्य वा हन्ता । यद्वा, आवरकाणां शत्रूणां हन्ता, “इन्द्रः” “मदाय” हृषार्थं “शवसे” [बलनामैतत् (निघ० २, ८, ३) बलार्थञ्च “नृभिः” यज्ञस्य नेष्टभिः ऋत्विग्भिः “वृधे” स्तोत्र-शस्त्र-रूपाभिः स्तुतिभिः प्रवर्द्धितो बभूव । स्तुत्या हि देवता प्राप्त-बला सती प्रवर्द्धते । “तम् इत्” तमेवेन्द्रम् “महत्सु” प्रभूतेषु “आजिषु” सङ्ग्रामेषु “जति” रक्षां कुर्वन्तमितिशेषः “हवामहे” अस्माकं रक्षणाय आह्वयामहे । [“उत” अपिच “ईम्” एनम् एवभूतमिन्द्रम्*] “अर्भे” अल्पे सङ्ग्रामे हवामहे अस्माभिराहुतः सचेन्द्रः “वाजेषु” सङ्ग्रामेषु “नः” अस्मान् “प्राविषत्” प्रावतु प्रकर्षेण रक्षतु ॥ [“जतिमर्भे” — “उतेमर्भे” — इति पाठौ ॥ वावृधे — वृधेः कर्मणि लिट् तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घत्वम्* । नृभिः — “सावेकाच (६, १, १६८)” — इति प्राप्तस्य विभक्त्युदात्तत्वस्य “नृचान्यतरस्यां (६, १, १८४)” — इति प्रतिषेधः । हवामहे — ह्वयतेलिटि “ह्वः (६, १, ३३)” — इत्यनुवृत्तौ “बहुलञ्छन्दसि (६, १, ३४)” — इति सम्प्रसारणम् , शपि गुणावादेशौ । अविशत् — अवरक्षणे (स्वा०, प०) लेटग्रङ्गागमः, “इतश्च लोपः (३, ४, ८) — इति इकारलोपः, “सिब्वहुलं लेटि (३, १, ३४) — इति सिप् , तस्यार्द्धधातुकत्वात् वलादिलक्षण इट्] ॥ १ ॥

* ऋग्वेदोद्य-पाठमनुसृत्येदं व्याख्यानम् ।

+ परं चिदमेतत् — “संहितायामभ्यासस्य अन्येषामपि दृश्यते इति दीर्घत्वम् । तुजा-दित्वे हि तूतुजान् इति बत् पदकाले दीर्घः श्रूयेत” — इति ऋग्वेद-व्याख्यावसरेऽयमेव साधयः ।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ ३ ३ १ २ ३ २
असिद्धिवीरमेन्योसिभूरिपराददिः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २
असिद्धस्यचिद्धोयजमानाय

३ १ २ १ २ १ २ १ २
शिक्षसिसुन्वतेभूरितेवसु ॥ २० ॥

हे “वीर !” शत्रु-क्षेपण-कुशलेन्द्र ! त्वं “सेन्यः असि” सेनार्ही भवसि, त्वमेकोऽपि सेना सदृशो भवसीत्यर्थः । “हि” यस्मादेवं तस्मात् प्रभूतं शत्रूणां धनं “पराददिः” परादाता शत्रूणां पराङ्मुखं यथा भवति तथा आदाता “असि” भवसि “दभ्रस्य चित्” अल्पस्य नामैतत्त्वा अल्पस्यापि तव स्तोतुः § “वृधः” वर्द्धयितासि, तथा “यजमानाय” यागं कुर्वते “सुन्वते” सोमाभिषवं कुर्वते पुरुषाय “शिक्षसि” अपेक्षितं धनं ददासि [शिक्षतिर्दानकर्मा (निघ० ३, २०, ८)] यस्मात् “ते” तव वसु*

* ऋ० वे० १, ६, १, ९ ।

† विवरण-नये ‘वीरसेन्यः’—इत्येकं पदम्, अतएवं व्याख्यातम्—वीरसेन्यः—

वीराः सेन्या यस्य असौ वीरसेन्यः—इति । परितत् पदग्रन्थ विवक्ष्य, तत्र “वीर १२२ स सेन्यः”—इति छेद-स्वरयोर्दर्शनात् ।

‡ ‘द्वौति पदपूरणः’—इति वि० ।

॥ “दभ्रम्”—इति निघण्टौ तृतीयस्य द्वितीये ऋक्षनामसु अष्टममिति दर्शनात् ।

§ ‘दभ्रस्य—ध्वंसकस्य’—इति वि० ।

धनं “भूरि” बहुलं अक्षयं धनं विद्यते तस्मात् ददासीति भावः ॥ [पराददिः—ङुं दाञ् दाने (जुहो० उ०) “आट्टगमहन जन (३, २, १७१)” —इति कि-प्रत्ययः; लिङ्ङावाद् द्विवचने ऋत्वम्, “आतो लोप इटि च (६, ४, ६४)” —इत्याकारलोपः । वधः—वधेरन्तर्भावितव्यर्थादिगुपध-लक्षणः कः । सुन्वते— “शतुरनुमः (६, १, १७३)” —इति विभक्तेरुदात्तत्वम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ १ १ २ ३ १ १ २ १ २
यदुदीरतआजयोधृष्णवेधीयतेधनम् ।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ ३ ३ ३ १ १ २
युङ्क्ष्वामदच्युताहरीक्चनःकंवसौ

३ १ १ ३ १ २
दधोऽस्माद्इन्द्रवसौदधः ॥ ३ ॥ १४

[अत्रेदमाख्यानम्—‘रहूगण-पुत्रो गीतमः कुरु-सृञ्जयानां† राज्ञां पुरोहित आसीत्, तेषां राज्ञां परैः सह युद्धे सति स ऋषिः अनेन सूक्तेन इन्द्रं स्तुत्वा स्वकीयानां जयं प्रार्थयामास’—इति । तस्य च तत्पुरोहितत्वं वाजसनेयिभिरास्मात्—“गीत-मोह वै राहूगण उभयेषां कुरु-सृञ्जयानां‡ पुरोहित आसीत्”—इति ।] “यत्” यदा “आजयः” सङ्ग्रामाः “उदीरते” उद्गच्छन्ति उत्पद्यन्ते तदानीं “धना” धनं “धृष्णवे” यो धृष्णुः धर्षयिता

* ऋ० शा० ४, १, २, ८ (१भा० ८४४ प्र०) = ऋ० ८० १, ६, १, २ ।

†, ‡ “सञ्जयानां”—इति रा० शा० पु० पाठः ।

शत्रूणां जेता भवति तस्मै “धीयते” निधीयते, जयतो धनं भवतीत्यर्थः । हे इन्द्र! त्वं तादृशेषु युद्धेषु प्रवृत्तेषु “मदच्चाता” शत्रूणां मदस्य गर्वस्य चावयितारौ “हरी” त्वदीयावश्वौ “युङ्क्” स्व-रथे योजय, योजयित्वा च कञ्चिद्राजानं तव परिचरणम-कुर्वन्तं “हनः” हन्त्याः कञ्चन त्वां परिचरन्तं “वसौ” वसुनि धने “दधः” स्थापय ॥ [उदीरते—इरगती (आ०) आदा-दिकः, “अनुदात्तेत्वात्सर्वधातुकानुदात्तत्वे (६, १, १८६) धातु-स्वरएव शिथ्यते, “यहताच्चित्यम् (८, १, ६६)”—इति निघात-प्रतिषेधः । धना—“सुपां सुलुक् (७, १, ३५)”—इति डादेशः । युङ्क्त्वा—युजिर् योगे (५० उभ०), अन्तर्भावित-ण्यर्थात्तोऽटि “बहुलञ्छन्दसि (२, ४, ७३)—इति विकरणस्य लुक्, “ह्रस्वो-ऽतस्तिङः (६, ३, १३५)”—इति संहितायां दीर्घत्वम् । हनः—हन्तेर्लेटि सिष्यडागमः, हनश्च दधश्च चार्थप्रतीतेः “चादिलोपे विभाषा (८, १, ६३)”—इति प्रथमायास्तिङ्विभक्तेर्निघात-प्रतिषेधः । वसौ—लिङ्ग-व्यत्ययः । दधः—दध धारणे (म्वा० आ०) लेटि व्यत्ययेन परस्मैपदम् ॥ ३ ॥ १४

१ २ १ २ २
॥ सन्तनि ॥ इन्द्रोच्चाउ । मादायवा३१उवार३ ।

५ १ २२ १२ २ १ १ १ २२ १ २२ १ २२
वार३४४ । शवसेवृचक्षानृभिस्तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भेह
२ १ १ १ १ १ २ १ २ १
वामंक्षार३भूयि । सवाच्चाउ । जायिषुपनो३आउवार३ ।

वार३४यिषात् ॥ (१) असिच्चिवौरसेन्योसिभूरिपराददिर

सिदधस्यचिद्धोयजमानायशिक्षसार३४५यि । सुन्वाद्वा

उ । तायिभूरिता३१उवा३३यि । वार३४मू ॥ (२) यदु

दीरतआजयोधृष्णवेधीयतेधनंयुङ्क्त्वामदच्युताहरीक

नःकंवसौदधार३४५ः । अस्मान्हाउ । आयिन्द्रवसा३१उ

वार३ । दा३३४धाः (३) ॥ ४* ॥ [१] १४

अथ द्वितीय-तृतेः ।—

प्रथमा ।

स्वादो गित्याविष्वतो

मधोःपिवन्तिगौर्यः ।

याद्वन्द्रेणमयावरौ

वृष्णामदन्तिशोभथा

वस्वीरनुस्वराज्यम् ॥ १३ ॥

* क० मा० १८ प्र० २ अ० ४ सा० ।

† 'रायोवाजीयमण्डः वाकसाम',—इति वि० ।

‡ क० मा० ५, १, ३, ३ (१ मा० ८३२ अ०) = क० वे० १, ६, ६, ५

“स्वादोः” स्वादुभूतस्य रसयुक्तस्य “इत्था विषूवतः” इत्थ मनेन प्रकारेण सर्वयज्ञेषु व्याप्तियुक्तस्य “मध्वः” मधोः मधुर-
 रसस्य सोमस्य “क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (१, ४, ३२ वा०)” — इति
 कर्मणः सम्प्रदानत्वात् चतुर्थर्थे षष्ठी । एवंविधं सोमं
 “गौर्यः” गौरवर्णा गावः पिबन्ति । या गावः “शोभथाः”
 [वचन-व्यत्ययः] इन्द्रेण सह शोभन्ते “जृष्णा” कामाभिर्वर्षकेन्द्रेण
 “सयावरीः” सह यान्यो गच्छन्त्यः सत्यः “मदन्ति” हृष्टा भवन्ति ।
 ता इन्द्रपीतस्य सोमस्य शेषं पिबन्तीत्यर्थः । “वस्त्रोः” पयः-
 प्रदानेन निवासकारिण्यः ता गावः “स्वराज्यै” स्वस्येन्द्रस्य यन्तु
 “राज्यं” राजत्वं तदनु लब्ध्वावस्थिता इति शेषः ॥ [विषूवतः—
 विष्ट व्याप्तौ (जु० उभ०) अस्मादीणादिकः कुप्रत्ययः ततो मतुप्
 ऋस्यनुङ्भ्यां मतुप् (६, १, १७६) ” — इति मतुप् उदात्तत्वम्,
 “अन्येषामपि दृश्यते (६, ३, १३७) ” — इति संहितायां दीर्घः,
 व्यत्ययेन मतोर्वत्वम् । मूध्वः—“जसादिषु कृन्दसि वा वचनम्
 (१, ४, ७) ” — इति “घेर्ङिति (७, ३, १११) ” — इति गुणा-
 भावे यणादेशः । गौर्यः—“षिन्नोरादिभ्यश्च (४, १, ४१) ” — इति
 ङीष्, जसि यणादेशे “उदात्तस्वरितयोर्यणः (८, १, ४) ” —
 इति परस्यानुदात्तस्य स्वरितत्वम् । सयावरीः—या प्रापणे
 (अदा० प०) “आतोमनिन् (३, २, ७४) ” — इति वनिप्, “वनोर्वच
 (४, १, ७) ” — इति ङीव्रेफौ । मदन्ति—मदी हर्षे (दि० प०),
 श्यनि प्राप्ते व्यत्ययेन (३, १, ८५) शप् । वस्त्रोः—“वस निवासे
 (भा० प०) शृसृस्त्रिहि (३०, १, १०) ” — इत्यादिना वसे रुप्रत्ययः,
 “धान्ये नित् (३०, १, ८) ” — इत्यनुवृत्तेराद्युदात्तत्वम्, “वोतो

गुणवचनात् (४४, ४, १)"—इत्यत्र "गुणवचनात् ङीवाद्युदा-
त्ताद्यम् (४, १, ४५ भा०)"—इतिवचनात् वसुधन्दात् ङीपि
वणादेशः, जसि "वाच्छन्दसि (६, १, १०६)"—इति पूर्वसवर्ण-
दीर्घत्वम् । स्वराज्यं—"अकर्मधारये राज्यम् (६, २, २०)"
—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १ ३ १ ३ १ १ ३ १ १
ताअस्यपृशनायवःसोमश्च्रीणन्तिपृश्नयः ।

३ १ २ १ २ ३ १ ३ १ ३
प्रियाइन्द्रस्यधेनवोवज्रं हिन्वन्ति सायकं

३ ३ १ ३ ३ १ ३
वस्वीरनुस्वराज्यम् ॥ २* ॥

“ताः” पूर्वोक्ताः† “अस्य” इन्द्रस्य “पृशनायवः” स्पर्शन-
कामाः पृश्नयः नानावर्णाः‡ गावः इन्द्रेण पातय्यं “सोमं”
पयसा “श्रीणन्ति” मिश्रोकुर्वन्ति, “इन्द्रस्य” “प्रियाः” प्रीतिहेतु-
भूताः “ताः” “धेनवः” “सायकं” शत्रूणामन्तकारकं॥ “वज्रं”
आयुधं “हिन्वन्ति” शत्रुषु प्रेरयन्ति इन्द्रो यथा शत्रुषु वज्रं प्रेर-
यति तथेन्द्रस्य मदमुत्पादयन्तीत्यर्थः । अन्यत् पूर्ववत् ॥ [हिन्वन्ति

* सू० वे० १, ६, ७, १ ।

† ‘ताः—धेनवः’—इति वि० ।

‡ ‘पृश्नयः—गावः’—इति वि० ।

॥ ‘सायकं—शरणभूतं क्षेपणायम्’—इति वि० ।

हिवि प्रीणनार्थः (भा० प०), इदित्त्वानुम् । सायकं-षो अन्त-
कर्माणि (दि० प०), यवुल्यात्वे युगागमः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।

३ १ १ ३ १ २ ३ १
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरुषि पूर्व

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
चित्तये वस्वीरनुस्वराज्यम् ॥ ३ * ॥ १५

“प्रचेतसः” प्रकृष्टाज्ञानाः “ताः” गातः “अस्य” इन्द्रस्य
“सहः” बलं “नमसा” स्वकीयेन पथोरूपेणाग्नेन “सपर्यन्ति”
परिचरन्ति “पुरुषि” बहूनि “अस्य” इन्द्रस्य “व्रतानि” शत्रु-
बन्धादिरूपाणि वीर्य कर्माणि “सश्चिरे” सेविरे ज्ञातव्यतया
इत्यर्थः । किमर्थम् ? “पूर्वचित्तये” युयुत्सूनां शत्रूणां पूर्वमेव
प्रज्ञापनाय [अनेन युध्यमाना वृत्रादयः सर्वे मरणं प्राप्ताः
किमर्थं भवद्भिः प्राणास्त्यजन्त इति तेषां बोधनायेत्यर्थः । अन्य-
त्पूर्ववत् ॥ पूर्वचित्तये—चिती सञ्ज्ञाने (भा० प०), भावे
क्तिन्, मरुहधादित्वात् पूर्वपदान्तोदात्तत्वम् ॥ ३ ॥ १५

* ऋ० वे० १, ६, ७, २ ।

† पूर्वचित्तये—पूर्वप्रसादनाय—इति वि० ।

४२ ३८ ४ ३२ ४५२ २२ ३२ ४२ ४
 ॥ श्यैतम् ॥ स्वादोरित्याविषू । वता३४औहोवा ।
 १ २ २ १ ० ५ ५ १२ २ १
 माधोःपिव । तिगौरियार३४ः । ओईहा । याइन्द्रेण
 १२ २२ १ २ १ ३ ५
 सयावरीवृ । णोमार३४दा । तिगो२ । भार३४था ॥ (१)
 ३२ ४ ३४ ५२ ३ २ ३२ ४२ ५ १ २२
 ताअस्यपृशना । युवा३४औहोवा । सोम५श्रीण । ति
 १ ० ५ ५ ० १२ २२ १ २२ १
 पार्श्वयार३४ः । ओईहा । प्रियाइन्द्रस्यधेनवोव । ज्रा५
 २ १ ३ ५ ३२ ४ ३
 द्वा२३यिन्वा । तिसार२ । यार३४काम् ॥ (२) ताअस्यन
 ४५२ ३ २ ३२ ५२ ५ १ १ १ ०
 मसा । सदा३४औहोवा । सापर्यन्ति । प्रचायितसा
 ५ ५ २ १२ २ २ १ २
 र३४ः । ओईहा । वतान्यस्यसश्चिरेपू । रुणार३यिपू ।
 ३ ५ १२ २ २ १
 वर्चा२यि । तार३४यायि । वस्तीरनुस्वा३रा । ऊम्मायि ।
 ३ ५२ २ ३ ५
 जार२यार३४औहोवा । वार३४मू (३) ॥ ४ * ॥ [१] १५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य षष्ठस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे,* प्रथमतः—

प्रथमा ।

१ २ ३ १२ १२२ १२ २२ ३ १
असाव्यं शुभमदायाः सुदक्षो गिरिष्ठाः ।

३ २ ३ ३ १ २
श्वेनो न योनिमासदत् ॥ १ † ॥

“गिरिष्ठाः” पर्वत-जातः “अंशुः” सोमः “मदाय” मदार्थम्.
“असावि” अभिषुतः “अप्सु” वसतीवरीषु “दक्षः” प्रहृष्टश्च
भवति । किञ्च “श्वेनो न” यथा श्वेनः पक्षी वेगेनागत्य
स्थानमासीदति तद्वदयं सोमः “योनिं” स्वकीयं स्थानम् “आस-
दत्” आसीदति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ १२ २२ ३ १ २ ३ १२ २२ २ २
शुभमन्वो देववातमण्डुधौ तन्नृभिः सुतम् ।

१ २ ३ १ ३ १ २
स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ २ ‡ ॥

यत् “देववातं” देवैः प्रार्थितं † “शुभम्” शोभनम् “अन्वः”
अन्नस्वरूपं “नृभिः” नेष्टभिः “सुतम्” अभिषुतम् “अप्सु”

* ‘इदानीं तृतीय-सवनमुच्यते’—इति वि० ।

† अ० आ० ५, २, ४, ७ (२भा० १२४०) = अ० वे० ७, १, २४, ४ ।

‡ अ० वे० ७, १, २४, ५ ।

§ ‘देववातं—देवानां भक्षणोपयम्’—इति वि० ।

वसतीवरोषु “धौतं” शोधितं सोमं “गावः” पशवः “पयोभिः”
आशिरैः “स्वदन्ति” स्वादयन्ति ॥

“धौतंसुतं”—“धूतः सुतः”—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ २ १ २

आदीमश्वन्नहेतारमश्वशुभन्नमृताय ।

२ ३ १ २ ३ १ ३

मधोरसं सधमादे ॥ ३ * ॥ १६

“आत्”† अनन्तरं “हेतारं” प्रेरकम्‡ “ईम्”॥ एनं
“मधोः” मधुरस्य सोमस्य “रसं” “सधमादे” यज्ञे “अमृताय”
अमरणाय “अश्वशुभन् ऋत्विजः” गोभयन्ति । तत्र दृष्टान्तः—
“अश्वं न” यथा प्रेरका अश्वं सङ्ग्रामे गोभयन्ति तद्वत् ॥
“हेतारं”—“हेतारः”—इति पाठौ, “मधोः”—“मध्वः”—
इति च ॥ ३ ॥ १६

१ २

॥ सन्तनि ॥ अमाहाउ । वायांशुर्मा३१ उवा२३ ।

५ २ १ २ १ ३ १ २ २ १

दा२३४या । अप्सुदक्षोगिरिष्ठाः । श्येनोहाउ । ना

२ २

५

२ १

योनिमा ३१ उवा २३ । सा २३४ दात् ॥ (१) शुभ्रम

* ऋ० वे० ७, १, २४, १ ।

†, ॥ “आत्”—“इम्”—इत्येतावुपसर्गौ—इति वि० ।

‡ ‘हेतारं’—शीघ्रगामिनम्—इति वि० ।

२२ २ १ २ २ १ २ १ २ ३ २ १ १
मन्धोदेववातमप्सुधौतन्नृभीः सुताश्म् । खदाहाउ । ता

२ २ ५ १२ २ १ २ १
यिगावः पा३१उवार३ । यो२३४भीः ॥ (२) आदीमश्वन्न

२ २ १ २ २ १ २ ३ १ १ १ १ १ २ १
चेतारमश्वशुभन्नमृताया२३४५ । मधोर्हाउ । रास२

१ ५
मदाधा३१उवार३ । मा२३४दे३ ॥ १० * ॥ [१]

१ २ १ १ २ २ १ २
॥ गौषूक्तम् ॥ असाव्यशुम्भौ । हौहोवाहायि ।

२ १ २ १ २ १ १
दाया । अशुद्धोगिगे२ । ऊवायि । ऊवारयि । छा२ः ।

२ १ २ १ १
श्वेनोनयोनिमौ२ । ऊवायि । ऊवारयि । सादार३त् ।

१ ३ ५ २ २ १ २ २ २ २ २ २
हो२वार३४औहोवा ॥ (१) शुभमन्धोदेवौ । हौहोवाहा

२ १ २ १ २ १
यि । वाताम् । अशुधौतन्नृभी२ । ऊवायि । ऊवा

१ १ २ २ १
रयि । सूता२म् । खदन्तिगावः पौ२ । ऊवायि । ऊ

१ १ २ २ ५ २ २ २
वारयि । योभार३यिः । हो२ वा २ ३ ४ औहोवा ॥ (२)

१ २ २ १ २ १ २ २ १ २ २
आदीमश्वन्नहौ । हौहोवाहायि । ताराम् । अशुशु

^१मन्त्रमौ^१र । ^१ऊवायि । ^१ऊवा^१रयि । ^१ताया^१र । ^१मधोर

^१सप्त^१धौ^१र । ^१ऊवायि । ^१ऊवा^१रयि । ^१मादा^१र^१यि ।

^१हो^१र^१वा^१र^१४^१औ^१हो^१वा । ^१अग्निरा^१ऊ^१ता^१र^१३^१४^१५^१:(३)॥ १८* ॥ [२]

॥ ऐड^१न्व^१क्षितम् ॥ ^१असा^१व्य^१शो । ^१हायि । ^१मदा

^१र^१था । ^१अप्स^१इ^१क्षोगा^१शिरा^१इ^१यि^१ष्टाः । ^१श्वे^१नोन^१यो^१र^१३^१४

^१हायि । ^१नायि^१मा^१र^१हायि । ^१सदा^१त् । ^१औ^१र^१३^१हो^१वा ॥ (१)

^१शू^१भ्रम^१न्धो । ^१हायि । ^१देव^१वा^१र^१इ^१ताम् । ^१अप्सु^१धौ^१त^१नृ^१भा

^१यिः^१सू^१इ^१ताम् । ^१स्व^१दन्ति^१गो^१र^१३^१४^१हायि । ^१वाः^१पा^१र^१हायि ।

^१यो^१भायिः । ^१औ^१र^१३^१हो^१वा ॥ (२) ^१आ^१दी^१म^१श्वो । ^१हायि । ^१न

^१हे^१ता^१र^१३^१राम् । ^१अप्सु^१शू^१भ्रम^१मा^१श^१र्त्ता^१श्या । ^१मधोर^१सो^१र^१३

^१४^१हायि । ^१सा^१धा^१र^१हायि । ^१मादा । ^१औ^१र^१३^१हो^१वा ।

^१हो^१पू^१ई । ^१डा^१(३) ॥ ४ ॥ [३]

देवान् कामयमानं हविलक्ष्णं त्वदीयं रसम् “अभि दीदिहि”
 अन्मभ्यनाभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः । [यद्वा, हे सोम ! यशो-
 ऽनं देवयुं देवानिच्छन्तं यजमानमभिलक्ष्य प्रकाशय । आमन्त्रित-
 स्याद्विद्यमानवत्त्वेन (८, १, १८) पादादित्वादनित्वातः । किञ्च
 “म यमम्” अन्तरिक्षस्थितं “कीशं” मेघं “वियुव” वृष्ट्यर्थं
 त्रिगमय विश्लेषय ॥

“देवयु”-“देवयः”---इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ ३ २ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 आवच्यस्व पुद्गलचम्वोःसु तोविशांवन्दिर्नविश्रपतिः ।

३ २ ३ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 वृष्टिर्दिवःपवस्वरीतिमपोजिन्वंगविष्टयेधियः ॥ २ * ॥ १७

हे “सुदक्ष” शोभन-बल । “चम्वोः” अधिषवण-फलकयोः
 “सुतः” अभिषुतः त्वं “वक्त्रिः न विश्रपतिः” सर्वासां प्रजानां
 वोढा राजेव “विशां” प्रजानां वोढा सन् “आ वच्यस्व” आगच्छ
 कलशमापवस्व [वचेर्गत्यर्थस्य व्यत्ययेन श्यनि रूपम् ! किञ्च
 त्वम् “अपः” अपाम् उदकादीनां “रीति” व्याप्तां गतिं वृष्टिं
 “दिवः” द्युलोकात् “परस्व” कुरु । किं कुर्वन् ? “गविष्टये”
 गामात्मन इच्छते यजमानाय “धियः” कर्माणि “जिन्वन्”
 प्रेरयन् ॥

“अपोजिन्वन्”-“अपाज्जिन्व”---इति पाठौ ॥ २ ॥ १७

॥ च्यावनम् ॥ अभा२३४यि । द्युम्नम् । बुद्धा२३४
 द्यशा६ः । हाउ । आयिषस्या२३४तायि । दिदीहिदेव ।
 देवायू२३४चायि । वायिकीशा३म्मा३ । ध्यामा२३४
 हा३४यि । यू२३४वो६हायि ॥१॥ विकी२३४ । शम्मा ।
 ध्यामा२३४युवा६ । हाउ । आवच्या२३४खा । मुदक्ष
 चमुवो६तोर३४हायि । वायिशांवा३ङ्गा३यिः । नावा२३४
 द्या३४यि । श्या २ ३ ४ तो६हायि ॥२॥ विशार३४म् ।
 वङ्गिः । नवा३४यिष्पती६ः । हाउ । वाष्टि॥न्दार३४यि
 वाः । पवस्वरीतिमापो२३४चायि । जायिन्वाग्गा३वा३यि ।
 टाया२३४चा३४यि । धार३४यो६हायि ३ ॥ ११ * ॥ [१]

॥ ऐषिरम् ॥ अभिद्युम्नम्बुद्ध्या३शाः । आयिषस्य
 ते । दायिदी३हायिदे२ । वादा३यिवायू२म् । वायि

को१शाम्मार३ । ध्यमोवा । यू५वो६ह्यायि ॥ (१) विको

शम्माध्यमंयू३वा । आवच्यस्व । सूदक्षाचा२ । मूवो१ः

सुता२ः । वायिशा१वाक्का२३यिः । नवोवा । श्या५तो

६ह्यायि ॥ (२) विशां१वक्त्रि२र्नवि३शपा४तीः । वाष्टि१न्दि२वः ।

पाव१स्वारी२ । तायिमा१पा२ः । जायिन्वा१शंगा२वार३

यि । छयोवा । धा५पूयो६ह्यायि(३) ॥ १ * ॥ [२]

॥ सफम् ॥ अभिद्यू३स्मन्वृ । ह्यदा२३४शाः । इष

स्यतायिदी२ । दी३हिदायिवा३दा३यि । वा३र३४यूम् ।

विको । शम्मा३ध्या३मा३म् । यू३४५वो६ह्यायि(१) ॥ १३ * ॥ [३]

॥ वाचःसाम ॥ अभिद्यु३न्नाम् । ह्योयि । बृह३द्य३शा

इ३ष । आ३यिष३स्पते । दा३यिदी१ह्यायिदे२ । वादे३वयुम् ।

^{१ १} वायिकोशशाम्मार३ । ^{१ ४} ध्यार३मा३म् । ^१ यू३४५ वो ई हा
^{३४५} यि ॥ (१) ^५ विकोशम्मा । ^{१ ४ ५ ५} हो । ^{१ २} ध्यमंयुवा६ए । आवच्य
^{१०} स्व । ^{१२ २} हृदत्ताचा२ । ^{१ २०} मूवोःसुतः । वायिशा१वाक्का २ं ३
^{१ ४} यिः । ^१ ना२३वा३यि । ^५ श्या३४५तो६हायि ॥ (२) ^{३४२} विशी
^५ वक्कीः । ^२ होयि । ^{३४ ५ ५} नविशपता६ए । ^{१ २} वार्ष्टिन्दिवः । ^{१ ७} पाव
^{१ २} स्तारी२ । ^{१ २} तायिमपः । ^{१ २} जायिन्वा१ग्गावा२३यि । ^१ छार
^४ श्या३ । ^५ धा३४५यो६हायि (३) ॥ १४ * ॥ [४] १७

अथ तृतीय-ल्लेखः—

प्रथमा ।

^{३ १२ २२ ३ १ २ ३ २ २ २ ३ १ २} प्राणाग्निशुर्महीना^१ हिन्वनृतस्यदीधितिम् ।

^{२ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २} विश्वापरिप्रियाभुवदधदिता ॥ १ ॥

● ज० गा० १४प्र० २अ० १४सो ।

• 'क्रोशं सामं—इति वि० ।

† ज० आ० ६, २, ३, ५ (२भा० २१२४०) = ज० वे० ७, ५, ४, १ ।

“प्राणा” ते [अनिते : शानचि “बहुलच्छन्दसि (२, ४, ७३)”
—इति विकरणस्य लुक्, “सुपां सुलुग् (७, १, ३६)”—इति सुप-
आकारादेशः] यज्ञस्य प्रापयिता चेष्टयिता “मह्वीनां” महतीनां
मंहनीयानां वा अपां “शिशुः” पुत्र-स्थानीयः सोमः “ऋतस्य”
यज्ञस्य “द्वौधिति” प्रकाशकं धारकं वा स्वीयं रसं “हिन्वन्”
प्रेरयन् “विज्ञा” सर्वाणि “प्रिया” प्रियाणि हवींषि “परिभुवत्”
परिभवति व्याप्नोति । “अध” अपिच “हिता” हिधा भवति
दिवि च पृथिव्याञ्च वर्त्तत इत्यर्थः ॥

“प्राणा”—“क्राणा”—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२ ३ १२ ३ १ १२ ३ १२ २२ ३२

उपचितस्य पाथ्योऽऽरभक्तयद्गुहापदम् ।

३१ ३६ १२ २२ ३१ २ ३ २

यज्ञस्य सप्तधामभिरधप्रियम् ॥ २* ॥

“त्रि तस्य एतन्नामकस्य ऋषेस्तीतुर्मम यज्ञे “गुहा” गुहायां
हविर्हाने वर्त्तमानयोः “पाथ्योः” पोषणवद्दृढयोः अधिषवण-
फलकयोः “पदं” स्थानं सोमः “यत्” यदा “उप अभक्त” सम-
भजत । “अध” अनन्तरं “यज्ञस्य” “धामभिः” च धारकैः “सप्त”
सप्तभिच्छन्दोभिः गायत्र्यादिभिः “प्रियम्” प्रीणयितारं सोमम्
“अभि” ष्टुवन्ति ऋत्विजः [अपि वा सप्त सर्पणशीलैर्वसतीवर्या-
दिभिरुदकैः सोममभिषुण्वन्ति ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ १ ३ १ ३ १ १ ३ १ १ ३ १ ३ ३
त्रोणित्रितस्यधारयापृष्ठेध्वैरयद्रयिम् ।

२ २ ३ १ १ ३ २ ३ १ १
मिमौतेअस्ययोजनाविमुक्तुः ॥ ३* ॥ १८

सोमः “त्रितस्य” मम यज्ञस्य स्वभूतानि “त्रोणि” सवनानि
धारया आत्मीयया “वि धारया” । किञ्च पृष्ठेषु” सामसु “रयि”
दातारमिन्द्रम् “एरयत्” आयमतु “मुक्तुः” शोभन-यज्ञः
स्तोता “अस्य” इन्द्रस्य “योजना” संयोजनादीनि स्तोत्राणि
“वि मिमौते” करोति† यस्मादेवं तस्मादिन्द्रं सामसु प्रेरय-
त्वित्यर्थः ॥

“एरयत्”—“एरया”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १८

१२ १ २ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
॥ क्रोशम् ॥ प्राणा । शिशुर्मही । नाम् । हो

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
ई२ । हो । वाहोयि । द्विन्वनृतस्यदीधितायिम् ।

१ १ २ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
विश्वापाशराश्रयि । प्रीश्याभूश्वात् । अधा २ ३ द्विता

२ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १ २
३४३ ॥ (१) उपा । त्रितस्यपा । ध्योः । होई२ । हो ।

* सू० वे० ७, ५, ४, २ ।

† ‘विमिमौते’—मा माने, मानं करोति—इति वि०

^{२२ १} वाक्षोयि । ^२ अभक्तयद्गुहापदाम् । ^{२ १ २} यज्ञास्यासा २३ ।

^{२ १ २ २} प्राश्धामाश्भायि । ^{१ २} अधाश्प्रियाश्शम् ॥ (२) ^{२२ १} त्रीणी ।

^२ त्रितस्यधार । ^{२२} या । ^१ क्षोई २ । ^१ क्षो । ^{२२ २} वाक्षोयि । ^२ पृष्ठे

^{२ १ २} धैरयद्रयायिम् । ^{२ १ २} मिमायितेश्चाश् ३ । ^{२ १ २ २} स्याश्रयोजाश्ना ।

^१ विसूरश्क्रतुश्शम् । ^१ ओरश्शम् । ^१ डा (३) ॥ १२ * ॥ [१]

॥ चैतम् ॥ ^{२२ २} प्राणाग्निशुर्मन्त्रायिनाम् । ^{१ २} द्विन्वन्तस्य

^२ दौधितायिम् । ^{२ २} विश्वापरिप्रियाश्भूवोरश्शम् । ^१ आश्

^३ धारश्शम् । ^{२ २ २} एश् । ^{१ २ १ १ १ १} द्वितारश्शम् ॥ (१) ^२ उपत्रितस्य

^{२ १ २} पाषायोः । ^१ अभक्तयद्गुहापदाम् । ^{२ २ २} यज्ञस्यसप्ताधाश्माभो

^२ श्शम् । ^{१ २ २} आश्धामाश्भायि । ^{२ २ २} एश् । ^{१ २ १ १ १ १} प्रियारश्शम्

^{२२} म् ॥ (२) ^{२ १ २} त्रीणित्रितस्यधाराया । ^{१ २ २} पृष्ठे धैरयद्रयायिम् ।

१ २ २ २ ३ १ ५ १ १ ४ २ २
मिमीतेअस्ययोऽज्ञानोऽ३४हायि । वारयिस्२३४औहो

२ १ ३ १ १ १ १
वा । ए३ । क्रतू२३४५ः (३) ॥ २* ॥ [२]

२ २ २ १ २ २
॥ सुज्ञानम् ॥ प्राणाशिग्रूः । महीनाम् । हिन्व

१ २ २ २ १ १ २
नार्त्ता२ । स्यदीधितायिम् । विश्वापारा२यि । प्रियाः

१ ३ ५ २ २ १ १ १ २
भूरवार२३४औहोवा । अधदितण् ॥ १) उपन्निता । स्य

१ १ १ १ २ १ २ १ १
पाषियोः । अभक्ताया२त् । गृहापदाम् । यज्ञस्यासा

१ २ ३ ५ २ २ १ १
२ । प्रधा । मारभार२३४औहोवा । अधप्रियमेश् ॥ २)

२ २ २ १ २ २ १ १
त्रौणित्रिता । स्यधारया । पुष्टेषूवा२यि । रयद्रया

२ २ १ १ २ २ ३ ५ २ २
यिमं । मिमीतेआ२ । स्ययो । जारनार२३४औहो

१ २ १ १ १ १ १
वा । विसुक्रतुरेऽपार२३४५ (३) ॥ २०† ॥ ३]

२ २ २ २ २ ५
॥ दैवोदासम् ॥ प्राणा३१ । शिग्रू३१२३४ः । म ।

१ १ १ १ २ २ ५ २
हा३यिनाम् । हिन्वा३१न् । ऋता३१२३४ । स्यदी ।

* क० गा० ४ प्र० १ च० २ सा० ।

† क० गा० ७ प्र० १ च० २० सा० ।

२ २ ३ २ ३ २ ५ २
धा३यितायिम् । विश्वा३१ । परा३१२३४यि । प्रिया ।

२ २ ३ ० ३ २ १ ५ ३ २
भू३वात् । अधा३१ । द्विता३ । ओर३४वा ॥ (१) उपा

३ २ ५ २ २ २ ३ २
३१ । त्रिता३१२३४ । स्यपा । षा३योः । अभा३१ ।

३ २ ५ २ २ ३ २ ३
क्ताया३१२३४त् । गुहा । पा३दाम् । यज्ञा३१ । स्य

२ ५ २ २ ३ २ ३ २
सा३१२३४ । प्रधा । मा३भायिः । अधा३१ । प्रिया३

१ ५ ३ २ ३ २
म् । ओर३४वा ॥ (२) त्रीणी३१ । त्रिता३१२३४ । स्य

५ २ २ २ २ २ ५
धा । रा३या । पृ३ष्ठा३१यि । पु३वा३१२३४यि । रयत् ।

२ २ ३ २ ३ २ ५ २
रा३यायिम् । मिमा३१यि । ते३आ३१२३४ । स्ययो ।

२ ३ ३ २ ३ २ १ ५ २
जा३र्ना । वि३सू३१ । क्र३तू३१ । ओर३४वा । ऊ३र३४

५
पा(३) ॥ २१* ॥ [४]

१ २ २ २ १ २ १ २ १ १ १
॥ अ॒ध्धम् ॥ प्रा॒णाशि॒शू॒र्म । ह्री॒नो॒वा । ह्रि॒न्वन्नृ

१ २ ३ २ २ २ २ १ २ १ २ १ २ १
ता । स्य॒दी॒धि॒तायि॒म् । विश्वा॒परि॒प्रिया॒भुव॒द् । धा॒र

३। ^२दिताउवा । ^{१२}अधिया २ । ^१ए२३हिया ३४३ । ^१ओ२
३४५ई । डा(१) ॥ १४* ॥ [५]

॥ पौष्कलम् ॥ ^{२२१२२}प्राणाशा३यिषुः । ^५माहा२३४यिनाम् ।

^{१ १ २ १}हिन्वानृता । ^२स्यादायिधौ२३४तीम् । ^{५ २}विश्वापरायि ।

^{० ३}प्रिया२भ२३४५वा६५ईत् । ^{२ १ ३ १ १ १ १}अधदिता२३४५ ॥ (१) । ^{२ १ ६}उपत्ती

^{४ ५}तस्य । ^{२ ३}पाषा२३४योः । ^५अभाक्तयात् । ^{१ १ १ १}गूह्यापा२३४

^५दाम् । ^{२ १}यज्ञास्यमा । ^{० ३}प्रधारमा२३४५भा६५इयिः । ^२अ

^{१ ० १ १ १ १}धप्रियार३४५म् ॥ (२) । ^{१२ १ २ ४ ५}त्रीणित्रौ३तस्य । ^{२ ३}धारार३४या ।

^{१ १ २ १}पृष्ठायिषुवायि । ^{१ ३ ५}रायद्रार३४यायिम् । ^{२ १ २}मिमायितेआ ।

^{० ३}स्योरजा२३४५ना६५ई । ^{२ १ ३ १ १ १ १}विमुक्रतू२३४५ः (३) ॥ २* ॥ [६] ।

॥ शुध्यम् ॥ ^{१२२}प्राणाशिगू२म् । ^{२ १}हीनोवा । ^{२ १ २}हिन्वनृ

^{१ २ ३ २ १}ता । ^{२ २ १ १ १ २ १}स्यदीधितायिम् । ^{२ १ २ १}विश्वापरिप्रियाभुवद । ^{२ १ २}धार३ ।

^१द्विनाउवा । ^{१२}अधिया२ ॥ (१) ^१उपचिता२स्य । ^२पाषियो

^{२१ २१}वा । ^{२ २२ २१}अभक्त्यात् । ^{२१ २१ २ २}गुहापदाम् । ^{२१ २१ २ २}यज्ञस्य सप्तधामभि

^१रा । ^२धार३ । ^{१२}प्रियाउवा । ^{१२}अधिया२ ॥ (२) ^{१२}त्रौणित्रि

^{२ १}ता२स्य । ^{२ १ २ २ १}धारयोवा । ^{२ २ २ १}पृष्ठेषुवायि । ^{२ २ २ १}रयद्रयायिम् ।

^{२ २ २}मिमीतेअश्वयोजनावि । ^{२ १ २ २ १}सूर३ । ^२क्रताउवा । ^{१२}अधि

^१या२ । ^२ए२३हिया३४३ । ^१ओ२३४५ई । ^१डा(३) ॥ ५* ॥ [७]

^{२ २ २}॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ ^{२ २ १ २}प्राणाग्निशाओहोहायि । मा

^{३ ४}हार३४यिनाम् । ^{२ १ ४ १}हिन्वानार३४हा । ^{४ १ २ २}तस्यदीधितिंविश्वा

^{२ ३ ४ २ ५}पा३४ । ^{१ ३ ५}ओहोवा । ^{२ ३ ५}इहार३४हायि । ^{२ ३ ५}उज्जवार३४रायि ।

^{२ १ २ १ ७ २}प्रियाभु । ^{३ ४ ५}वादधदा३४ । ^{१ ३ ५}ओहोवा । ^{१ ३ ५}इहार३४हायि ।

^{३ २ ५ २ ५}ओहो३१२३४ । ^{५ २ ५}ता । ^{२ २ ५}एहियाइहा ॥ (१) ^{२ ५}उपचिताओ

^{१ २ ३ ३ ५ २ १ ५ १ २}होहायि । ^{१ २ ३ ३ ५ २ १ ५ १ २}स्थापाषार३४योः । ^{१ २ ३ ३ ५ २ १ ५ १ २}अभाक्ता२३४हा । ^{१ २ ३ ३ ५ २ १ ५ १ २}यज्ञहा

^१ पदं यज्ञस्या^{३४} । ^{३४ ४२ ५} औक्षोवा । ^{१ ७} इहारा^{३४} चायि । ^४ उज्जवार

^५ ३४सा । ^{२ १ २ १} प्रधाम । ^{१ ७ २} भायिरधप्रा^{३४} । ^{३४ ४२ ५} औक्षोवा । ^{१ ३} इहा

^५ २३४हायि । ^{३४ २} औक्षो३१२३४ । ^{५२} याम् । ^५ एक्षियाइहा ॥ (२) :

^{२ २} त्रीणि त्रिता^२ औक्षोचायि । ^३ स्याधारार^२ ३४या । ^५ पृष्ठायिषू

^५ २३४हायि । ^{१ २} ऐरयद्रयिन्मिमीता^{३४} । ^{२ २} औक्षोवा । ^{३४ ४२ ५} इहा

^५ २३४हायि । ^{१ ३ ५} उज्जवार^२ ३४आ । ^{२ १ २ १} स्ययोज । ^{१ ७ २} नाविसुक्ता३

^{३४ ४२ ५} ४ । ^{१ ३} औक्षोवा । ^५ इहारा^{३४} चायि । ^{३४ २} औक्षो३१२३४ । ^{३४ २} तूः ।

^{५ १} एक्षियायाइहा । ^५ क्षो^४ ५ई । ^४ डा(३) ॥ ८* ॥ [८]

^{२ २ २} ॥ वार्शम् ॥ ^{१ २} प्राणाशिशूः । ^३ माहा ३ यिनाम् । ^१ हि

^२ न्वन्नृतस्यदीधि । ^७ तायिम् । ^{१ ३ ५} विश्वा^२ र^५ पार^२ ३४रायि । ^२ मि

^{२ २} याभुवाश्त् । ^{३ १} ईश्या । ^१ अध । ^३ द्वार^{५ २} यितार^२ ३४ औक्षोवा ॥ (१)

^१ उपत्रिता । ^{१ ३ ३} स्यपाषा^१ ३योः । ^१ अभक्तयद्रुहाप । ^२ दाम् ।

० ३ ५ १ २ २ ५ २ १
यच्चा^१स्या^३२३४सा । प्रा^५धामभा^{१ २}यिः । ई^५श्या । अ^१ध ।

३ ५ २ २ २ २ १ २ १
प्रा^३श्या^५२३४औ^{२ २}होवा ॥ (२) त्री^२णि^२त्रिता । स्थ^{१ २ १}धारा^१श्या ।

१ २ २ ० ३ ५ १ २
पृ^{१ २ २}ष्ठे^१धैर^३यद्र । या^०यिम् । मि^३मा^५श^{१ २}यिते^१२३४आ । स्या^{१ २}यो

२ ३ २ १ ३ ५ २ २ २
ज^२ना^३३ । ई^३श्या । वि^१सु । क्रा^३तू^{५ २ २}२३४औ^२होवा । ज

५
३२३४पा(३) ॥ ८* ॥ [८] १८

अथ चतुर्थ-द्वये—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ० १ ३ १ २ ३ १
पव^{१ २ ३ १ २}स्ववाजसातये^{० १ ३ १ २}पवित्रे^{३ १}धारया^{३ १}सुतः ।

१ २ १ १ २ १ २ १ २
इन्द्राय^{१ २}सोमविष्णवे^{१ १ २}देवेभ्यो^{१ २}मधुमत्तरः ॥ १३ ॥

हे “सोम !” “सुतः” अभिषुतः त्वम् “इन्द्राय” “विष्णवे”
च अन्येभ्यो मित्रादिभ्यः “देवेभ्यः” “मधुमत्तरः” अतिशयेन
माधुर्योपेतः सन् “वाजसातये” अन्न-लाभाय “पवित्रे”
“धारया” “पवस्व” चर ॥

* ज० गा० १६प्र० १७० ८सा० ।

† “जौत्सीवितं साम”—इति वि०

‡ ऋ० वे० ७, ४, २८, १ ।

“वाजसातये”-“वाजसातमः”—इति पाठौ, “मधुमत्तरः”-
“मधुमत्तमः”—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्वा॒रि॒हन्ति॒धीतयो॒हरि॒म्यवि॒त्रे अ॒द्रुहः॑ ।

१ २ ३ २ ७ ३ २ ३ १ १ २ १ २
वत्स॒ञ्जात॒न्नमा॒तरः॒पव॒मान॒विध॒र्मणि॑ ॥ २* ॥

हे “पवमान” पूयमान सोम ! “वि धर्मणि” विविधं हविषां
धारकेण यज्ञे “अद्रुहः” द्रोह-वर्जिताः “धीतयः” अङ्गुल्यः
[धीतय इति अङ्गुलिताम (निघ० २, ५, ७)] “हरि” हरित-
वर्ण “पवित्रे” स्थितं “त्वां” “रिहन्ति” लिहन्ति निष्पीडनार्थं
स्युशन्तीत्यर्थः । तत्र दृष्टान्तः—“वत्सं जातं न मातरः”;
‘मातरः’ मातृ-भूता गावः उत्पन्नं ‘वत्सं’ यथा ‘लिहन्ति’ तद्वत् ॥
“धीतयः”—“मातरः”—इति पाठौ, “मातरः”—“धेनवः”—
इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्व॒न्या॒श्चम॒द्विव्र॒तपृ॒थिवी॒च्चाति॒जभि॒षे ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
प्रति॒द्रापि॒ममु॒च्चथाः॒पव॒मान॒मद्वि॒त्वना॑ ॥ ३† ॥ १८

* ऋ० वे० ७, ४, २८, २ ।

† ‘विविधे कर्मणि’—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ४, २८, ४ ।

हे “महिब्रत” महाकर्मन् सोम ! “त्वं” “द्या” द्युलकं
 “पृथिवीं च” “अति जभिषे” अत्यन्तं विभिषि [दुभृज् धारण
 पोषणयोः (त० उ०), तस्य छान्दसे लिटि (३, ४, ६) सर्वविधीनां
 छन्दसि वैकल्पिकत्वात् अत्र इडागमः । अन्तरिक्षे सोमात्मना,
 पृथिव्यां लता-रूपेणेति एवं लोकद्वयवर्तित्वम्] । हे “पवमान”
 क्षुरन् ! त्वं “महित्वना” महत्त्वेन युक्तः सन् “द्रापि” कवचं
 “प्रति अमुञ्चथाः” प्रतिमुञ्चसि संवृणोसि ॥ ३ ॥ १८

॥ गौरीवितम् ॥ पव । स्ववा३ । जसातयायि ।
 पवित्रे धारयासुता२३ः । आयिन्द्रायसो३१२३ । मवा
 पृथिष्णवायि । दायिवेभ्योमा३१२३ । धुमोवा । ता५
 रोद्दहायि ॥ (१) तुवाम् । रिद्धा३ । तिधीतयाः । ह
 रिम्पवित्रेअद्रुहाः । वात्सञ्जाता३१२३म् । नमा५तराः ।
 पावमाना३१२३ । विधोवा । मा५पुणोद्दहायि ॥ (२) तु
 वम् । द्याच्चा३ । महिब्रता । पृथिवीच्चातिजभिषा२३

यि । प्रातिद्रापा३१२३यिम् । अमूचथाः । पावमाना
३१२३ । मद्दोवा । त्वा५नो६द्वायि(३) ॥ १३ ॥ [१]

॥ पार्यम् ॥ ओ३द्दो३द्दोयि । पव । खवार । ज
साता२३४यायि । पवि । त्रैधार । रयामूर३४ताः ।
इन्द्रा । थसो२ । मवायिष्णार३४वायि । देव । भ्यो
मार३ । धुमा३न्ता५रा६५६ः ॥ (१) तुवाम् । रिहार ।
तिधायिता३४याः । हरिम् । पवारयि । त्रैअद्र२३
४द्वाः । वत्सम् । जाता२म् । नमाता२३४राः । पव ।
माना२३ । विधा३र्म्मा५णा६५६यि ॥ (२) तुवम् । द्या
च्चार । मद्दिब्रा२३४ता । पृथि । वीच्चार । तिजभ्री
२३४यायि । प्रति । द्रापा२यिम् । अमुचार३४थाः ।
ओ३द्दो३द्दोयि । पव । माना२३ । महा३यित्वा५ना
६५६(३) ॥ १४† ॥ [२]

* ऊ० गा० ६ प्र० १ अ० १३ सा० ।

† ऊ० गा० ६ प्र० १ अ० १४ सा० ।

॥ रयिष्ठम् ॥ पवस्ववा । जसाताश्यायि । औष्ठो

२१ २१२ १ १११११ १२
इवा । इन्द्रायसोमविष्णवा२ ३४५ यि । इन्द्रायसो ।

१ २ ३ ५ ६ ७ ८ १० १२ १ २ ३ ४
मवायिष्णाश्वायि । औःहोश्वा । देवेभ्यो मधुमत्तरार

१११ २४ २४ १ २ २ ७ ९ ९
इ४पुः । देवेभ्योमा । धुमात्ताश्राः । औश्होश्वा ॥ (१)

तुवा^३रि^१हा । ति^१धा^१यि^२ता^२श्याः । औ^३र^२हो^१श्वा । हरि^१

१ २ १ १ १ १ १ २ १ १ १
मयित्रे अद्रू चारु ४५: । हरिमवायि । ने आद्रू उहा: ।

ॐ ईं ह्रीं स्वा । वत्सञ्जातन्नमातरा २३४ पुः । वत्सञ्जा

ताम् । नमाताश्राः । औश्होश्वा । पवमानविधम् ।

४ १ १ १ १ २ २ १ २ २ ५ २ २
णीर३४५ । पवमाना । विधर्माङ्गायि । औ ३ हो ३

वा ॥ (२) तुवन्द्याच्चा । म॒हायि॑ब्रा॒श॒ता । औ ३ हो ३

१ १ २ १ २ १ १ १ १ १ २ २
वा । पृथिवीच्चातिजभिषार३४५यि । पृथिवीच्चा । ति

जाभी३षायि । औ३हो३वा । प्रतिद्रायिममुच्चथा२३

४५:। प्रतिद्रापायिम्। अमूच्चाश्थाः। औश्चोश्वा।

१ ० २ १ २ ३ १ १ १ १ १ २ २ २ २ २ २ २
पवमानमद्वित्वना२३४५ । पवमानमद्वित्वना१ । पवमाना ।

१ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
महायित्वा३ना । औ३हो३वा । औ३हो३वा । ई३या ।

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
ई३या ३ ४ । हा । हाउवा३ । ज३२३४पा(४) ॥१॥ [३]

५ ३ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
॥ द्विरभ्यस्तत्वाष्ट्रीसाम ॥ पव । स्ववा३ । हा३हा ॥

३ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
जसाताया२३४यि । पवि । त्रधा३ । हा३हा । रया

१ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
सूता२३४ः । इन्द्रा । यसो३ । हा३हा । मविष्णा२

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
३४यि । देवे । भ्योमा३ । हा३हा । धुमा३हो२३

५ ४ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५
४ । वा । ता ५ रो ई हायि ॥(१) तुवाम् । रिहा ३ ।

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
हा३हा । तिधीताया२३४ः । हरिम् । यवा३यि । हा

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
३हायि । त्रअद्रूहा२३४ः । वत्सम् । जाता३म् । हा

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
३हायि । नमातारा२३४ः । पव । माना३ । हा३हा

३ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
यि । विधा३हो२३४ । वा । मा५णोईयायि ॥(२) तुव

३२ ९ ९ २ ३ १ १ ५
म् । द्याच्चा३ । हा३हा । महिब्रातार३४ । षुथि ।

३२ ९ २ ३ ३ २ १ ५ ३२-
वौच्चा३ । चा३हा । तिजभ्रीषार३४यि । प्रति । द्रा

९ २ ९ ३ १ १ ५ ३२
पा३यिम् । चा३हायि । अमुच्चाथार३४ः । पव । मा

२ २० ३ ३ १ १ ५ ४
ना३ । चा३हायि । मद्वा३होर३४ । वा । त्वा५नो६

५
हायि(३) ॥ ६* ॥ [४]

३२ ९ ४२ ५२ २
॥ श्यावाश्वम् ॥ पवा ३१ । स्वा३वा । जसा । ता

४२ ५ १ २ २ २२ १
श्ये । ए३हिया । पा । वि३त्रेधारा । या । सुतारः ।

१२ २ १ २ २ ४ ५ १२
ए३हियार । इन्द्रायसोमा३वा३यि । त्रार३४वायि । ऐ

१२ २ २ १ २ ९ ४ २
हा३यि । ए३हियार । देवेभ्योमाधू३मा३ । ता३४४रो

५ ३ ९ ९ ४ ५२ २
ईहा३यि ॥ (१) तुवा३श्म् । रा३यिद् । निधी । ता३३ः ।

५ १ २ १
ए३हिया । चा । रि३म्यवि३त्रे । अ । द्रुहा३ः । ए३हि

१२ ९ ४ ५ २२
यार । वत्स३ज्जा३तान्नो३मा३ । ता३३४राः । ऐहा३

यि । ए॒हिया॒२ । पव॒मानावा॑श्चिधा॒३ । मा॒३४५॒णो॒६

५ ३२ १ ४ ५ २ ४
ह्यायि ॥ (२) तुवा॑श्म । द्या॑श्च । म॒हि । ब्रा॑श्त ।

५ १ २ २ २ १
ए॒हिया । पा । र्थि॒वीच्चा॑तायि । ज । भिषा॑श्चि ।

१२ १२ २ ४ ५ १२
ए॒हिया॒२ । प्र॒तिद्रा॑पायिमा॒३सू॒३ । चा॒२३४॒थाः । ऐ

२२ १२ २ ४ १
हा॑श्चि । ए॒हिया॒२ । पव॒मानामा॑श्हाश्चि । त्वा॑श्४५

५
नो॒ई॒ह्यायि॑ (३) ॥ १८* ॥ [५]

२ २ १ १
॥ आ॒न्धीग॑वम् ॥ पव॒स्ववाज॑सा॒१तायी॑यि । पवि॑त्रे ।

२ २ १ १ २ २ १ ३ १
धा॒रा॒२श्च॑या । ऊ॒म्मा॒२१५॒२ । सु॒तइन्द्रा॑यसीमवि॒ष्णवा॒२

१११ १ २ २ २ २
३४५॒यि । दा॒यिवा॑श्उवा । भ्यो॒२मा । धू॒२३मा । त

१ २ ४ ५ २२ २ १
रा । औ॒३हो॒वा ॥ (१) त्वा॑र्चि॒न्तिधा॑शयितायाः । ह

२ १ १ २ १ १ १ १
रि॒म्य । वि॒त्र॒२श्च॑आ । ऊ॒म्मा॒२१५॒२ । द्रु॒होव॑स॒ञ्जात॑न्न

२२ १३ ११११ १ २ २ १
मा॒तरा॒२३४५ः । पा॒वा॑श्उवा । मा॒२ना । वा २३॒यि

^२ धा । ^१ मणा । ^२ ^४ ^५ औश्चोवा ॥ (२) ^२ त्वन्द्याश्चमद्वा १ ^१ यिवा
^२ ता । ^१ ^२ पृथिवीम् । ^२ चातारश्चिजा । ^१ ^२ ऊम्मा २१५२ । ^२ श्रि
^२ ^१ ^२ षेप्रतिद्रापिममुच्चथा २३४५ः । ^१ ^२ पावाश्चवा । ^१ माश्ना ।
^२ माश्चवायि । ^१ त्वना । ^२ ^४ ^५ औश्चोवा । ^४ चो५ई । डा (३) ।
 ॥ २०॥ ॥ [६]

^२ ^१ ॥ आकूपारे ॥ ^४ ^५ पवस्वारश्चवाज । ^२ ^३ सातारश्चयायि ।
^१ ^१ ^२ ^१ पवारश्चिखधा । ^२ ^२ ^२ रयास्तुताः । ^१ इन्द्रायासो २ । ^१ मविष्ण
^१ ^२ ^१ वायि । ^१ ^४ ^२ देवेभ्योमारश्च । ^१ ^४ धूरश्माश्च । ^१ ^१ ताश्च४५ रो ६ च्वा
^१ ^१ ^४ ^२ यि ॥ (१) ^१ ^४ ^२ तुवाश्चरारश्चिहन्ति । ^४ ^२ ^४ धीतारश्चयाः । ^१ चरा
^१ ^२ ^१ रश्चिम्पवायि । ^२ ^१ ^१ चै अद्भुद्वाः । ^२ ^१ ^१ वत्सञ्जाताश्चम् । ^२ ^१ नमात
^२ ^१ ^१ राः । ^१ ^४ ^२ पवमानाश्च । ^१ ^४ ^२ वारश्चिधाश्च । ^२ ^४ ^१ माश्च४५ णो ६ च्वा
^२ ^४ ^२ ^४ यि ॥ (२) ^२ ^४ ^२ तुवन्द्याश्चम । ^२ ^४ ^१ द्विवाश्चता । ^१ ^१ पृथाश्चयि

वौच्चा । तिजभिषायि । प्रतिद्रापा रयिम् । अमुच्च
थाः । पवमाना रः । मा रः रः रः रः । त्वा रः रः रः रः
यि(३) ॥ २१* ॥ [७]

॥ अत्रेयम् ॥ पवस्ववा । जसाता रः रः रः । पा
वित्रेधा । रयासू रः रः । इन्द्रायसो । माविष्णावा रः
यि । देवेभ्यो रः रः । धुमोवा । तापूरो रः रः रः ॥ (१)
तुवा रः रः । तिधीता रः रः । चारिपवि । चै अद्र
रः रः । वत्सञ्जातम् । नामातारा रः । पवामा रः रः
विधोवा । मापूणो रः रः रः ॥ (२) तुवन्द्याच्चा । मच्चिवा
रः रः । पार्थिवीच्चा । तिजभ्री रः रः रः । प्रतिद्रापिम् ।
आमुच्चाथा रः । पवामा रः रः । मच्चोवा । त्वापूनो
रः रः रः रः ॥ १०† ॥ [८]

* ऊ० गा० १५ प्र० १ अ० २१ सा० ।

† ऊ० गा० १६ प्र० १ अ० १८ सा० ।

४ ३

४ ३ ४८

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवाऽप्रस्व । वा३जा३सा३साता

यायि । पावित्रेधा । रा३यासू३ताः । इन्द्रा२य । सो

मा३र३वा । ऊ॒म्मायि । ष्णा३वायि । दायिवेभ्योमधुमा

३३२ १ १ १८ ८ ८
र॒त्तराउ ॥ (१) रा॒स्त । वा॒रि॒हन्ति॒धीतयो॒ह॒रि॒म्यवायि ।३ १ २ २ १ ८ १ २ १
त्रे॒श्वा॒द्र॒श्वाः । वत्सा॒र॒जा । तन्ना॒र॒श्मा । ऊ॒म्मायि ।२ १ १ २ ५ ३ १ २ १
ता॒र॒राः । पावमानविधा २ म्मा॒णाउ ॥ (२) णायि॒त् । व८ ८ २ २ २ २ १
न्या॒च्चम॒ह्वि॒व्रत॒पृथि॒वीच्चा । ती॒र॒जा॒भ्री॒श॒षायि । प्रा॒ता॒र१८ २ १ २ २ १ ८
यि॒द्रा । पि॒मा॒र॒श्मू । ऊ॒म्मायि । चा॒श्थाः । पावमान५ ३ २ ५ १ १ १
महा॒र॒यित्व॒नाउ । वा॒३४५(३) ॥ ८ ॥ [८]१ ५ २८ १८
॥ त्रासदस्यवम् ॥ पा॒र॒३४ । व । स्व॒वा । जा॒सात१ ८ ५ २८ १८
या॒र॒३यि । पा॒र॒३४ । वि । त्रे॒धा । रा॒यासु॒ता॒३ः ।१ ८ ५ २८ १
आ॒र॒३यि । द्र॒म॒य॒सो । मा॒वि॒ष्ण॒वा॒३यि । दा॒र॒३यि ।

वे । ^२भ्योमा । ^{२ ५}धुमत्तरा^{११}३१उ ॥(१) ^१तूर^२३४ । ^२वाम् ।
^५रिद्धा । ^{१२ २}तीधौतया^१३३ः । ^१ह्यार^५३४ । ^५रिम् । ^५पवायि ।
^{२२ १}त्रेअद्रू^१ह्यार^{२ ५}३३ः । ^{२२ १}वार^{२ ५}३४ । ^{२२ १}त्सम् । ^{२२ १}जाताम् । ^{२२ १}नामा ।
^१तरा^{२ ५}३३ः । ^{२२ १}पार^२३४ । ^२व । ^२माना । ^२वौधम^२णा^२३१उ ॥(२)
^१तूर^{२ ५}३४ । ^{२२ १}वम् । ^१द्याच्चा । ^१माह्विब्रता^१३३ । ^१पार^१३४ ।
^{२ ५}रिं । ^{२२ १}वौच्चा । ^१तौजमिषा^१३३यि । ^१प्रा^१३३४ । ^१ति ।
^{२ ५}द्रापायिम् । ^{२२ १}आमुच्चया^१३३ः । ^१पार^{२ ५}३४ । ^{२ ५}व । ^{२ ५}माना ।
^{२२ १}माह्वित्वना^२३१उ । ^{१ १ १ १}वार^{१ १ १ १}३४५(३) ॥ ३० ॥ [१०]

॥ वषट्कारनिधनम् ॥ ^{३ ५}पवस्व^२वाजसातये । ^{३ ५}पवस्व
^{४ २ ५}श्वाजसातयायि । ^{२ २ ५}पवित्रे^{१ ७}धारा^{१ २}श्यासुता^{१ २}३ः । ^{१ २}रयांसू
^{१ २ ५}तार^२३ः । ^२ओमो^{१ ७}श्वा । ^{१ ७}इन्द्राय^{१ ७}सोमा^{१ ७}श्वायिष्णवा^{१ ७}३यि ।
^{१ २}मवायिष्णा^{१ ७}श्वार^{१ ७}३यि । ^{१ २ ५}ओमो^२श्वा । ^{२ २ २}देवेभ्यो^{१ ७}मध^{१ ७}इमात्

रा२ः । धुमात्ता१रा२३ः । ओम् । ओ२ । वा२३४ ।

ओ१होवा । ऊ२३०पा(१) ॥ २* ॥ [११]

॥ शुद्धाशुद्धीयाद्यम् ॥ त्व१द्या२च्चम३द्वि४व्रता । पृथि१वी
 स्वा२तिज३भ्री२३षा४षि । प्र१तिद्रा२पिम३मु४च्चार२३थाः । पव॑मा
 २३ ना ३ । मा २ । द्धि२त्वा ३४ ओ१होवा । ना २३
 ४ पू१ (३) ॥ १२* ॥ [१२] १८

अथ पञ्चम-लक्षेः—

प्रथमा ।

इ१न्दु२र्वा३जी४पव॑तेगो॒न्यो॒घा

इ२न्द्रे॑ सोमः सह॒इ॒न्व॒न्म॒दाय॑ ।

ह॒न्ति॒रक्षो॑बाधतेपर्य॒रातिं॑

वरि॑वस्कु॒णव॒न्वृ॒ज॒नस्य॑राजा ॥ १॥ ॥

• ऊ० गा० २३ प्र० २ अ० १ सा० ।

† ऊ० गा० २३ प्र० १ अ० १२ सा० ।

‡ 'दाशस्यत्यं साम'—इति वि० ।

॥ ऊ० आ० ६, १, ४, ८ (१ भा० १२८४०) = ऋ० वे० ७, ४, १२, ५ ।

“इन्द्रः” क्षरण-शीलः “सोमः” “वाजी” बलवान् “गोन्धोघा”
गमनशील-नीचीनाय-रस-सङ्घातः “इन्द्रे” “सहः” बलकरं
रसम् “इन्वन्” प्रेरयन् सोमः “मदाय” अस्य मदार्थं “पवते”
क्षरति । किञ्च “रक्षः” राक्षस-कुलं हन्ति” हिनस्ति । किञ्च
“अराति” शत्रुं “परि बाधते” परितः संहरति । कीदृशः ?
“वरिवः” वरणीयं धनं “कृण्वन्” स्तोतृणां कुर्वन् “वृजनस्य”
बलस्य “राजा” ईशिता सोम इति ॥

“अरातिम्”—अरातीः—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ २ १ २ ३ १ २ ३ २

अधधारयामध्वापृचान

३ १ २ २ २ २ २

स्तिरोरोमपवतेअद्रिदूग्धः ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २

इन्दुरिन्द्रस्यसख्यञ्जपाणो

३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २

देवोदेवस्यमत्सरोमदाय ॥ २* ॥

“अध” अथ अनन्तरं “अद्रि दुग्धः” ग्रावभिर्दुग्धोऽभिषुतः
सोमः “मध्वा” मदकारिण्या “धारया” “पृचानः” देवान्
सम्पर्चयन् “रोम” अवि-रोमभिः कृतं पवित्रं “तिरः”

० ऋ० पे० ७, ४, १३, १ ।

† ‘पृचानः—निष्पाद्यमानः’—इति वि० ।

‡ ‘रोम—रोमाणि अविमयानि, दशापवित्रस्येत्यर्थः’—इति वि० ।

तिरस्कृत्य व्यवधायकं कृत्वा “पवते” कलशेषु चरति । किञ्च
 “इन्द्रस्य” “सख्य” सखिभावं कर्म वा “जुषाणः” सेवमानो
 “देवः” द्योतमानः “मत्सरः” मदकारः* “इन्दुः” सोमः
 “देवस्य” इन्द्रस्य “मदाय” मदार्थं “पवते” चरति ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ ३१ १ ३ १
 अभिव्रतानिपवतेपुनानो

३ २ ३ १३ ३ १ २ ३ २ १
 देवोदेवात्स्वेनरसेनपृच्छन् ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
 इन्दुर्द्धर्माण्युत्थावसानो

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
 दशक्षिपोऽव्यतसानोऽव्ये ॥ ३१ ॥ २०

“धर्माणि” धारकाणि “व्रतानि” कर्माणि “ऋतुथा” ऋतोः
 काले “वसानः” आच्छादयन् “इन्दुः” सोमः “पुनानः” पूय-
 मानः सन् “अभि पवते” कलशानभिलक्ष्य चरति । कीदृशः ?
 “देवः” सङ्ग्रीडन-शीलः‡ “स्वेन आत्मीयेन “रसेन” इन्द्रा-
 दीन् “पृच्छन्” सम्पर्चयन् संयोजयन्॥ तमिमं सोमं

* ‘मत्सरः—मदनीयः मच्छणीयो वा’—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७, ४, १२, २ ।

‡ ‘देवः—सोमः दानादि-गुण-युक्तः’—इति वि० ।

॥ ‘पृच्छन्—तर्पयन् प्रीणयन् वा’—इति वि० ।

“दश” दशसङ्ख्याकाः “क्षिपः”* [अङ्गुलि-नामैतत् (निघ० २, ५, ३)] कर्मार्थं प्रेर्यत इति तत्सङ्ख्याका अङ्गुल्यः “सातौ” समुच्छिते† “अव्ये” अवि-भवे पवित्रे “अव्यत” गमयन्ति [यद्वा, तत्र पवित्रे पूयमानं सोमम् अव्यत गच्छन्ति । वी गत्यादिषु (अदा० प०) लङि व्यत्ययेनात्मनेपदम् ॥

“व्रतानि”-“प्रियाणि”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २०

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
॥ दाशस्पत्यम् ॥ इन्द्रुरौक्षोवाद्वाइया । वाजाउ ।

१ २ ३
वा३ । हाउवा । पवतेगोनियोघाउ । वा३ । हाउ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
वा । इन्द्रायिसोमः । साहइन्वाउ । वा३ । हाउवा

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
३ । मारदार३४औक्षोवा । या२३४५ । हन्तायिरक्षो ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
वाधातायिपाउ । वा३ । हाउवा३ । मारदार३४औ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
क्षोवा । तीर३४५म् । वरायिवस्कृ । एवन्वृजनाउ ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
वा३ । हाउवा३ । स्याररार३४औक्षोवा । जा २ ३

* ‘क्षिपः’—क्षिप्यत इति क्षिपः अङ्गुल्यः,—इति वि०

† ‘उच्चे प्रदेशे’—इति वि० ।

११ २ २ २ २ २ १ २ २
४५ ॥ (१) अभौहोवाहार्दया । धाराउ । वा३ । हाउ

२ २ १ २ २ १
वा । यामधुवापृचानाउ । वा३ । हाउवा । तिरोरो

१ २ २ २ १ १ १
म । पवाताआउ । वा३ । हाउवा३ । द्रा२इदू२३४

५ २ २ ३ १ १ १ १ १ १ १
भौहोवा । ग्धार३४५ । इन्दूरायिन्द्रा । स्यसाखीया

२ १ ३ ५ २ २ १ १ १
उ । वा३ । हाउवा३ । जूरषा२३४भौहोवा । णा२३

१ १ २ २ १ १ १ १
४५ । देवोदायिवा । स्यमात्साराउ । वा३ । हाउ

१ ३ ५ २ २ ३ १ १ १ १ १ १
वा३ । मारदा२३४भौहोवा । यार३४५ ॥ (२) अभौहो

२ २ १ २ १ २ १ १
वाहार्दया । व्रताउ । वा३ । हाउवा । निपवतेपु

१ २ १ १ १ १ १ १
नानाउ । वा३ । हाउवा । देवोदायिवान् । स्वेना

१ १ १ १ १ १ ५ २ २
रासाउ । वा३ । हाउवा३ । नारपा२३४भौहोवा ।

१ १ १ १ १ १ १ १
चार३४५न् । इन्दूर्द्धाम्ना । णियार्त्तथाउ । वा३ । हा

१ ३ ५ २ २ ३ १ १ १ १
उवा३ । वारसा२३४भौहोवा । नार३४५ । दशाक्षा

यिपो। अ॒व्यातासा॒उ। वा॒३। हा॒उवा॒३। नो॒रआ

२३४ औ॒होवा। व्या॒२३४ पु॒यि(३) ॥ १५* ॥ [१]

॥ स॒म्यावै॒यश्च॒म् ॥ ओ॒३हा॒यि। ओ॒३हा॒। ओ॒हा।

इ॒या॒२। ओ॒३हा॒३ण॒। इ॒न्दु॒र्वाजी॒। प॒वते॒। गो॒नियु॒रे॒।

घाः। इ॒न्द्रे॒सोमाः॒। स॒च्च॒इ॒। न्व॒न्मदा॒या। च्छ॒न्ति॒र

क्षो॒। बा॒३ध॒ते॒। प॒र्ये॒राती॒म्। व॒रि॒वस्का॒। ए॒वा॒३

न्वृ॒ज॒। ना॒३४३॒। स्या॒३रा॒पूजा॒६५६॥(१) अ॒ध॒धारा॒।

या॒३म॒धु॒। बा॒पृ॒चा॒नाः॒। ति॒रो॒रोमा॒। प॒वते॒। अ॒द्रि

दु॒ग्धाः॒। इ॒न्दु॒रि॒न्द्रा॒। स्या॒३ स॒खि॒। य॒ञ्ज॒षाणाः॒।

दे॒वोदे॒वा॒। स्य॒मत्स॒। रो॒३४३॒। मा॒३दा॒पू॒या॒६५६॥(२)

अ॒भि॒व्र॒ता॒। नी॒३प॒व॒। ते॒पु॒ना॒नाः॒। दे॒वोदे॒वान्। स्वे

ह॒न॒र॒। से॒न॒पृ॒चान्। इ॒न्दु॒र्द्ध॒र्मा॒। णी॒३कृ॒तु॒। था॒व

^{४ ५} सानाः । ^{२ १} ओ३हायि । ^२ ओ३हा । ^{२२ १} ओहा । ^१ इया२ ।

^{५ २ २} ओ३हा३ण । ^१ दशक्षियो । ^{१ १} अब्यत । ^२ सा३४३ । ^{१ ४} नो३आ

५व्याई५६यि(३) ॥ ५* ॥ [२] २०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तराग्रन्यस्य षष्ठस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः† ॥ ६ ॥

अथ सप्तमे खण्डे,‡ प्रथम-सूक्ता—

प्रथमा ।

^{१ २} आतेअग्रदधीमद्दियुमन्तन्देवाजरम् । ^{२१ २} ^{३ १ २}

^{२ ३ २ २ १ २} यङ्मस्यतेपनीयसीसमिद्दीदयतिद्यवी ^{३ २ ३ १ २ २ १ २}

^{२ २ ३ २ ३ १ २} षष्टस्तोत्रभ्यआभर ॥ १ ॥

* ऊ० गा० ८ प्र० २ अ० ५ सा० ।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टीम साम'—इति वि० ।

‡ 'इदानोमुक्थसामानि'—इति वि० ।

॥ 'सञ्चयं साम'—इति वि० ।

६ ऊ० गा० ५, १, ४, १ (१ भा० ८५५४०) = ऋ० वे० ३, ८, २२, ४

हे “अग्ने !” “द्युमन्तं” दीप्तिमन्तम् “अजरम्” अजीर्णम्
 “ते” त्वाम् “आ” सर्वतः “इधीमहि” दीपयामः । “यत् ह”
 यदा खलु “ते” तव “स्या” सा “पनीयसी” स्तुत्या “समित्”
 दीप्तिं “द्यवि” द्युलोके “दीदयति” दीप्यते तदा हे अग्ने !
 “स्तोढम्यः” अस्मभ्यम् “इषम्” अन्नम् “आभर” आहर ॥१॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ २ २ २ २ १ २
 आते अग्नश्चाहविः शुक्रस्य ज्योतिषस्य ते ।

१ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
 सुश्वन्द्रदस्मविशपते हव्यवाटुभ्यः ह्रयत

३ १ २ २ २ २ ३ १ २
 इषः स्तोढम्य आभर ॥ २* ॥

हे “ज्योतिषस्य ते” दीप्तेः स्वामिन् अग्ने ! “शुक्रस्य”
 दीप्तस्य “ते” तुभ्यम् “ऋचा” मन्त्रेण सह “हविः” ‡ “आ”
 आभिमुख्येन “ह्रयते” । हे “सुश्वन्द्र” सुष्टाह्लादक ! शोभन-
 हिरण्य ! वा, हे “दस्म” शत्रूणामुपक्षपयितः । । शिष्टं गतम् ॥ .

“ज्योतिषः”--“शोचिषः”—इति पाठौ ॥ २ ॥

* ऋ० वे० ३, ८, २२, ५ ।

† ‘वाज्यानुवाक्या-लक्षणया’—इति वि० ।

‡ ‘हविः’—चरु-पुरोडाशादि-लक्षणम्—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

^{१२}ओभेसुश्चन्द्रविश्वपतेर्दर्वी^{११२} श्रीणीषचासनि ।^{११२}

^{१२ २ ११ २ १ १ २}उतो नउत्पूर्या उक्थेषुश्वसस्पत

^{१२ २ १ २ १ २}इषस्तोढभ्य आभर ॥ ३* ॥ २१*

‘हे “सुश्चन्द्र” शोभनाच्चादक ! शोभन-हिरण्य ! वा, अग्ने !
“उभे” “दर्वी” दर्वी हविः-पूर्णं जुह्वप्रभृती “आसनि” आस्ये
“आ श्रीणीषे” आश्रयसि पचसि वा “उतो”† अपिच “नः”
अस्मान् “उक्थेषु” यागेषु‡ “उत्पूर्याः उत्पूरयन् फलैः ।
हे “श्वंसस्पते” बलस्य पालयितः ॥ इषमित्यादि गतम् ॥ ३॥ २१

^{१२ ४ २ ५ २ ४}॥ सञ्जयस् ॥ आतेअग्रदधी । माश्चायि । द्युम्

^{२ ४ २ ५ ४ ५ ३ ४ ३ ४ २ ५ ४ ३ ४ २ ५ ४}न्ताश्न्देवअजरम् । यद्वस्यातेपनीयसी । समिदोदयता

^{२ ४ २ ५ ३ ४ २ ५ ४ ३ ४ २ ५ ४}यि । ऊं३ । ऊम् । द्यारश्चवौ ॥ (१) आतेअग्रश्चचा ।

^{२ ४ ५ २ ४ २ ५ ४ ५ ३ ४ ३ ४}हाश्वायिः । शुक्रस्याश्च्योतिषस्पतायि । सुश्चन्द्रदस्

* ऋ० वे० ४, ८, २२, ४ ।

†, ‡ ‘उत उ—इति पदपूरणः’—इति वि० ।

‡ ‘उक्थेषु—सामसु’—इति वि० ।

विश्यतेक्ष्ववाट्त्तुभ्यम् । ऊ३ । ऊम् । या२३४ता

यि ॥ (२) ओभेसुश्चन्द्रवि । श्या३तायि । दवीआ३यि

णौषआसनायि । उतो३नउत्तुपूर्याउक्थुषु३वसा । ऊ३

३ऊम् । पा२३४तायि । इष३न्तो३नृभ्या३आ । ऊ३ ।

ऊम्३४म् । भा३४५रोई३हायि (३) ॥ १६ * ॥ [१]

॥ स्त्रीगमतम् ॥ आ२३४ । तेअग्रइधी । मा३हायि ।

द्यु३मन्त३न्देवा३ । आ२३ । ज३रमा । य३ङ्हा३स्या३ता३यि ।

पा३नो३रया२३४सी । समि३द्दी३रदय । ता२३यि । द्यवि

या ॥ (१) आ२३४ । तेअग्र३ष्टचा । हा३वायिः । शु३क्र

स्यज्यो३ती३ । षा२३ । प३तआ । सु३श्चान्द्रा३दा३ ।

स्ववा३रयि३पार३४तायि । द्रव्यवा३ट्त्तुभ्यम् । ऊ२३ ।

यत३आ ॥ (२) ओ२३४ । भेसुश्चन्द्रवि । श्पा३तायि ।

^{१ २ २ २ २ २} दवीश्रीणीषे३ । ^१ आ२३ । ^{१ ३ २} सनिया । ^{१ ० १} उतोना३ऊत् ।

^{१ ३} पुपू२रा२३४याः । ^{१ १ २} उक्थेषू२श्व । ^{१ २ २} सा२३ः । पतआ ।

^{१ २ २} इषांस्तो३त् । ^{१ ४} भ्या२३आ३ । ^२ भा३४ ५ ^५ रो ६ चायि ।

॥ ६ * ॥ [१२] २१

अथ द्विती-यत्वे—

प्रथमा ।

^{१ २ ३ १ २} इन्द्रायसामगायतविप्रायवृहतेवृहत् ।

^{३ १ २ ३ १ २ ३ १ २} ब्रह्मकृतेविपश्चितेपनस्यवे ॥ १ ‡ ॥

हे उद्गातारः ! “इन्द्राय” “वृहत्” एतन्नामकं साम “गायत” उच्चरत । कीदृशाय ? “विप्राय” मेधाविने “वृहते” महते “ब्रह्मकृते” वृष्टिद्वारा हविलक्षणस्यान्नस्य कर्त्रे “विपश्चिते” विदुषे “पनस्यवे” स्तुतिमिच्छते ॥

“ब्रह्मकृते”-“धर्मकृते”—इति पाठौ ॥ १ ॥

०. ऊ० गा० १०प्र० १अ० ६सा० ।

† ऊ० आ० ४, २, ४, ८ (१भा० ०६२ छ०) = ऊ० वे० ६, ७, १, १ ।

‡ ‘महावैश्वामित्रं साम’—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

१२ १२ ३१२ २ १२ १२
त्वमिन्द्राभिभूरसित्वसूर्यमरोचयः ।

२ १२ ३१२ ३१ २
विश्वकर्माविश्वदेवोमक्षा असि ॥ २ * ॥

हे “इन्द्र !” “त्वम्” “अभिभूः” शत्रूणाम् अभिभविता
“असि” भवसि” किञ्च “त्वम्” “सूर्यम्” आदित्यम् “अरोचयः”
तेजोभिरदीपय,† किञ्च “विश्वकर्मा” विश्वस्य कर्त्तासि “विश्व-
देवः” सर्वदेवश्चासि [तथाच यजुर्ब्राह्मणम्—“अग्निं वा अन्वत्या
देवता इन्द्रमन्वत्या” इति] अतो “महान्” सर्वाधिकोऽसि ॥२॥

अथ तृतीया ।

३ २ ३ १ १३ २ ११ ३ २ ३ १
विभ्राजज्ज्योतिषास्वाऽऽरगच्छोरोचनन्दिवः ।

३ १ २ ३ २ १
देवास्तइन्द्रसख्यायथेमिरे ॥ ३ ‡ ॥ २२

हे “इन्द्र !” त्वं “ज्योतिषा” तेजसा “दिवः” आदित्यस्य
“रोचनं” प्रकाशकं अधिकरणत्वेन “स्वः” स्वर्गं “विभ्राजत्”
प्रकाशयन् “अगच्छः” अप्राप्नोः, किञ्च “देवाः” सर्वाः “ते” तव

* ऋ० वे० ६, ७, १, २ ।

† ‘त्वं सूर्यमपि दीपयसे’—इति वि.

‡ ऋ० वे० ६, ७, १, ३ ।

अथ तृतीय-दृचे*—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
असाविसोमइन्द्रतेशविष्ठधृष्णवागहि ।

१ २ ३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २
आत्वापृणक्विन्द्रियं रजःसूर्यो नरश्मिभिः ॥ १ ॥

हे “इन्द्र !” “ते” त्वदर्थं “सोमः” “असावि” अभिषुतोऽभूत् ।
हे “शविष्ठ” अतिशयेन बलवान् ! अतएव “धृष्णो” शत्रूणां
धर्षयितः ! इन्द्र ! “आगहि” देवयजनदेशमागच्छ, आगतञ्च
“त्वा” त्वाम् “इन्द्रियं” सोमपानेनोत्पन्नं प्रभूतं सामर्थ्यम्
“आ पृणक्तु” आपूरयतु । “रजः” अन्तरिक्षं “रश्मिभिः”
किरणैः “सूर्यो न” यथा सूर्यः पूरयति तद्वत् शविष्ठ--शवस्विन्-
शब्दादिष्ठनि विन्मतोर्लुक्, “टेः (६, ४, ११५)”—इति टि-
लोपः, पादादित्वान्निघाताभावः (८, १, १८) । गहि—गमेर्लेटि-
“बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)”—इति शपो लुक्, “अनुदात्तोपदेश-
(६, ४, ३७)”—इत्यादिना अनुनासिक-लोपः, तस्य असिद्धवदन्ता-
भात् (६, ४, २२)”—इत्यसिद्धत्वाद्धेलुङ्गभावः ॥ १ ॥

* ‘महादेश्वामिव’ साम—इति वि० ।

† अ० आ० ४, २, १, ६ (१ भा० ७०८४०) = अ० व० १, ६, ५, १ ।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
 आतिष्ठवृत्रहन्नुथंयुक्तातेब्रह्मणाहरी ।

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
 अर्वाचीनस्सुतेमनोग्रावाकृणोतुवग्नुना ॥ २ * ॥

हे ‘तुत्रहन्’ शत्रूणां हन्तः इन्द्र ! “रथम्”† “आ तिष्ठ”
 आरोह । यस्मात् “ते हरी” त्वदीयावद्यौ “ब्रह्मणा” स्तोत्र-
 लक्षणेन मन्त्रेण‡ “युक्ता” रथेऽस्माभिर्योजितौ [“सुपां सुल्ग
 (७, १, ३६)” — इत्याकारः] तस्मात् त्वं रथमातिष्ठ । “ते मनः”
 त्वदीयं मनश्च ‘ग्रावा’ अभिषवार्थं प्रवृत्तः पाषाणः “वग्नुना”
 वञ्चनीयेनाभिषवशब्देन [“वचेर्गश्च (उ० ३, ३३)” — इति
 नु-प्रत्ययो गकारश्चान्तादेशः] “अर्वाचीनम्” — अस्मादभिमुखं
 “सुकृणोतु” सुष्ठु करोतु ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
 इन्द्रमिद्धरीवहतोप्रतिधृष्टशवसम् ।

१ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ ३ १ २
 ऋषीणास्सुष्टुतीरुपयज्ञश्चमानुषाणाम् ॥ ३ ॥ २३

॥ इति तृतीयः प्रपाठकः ॥

* ऋ० वे० १, ६, ५, ३=य० वे० ८, ३९ ।

† ‘रथं—वृद्धणीयं वेगवन्तम्’—इति वि० ।

‡ ‘ब्रह्मणा—वैविध्य-लक्षणेन अथवा ब्रह्मणा अग्नेन । अथवा ब्रह्मणा हिरण्य-
 गर्भेण’—इति वि० ।

॥ ऋ० वे० १, ६, ५, २=य० वे० ८, ३४ ।

“अप्रतिष्ठणश्वसं” केनाप्यधर्षितबलमहिंसितबलमित्यर्थः
 “इन्द्रमिह” * इन्द्रमेव “ऋषीणां” वसिष्ठादीनां† “मानवाणाम्”
 अन्येषां मनुष्याणाञ्च “सृष्टुतीः” शोभनाः स्तुतीः “यज्ञञ्च” “हरी”
 अश्वौ “उप वदतः” समीपं प्रापयतः । यत्र यत्र स्तुवन्ति यत्र
 यत्र यजन्ते तत्र सर्वत्रेन्द्रमसौ प्रापयत इत्यर्थः । [मानुषाणाम्
 “मनोजातौ (४, १, १६१)”—इति मनु-शब्दादज् षंगागमश्च] †
 “ऋषीणां सृष्टुतीः”—“ऋषीणाञ्चस्तुतीः”—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २३

॥ मद्वावैश्वामित्रम् ॥ हयायि । हया३ । औ५
 ४ ५ १ २ ३ २ १ १ २ १ १
 ओ५हा । (एवन्तिः) असावि५सो । म३इन्द्रा३ता३रयि ।
 १ २ २ १ २ २ ३ २ १
 शवि५ष्ठधा । ण्ण३वागा३दी३र । आ३त्वापु३र्णा । त्तु३इन्द्रा३या-
 २ २ ३ २ १ २
 र३म् । रजः३सूर्या३ । नर३श्मायि३भा३रयिः ॥ (१) आ३तिष्ठ
 १ २ १ २ २ १ ३ २ २ १
 वा । त्रु३हन्ना३था३र३म् । यु३क्ताते३ब्रा । ह्य३णा३दारी३र ।
 २ २ ३ २ २ १ २ २ २ ३ २ १
 अ३र्वाची३नाम् । सु३तेमा३ना३रः । या३वाकृ३णो । तु३वग्रू३र्नो
 ३ २ २ १ ३ २
 २ ॥ (२) इन्द्र३मि३ह्वा । री३व३द्वा३ता३रः । अ३प्रति३धा । दृ३श

* ‘इह’—इति पदपूरणः—इति वि० ।

† ‘ऋषीणां’—दशमेन-समर्थानाम्—इति वि० ।

^१ वासा^२रम् । ^{२ २} ऋषीणां^३सू । ^{३ २ १} द्यूतीरुपा^२ । यज्ञञ्च^१मा ।

^१ नुषाणा^२रम् । यज्ञञ्चा^१ । ^{२ २ १} मानुषाणा^२रम् । हयायि^१ ।

^{४ ५ ४ ५} ह्ये^३ । ओहाओहा । ^३ ३ । ^५ द्यो^३इडा । ^३ २ । द्यो^३र३४५ई ।

डा(३) ॥ १८ * ॥ [१]

^{१ २} ॥ त्वष्टी^२साम^३ ॥ ^{३ २ १} असाविसो^३इहा । मइन्द्रा^३ता^३रयि ।

^{१ २} १ । ^{३ २ १} शनिष्ठ^३धा^३इहा । ^{१ २ २ १} प्णुवागा^३ही^३र । ^{१ २ २ १} आत्वापृणा^३इहा । ^३ क्तु

^{१ १} इन्द्रा^३या^३रम् । ^{१ २ २ १} रजःसूय^३इहा । ^{३ २ १} नरा^३इहो^३र३४ । ^५ वा ।

^{१ २} १ । ^५ श्माप्रयिभो^३इहायि ॥ (१) ^{१ २ २ १} आतिष्ठ^३वा^३इहा । ^{३ २ १} तृक्ष्णा^३था^३र

^{१ २ २ १} म् । ^{३ २ १} युक्ता^३तेब्रा^३इहा । ^{१ २ २ १} क्षणा^३हारी^३र । ^{१ २ २ १} अर्वाचीना^३इ

^{३ २ १} हायि । ^{३ २ १} सुतेमाना^३रः । ^{१ २ २ १} यावाकृणो^३इहा । ^{३ २ १} तुवा^३इहोर

^५ ३४ । ^५ वा । ^{१ २ २ १} मेप्रनो^३इहायि ॥ (२) ^{१ २ २ १} इन्द्रमि^३इहा । ^{३ २ १} री

^२ वहाता^३रः । ^{१ २ २ १} अप्रतिधा^३इहा । ^{३ २ १} दृशवासा^३रम् । ^{१ २} ऋषी

* उ० गा० ३ प्र० १ अ० १८ सू० १ ।

† 'क्षारत्वाष्ट्री'—इति अ० पु० पाठः ।

१ २ ३ ३ २ १ १ २ ३ ३ २ १
णांमू३हा । धृतीपू२ । यज्ञच्चा३हायि । मानू३
१ ५ ४ ५
हो३३४ । वा । षाप्रणो३हायि(३) ॥ १८ * ॥ [२]

५ २ ३ ४ ५
॥ गौरीवितम् ॥ असा । विसो३ । मद्रन्द्रतायि । शु
१ २ ३
विष्ठधृष्णुवागच्चा३हायि । आत्वापृणा३१२३ । त्तुईप्रद्रि
१ २ ३ ४ ५ ४ ५ ४
याम् । राजःसूर्यो३१२३ । नरोवा । ज्ञाप्रयिभो३हा-
५ २ ३ ४ ५ १ २ ३
यि ॥ (१) आति । छवा३ । त्रुहन्नयाम् । युक्तातवृह
१ २ ३ ४ ५ ४ ५ ४
णाच्चरा३हायि । आर्वाचीना३१२३म् । सुतेप्रमनाः । या
१ २ ३ ४ ५ ४ ५ ४
वाकृणो३१२३ । तुवोवा । मूप्रनो३हायि ॥ (२) इन्द्रम् ।
३ २ ४ ५ १ २ ३ ४ ५
इद्धा३ । रीवहताः । अप्रतिधृष्ठशवसार३म् । आर्ष-
१ २ ३ ४ ५ ४ ५ ४
णांमू३१२३ । धृतीपू२ । याज्ञच्चा३१२३ । मानो
५ ४ ५
वा । षाप्रणो३हायि(३) ॥ ४ * ॥ [३] २३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराश्विनस्य षष्ठस्याध्यायस्य

सप्तमः खण्डः ॥ ७ ॥

* ऊ० गा० २२ प्र० २ च० १८ सा० ।

† ऊ० गा० २२ प्र० १ च० ४ सा० ।

‡ 'द्वादशाहस्य पञ्चमसहः परिसमाप्तम्'—इति वि० ।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो ह्यर्हं निवारयन् ।

पुमर्थाञ्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ६ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्ग-प्रवर्त्तक-

श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-

चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-

प्रकाशे उत्तरायन्ये षष्ठोऽध्यायः* ॥

* 'तत्तौयः प्रपाठक', परिसमाप्तः—इति वि० मूलग्रन्थसमाप्तम् ।

